साहित्य अमृत

मासिक

वर्ष-२४ अंक-३ ❖ पृष्ठ ८४ | आश्विन-कार्तिक, संवत्-२०७५ | अक्तूबर २०१८

संस्थापक संपादक

स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र

❖

पूर्व संपादक

स्व. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

❖

संपादक

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

❖

प्रबंध संपादक

श्यामसुंदर

❖

संयुक्त संपादक

डॉ. हेमंत कुकरेती

❖

कार्यालय

४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२

फोन : २३२८९७७७ • फैक्स : २३२५३२३३

इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

❖

शुल्क

एक अंक —₹ ३०

वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००

वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००

विदेश में

एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)

वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

❖

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुंदर द्वारा
४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२
से प्रकाशित एवं ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६,
कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२ द्वारा मुद्रित।

❖

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

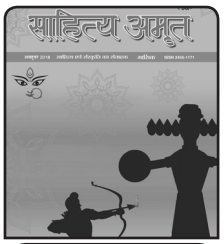

इस अंक में

संपादकीय

महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती ४

प्रतिस्मृति

चारा काटने की मशीन/ *उपेंद्रनाथ अश्क* ९

कहानी

सहजो की कमाई/ *मायाराम 'पतंग'* २२

आखिरी ईद/ *श्रीधर द्विवेदी* ३२

आलेख

खोंइछा में मॉरीशस/ *ऋता शुक्ल* ११

भारतीय चित्रांकन परंपरा में श्रीराम/ *ललित शर्मा* २४

पावस और प्रेषितपतिका/ *श्यामसोहन दुबे* ३१

मोबाइल फोन : खतरे की आहट *दुर्गादत्त ओझा* ३८

ग्रामोदय : स्वप्न से संकल्प तक/ *वेदप्रकाश* ५६

रिपोर्ट

अंतरराष्ट्रीय स्वरूप लेता विश्व हिंदी सम्मेलन/ *कृपाशंकर चौबे* १४

स्मरण

संस्कृतियों को प्रश्नांकित करनेवाले नायपॉल/ *राजकुमार कुंभज* २०

नीरजजी की चुंबकीय परिधि/ *अशोक चक्रधर* २६

राष्ट्रसंत तरुण सागरजी और कड़वे वचन/ *प्रणय श्रीवास्तव 'अश्क'* ४१

लघुकथा

ए.टी.एम./ लता कादंबरी ५७

कविता

माँ गंगा का नीर/ *अनिल श्रीवास्तव अयान* ३४

नारी/ स्वाति ग्रोवर ३७

कालचक्र का घूमे पहिया/ *कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'* ५५

अक्षर-अक्षर मधुक्षरा/ *प्रियदर्शी दत्ता* ५९

क्रांति की अग्नि/ *नीति विद्रोही देब* ६७

राम झरोखे बैठ के

गुमशुदा की तलाश और 'खात्मा-रिपोर्ट'/ *गोपाल चतुर्वेदी* ३५

ललित-निबंध

वर दे, आया तेरे द्वार/ *विश्वास पाटील* ४७

हास्य-व्यंग्य

साहित्यकारों के लिखने के ढंग और मन:स्थिति/ *विनोद शंकर गुप्त* ५२

साहित्य का भारतीय परिपार्श्व

चित्रा और पाँच भाई/ *उज्ज्वला केलकर* ५०

साहित्य का विश्व परिपार्श्व

भय/ *रेमन डेल वालेक्लेन* ५८

संस्मरण

वो नन्हा फरिश्ता/ *प्रेमपाल शर्मा* ६०

लोक-साहित्य

आदिवासी जनजातियाँ और उनके लोकोत्सव/ *एम.डी. मिश्रा 'आनंद'* ६८

यात्रा-वृत्तांत

अयोध्या अपराजेय आस्था की नगरी/ *सुशील सरित* ७२

बाल-संसार

हर आँगन में उजियारा हो/ *राजेंद्र निशेश* ७६

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ७७

वर्ग-पहेली ७८

साहित्यिक गतिविधियाँ ७९

संपादकीय

महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती

दो अक्तूबर महात्मा गांधी का जन्मदिवस है। गांधी जयंती पूरे देश में अनेक स्तरों पर बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। लेकिन यह दिन एक रस्म बनकर रह गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने कुछ वर्ष पहले गांधीजी के जन्मदिवस को 'अहिंसा दिवस' घोषित किया था। अत: अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी गांधी जयंती मनाई जाती है। अहिंसा का प्रश्न विश्वशांति से जुड़ा है, जिसकी कामना सबको है, अशांति का वातावरण विश्व को आंदोलित कर रहा है। इस वर्ष दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला की जन्मशती मनाई गई। नेल्सन मंडेला उन राष्ट्र पुरुषों में थे, जिन्होंने महात्मा गांधी के जीवन और कृतित्व से शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने अपने देश की स्वराज प्राप्ति के लिए क्रांतिकारी मार्ग छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाया। बीस वर्ष के कठिन कारावास के उपरांत भी उन्होंने अपने जीवन में घृणा और कटुता को नहीं आने दिया। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बनने के उपरांत चेष्टा की कि समता और सामाजिक न्याय के आधार पर देश के हर वर्ग को, विशेषतया अंग्रेजों के सब मतभेदों और अत्याचारों को भूलकर नए उभरते राष्ट्र से जोड़ा जाए। यही नहीं, अफ्रीका में अनेक जातियाँ हैं, उनमें भी आपस में सौहार्द स्थापित हो, ताकि दक्षिण अफ्रीका एक संयुक्त व सशक्त राष्ट्र के रूप में उभर सके। उनके शती वर्ष महोत्सव के अवसर पर अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति ओबामा को मुख्य सेंट्रेनरी (शताब्दी) मेमोरियल भाषण के लिए बुलाया गया। पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा का वह भाषण भी अत्यंत मार्मिक है। विश्व शांति तथा राष्ट्रीय एकता के निर्माण के विभिन्न पक्षों का उन्होंने बहुत संतुलित और समीचीन विवेचन किया है, जो सबके लिए पठनीय है। ओबामा के भाषण में भी महात्मा गांधी के आदर्शों और अपेक्षाओं की गूँज है। दक्षिण अफ्रीका के अपने अनुभव और व्यवहार से मोहनदास करमचंद गांधी महात्मा बनकर भारत वापस आए।

महात्मा गांधी आज विश्वमानव के रूप में स्वीकारे जाते हैं। उनका संदेश शांति, मातृभाव, समता, न्याय और उपेक्षित मानव को उन्नति के मार्ग पर प्रशस्त करने का रहा है। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने जो उद्‌बोधन देशवासियों को दिया था, उसमें गांधीजी के संदेशों व भावनाओं को आज की परिस्थितियों में प्रस्तुत किया था। वह उद्‌बोधन अत्यंत सामयिक है। उस पर देशवासियों को विचार करने की आवश्यकता है। छोटी-छोटी बातों और मतभेदों को भुलाकर सामने आई चुनौतियों का सामना सबको मिलकर करना चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम के उछाह और त्योहारी मूड में हम गांधीजी के मूल संदेश को भूल जाते हैं।

इस वर्ष का २ अक्तूबर एक विशेष महत्त्व रखता है। २ अक्तूबर, २०१९, यानी अगले वर्ष गांधीजी का १५०वाँ जन्मदिवस होगा। उसके आयोजन का प्रारंभ २ अक्तूबर, २०१८ से ही प्रारंभ होगा। भारत सरकार ने इस आयोजन को बड़े धूमधाम और सार्थकता के साथ करने का निश्चय किया है। एक सर्वदलीय एवं विशेषज्ञों की बड़ी समिति ने इस दौरान होने वाले कार्यक्रमों पर विचार-विमर्श किया था और फिर एक छोटी समिति को कार्यक्रम तैयार करने का दायित्व सौंपा गया था। संभवत: २ अक्तूबर को पूरी रूपरेखा हमारे सामने होगी। विश्वमानव का संदेश विश्वव्यापी है और प्रासंगिक भी, उसका प्रचार-प्रसार उसी रूप में होना ही चाहिए। नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने विदेश से अपने एक रेडियो प्रसारण में १९४२ में महात्मा गांधी को सर्वप्रथम 'राष्ट्रपिता' कहकर संबोधित किया था। नेताजी के इस उद्‌बोधन के प्रेरक मूल तत्त्वों की जानकारी देश के साधारण नागरिक, विशेषतया नई पीढ़ी को होनी चाहिए। संस्कृति मंत्रालय के द्वारा इस दायित्व का संपादन होगा। रवींद्रनाथ टैगोर के १५०वीं जयंती का आयोजन भी विश्वव्यापी रहा था और अत्यंत सुचारु रूप से श्री प्रणब मुखर्जी की देख-रेख में हुआ था। उसका विवरण और आकलन भी पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ था। आशा है कि महत्मा गांधी की १५०वीं जयंती उसी प्रकार से व्यवस्थित और कल्पनाशील ढंग से आयोजित होगी। महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती को गौरवपूर्ण ढंग से सफल बनाने में दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सभी भारतीय नागरिकों का सहयोग और सहकार प्राप्त होगा।

पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री और भारत

पूर्व क्रिकेटर एवं पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री इमरान खान ने २०११ में एक पुस्तक लिखी थी, उसका नाम है 'पाकिस्तान-ए-पर्सनल हिस्टरी'। इसे इमरान ने यह बताने के लिए लिखा था कि वे कैसे और क्यों राजनीति में आए तथा किस उद्‌देश्य से उन्होंने अपनी राजनीतिक पार्टी 'तहरी इनसाफ' बनाई। पुस्तक में पाकिस्तान बनने के बाद क्या राजनीतिक स्थिति बनी, उसका विवेचन है। पुस्तक में एक तरह से अपना आत्मचरित और पाकिस्तान के प्रथम राष्ट्रपति मुहम्मद अली जिन्ना के निधन के बाद कैसे-कैसे पाकिस्तान की अवनति होती रही है, इसे दरशाने की चेष्टा है। पुस्तक में उन्होंने अपनी पार्टी के उद्‌देश्य बताए हैं—पाकिस्तान में सुशासन और सामाजिक न्याय जनसाधारण को मिल सके तथा न्यायप्रिय एवं माननीय व्यवस्था स्थापित हो सके। पाकिस्तान में कानून का राज नहीं है, महिलाओं की प्रतारणा होती है। दिन-दहाड़े सत्ता के विरोध में तनिक भी आवाज उठानेवाले का अपहरण हो जाता है, पुलिस और नीचे स्तर की न्यायपालिका अत्यंत भ्रष्ट हैं। गरीबी, भुखमरी, शिक्षा और चिकित्सा व्यवस्था का कोई ध्यान नहीं है, मानव अधिकारों का हर तरह से हनन हो रहा है। उनका कहना है कि जिन्ना की मृत्यु के उपरांत सत्ताधारी उनके सिद्धांतों को भूल गए और अपने स्वार्थ-साधन में जुट गए। इमरान खान ने स्वयं को एक आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उनको अपने पर पूरा विश्वास है और उनकी मान्यता है कि कुरान की आयतों के

आधार पर पाकिस्तान की समस्याओं का हल संभव है। लियाकत अली और उसके बाद प्रेसीडेंट को अपदस्य कर जनरल अयूब द्वारा फौजी शासन की स्थापना, संविधान को निरस्त करना, पूर्वी पाकिस्तान में अलगाव की भावना का उदय, अयूब का शासन जनरल याहया खाँ को सौंपना, पूर्वी पाकिस्तान का अपनी अस्मिता का संघर्ष, जुल्फीकार अली भुट्टो का शासन और पाकिस्तान की जनता की उससे आशाएँ, जनरल जिया का भुट्टो को अपदस्थ करना, भुट्टो को फाँसी, बेनजीर भुट्टो, शरीफ के पहले तीन शासनों तथा शरीफ को अपदस्थ कर जनरल मुशर्रफ के सत्ताकाल का विश्लेषण है। इन सबके समय में भ्रष्टाचार का बोलबाला कैसे बढ़ता गया और जनता गरीबी में पिसती रही। जनरल मुशर्रफ का वहाँ के सुप्रीम कोर्ट के विवाद के उपरांत मजबूरन सत्ता छोड़ना, बेनजीर भुट्टो की हत्या आदि इसमें सबकी चर्चा है। पुस्तक में न केवल वे स्वयं को एक आस्थावान व्यक्ति की तरह प्रस्तुत करते हैं, बल्कि एक उदारवारी तथा हर प्रकार की रूढ़िता एवं अतिवाद से दूर, सूफी परंपरा से प्रभावित सहृदय नागरिक के रूप में दिखाई देते हैं। जगह-जगह वे कुरान की आयतों का हवाला देते हैं। पाकिस्तान की राजनीतिक अस्थिरता, गरीबी, बेरोजगारी, अन्याय, आर्थिक विषमता आदि का निदान कैसे हो, इसके विषय में वे अपने विचार प्रकट करते हैं। युवा पीढ़ी में एक नैतिक अभाव, ऐथिकल वैक्युम की चर्चा करते हैं। कठमुल्लों की वे आलोचना करते हैं। उनके अनुसार कुरान अतिवाद से बचकर मध्यम मार्ग का अनुसरण करने की हिदायत देता है। इमरान खान आतंकवाद का विरोध करते हैं, पड़ोसी देशों और अन्य सभी देशों से अच्छे रिश्तों की बात करते हैं। उनका कहना है कि पाकिस्तान पर काफी समय से अमेरिका हावी रहा है तथा पाकिस्तान ने अपनी प्रभुसत्ता खो दी है। इमरान खान के अनुसार पाकिस्तान को पुनः आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को प्राप्त करना है। अफगानिस्तान की लड़ाई में सत्ताधारी अमेरिकी डॉलर प्राप्त करने और अपनी तिजोरी भरने में लगे रहे तथा अपना आत्मसम्मान गिरवी रख दिया। वे आई.एम.एफ. और विश्वबैंक की भी आलोचना करते हैं। अमेरिकी खुफिया पुलिस की घुसपैठ की वे भर्त्सना करते हैं। वे पाकिस्तान में सेना के हस्तक्षेप के विरोधी हैं तथा निष्पक्ष और स्वतंत्र न्यायपालिका के हामी हैं। इमरान खान ने अपनी पार्टी की अभी तक की असफलता का भी विवेचन किया है। जिया ने उन पर मंत्री बनने का बहुत दवाब डाला, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया। इमरान खान डॉ. मुहम्मद इकबाल के बड़े प्रशंसक हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि अल्लामा इकबाल की विचारधारा व सिद्धांतों में ही पाकिस्तान का भविष्य निहित है। डॉ. इकबाल की प्रसिद्ध पुस्तक 'Reconstruction of Religious Thought in Islam' में जो उनके भाषण हैं, उनकी लंबी चर्चा की है। इमरान खान लिखते हैं—इकबाल ने मुसलमानों को कहा कि वे खुले दिमाग से कुरान और इसलामिक कानून की पुनर्व्याख्या होनी चाहिए। ताकि वे शीघ्रता से बदलती दुनिया में प्रासंगिक रह सकें। इमरान खान लिखते हैं—'While Islam and the two-Nation theory- the Ideology on which the split between Pakistan and India was based remain the bedrock fo Pakistan foundations it is clear that religaous dogma should not. He used to spread prejudice intolerance and sectarianism unfortunately, though, one of the worst aspecs of Muslim religious bigots is that they preach hatred towords minorites or other Islamic sects, taking quranicverses out of context to jnsifty their actions. They ignore—or are. ignorant of the fact that the prophet's (PBUH) life has many examples of tolerance towords other relegious groups.' संक्षेप में इमरान खान का कहना है कि यद्यपि इसलाम और द्विराष्ट्र थ्योरी पाकिस्तान का मूल है, किंतु धर्म और असहनशीलता के लिए स्थान नहीं है, जो कि कठमुल्ले फैलाते हैं। प्रश्न है कि इमरान खान प्रधानमंत्री बनने के बाद कहाँ तक अपने विचारों का अनुपालन करवा पाते हैं।

इमरान खान ने अपनी विजय के समय कहा था कि यदि भारत दोस्ती की ओर एक कदम बढ़ाएगा तो वे दो कदम आगे बढ़ेंगे। प्रधानमंत्री का पद ग्रहण करने के बाद आई.एस.आई. के मुख्यालय गए और वहाँ कहा कि आई.एस.आई. का खुफिया विभाग देश की पहली सुरक्षा लाइन है। यही आई.एस.आई. पाकिस्तान में आतंकवादी संगठनों को सुरक्षा देने के लिए जिम्मेदार है। आई.एस.आई. जम्मू-कश्मीर में आतंकियों को भेजने की व्यवस्था करता है। कश्मीर घाटी में आंदोलन और हिंसक काररवाइयाँ करने के लिए यही साधन जुटाता है। इमरान खान के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी इन हरकतों में कोई कमी दिखाई नहीं दे रही है। उनके अधिकतर मंत्री जनरल मुशर्रफ के समय के मंत्री हैं। चुनाव के पहले ही यह प्रचारित था कि मिलिटरी इमरान खान के समर्थन में है। नवाज शरीफ चौथी बार प्रधानमंत्री के पद से हटाए गए। पाकिस्तान में सत्ता के पीछे मिलिटरी है। मिलिटरी की मर्जी के खिलाफ कुछ भी हुआ तो तुरंत तख्ता पलट जाएगा। मुशर्रफ खुलेआम शरीफ को हटाकर स्वयं पाकिस्तान के सी.ई.ओ. और फिर प्रेसीडेंट बने। इस बार शरीफ मिलिटरी और पाकिस्तान की न्यायपालिका की मिलीभगत से अपदस्थ हुए। पनामा पेपर्स और भ्रष्टाचार के आधार पर वे पूरे जीवन के लिए चुनाव लड़ने के अयोग्य ठहराए गए। वे, उनकी पुत्री और दामाद जेल में हैं। अपनी पत्नी की कैंसर से मृत्यु के बाद केवल तीन दिन के लिए अंतिम रीति-रिवाज पूरा करने के हेतु पैरोल पर छोड़े गए थे। पूरी सैन्यशक्ति पाकिस्तान की विदेश नीति और डिफेंस पॉलिसी को स्वयं नियोजित करना चाहती है। वही उसको नियंत्रित भी करती है। हर प्रकार से उसकी छाप लोकतांत्रिक राजनीति पर है। देखें इमरान खान कहाँ तक और कब तक अपनी नीतियों या विचारों के अनुसार प्रधानमंत्री के तौर पर कार्य कर सकेंगे। स्वाभाविक है कि भारत की निगाहें इस ओर हैं, क्योंकि वह पड़ोसी से अच्छे संबंध बनाना चाहता है तथा पाकिस्तान में शांति, राजनैतिक स्थिरता और उसकी खुशहाली की कामना करता है। शांतिपूर्ण और मित्रतापूर्ण आपसी रिश्तों से ही दोनों देशों का भला है। खेद इस बात का है कि पाकिस्तान की सैन्यशक्ति की

धारणा है कि उसकी अस्मिता और सार्थकता निर्भर करती है भारत को हौवा के रूप में ही प्रस्तुत करने से। पाकिस्तान को इसीलिए एक डीप स्टेट कहा गया। तथाकथित प्रजातंत्रात्मक सत्ता के पीछे है सैन्यशक्ति की वास्तविक सत्ता। क्या इस सच को इमरान खान में असत्य साबित करने की क्षमता है? एक और समस्या पाकिस्तान की इस समय है कि वहाँ की आर्थिक अवस्था बहुत खराब है। इमरान खान इंटरनेशनल मानोटरी फंड की नीतियों के विरोध में हैं। क्या वह पाकिस्तान को आर्थिक संकट से उबारने में सहायता करेगा। अमेरिका चाहता है कि पाकिस्तान आतंकवादियों को नियंत्रित करे। वह हो नहीं पा रहा है। ऐसे में अमेरिका भी वांछित सहायता शायद ही करे। चीन पर ही पाकिस्तान अधिक निर्भर करेगा, इससे उनके रिश्ते और घने हो सकते हैं। अतएव भारत को पाकिस्तान से अभी सावधान ही रहना पड़ेगा।

एन.पी.ए. अथवा फँसे कर्ज में वृद्धि क्यों?

भारतीय संसद् की आकलन समिति को, जिसके अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी हैं, के अनुरोध पर रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराज राजन ने एक टिप्पणी ऐसे ऋणों के बारे में दी है, जो समय पर नहीं चुकाए जा रहे हैं, उद्योग समूहों और बड़े व्यापारिक संस्थानों द्वारा। ऐसे ऋणों की संख्या निरंतर बढ़ रही है और यह प्रश्न पिछले दो-तीन दशकों में कई बार दोनों सदनों में उठा है। देश चिंतित है। पर कोई सुधार आता दिखाई नहीं पड़ रहा है। बैंकों की व्यवस्था चरमरा रही है। एक बार जब डॉ. मनमोहन सिंह वित्तमंत्री थे, तब राज्यसभा में हमने अनुरोध किया था कि कम-से-कम ऐसे व्यक्तियों, उद्योगपतियों, व्यवसायियों के नाम प्रकाशित किए जाएँ, ताकि देश जान सके कि कौन देनदार हैं, जो अपने वादे से मुकर रहे हैं। दूसरे, रोक लगानी चाहिए ऐसे कर्जदारों पर, ताकि वे एक बैंक के कर्जे का भुगतान कर नहीं रहे हैं और दूसरे बैंकों से अपने संबंध बनाकर और कर्ज लेने लगते हैं। आखिरकार बैंकों में पैसा जनता का है, उसे सुरक्षित रखने का दायित्व बैंकों का है। इस समय जो कोताही हो रही है, उसे नियंत्रित करना जरूरी है। डॉ. मनमोहन सिंह का उत्तर था कि इससे देश की आर्थिक प्रगति पर कुप्रभाव पड़ेगा। इस समय नीरव मोदी और चौकसी, जिनके व्यापारिक संबंध पंजाब नेशनल बैंक और अन्य बैंकों से थे, उसमें जो धोखाधड़ी हुई, उसके कारण नानपेइंग लोन्स, यानी ऐसे कर्ज, जिनका भुगतान नहीं हो रहा है, और न संभावना ही है, इनकी चर्चा दिन-प्रतिदिन टी.वी. और समाचार-पत्रों में बड़े जोर-शोर से हो रही है। विजय माल्या का भी बैंकों के कर्जे का मामला पहले ही जानकारी में आ चुका था। किंतु इस आर्थिक देनदारी के मामले का विशद रूप में राजनीतीकरण हो गया है। ऐसे राजनीतिक गरम के माहौल में आर.बी.आई. के पूर्व गवर्नर रघुराज राजन की टिप्पणी का एक विशेष महत्त्व है। वे कुशल अर्थशास्त्री हैं। २००८ का विश्वव्यापी आर्थिक संकट, जो अमेरिका में प्रसिद्ध संस्थान लेहमैन ब्रदर्स के दिवालिया हो जाने के बाद प्रारंभ हुआ और उसका प्रभाव अमेरिका तक सीमित नहीं रहा। दूसरे देश और भारत भी उसकी चपेट में आए। यह मंदी का दौर अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इस आर्थिक मंदी की संभावना के बारे में रघुराजन ने चेतावनी दी थी। ऐसे अनुभवी और सुविज्ञ अर्थशास्त्री की टिप्पणी अत्यंत विचारणीय मानी जानी चाहिए। वित्तीय वर्ष २०१८ में बैंकों के नॉनपेंइग कर्जे, यानी जिनकी अदायगी की संभावना नहीं है, १०.३ लाख करोड़ रुपए हो गई। बैंकों ने जो धनराशि कर्ज के तौर पर दी, उसका यह ११.२ प्रतिशत है। संदेहास्पद कर्जों का यह एक बड़ा भाग है। यही नहीं, बैंकों को २०१७-१८ में १.४४ लाख करोड़ रुपए राइट ऑफ करना पड़ा, यानि इसकी अदायगी की संभावना नहीं है। इसे 'खराब लोन' कहते हैं। इसी कारण किसान और संगठन सरकार को उलाहना देते हैं कि जब बड़े व्यापारियों और उद्योगपतियों का कर्जा माफ हो सकता है तो हमारा क्यों नहीं? देश के सामने यह एक विकट परिस्थिति है। समय-समय पर सरकारों ने कुछ कदम उठाए, पर वे पूर्ण रूप से सफल नहीं हुए। यह कहना भी सही नहीं है कि यह समस्या एन.डी.ए. सरकार के समय पैदा हुई है। यह बीमारी पुरानी है और उसका इलाज समय से पूरा नहीं हुआ, अतएव इस विकट रूप में अब प्रकट हो रही है।

रघुराम राजन ने इस संकट के पैदा होने के कई कारण बताए हैं। एक है, चूँकि २००६-०८ में आर्थिक प्रगति अच्छी, कुछ इन्फ्रास्ट्रक्चर समय से पूरा हो गया और आशावादिता बहुत बढ़ गई तथा बैंक खुले हाथ लोन देने लगे बिना उचित जाँच-पड़ताल के कि जो प्रोजेक्ट बना है, वह भविष्य में व्यवहार्य है या नहीं। दूसरा कारण बताया कि विश्व्यापी आर्थिक संकट के कारण उत्पादन में कमी आई, क्योंकि माँग में नर्मी आ गई। तीसरा कारण रहा कि जो सरकार की ओर से आवश्यक प्रोजेक्ट के लिए फैसले चाहिए, उनमें विलंब हुआ। फिर जब देरी हुई तो जो promoter (संवर्धक), परियोजना लाए थे, उनके उत्साह में कमी आ गई। बैंकों की दिलचस्पी में भी कमी आई, क्योंकि स्वयं अपनी धनराशि और लगाने के लिए प्रोत्साहक भी आनाकानी करने लगे। आवश्यकता है, समय से सरकारी निर्णय लेने की प्रणाली में। और bankrupty code अथवा दिवालिया बनने के पहले बैंकों के पास प्रमोटर या प्रोत्साहक पर किसी प्रकार के दवाब देने का कोई साधन नहीं था। डराना-धमकाना संभव नहीं था। इसके अतिरिक्त अनुचित या बदनीयती और भ्रष्टाचार कारण हो सकते हैं। यह अवश्य है कि बैंकर्स अति आत्मविश्वास में रहे और जितनी सख्त जाँच होनी चाहिए, वह नहीं हुई। ऋण स्वीकार करने के बाद बैंकर्स की कार्यकुशलता में कमी रही। प्रोजेक्ट के कठिनाई में होने पर और संवर्धक की नीयत साफ न होने पर भी अतिरिक्त कर्ज दिया गया इस बहाने कि कुछ और सामान लाने की आवश्यकता है। बैंकों के बोर्डों और खोजी एजेंसियों को संदेहप्रद या खराब कर्ज के पैटर्न या डिजाइन को देखना चाहिए तथा जो बैंकों के अधिकारी हैं, उनकी जायदाद परिसंपति की जाँच होनी चाहिए। तभी निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार था और कितना था! सबसे बड़ी बात रही है व्यवस्था या सिस्टम की असफलता की कि एक भी धोखेबाज को चिह्नित और पकड़ा न जा सका। रिजर्व बैंक में रघुराजन ने एक मॉनिटरिंग सिस्टम की शुरुआत की थी। उनका कहना है

कि उन्होंने एक हाई प्रोफाइल मामलों की सूची प्रधानमंत्री कार्यालय को भेजी थी कि रिजर्व बैंक और सरकार मिलकर कुछ के खिलाफ कानूनी काररवाई करें। आगे क्या हुआ, उसकी जानकारी उन्हें नहीं है। उनका कहना है कि वैकरप्टसी कोड के बाद बहुत से नादेहंदा कर्जवाले बार-बार छोटे-छोटे मुद्दे उठाकर अदालतों का सहारा लेते हैं। अदालतों के इन मामलों में अधिक हस्तक्षेप से बचना चाहिए। उनका यह भी कहना है कि रिजर्व बैंक को, जब आशावादी वातावरण में लोन दिए जा रहे थे तो उस समय अधिक सावधानी बरतने की चेतावनी देनी थी। इस तरह की स्थिति फिर पैदा न हो उसके लिए उन्होंने व्यवस्था, कार्यप्रणाली, बैंकों को अधिक पेशेवर या प्रोफेशनल बनाने की सिफारिश की है। कार्यकर्ताओं की क्षमता तथा प्रोजेक्ट के इवैल्युएशन (आकलन) करने की कुशलता में बढ़ोतरी होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि पब्लिक सेक्टर के बैंकों के प्रबंधन में सुधार होने चाहिए और सरकारी प्रभाव से उन्हें दूर रखना चाहिए। बैंकों के सर्वोच्च अधिकारी का स्थान कभी भी रिक्त नहीं रहना चाहिए। उनका सुझाव है कि बैंकों के बोर्ड का गठन सरकार की जगह एक स्वतंत्र बोर्ड को करना चाहिए। नायक कमेटी की रिपोर्ट का अनुकरण सरकार गंभीरता से लेना चाहिए। अन्य सुझाव हैं, यहाँ सबके विस्तार में कहा जाना आवश्यक नहीं है।

आगे ऐसी स्थिति पैदा न हो, रघुराम राजन ने इसके विषय में चेतावनी दी है। ये ध्यान देने योग्य हैं। उन्होंने कर्ज बाँटने के लिए लक्ष्य रखने का विरोध किया है। वे कर्ज माफ करने की प्रथा के खिलाफ हैं। उनका कहना है कि इससे क्रेडिट कल्चर बिगड़ता है, जनता की मानसिकता दूषित होती है। रघुराम राजन ने तीन स्रोतों की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि वे भविष्य में खतरे का कारण बन सकते हैं। वे हैं—मुद्रा लोन, जो छोटे, अति छोटे उद्यमियों को दिए जा रहे प्रधानमंत्री की मुद्रा योजना के अंतर्गत तथा किसान क्रेडिट कार्ड के द्वारा किसानों को कर्ज तथा तीसरा है—क्रेडिट गारंटी स्कीम, जो स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया के अंतर्गत है। ये योजनाएँ आवश्यक हैं, यदि हम साधनहीन वर्गों को रोजगार देना चाहते हैं और उनका सशक्तीकरण चाहते हैं, तो इन योजनाओं द्वारा संभव है। पर इनकी निगरानी ढंग से होनी चाहिए, समय-समय पर इन योजनाओं का पुनरावलोकन होना चाहिए। ऐसा हो सकता है कि चूँकि ये लोन छोटे हैं, बैंकों का ध्यान उधर नहीं रहे या उनके पास निगरानी के साधन न हों, तब वे बैंक व्यवस्था के लिए संभावित खतरा हो सकते हैं। ये योजनाएँ एन.डी.ए. सरकार की विशेष योजनाएँ हैं। अकेले मुद्रा कर्ज वितरण के अंतर्गत ६.३७ लाख रुपए वितरित हो चुके हैं, जो कुल कर्ज वितरण का ७ प्रतिशत है। ये कर्ज छोटे हैं और इनका उद्देश्य है fund the unfunded अथवा जिनके पास आवश्यक धन नहीं है, उनको धन उपलब्ध कराया जाए। ये एक लाख से दस लाख तक के छोटे कर्ज हैं। उनकी वापसी और वसूली के विषय में चौकस रहना जरूरी है। छोटे कर्ज भी बैंक लोन में परिवर्तित हो सकते हैं, और यदि उनकी संख्या में बढ़ोतरी होती है तो वह भी बैंकों के लिए एक समस्या बन सकती है। बैंकों को इस बात का ध्यान रखना है, वरना ये भी खतरे का सबब हो सकते हैं। सरकार व वित्त मंत्रालय का दायित्व बनता है कि वे इनकी निगरानी सूक्ष्म दृष्टि से करें, ताकि ये लाभकारी योजनाएँ गले की हड्डी न बन जाएँ। इनकी मॉनिटरिंग की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

शीर्ष न्यायालय का धारा ३७७ पर निर्णय

भारतीय दंड संहिता है (आई.पी.सी.) के सेक्शन (धारा) ३७७ को शीर्ष न्यायालय ने अपराध-विहीन कर दिया है। इसका अर्थ है कि यदि अपनी सहमति से एक ही लिंग का कोई भी, चाहे वे पुरुष हों अथवा महिला, संबंध रख सकते हैं और यह कोई अपराध नहीं है। दिल्ली उच्च न्यायालय ने यह निर्णय जुलाई २००९ में लिया था, किंतु शीर्ष न्यायालय की एक पीठ ने उसे निरस्त कर दिया था। लेकिन अब शीर्ष न्यायालय के पाँच न्यायधीशों की पीठ ने, जिसमें प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा, न्यायाधीश नरीमन, न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ एवं न्यायाधीश इंदु मल्होत्रा ने शीर्ष न्यायालय के निर्णय को निरस्त कर दिया। चार जजों ने अपने-अपने फैसले अलग-अलग तर्कों के साथ लिखे, लेकिन निष्कर्ष एक ही कि धारा ३७७ असंवैधानिक है। जो मौलिक अधिकार संविधान ने आर्टिकल १४, १९ और २१ द्वारा नागरिक को दिए हैं, उनका हनन धारा ३७७ द्वारा होता है। यह समता और निजता का उल्लंघन करता है। संक्षेप में हर एक को अपने निजी जीवन को अपने ढंग से जीने का अधिकार है। समलैंगिक आकर्षण कोई अपराध नहीं है, अपनी-अपनी रुचि का प्रश्न है। पिछले दिनों निर्णय के बाद टी.वी. और समाचार-पत्रों में इस पर काफी वाद-विवाद हुआ, पर अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। किंतु आगे आपसी विवाह अथवा गोद लेने की समस्याएँ आएँगी और कई कानूनों में परिवर्तन करने होंगे। एक वर्ग ने तो इस फैसले को संवैधानिक क्रांति की संज्ञा दी है। कुछ लोगों ने कहा है कि पहली बार स्वतंत्रता का आभास हुआ है। अंग्रेजी समाचार-पत्रों में फैसले के समर्थन में बड़े जोश-खरोश के साथ लेख आ रहे हैं। कहा जा रहा है कि यह एक नए आधुनिक भारत का आभास कराता है। इसे एक अत्यंत गतिवादी और उन्नतिशील कदम बताया है। कुछ टिप्पणीकार शिखंडी, मोहनी अवतार तथा कुछ पुराने स्थापत्य और चित्रकला का सहारा भी निर्णय के समर्थन में लेते हैं। अब यह विवाद व्यर्थ है, क्योंकि संविधान के अनुसार शीर्ष न्यायालय का फैसला सर्वोपरि होता है, सर्वमान्य होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा मुसलिम और ईसाई धर्म गुरुओं ने इसे अनुचित कहा है। उनका कहना है कि यह प्रकृति की अपेक्षा के प्रतिकूल है। यौन संबंध का मुख्य उद्देश्य प्रजनन है, जो यहाँ संभव नहीं है। ७२ देशों में समलैंगिक संबंध कानून-विरोधी माने जाते हैं। दूसरी तरफ एक बड़ी संख्या ऐसे देशों की है, जहाँ इसे वैध माना गया है और यह कोई अपराध नहीं है। विरोध करनेवालों का कहना है कि इससे एड्स जैसी भयंकर बीमारियाँ बढ़ सकती हैं, जो लाइलाज हैं। एक बेंगलुरी महिला टिप्पणीकार एहसास नायाब ने आश्चर्य प्रकट किया है कि एक महिला जज ने भी शीर्ष न्यायालय के फैसले में अपनी सहमति दी। उनके अनुसार यह फैसला किसी धर्म से संबंधित नहीं है, यह पूरे समाज की चिंता का विषय है और सबको विरोध करना चाहिए। फिलहाल ये सब विवाद निरर्थक हैं। शीर्ष न्यायालय ने अपना निर्णय

दे दिया है, जो अब देश का कानून है। यू.एन.ओ. ने भी इस फैसले का स्वागत किया है। पूरा मामला मानव के मौलिक अधिकारों से जुड़ा हुआ है। भारत सरकार ने अदालत में इस विषय पर अपनी कोई राय नहीं दी, तटस्थ रही। पूरा मामला न्यायालय के विवेक पर छोड़ दिया। प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा एवं जस्टिस चंद्रचूड़ ने इसकी आलोचना की है, और कहा है कि सरकार ने अपना दायित्व न्यायपालिका पर छोड़ दिया। उनका कहना है कि यह निर्णय तो कानून द्वारा विधायिका को करना चाहिए। दो मुद्दे सामने आएँग—पहला यह कि इस फैसले का प्रभाव कई अन्य कानूनों पर पड़ेगा, उनमें परिवर्तन कितनी शीघ्रता से होता है! दूसरा यह कि समाज की मानसिकता में परिवर्तन कैसे और किस प्रकार से हो, ताकि पूरा समाज इस दूरगामी फैसले को दिल से स्वीकार करे। जब कानून और समाज की मानसिकता में अधिक दूरी होती है तो कानून का अनुपालन सदैव ठीक ढंग से हो नहीं पाता है। कानून और समाज की मानसिकता में सामंजस्य आवश्यक है।

सरदार पटेल स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

सरदार पटेल की जन्मतिथि ३१ अक्तूबर को मनाई जाएगी। इस वर्ष सरदार पटेल की मूर्ति का अनावरण गुजरात में होगा। यह दुनिया की सबसे ऊँची मूर्ति होगी, अमेरिका की स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी से भी अधिक ऊँची। समुद्री तट पर स्थापित इस मूर्ति का नामकरण 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' अथवा 'एकता की मूर्ति' के रूप में किया गया है। दूर से या हवाई जहाज से यह मूर्ति दिखाई देगी। यह एक प्रेरणादायक कदम होगा। सरदार पटेल ने अपने पूरे राजनैतिक जीवन में भारत की एकता का चित्र सँजोया था और उसकी पूर्ति मूर्ति की स्थापना के साथ होगी। हमारे धर्मशास्त्रों में जिस भारत की कल्पना है, उसको मूर्तिमान करने का श्रेय सरदार पटेल को है। उन्होंने केवल देशी राज्यों का विलयन ही नहीं कराया, १९४७ के भाषणों के पहले की उनकी स्पीचों को पढ़ते हैं, तब पता चलता है कि किस प्रकार वे सदैव सचेत रहे कि उस समय की विदेशी सरकार द्वारा जिससे स्वतंत्र भारत की एकता को धक्का लगे, वे चुपचाप बिना आत्मप्रचार के प्रयत्न करते रहे कि जो अवधारणा हमारे शास्त्रों में भारत की रही है, वह पूर्ण हो। उन्होंने अपने निजी हित को कभी महत्त्व नहीं दिया। संघटन द्वारा बार-बार कांग्रेस अध्यक्ष होने का प्रस्ताव होने पर भी उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया। १९४६ में भी यही हुआ। कांग्रेस के प्रांतीय संघटनों में तीन को छोड़कर सभी ने सरदार पटेल का समर्थन किया। उस समय गांधीजी ने जवाहरलाल नेहरू से पूछा कि वे क्या चाहते हैं? नेहरूजी चुप रहे। गांधीजी उनकी इच्छा समझ गए और गांधीजी के कहने पर सरदार पटेल ने कांग्रेस के अध्यक्ष के पद के लिए अपने दावे को वापस ले लिया था। ऐसे थे सरदार पटेल, जिनका जन्मदिवस ३१ अक्तूबर को मनाया जाएगा। देश उनके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकता। यह सर्वविदित है कि जो उस समय कांग्रेस का अध्यक्ष हो, वही देश का भावी प्रधानमंत्री बनेगा। वे देश का विभाजन नहीं रोक सके, किंतु जितने भी षड्यंत्र ब्रिटिश नौकरशाही और फौजी अधिकारी कर रहे थे, उसको असफल बनाने में वे हमेशा चौकस रहे। गांधीजी के १९४२ के आंदोलन की सफलता के लिए भी वे भीतर-ही-भीतर चुपचाप कार्य करते रहे। गांधीजी की नीति से असहमत होते हुए भी गांधीजी के आदेश को मान लेते थे। वे अदम्य आत्मविश्वास और साहस के प्रतीक थे। देशसेवा में अपने आपको बलिदान कर दिया, बैरस्टरी छोड़कर फकीर बन गए और अंत तक फकीर ही रहे। अंतरराष्ट्रीय सिंड्रोम से वे हमेशा दूर रहे। उनके लिए देश परिवार था। इन्हीं दिनों प्रकाशित हिंडोल की पुस्तक 'सरदार पटेल ऐंड हिज आइडिया ऑफ इंडिया' सरदार पटेल के जीवन के कई अनछुए अथवा जिनके विषय में अधिक जानकारी नहीं है, उनको उद्धृत किया है। पुस्तक अत्यंत पठनीय है। जन्मदिवस के अवसर पर सरदार पटेल की स्मृति को सादर नमन!

हमें प्रसन्नता है कि जून मास के साहित्य अमृत के संपादकीय में कुछ टिप्पणियों के विषय में असहमति प्रकट की है। साहित्य अमृत विचार-विमर्श में विश्वास करता है। पूरा जीवन ही सीखने और कहीं त्रुटि है उसको सुधारने का है। गाजियाबाद से विकासजी ने इरफान हबीब की किताब के बारे में जो लिखा है, उससे अपनी नाराजगी प्रकट की है। इस पुस्तक के रचयिता इरफान हबीब अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर मार्कसिस्ट इतिहासकार नहीं हैं, जिनका अरुण शौरी ने अपनी पुस्तक 'Eminant Historians' में पर्दाफाश किया है। जिस पुस्तक का हमने जिक्र किया है, उसके संकलनकर्ता इरफान हबीब दूसरे व्यक्ति हैं। वे अन्यत्र प्रोफेसर रहे हैं। प्रशंसा इस कारण थी कि उस विषय पर उन्होंने जो साधारण पाठक को उपलब्ध सामग्री आसानी से नहीं होती है, उसको संगृहीत किया था। वहाँ भी हमने उनकी अपनी कुछ टिप्पणियाँ हैं, उनसे असहमति भी प्रकट की थी। यहाँ एक सा नाम होने के कारण ही भ्रम पैदा हुआ है।

मैनपुरी से श्री के. ब्रह्मानंद तिवारीजी ने कहा है कि संपादक महोदय पढ़ते हैं, उस पर विश्वास कर लेते हैं। ऐसा नहीं है, उनको विश्वास दिलाना चाहेंगे, सीमित विवेक का भी इस्तेमाल करने की कोशिश रहती है, हम उनसे पूर्णतया सहमत हैं कि पुराना नाम कान्यकुंज है। वैसे कन्नौज के इतिहास के रचयिता डॉ. मिश्र ने लिखा है कि वैदिक काल से इस क्षेत्र के अनेक नाम रहे हैं। महाभारत काल में यहाँ महाराज द्रुपद का राज्य था। यह द्रुपद क्षेत्र कहलाता था। यह कहना हमारा मकसद नहीं था कि अरबों ने कन्नौज नगर को नाम दिया। राजस्थान के एक अप्रकाशित नामों की उत्तति विषयक संदर्भ में बात चल रही थी। चूँकि अरबी भाषा में कन्नौज का मतलब धनवान से है, शायद इसलिए वे कन्नौज पर आक्रमण के लिए प्रोत्साहित हुए। स्पष्टता से अपनी बात का प्रस्तुतीकरण नहीं हुआ, इससे यह भ्रांति पैदा हुई। हम तिवारीजी को धन्यवाद देंगे कि उन्होंने इस ओर हमारा ध्यान कुछ रोष के साथ ही सही, आकर्षित किया। त्रुटि हो या अस्पष्टता के कारण भ्रांति पैदा हो, यह हम नहीं चाहेंगे। सुधी पाठकों के ऐसे पत्रों का सदैव हार्दिक स्वागत है। वे ज्ञानवर्धन के सशक्त माध्यम हैं।

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

(त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी)

चारा काटने की मशीन

● उपेंद्रनाथ 'अश्क'

(१४.१२.१९१०—१९.१.१९९६)

रेल की लाइनों के पार इस्लामाबाद की नई आबादी के मुसलमान जब सामान का मोह छोड़ जान का मोह लेकर भागने लगे तो हमारे पड़ोसी लहनासिंह की पत्नी चेतीं।

''तुम हाथ-पर-हाथ धरे नामर्दों की भाँति बैठे रहोगे'', सरदारनी ने कहा, ''और लोग एक-से-एक बढ़िया घर पर कब्जा कर लेंगे।''

सरदार लहनासिंह और चाहे जो सुन लें, परंतु औरत-जात के मुँह से 'नामर्द' सुनना उन्हें कभी गवारा न था। इसलिए उन्होंने अपनी ढीली पगड़ी को उतारकर फिर से जूड़े पर लपेटा; धरती पर लटकती हुई तहमद का किनारा कमर में खोंसा, कृपाण को म्यान से निकालकर उसकी धार का निरीक्षण करके उसे फिर म्यान में रखा और फिर इस्लामाबाद के किसी बढ़िया 'नए' मकान पर अधिकार जमाने के विचार से चल पड़े।

वे अहाते में ही थे कि सरदारनी ने दौड़कर एक बड़ा सा ताला उनके हाथ में दे दिया। ''मकान मिल गया तो उस पर अपना कब्जा कैसे जमाओगे?'' उसने कहा, ''अपना ताला तो लेते जाओ।''

सरदार लहनासिंह ने एक हाथ में ताला लिया, दूसरा कृपाण पर रखा और लाइनें पार कर इस्लामाबाद की ओर बढ़े।

□

खालसा कॉलिज रोड अमृतसर पर पुतली घर के समीप ही हमारी कोठी थी। उसके बराबर एक खुला अहाता था। वहीं सरदार लहनासिंह चारा काटने की मशीनें बेचते थे। अहाते के कोने में दो-तीन अँधेरी सीली कोठरियाँ थीं।

मकान की किल्लत के कारण सरदार साहब वहीं रहते थे। यद्यपि उन्होंने डेढ़-दो हजार रुपए काम से आरंभ किया था, पर लड़ाई के दिनों में (किसानों के पास रुपए का बाहुल्य होने से) उनका काम खूब चमका। रुपया आया तो सामान भी आया और सुख-सुविधा की आकांक्षा भी जगी। यद्यपि प्रारंभ में उस अहाते और उन कोठरियों को पाकर पति-पत्नी बड़े प्रसन्न हुए थे, परंतु अब उनकी पत्नी, जो 'सरदारनी' कहलाने लगी थी, उन कोठरियों तथा उनकी सील और अँधेरे को अतीव उपेक्षा से देखने लगी थी। ग्राहकों को मशीनों की फुरती दिखाने के लिए दिन भर उनमें चारा कटता रहता था। अहाते भर में मशीनों की कतारें लगी थीं। जो भावना-रहित हो अपने तीखे घुरों से चारे के पूले काटती रहती थीं। सरदारनी के कानों में उनकी कर्कश ध्वनि अनवरत हथौड़ों की चोटों-सी लगने लगी। जहाँ-तहाँ पड़े हुए चरी के पूले और चारे के ढेर अब उसकी आँखों को अखरने लगे। सरदार लहनासिंह तो—यद्यपि उनकी पगड़ी और तहमद रेशमी हो गई थी और उनके गले में लकीरदार गबरून की कमीज का स्थान घुटनों तक लंबी बोस्की की कमीज ने ले लिया था—वही पुराने लहनासिंह थे। उन्हें न कोठरियों की तंगी अखरती थी, न तारीकी, न मशीनों की कर्कशता, न चारे के ढेरों की निरीहता, बल्कि वे तो इस सारे वातावरण में बड़े मस्त रहते थे। वे उन सरदारों में से थे, जिनके संबंध में एक सिक्ख लेखक ने लिखा है कि जिधर से पलटकर देख लो, सिक्ख दिखाई देंगे।

कुछ पतले-दुबले हों, यह बात नहीं। अच्छे खासे हृष्ट-पुष्ट आदमी थे और उनकी मर्दुमी के परिणामस्वरूप पाँच बच्चे जोंकों की तरह सरदारनी से लिपटे रहते थे। परंतु यह सरदारनी का ढंग था। उसे यदि सरदार लहनासिंह से कोई ऐसा काम कराना होता, जिसमें कुछ बुद्धि की आवश्यकता हो तो वह उन्हें 'बुद्धू' कहकर उकसाती और यदि ऐसा काम कराना होता, जिसमें कुछ बहादुरी की जरूरत हो तो उन्हें 'नामर्द' का ताना देती। उसका ढंग था तो खासा अशिष्ट, पर रुपया आने और अच्छे कपड़े पहनने ही से तो अशिष्ट आदमी शिष्ट नहीं हो जाता। फिर चाहे सरदारनी को नए धन का मान हो, पर शिष्टता का मान कभी न था।

सरदार लहनासिंह इस्लामाबाद पहुँचे तो वहाँ मार-धाड़ मची हुई थी। उनकी चारा काटने की मशीनें जिस प्रकार भावना-रहित होकर चरी के निरीह पूले काटती थीं, कुछ उसी प्रकार उन दिनों एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के अनुयायियों को काट रहे थे। सरदार लहनासिंह ने अपनी चमचमाती हुई कृपाण निकाली कि यदि किसी मुसलमान से मुठभेड़ हो जाए तो तत्काल उसे अपनी मर्दुमी का प्रमाण दें। परंतु इस ओर जीवित मुसलमान का निशान तक न था। हाँ, गलियों में रक्तपात के चिह्न अवश्य थे; और दूर लूट-मार की आवाजें भी आ रही थीं।

तभी, जब वे सतर्कता से बढ़े जा रहे थे, उनको अपने मित्र गुरदयालसिंह एक मकान का ताला तोड़ते दिखाई दिए।

सरदार लहनासिंह ने रुककर प्रश्नवाचक दृष्टि से उनकी ओर देखा।

''मैं तो इस मकान पर कब्जा कर रहा हूँ।'' सरदार गुरदयाल सिंह ने एक उचटती हुई दृष्टि अपने मित्र पर डाली और निरंतर अपने काम में लगे रहे।

तब सरदार लहनासिंह ने ढीली होती हुई पगड़ी का सिरा निकालकर पेच कसा और अपने मित्र के नए मकान की ओर देखा। उसे देखकर उन्हें अपने लिए मकान देखने की याद आई और वे तत्काल बढ़े। दो-एक मकान छोड़कर उन्हें सरदार गुरदयाल सिंह की अपेक्षा कहीं बड़ा

और सुंदर मकान दिखाई दिया, जिस पर ताला लगा था। आव देखा न ताव, उन्होंने गली से एक बड़ी सी ईंट उठाई और दो-चार चोटों में ही ताला तोड़ डाला।

वह मकान यद्यपि बहुत बड़ा न था, परंतु उनकी उन कोठरियों की तुलना में तो स्वर्ग से कम न था, कदाचित् किसी शौकीन क्लर्क का मकान था, क्योंकि एक छोटा सा रेडियो वहाँ था और ग्रामोफोन भी। गहने-कपड़े न थे और ट्रंक खुले पड़े थे। मकानवाला शायद मार-धाड़ से पहले शरणार्थी कैंप या पाकिस्तान भाग गया था। जो सामान वह आसानी से साथ ले जा सका था, ले गया। फिर भी जरूरत का काफी सामान घर में पड़ा था। यह सब देखकर सरदार लहनासिंह ने उलटी कलाई मुँह पर रखी और जोर से बकरा बुलाया। फिर तहमद की कोर को दोनों ओर से कमर में खोंसा और सामान का निरीक्षण करने लगे। जितनी काम की चीजें थीं, वे सब चुनकर उन्होंने एक ओर रखीं, अनावश्यक उठाकर बाहर फेंकीं तथा वही बड़ा ताला, जो वे घर से लाए थे, मकान में लगाया। वह गुरदयालसिंह को बुलाकर समझाया कि उनके मकान का खयाल रखें और स्वयं अपना सामान लाने चले कि मकान पूर्ण रूप से उनका हो जाए।

□

जब वे अपने घर पहुँचे तो उन्हें खयाल आया कि सामान ले जाएँगे कैसे? इस भगदड़ में ताँगा-इक्का कहाँ? तब अहाते से साइकिल लेकर वे अपने पुराने मित्र रामधन ग्वाले के यहाँ पहुँचे, जिसकी बैलगाड़ी पर (ट्रकों पर लाने, ले जाने से पहले) वे अपनी चारा काटने की मशीनें लादा करते थे। मिन्नत-समाजत कर, दोहरी मजदूरी का लालच देने के बाद वे उसे ले आए।

जब सारा सामान गाड़ी में लद गया और वे चलने को तैयार हुए तो सरदारनी ने साथ चलने का अनुरोध किया। तब उन्होंने उस नेक-बस्त को समझाया कि वहाँ के दूसरे सरदार अपनी सिंहनियों को बुला देंगे तो वे भी ले जाएँगे। वे लाख सिंहनियाँ सही—सरदार लहनासिंह ने अपनी पत्नी को समझाया—पर हैं तो औरतें ही और दंगे-फसाद में औरतों को ही अधिक सहना पड़ा है। फिर उन्होंने समझाया कि अहाते का भी तो खयाल रखना चाहिए। शरणार्थी धड़ाधड़ आ रहे हैं, कौन जाने यहाँ घर खुला देखकर जम जाएँ।

सरदारनी मान गई, परंतु जब सरदार लहनासिंह चलने लगे तो उसने सुझाया कि वे सामान के साथ चारा काटने की एक मशीन ले जाकर अवश्य अपने नए घर में स्थापित कर दें, ताकि उनकी मलकियत में किसी प्रकार का संदेह न रहे और सभी को पता चल जाए कि यह मकान चारा काटने की मशीनोंवाले सरदार लहनासिंह का है।

सरदारनी का यह प्रस्ताव सरदारजी को बहुत अच्छा लगा।

यद्यपि बैलगाड़ी में और स्थान न था, परंतु सामान पर सबसे ऊपर चारा काटने की एक मशीन किसी-न-किसी प्रकार रखी गई, गिर न जाए, इसलिए रस्सों से उसे कसकर बाँधा गया और सरदार लहनासिंह अपने नए घर पहुँचे। गली में ही उन्होंने देखा कि सरदार गुरदयालसिंह की सिंहनी और बच्चे तो नए मकान में पहुँच भी गए हैं। तब उन्हें लगा कि उनसे भारी गलती हो गई है। उन्हें भी अपनी सिंहनी को तत्काल ले आना चाहिए। यदि पतला-दुबला गुरदयाल अपनी सिंहनी को ला सकता है तो वे क्यों नहीं ला सकते!

यह सोचना था कि सारे सामान को उसी प्रकार ड्योढ़ी में रख, वही बड़ा सा ताला लगा उन्होंने गुरदयाल सिंह से कहा कि भाई जरा खयाल रखना, मैं भी अपनी सिंहनी को ले आऊँ, संगत हो जाएगी।

और उसी बैलगाड़ी पर सरदार लहनासिंह उलटे पाँव लौटे। घर पहुँचकर उन्होंने अपनी सरदारनी को बच्चों के साथ तत्काल तैयार होने के लिए कहा।

परंतु एक-डेढ़ घंटे के बाद जब अपने बीबी-बच्चों सहित सरदार लहनासिंह इसलामाबाद पहुँचे तो उनके नए मकान का ताला टूटा पड़ा था। ड्योढ़ी से उनका सामान गायब था। केवल चारा काटने की मशीन अपने पहरे पर मुस्तैदी से जमी हुई थी। घबराकर उन्होंने गुरदयाल सिंह को आवाज दी, परंतु उनके मकान में कोई और सरदार विराजमान थे। उनसे पता चला कि गुरदयाल सिंह दूसरी गली के एक और अच्छे मकान में चले गए हैं। तब सरदार लहनासिंह कृपाण निकालकर अपने मकान की ओर बढ़े कि देखें चोर और क्या-क्या ले गए हैं। ड्योढ़ी में उनके प्रवेश करते ही दो लंबे-तगड़े सिक्खों ने उनका रास्ता रोक लिया, बैलगाड़ी पर सवार उनके बीवी-बच्चों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि यह मकान शरणार्थियों के लिए नहीं, इसमें थानेदार बलवंत सिंह रहते हैं।

थानेदार का नाम सुनकर सरदार लहनासिंह की कृपाण म्यान में चली गई और पगड़ी कुछ और ढीली हो गई।

''हुजूर, इस मकान पर तो मेरा ताला पड़ा था। मेरा सारा सामान···''

''चलो-चलो बाहर निकलो? अदालत में जाकर दावा करो। दूसरे के सामान को अपना बताते हो।''

और उन्होंने सरदार लहनासिंह को ड्योढ़ी से ढकेल दिया। तभी लहनासिंह की दृष्टि चारा काटने की मशीन पर गई और उन्होंने कहा, ''देखिए, यह मेरी चारा काटने की मशीन है, किसी से पूछ लीजिए, मुझे यहाँ सभी जानते हैं।''

परंतु शोर सुनकर अपने 'नए' मकानों से जो सरदार या लाला बाहर निकले, उनमें एक भी परिचित आकृति लहनासिंह को न दिखाई दी।

''यों क्यों नहीं कहते कि चारा काटने की मशीन चाहिए,'' उनको धकेलने वाले एक सिक्ख ने कहा और वह अपने साथी से बोला, ''सुट्ट ओ करतारसिंहा, मशीन नूँ बाहर···। गरीब शरणार्थी हण। असहाँ इह मशीन साली की करनी ऐं।''

और दोनों ने मशीन बाहर फेंक दी।

दो ढाई-घंटे के असफल बावेले के बाद जब सरदार लहनासिंह, रात आ गई जानकर वापस अपने अहाते को चले तो उनके बीवी-बच्चे पैदल जा रहे थे और बैलगाड़ी पर केवल चारा काटने की मशीन लदी हुई थी।

खोंइछा में मॉरीशस

● ऋता शुक्ल

दक्षिण भारतीय हिंदी लेखिका ललितांबा दीदी का फोन आया था। मैं विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए मॉरीशस जा रही हूँ। और भी कई लोग जा रहे हैं। आप चलें तो अच्छा लगेगा।

मैंने सकुचाते हुए पूछा था—दीदी, मार्ग व्यय, ठहराव इत्यादि?

एक अच्छी-खासी राशि का अनुमान था। मेरी आँखों के सामने संस्कार पब्लिक स्कूल, जाजपुर के बालक-बालिकाओं के चेहरे उभर आए थे—'प्रशांत, तुम्हारी पोशाक गंदी क्यों है? कल दूसरी साफवाली पहनकर आना।'

'बड़ी माँ, दूसरी कमीज नहीं है।'

'और भूमि, यश, विक्रम, तुम तीनों के जूते कहाँ गए?'

'जूते फट गए। माँ कहती है, अगली पगार मिलेगी तब···'

मेरे भीतर त्वरित निर्णय जगा था—इतने पैसों की व्यवस्था इन बच्चों के लिए कर पाऊँ तो···

मॉरीशस भ्रमण की बात पानी का बुद्‌बुद् बनकर विलीन हो गई थी, मेरा जाना संभव नहीं है।

लगभग एक महीने के बाद, भारत सरकार के विदेश मंत्रालय से पत्र प्राप्त हुआ था—आपको ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लेना है। भारत भर के बीस हिंदी विद्वान् विश्व हिंदी सेवा सम्मान के लिए चयनित किए गए हैं, उनमें आपका नाम भी है। कुछ औपचारिकताएँ पूरी करनी होंगी।

देवालय में बैठी देवी माँ की प्रतिमा मंद स्मित थी—

यं यं चिन्तयति कामं, तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।

मेरी प्रपितामही के नैहर के कई मरद मानुस बलिया गाजीपुर से मॉरीशस ले जाए गए थे। उन लोगों के विषय में वे ढेर सारी बातें बताया करती थीं। मेरे मन में एक ललक बचपन से समाई हुई थी—

एक बार मॉरीशस जा पाती! अपने गिरमिटिया पुरखों के स्मृति चिह्नों को देख पाती, अग्रज अभिमन्यु अनत की प्राण-वेदना को अपने भीतर अनुभूत कर पाती।

१६ अगस्त, २०१८, एयर मॉरीशस की उड़ान जे.के. ७७४५ सभी प्रतिनिधियों के लिए सुनिश्चित थी। रात्रि एक बजे दिल्ली के अंतरराष्ट्रीय विमानपत्तन पर सभी एकत्र होने लगे। मन को आर्द्र करनेवाला दुस्सह शोक संवाद मिला—भारतरत्न, हिंदी के अनन्य सेवी श्री अटल बिहारी वाजपेयी दिवंगत हो गए! इक्यावन कविताओं वाले उनके संकलन की समीक्षा मैंने लिखी थी। उस समीक्षा को पढ़कर उन्होंने मेरे पास पत्र लिखा था।

तय हुआ, उद्‌घाटन सत्र माननीय अटलजी के लिए श्रद्धांजलि का सत्र होगा।

सुप्रसिद्ध कथाकार। 'अरुंधती', 'दंश', 'अग्निपर्व', 'समाधान', 'बाँधो न नाव इस ठाँव', 'शेषगाथा', 'कनिष्ठा उँगली का पाप', 'कितने जनम वैदेही', 'कासों कहों मैं दरदिया' तथा 'मानुस तन' कृतियाँ चर्चित। 'क्रौंचवध तथा अन्य कहानियाँ' कृति भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कृत। इसके अलावा लोकभूषण सम्मान आदि विशिष्ट पुरस्कारों से सम्मानित।

इस ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन का केंद्रीय विषय था—'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति।'

गोस्वामी तुलसीदास नगर का स्वामी विवेकानंद सभागार सुरुचिपूर्ण ढंग से सजा हुआ अतिथियों की अभ्यर्थना के लिए प्रस्तुत था। हिंदी माँ के साधकों का अनूठा सम्मिलन! भारतीय और मॉरीशस के महत्त्वपूर्ण संस्थानों द्वारा हिंदी के सांस्कृतिक आयाम से जुड़ी प्रदर्शनी की शृंखला का विशिष्ट महत्त्व था। हिंदी की आंतरिक समृद्धि का स्रोत भारतीय अध्यात्म और गरिमा बोध दुर्लभ ग्रंथों के रूप में वहाँ साकार था। भारत से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, हिंदी अकादमी, प्रकाशन विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रकाशन मंत्रालय, डायमंड पॉकेट बुक्स, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, प्रभात प्रकाशन सहित अनेक संस्थानों के स्टॉल सजे थे। मॉरीशस से कला संस्कृति मंत्रालय, विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान, हिंदी प्रचारिणी सभा, रामायण सेंटर सहित अनेक साहित्यिक, सामाजिक संस्थानों के क्रियाकलापों का एकत्र प्रमाण इस मेले में विद्यमान था। किसे देखूँ, किस-किस को गहूँ वाली मन:स्थिति थी।

मॉरीशस के सर शिवसागर रामगुलाम विमानपत्तन पर विश्व हिंदी सम्मेलन का विशाल विज्ञापन पट, स्थान-स्थान पर सूचना एवं सहयोग केंद्र, वैमानन अधिकारियों और व्योम बालाओं का भावभीना आतिथ्य, बड़ों के लिए विनम्रता भरा सम्मान भाव! हमारे भोजपुरिया गाँवों की संस्कृति यहाँ तरोताजा दिखाई दी।

कुल चार दिनों का प्रवास और देखने, समझने, अनुभव करने के लिए कितना कुछ! पहला दिन, गंगा तालाब का सुरम्य दृश्य और गंगा मइया की महाआरती में सम्मिलित होने का सुयोग, ऋषिकेश से पधारे पुरोहितजी का दृप्त मंत्रोच्चार। मॉरीशस का गंगा तालाब घाट काशी के मेरे प्रिय अस्सी घाट का स्मरण दिला रहा था। मेरी पितामही गंगा मइया की स्तुति गाती भाव विभोर हो उठती थीं। उनके सुरीले कंठ से कढ़े

भोजपुरी सोहर के बोल मेरी चेतना में गूँजने लगे थे—

गंगाजी के ऊँच अररिया, तिरियवा एक तप करे हो

ए गंगा मइया अपनी लहर हमें देइत त हम डूबि मरितीं हो।

नि:संतान स्त्री की कोख भरनेवाली गंगा मइया के प्रति अटूट श्रद्धा भाव मॉरीशस के लोगों में है और इस गंगा तालाब का जल सर्वतोभावेन प्रदूषण रहित है।

हिंदी की संवेदनशील लेखिका संप्रति गोवा की राज्यपाल माननीया मृदुला सिन्हा, पाटशाणीजी सहित अनेक गण्यमान्य हिंदीसेवी यजमान की भूमिका में थे। ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन का शुभ प्रतीक चिह्न बनानेवाला इंदौर का युवा रुचित विस्मय सुख से पूरित था। मैंने धीरे से उसके कंधे पर हाथ रखा था, 'देख रहे हो, यही तो हिंदी माँ का वैभव है।' इस गंगा तालाब पर शताब्दियों से संरक्षित, संवर्धित भारतीय संस्कृति की जगमगाहट है। याद आईं महीयसी महादेवी—

यह मंदिर का दीप, इसे नीरव जलने दो।

उद्घाटन वाले दिन हिंदी की सुपरिचित भारतीय लेखिका कुमुद शर्मा और मॉरीशस की हिंदी रचनाकार ने शालीनतापूर्वक मंच सँभाला। विश्व हिंदी सम्मेलन के दो शुभ प्रतीक चिह्न, भारत का मयूर और मॉरीशस का डोडो दोनों मिले, एक जोड़ एक ग्यारह हो गए। इतनी हृदयग्राही कल्पना किसी भारतीय युवा शिल्पी की ही हो सकती थी।

भारतीय नारी संस्कृति की गरिमा से भरी-पूरी श्रीमती सुषमा स्वराज मंचासीन गण्यमान्य अतिथियों के बीच बैठी अपनी शालीनता, अपने सौहार्द का परिचय दे रही थीं। मॉरीशस के प्रधानमंत्री श्री प्रवीण जगन्नाथ, मानव संसाधन मंत्री श्रीमती लीला देवी दूकन लछुमन सहित महामहि केशरी नाथ त्रिपाठी, श्रीमती मृदुला सिन्हा, श्री एम.जे. अकबर जनरल वी.के. सिंह, श्री किरण जिजिजू आदि ने उद्घाटन सत्र का भार सँभाला। अब बारी थी हिंदी माँ के लाडले बेटे अटलजी के भाव-विह्वल स्मृति तर्पण की! पुण्यात्मा की चिर शांति के लिए सजल मौन! और स्वदेशी, विदेशी विद्वानों द्वारा हिंदी की अमर विभूति अटलजी का पुण्य स्मरण। यादों के कितने ही झरोखे खुलते चले गए, समय कैसे बीता, पता ही नहीं चला। स्क्रीन पर हँसते, मुसकराते काव्यपुरुष की विविध भाव भंगिमाएँ! विश्व हिंदी परिवार द्वारा दी गई ऐसी भावांजलि। नरेंद्र कोहली, सरिता बुधू, कमल किशोर गोयनका, चित्रा मुद्गल, चित्रा देसाई, ओम निश्चल, सच्चिदानंद जोशी, अनंत विजय, प्रभात कुमार, दामोदर खड़से, सी. भास्कर राव, प्रेम शंकर त्रिपाठी, सुशीला गुप्ता सबका सान्निध्य, सबकी भाव साम्यता।

विविध सत्रों में लोकसंस्कृति, प्रौद्योगिकी, हिंदी शिक्षण, सांस्कृतिक चिंतन, हिंदी चलचित्र जगत्, प्रवासी साहित्य, बाल साहित्य जैसे विषयों पर व्यापक अनुशीलन का प्रावधान था। हिंदीप्रेमी अपनी अभिरुचि के अनुरूप विषयों का चयन करते समानांतर सत्रों में भाग लेते देखे जा सकते थे। भोजन कक्ष में आरा, पटना, बनारस, कोलकाता सहित देश के कोने-कोने से पहुँचे बंधु-बांधव मिले। भारतीयता ही वहाँ सबकी एकमात्र पहचान थी।

समापन-सत्र के पश्चात् प्रमुख स्थलों को देखने के वैकल्पिक प्रस्ताव सामने आए। विश्व हिंदी सचिवालय, महात्मा गांधी संस्थान, आप्रवासी घाट! मेरा पूरा वजूद आप्रवासी घाट की माटी का स्पर्श पाने के लिए अधीर था। अपना देस मुलुक, गाँव घर छोड़कर रोजी-रोटी की तलाश में सात समुंदर पार ले जाए गए हमारे गिरमिटिया पुरखों की करुणासिक्त स्मृति को पोर-पोर में धारण करता आप्रवासी घाट। आठ रुपल्ली पगार का प्रलोभन देकर जुल्मी फिरंगी पानी के जहाज में भर-भरकर भोजपुर जनपद सहित भारत के अनेक भागों से ग्राम पुरुषों को इस अज्ञात, अनाम टापू पर ले आए। कागज पर अँगूठे का निशान और सैकड़ों वर्षों की गुलामी का बदहाल जीवन जीने के लिए विवश बँधुआ मजदूर का कलंक अपने माथे पर ढोते सीधे-सादे हमारे पुरखे! हिंदुस्तान जहाज के निचले हिस्से में सिमटे, अमानवीय यंत्रणा झेलते उन निश्छल प्राणों का हाहाकार सुनने वाला कोई नहीं था। सुदूर निर्जन टापू के पाषाण-खंडों से जूझते, फिरंगियों का कषाघात, भूख-प्यास से अधिक अपमान की दुस्सह पीड़ा! रामचरितमानस की एक अर्धाली है—

सबतें सेवक धरम कठोरा··

यह कैसी सेवकाई? इतना भयंकर जुल्म! अपने खून-पसीने से सींचा हमारे पुरखों ने इस माटी को। मॉरीशस के कथासम्राट् अभिमन्यु अनत की वेदना हिंद महासागर की लहरों पर तरंगायित, कितनी अँधेरी रातें पार करती, उन पुरखे-पुरनियों की यंत्रणा सहेजती भींगी आँखों से अतीत को निष्पलक निहार रही है—

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

रामायण की पोथी, तुलसी का बिरवा, सत्तू पिसान की गठरी संग लिये आए थे हमारे पूर्वज! गाँव-जवार की याद रेत बनकर आँखों में उनींदापन भर जाती। पहाड़ों की तलहटी में उग आई झोंपड़ियों में ढोल, झाल, करताल बजाते तुलसी की चौपाइयों में अपने गहन अवसाद का अनोखा उपचार ढूँढ़ते अदम्य जिजीविषा के सूत्र तलाशते हमारे परिजन, पुरजन।

आप्रवासी घाट से विदा की शाम मॉरीशस की हमारी अंतिम शाम थी। संग्रहालय के मुख्य द्वार पर एक वयोवृद्ध सज्जन मिले, खाँटी भोजपुरी में अपना परिचय देते हुए मुझसे पूछ बैठे—

अपने कहँवा से आइल बानीं?

मैंने बताया, गाजीपुर मेरे पुरखों का गाँव है। बक्सर मेरी जन्मभूमि है, राँची (झारखंड) से आई हूँ।

उनकी भाव विह्वलता देखने लायक थी।

बक्सर··· ? हमार गउँवा तिवारीपुर रहे।

मैं विस्मय जड़ित, यही गाँव तो मेरा भी है। ग्राम-तिवारीपुर, डाक-दहिवर, जिला-बक्सर।

ममता के ताग पाट बटोरती वे पनियाई आँखें।

ए बहिनी, हमरा आपन दादा-परदादा के गाँव देखे के बड़ मन बा!

ऐसा लगा, श्रावन पूर्णिमा के ठीक पहले कोई बिछुड़ा हुआ बड़ा भाई मिल गया हो और इस मॉरीशस नइहर से विदा लेते वक्त आँचल में

अक्षत, दूब, हल्दी की गाँठ नहीं, न जाने कितनी अनमोल स्मृतियाँ अपने साथ सहेजकर भारत वापस जा रही हूँ।

आप्रवासी घाट आँखों से ओझल हो जाए, इसके पहले कहना चाहती हूँ, 'हमारी स्वर्गोपम भारतीय संस्कृति अपनी पूरी आन-बान-शान के साथ इस नन्हे द्वीप में पुष्पित, पल्लवित है। मानसमय, तुलसीमय इस लघु भारत की माटी का श्रद्धानत अभिवादन!

नइहर का खोंइछा

कल ही भारत से आई हूँ
मैं गिरमिटिया की बेटी हूँ
आना तो था बरसों पहले
पर बहुत देर से आई हूँ।

यह माटी मेरा नइहर है
भावज, भाई ये मेरे हैं
कितने आँसू, कितनी करुणा
कितनी-कितनी फरियादें हैं।

घर, आँगन, खेत बधार छोड़
श्रीजी रोटी की आस लिये
रामायन की पोथी तुलसी का
बिरवा अपने साथ लिये।

सत्तू पिसान की गठरी थी
गिलट के थे थोड़े गहने
भोले-भाले वे ग्रामपुरुष
उस दाँवपेंच को क्या जानें?

आरा, छपरा, बक्सर, बलिया,
निज देस छोड़ परदेस चले,
थी आठ रुपल्ली की पगार
बेबस थे वे स्वीकार चले।

पहिला जहाज सागर तट पर
बँधुआ श्रमिकों की थी टोली
सामने अगम पर्वत श्रेणी
मन में महमह चइता, होली।

पीछे छूटे परिजन, पुरजन
थीं अँखियाँ नम, जिनगी भारी
हँसिया, कुदाल, गैंता, खुरपी
पाथर पाथर क्यारी क्यारी।

उनको तो फसल उगानी थी
गन्ना, गेहूँ, मड़ुआ, सरसों
दिन कटा, अँधेरी रात कटी
पल-छिन गिनते, बीते बरसों।

कागद पर छाप अँगूठे की
अनुबंध लिखा था, कौन पढ़े
काले मन के वे गोरे थे
पुरखे सहमे, सिसके, निहुरे
थे राम रमइया हियरे में
गीता, पुराण ने दु:ख बाँटा
चौपाल सजी सबके दुअरा
करते हर व्यथा-कथा साझा।

मैं हूँ गिरमिटिया का बेटा
अभिमन्यु अनत के नयन सजल
वह लाल पसीना पुरखों का
था स्वाभिमान केवल संबल।

फिर धीरे-धीरे दिन बहुरे
बंधक साँसें आजाद हुईं,
सोहर गाती, माटी हुलसी
तुलसी की चौपाई बिहँसी।

संस्कृति का नया सूर्य दमका
सागर तट पर उगती लाली,
गन्ने के रस में सराबोर
पत्थर पर उपजी हरियाली।

यह नव विहान मॉरीशस का
घर घर में शोभित देवालय,
गंगा तालाब, पानी निर्मल
गातीं बहिनें कजरी, झूमर,
संरक्षित, पुष्पित, लघुभारत
सबके सपनों का मॉरीशस!

छलके थे आँखों में आँसू
ए बहिनी, मन में आस यही
कब देखूँ अपनी देस भूमि
पुरखों की प्यारी जन्म भूमि
पावन माटी का दरस परस
पाना है मुझको एक बार।

मोती जैसे वे नयन बिंदु
लाई हूँ आँचल में सँभाल
नइहर का ऐसा शुभ खोंइछा
हर बिटिया को कर दे निहाल।

साअ
मोराबादी,
राँची-८३४००८
दूरभाष : ९४३११७४३१९

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
- रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

अंतरराष्ट्रीय स्वरूप लेता विश्व हिंदी सम्मेलन

● कृपाशंकर चौबे

सुपरिचित लेखक। अब तक पत्रकारिता एवं अन्य विषयों पर डेढ़ दर्जन से अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित तथा कई पुस्तकों का संपादन। विगत ढाई दशकों से प्रोफेसर व संकायाध्यक्ष, मानविकी विद्यापीठ तथा प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय।

मॉरीशस में बीते १८ से २० अगस्त, २०१८ को संपन्न ११वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन कई कारणों से तात्पर्यपूर्ण रहा। इस सम्मेलन में बीस देशों के दो हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। उससे स्पष्ट था कि विश्व हिंदी सम्मेलन ने एक अंतरराष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त कर लिया है। सम्मेलन का उद्घाटन सत्र १८ अगस्त को पूर्वाह्न १० बजे मॉरीशस के स्वामी विवेकानंद अंतरराष्ट्रीय सभागार में आरंभ हुआ। इस सभागार को अभिमन्यु अनत सभागार का नाम दिया गया था। सम्मेलन की प्रस्तावना रखते हुए भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि इस सम्मेलन पर दो भाव एक साथ उभर रहे हैं। पहला शोक का भाव और दूसरा संतोष का भाव। अटल बिहारी वाजपेयीजी के निधन के कारण शोक की छाया इस सम्मेलन पर है किंतु दूसरा संतोष का भाव भी है कि समूचा हिंदी विश्व अटलजी को श्रद्धांजलि देने के लिए यहाँ एकत्र है। इसीलिए उद्घाटन सत्र के बाद ही श्रद्धांजलि सत्र रखा गया है।

श्रीमती स्वराज ने कहा कि गिरमिटिया देशों में लुप्त हो रही भाषा को बचाने की जिम्मेदारी भारत की है। भारत ने वह जिम्मेदारी सँभाली है। इसीलिए भोपाल के सम्मेलन में भाषा पर केंद्रित १२ सत्र रखे गए थे। दसवें विश्व हिंदी सम्मेलन की अनुशंसाओं को 'भोपाल से मॉरीशस' शीर्षक से पुस्तक में प्रकाशित कर दिया गया है। श्रीमती स्वराज ने कहा कि भाषा के बाद हमने सोचा कि अगला पड़ाव संस्कृति की ओर ले जाया जाए। इसलिए ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति' रखा गया। गिरमिटिया देशों में संस्कृति का गौरव कायम है। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ अभी अफसोस कर रहे थे कि वे हिंदी भली-भाँति नहीं बोल पाते हैं किंतु उन्होंने अपनी पत्नी से कहा है कि संक्रांति के दिन वे खिचड़ी ही खाएँगे। भारत में भी संक्रांति के दिन खिचड़ी खाई जाती है। संस्कृति को बचाने की छटपटाहट उनमें दिखाई दी। श्रीमती स्वराज ने सम्मेलन लोगों पर बनी एनिमेशन फिल्म का हवाला देते हुए कहा कि भारत का मोर आएगा और डोडो को बचाएगा।

विदेश मंत्री ने उल्लेख किया कि हर विश्व हिंदी सम्मेलन में दो प्रस्ताव पारित किए जाते रहे हैं। एक यह कि मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय का अपना भवन हो। हर्ष है कि वह प्रस्ताव अनुपालित हो गया है और इसी वर्ष मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय के भवन का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंदजी के हाथों संपन्न हो चुका है। दूसरा प्रस्ताव हिंदी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा बनाने का रहा है। उसमें मुख्य समस्या यह है कि प्रस्ताव के समर्थक देशों को संबंधित व्यय का भार वहन करना होगा। यदि भारत को व्यय वहन करना होता तो ४०० करोड़ रुपए देकर भी हम उसे हासिल कर लेते। भारतीय विदेश मंत्री ने उम्मीद जताई कि जब योग दिवस के लिए भारत १७७ देशों का समर्थन हासिल कर सकता है तो संयुक्त राष्ट्र की भाषा के लिए १२९ देशों का समर्थन भी वह हासिल कर लेगा। श्रीमती स्वराज ने विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रतिभागियों से आग्रह किया कि संयुक्त राष्ट्रसंघ में हर शुक्रवार को आनेवाले हिंदी विश्व समाचार को अधिक-से-अधिक सुना जा सके ताकि उसे दैनिक कार्यक्रम बनाने के लिए दबाव बन सके।

उद्घाटन सत्र के आरंभ में ही भारत के दिवंगत राजनेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दो मिनट का सामूहिक मौन रखा गया। उसके बाद मॉरीशस और भारत का राष्ट्रगान हुआ। भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज तथा मॉरीशस की शिक्षा मंत्री श्रीमती लीलादेवी दुकन लछुमन ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के विदेशी विद्यार्थियों ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। उसके बाद महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के विद्यार्थियों ने सुमधुर स्वर में हिंदी गान प्रस्तुत किया। मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीलादेवी दुकन लछुमन ने स्वागत भाषण किया। मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने विश्व हिंदी सम्मेलन पर दो डाक टिकट जारी किए तथा सम्मेलन 'स्मारिका' का लोकार्पण किया। गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा ने विश्व हिंदी सम्मेलन पर निकले 'गगनांचल' के विशेषांक का, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल व कवि केशरीनाथ त्रिपाठी ने 'दुर्गा' पत्रिका का, भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने 'राजभाषा भारती' पत्रिका विशेषांक का, मॉरीशस की शिक्षा मंत्री लीलादेवी दुकन लछुमन ने विश्व हिंदी सचिवालय की पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' पत्रिका का, भारत के विदेश राज्य मंत्री एम.जे. अकबर ने अभिमन्यु अनत की पुस्तक 'प्रिया' का और भारत के विदेश राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह ने 'भोपाल से मॉरीशस तक' पुस्तक का लोकार्पण किया। समारोह का संचालन प्रो. कुमुद शर्मा और माधुरी

रामधारी ने किया। सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन भारत के विदेश राज्य मंत्री जनरल वी.के. सिंह ने किया।

श्रद्धांजलि सत्र

उद्घाटन सत्र के बाद अटल बिहारी वाजपेयीजी की याद में श्रद्धांजलि सत्र रखा गया, जिसका संचालन अशोक चक्रधर ने किया। इस सत्र में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने अटलजी से जुड़े संस्मरण सुनाए तथा उनके योगदान पर प्रकाश डाला। चीन, तजाकिस्तान, पोर्ट ऑफ स्पेन, अमेरिका, नीदरलैंड, जापान, दक्षिण कोरिया, रूस, ब्रिटेन आदि देशों के हिंदी विद्वानों, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी, गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा, मॉरीशस के मार्गदर्शक मंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ तथा भारतीय सांसद के.सी. त्यागी तथा भर्तृहरि मेहताब ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

विश्व हिंदी सम्मेलन के पहले दिन भाषा एवं लोक-संस्कृति के अंतर्संबध पर समानांतर सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने लोक और भाषा के घनिष्ठ संबंध को रेखांकित किया। लोक-साहित्य को लिखनेवाले का पता न होने पर भी यह समाज की स्मृति में रचा-बसा हुआ है और भारत से लेकर सभी गिरमिटिया देशों तक की साझी विरासत है।

सत्र की सह-अध्यक्ष सरिता बुद्धु ने कहा कि लोक-साहित्य एवं लोक-संस्कार साथ-साथ चलते हैं और एक-दूसरे को सबल करते हैं। गिरमिटिया देशों में आनेवाले भारतीय अपने साथ जो भाषा और लोक-संस्कृति लेकर आए, उसी ने उनकी पहचान सुरक्षित रखी। डॉ. मृदुल कीर्ति ने कहा कि जैसे अर्थ सदैव उपस्थित रहता है और शब्द उसकी अभिव्यक्ति के लिए गढ़े जाते हैं, वैसे ही लोक में लोक-संस्कृति सदैव उपस्थित रहती है और भाषा तदनुसार आकार ग्रहण करती रहती है। उन्होंने वेदों, उपनिषदों, गीता, पातंजल योग दर्शन आदि से अनेक ऐसे उदाहरण दिए जो कालांतर में लोक संस्कृति का अंग बनते चले गए। डॉ. पूर्णिमा वर्मन ने कहा कि अब लोक ग्रामीण परिवेश तक सीमित नहीं हैं, लेकिन भारतीय संस्कृति का लोक आज विश्वव्यापी हो चुका है। जो प्रवासी भारतीय विभिन्न देशों में कार्य कर रहे हैं, हमें उनके बारे में भी बात करनी चाहिए। सत्र के अंत में अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में गोवा की राज्यपाल व लेखिका मृदुला सिन्हा ने कहा कि भारतीयों ने दूर देश की धरती में आकर भाषा के आधार पर ही अपनी पहचान बनाई। लोक-संस्कृति की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि लोक एवं शास्त्र में अंतर नहीं है। वस्तुत: इन शास्त्रों से छलके हुए ज्ञान और संस्कार लोक-संस्कृति में समा गए, उसका अंग बन गए। वसुधैव कुटुंबकम और वेदों के शांति मंत्रों का प्रतिबिंब लोकमानस में पूर्णत: दिखाई देता है। हिंदी को 'विश्व भगिनी' का दर्जा मिले, इस कामना के साथ उन्होंने अपना वक्तव्य समाप्त किया।

सत्र का विषय प्रवर्तन एवं समापन समन्वयक पद्मजा ने किया। इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. सांस्कृतिक अवध ग्राम की स्थापना की जाए, क्योंकि रामचरितमानस यहाँ का प्राण है। २. भारत और प्रवासी क्षेत्रों को सम्मिलित कर लोक कथाओं तथा लोकगीतों का प्रकाशन किया जाए। ३. विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में लोकजीवन तथा लोक-संस्कृति का समावेश किया जाए। ४. लोकजीवन, लोकसाहित्य पर शोध परियोजनाओं में वरीयता एवं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए। ५. लोक भाषा के लिए कार्यरत संस्थाएँ लोक साहित्य एवं लोक संगीत, लोक जीवन के संवर्धन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर कार्य योजनाएँ बनाएँ।

'प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास' पर आयोजित दूसरे सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन में भारत के गृह राज्य मंत्री किरण रिजिजु ने कहा कि सोशल मीडिया और प्रौद्योगिकी आज हमारी शक्ति बन गई है। इस समानांतर सत्र में सी-डैक द्वारा विकसित 'कंठस्थ' का लोकार्पण किया गया एवं 'निकष' पर एक प्रस्तुति दी गई। बीज वक्ता के रूप में प्रो. अशोक चक्रधर ने कहा कि प्रौद्योगिकी के नकारात्मक क्षेत्र जल्दी नजर आने लगते हैं परंतु यह नहीं भूलना चाहिए कि इसके कई गुण भी हैं। भाषा प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने भारतीय भाषाओं में स्पेल चेकर, ग्रामर चेकर और डी.टी.पी. सॉफ्टवेयर की आवश्यकता को चिह्नित किया। सी-डैक के महा संचालक डॉ. हेमंत दरबारी ने भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी के विकास में सी-डैक की भूमिका पर प्रकाश डाला। महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. कुमार दत्त गुदारी ने कहा कि भारतीय डायस्पोरा का प्रसार करने के लिए मॉरीशस का खिड़की के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट के बालेंदु दाधीच ने कई ऑनलाइन प्रदर्शन करते हुए सहभागियों को माइक्रोसॉफ्ट के नवीनतम टूल्स जैसे कोरटाना, वॉक पहचान एवं मशीनी अनुवाद के बारे में जानकारी दी। प्रह्लाद रामशरण ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्र का संयोजन अरविंद बिसेसर तथा सह संयोजन बिपिन बिहारी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग ने किया। प्रश्नोत्तर सत्र में केवल कृष्ण, डॉ. एम.ए. गुप्ता, प्रो. गुरप्रीत, प्रो. रंजना अरगड़े, हरपाल सिंह, जय प्रकाश, योगेंद्र प्रसाद, डॉ. यतीश अग्रवाल इत्यादि ने भाग लिया।

इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. हिंदी शिक्षा को समाज के प्रत्येक स्तर पर लागू किया जाए। २. यूनिकोड स्क्रिप्ट सर्चेबल किया जाए। ३. बैंकिंग सेक्टर में यूनिकोड का प्रचार-प्रसार किया जाए। ४. बीमा, आई. टी सोल्यूशन, जो अंग्रेजी में है, उन्हें हिंदी में किया जाए। ५. सभी निजी एवं सरकारी ऑनलाइन सेवाएँ हिंदी में की जाएँ। ६. भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु सभी वेबसाइट्स द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेजी) स्वरूप में किए जाएँ। ७. यूनिकोड का मानकीकरण किया जाए। ८. प्रकाशकों के लिए भी आवश्यक सॉफ्टवेयर का निर्माण हो, जिनसे उनका काम आसान हो जाए। ९. हिंदी में इ-मेल एड्रेस लिखने की सुविधा प्रदान की जाए। (बालेंदु दाधीच ने बताया कि २० फरवरी, २०१८ से पंद्रह भारतीय भाषाओं में इ-मेल लिखा जाने लगा है) १०. डेटा एनालिसिस के लिए हिंदी में शोधकार्य हेतु नवीनतम टूल्स उपलब्ध किए जाएँ। ११. सी-डैक द्वारा श्रुतलेखन आदि का प्रचार-प्रसार किया जाए। १२. बी.टेक. के विद्यार्थियों को हिंदी नहीं आती है और हिंदी के छात्रों

को आई-टी नहीं आती है। इस दूरी को मिटाने के लिए प्रयत्न किए जाएँ। १३. हिंदी में पूर्णरूप से एक कुंजीपटल का निर्माण हो, जिसपर हिंदीभाषी काम कर सकें। १४. हिंदी की अपनी एक विशिष्ट प्रोग्रामिंग की भाषा नहीं है। इसे उपलब्ध कराया जाए। १५. चिकित्सा संबंधी सभी सामग्रियों को हिंदी में भी उपलब्ध कराया जाए।

हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्कृति

'हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्कृति' पर आयोजित तीसरे सत्र की अध्यक्षता उदयनारायण गंगू ने की। बीज वक्तव्य सुरेंद्र गंभीर ने दिया। उन्होंने बताया कि अमेरिका के लगभग सौ विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। हिंदी सीखने की अलग-अलग रुचियाँ और वर्ग हैं। स्वीडन से आए हैंस वेसलर वेज ने कहा कि आज हम बहुसंस्कृति की दुनिया में रहते हैं। उन्होंने कहा कि जर्मनी और फ्रांस के निवासी हिंदी सीखते हैं। जापान में अध्यापक रहे प्रो. हरजेंद्र चंद्र ने कहा कि विदेशियों को भारतीय संस्कृति के बारे में बताना सरल नहीं है। इस सत्र को प्रो. जी. गोपीनाथन, वेंकटेश्वर मन्नार, त्रिभुवन नाथ शुक्ल, अतुल कोठारी, विमलेश कांति वर्मा ने भी संबोधित किया। सत्र का समन्वयन प्रो. नंद किशोर पांडेय ने किया। इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. हिंदी के विदेशी विद्यार्थियों को आरंभ में भारतीय संस्कृति का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाना चाहिए। २. भाषा शिक्षण में गीत, नाटक और फिल्मों का उपयोग किया जाए। ३. अध्यापकों के लिए भाषा शिक्षण के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की जाए। ४. बच्चों की कविताओं के माध्यम से भी संस्कृति का ज्ञान कराना चाहिए।

हिंदी साहित्य में संस्कृति चिंतन

'हिंदी साहित्य में संस्कृति चिंतन' पर आयोजित चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. राजरानी कोविन ने की। बीज वक्ता डॉ. नरेंद्र कोहली ने संस्कृति के प्रवाह को अविच्छिन्न मानते हुए हिंदी की पूर्ववर्ती भाषाओं का ऋण स्वीकार किया। तुलसीदास के महाकाव्य 'रामचरितमानस' के सांस्कृतिक संदर्भों की विस्तार से चर्चा करते हुए उन्होंने संप्रति मानस की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। डॉ. पी.के. हरदयाल का वक्तव्य 'रामचरित मानस' पर केंद्रित था। सत्र के सह-अध्यक्ष डॉ. राजरानी गोबिन ने इस बात पर जोर दिया कि वही रचनाएँ महत्त्वपूर्ण बनती हैं, जो सांस्कृतिक चिंतन के उपादान बनने की क्षमता से युक्त होती हैं। इस सत्र को डॉ. स्वर्ण अनिल, डॉ. श्रीनिवास पांडेय, डॉ. रंजना, डॉ. राजेश श्रीवास्तव, डॉ. सत्य केतु, डॉ. ओमप्रकाश पांडेय, डॉ. सदानंद गुप्त, डॉ. उदयप्रताप सिंह ने भी संबोधित किया। इस सत्र में अभिराम की पुस्तक 'बालगंधर्व' तथा दो पत्रिकाओं 'साक्षात्कार' एवं 'हिंदुस्तानी' के नए अंको का विमोचन किया गया। सत्र-संचालन डॉ. रवि शर्मा ने किया। इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. साहित्य और संस्कृति के संबंध को मजबूत बनाया जाए। २. नई पीढ़ी को सांस्कृतिक दृष्टि से जागरूक बनाया जाए। ३. भारतीय संस्कृति पर हो रहे हमलों को रोकने का उपक्रम किया जाए। ४. प्रौद्योगिकी का उपयोग कर संस्कृति की वैज्ञानिक व्याख्या को प्रोत्साहन किया जाए।

फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण

सम्मेलन के दूसरे दिन पाँचवें सत्र का विषय था—'फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण'। इसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध फिल्मकार और सेंसर बोर्ड के चेयरमैन प्रसून जोशी ने की। बीज वक्तव्य देते हुए शशि दुक्खन ने कहा कि संस्कृति उतनी ही पुरानी है जितनी मानवता, भारतीय संस्कृति विभिन्न पहलुओं में झलकती है। इन सबकी छवि भारतीय सिनेमा में देखने को मिलती है। भारतीय सिनेमा अपने संघर्षों में उतार-चढ़ाव के १०० वर्ष मना चुका है। भारत में आज १००० से भी ज्यादा फिल्में बनती हैं। फिल्मों ने संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया है। सिनेमा ने दर्शकों के मन को आलोचनात्मक विवेक दिया। फिल्मों ने समाज के सरोकारों को दिखाया है। भाषा को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दी है। शिक्षा के क्षेत्र में जिन विषयों को कक्षाओं में नहीं पढ़ाया जाता, वे सिनेमा से आए हैं। सिनेमा के बिना सब नीरस है। फिल्मों ने विश्व मंच पर भारत की छवि को बनाया है। फिल्में समाज की दृष्टा और सृष्टा होती हैं। यह सत्र परिचर्चा के स्वरूप में रहा, परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री सतपाल सिंह ने कहा कि क्या फिल्मों के माध्यम से संस्कृति को बचाया जा सकता है? संस्कृति का अर्थ है जो संस्कार दे सके। संस्कार जो मिट्टी को सिरेमिक बना सके, जो लोहे को हथियार, जो आदमी को इंसान में बदल दे, वह संस्कृति है। प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का नाम सभ्यता है। एन.एस.डी. की प्रशिक्षिका वाणी त्रिपाठी ने कहा कि भाषा ऐसे झरने और प्रवाह का नाम है, जो अपने साथ किसी पत्थर, कंकड़ सभी को लेकर चलता है, उसे संस्कृति कहते हैं। सिनेमा में भारतीय जीवन की संस्कृति ही परिलक्षित होती है। साहित्य समाज का दर्पण है, सिनेमा आज भी जिंदगी का दर्पण है। इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. ग्रामीण क्षेत्र से आए फिल्मकारों को फिल्म निर्माण के लिए मदद दी जाए। २. कलात्मक फिल्मों को बढ़ावा दिया जाए। ३. देवनागरी लिपि ही स्वीकार की जाए। ४. वेब सीरीज की विषयवस्तु पर नियंत्रण रखा जाए। ५. फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए चर्चा-परिचर्चा का आयोजन किया जाए।

संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति

सम्मेलन के दूसरे दिन 'संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति' विषय पर छठवें सत्र की अध्यक्षता सत्यदेव टेंगर ने की। 'हिंदुस्तान' के

प्रधान संपादक शशि शेखर ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि भारत की आजादी की लड़ाई संस्कृति की रक्षा की लड़ाई थी और संस्कृति की रक्षा के लिए भारतीय सदैव तत्पर रहे हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति वी.के. कुठियाला ने कहा कि हमारे आस-पास मीडिया के कई स्वरूप हैं। कभी-कभी हमारा मीडिया भारतीय संस्कृति का दर्शन नहीं कराता, लेकिन उसकी आत्मा मूलत: भारतीय ही है। सन्मार्ग के समूह संपादक तथा पूर्व सांसद विवेक गुप्ता ने कहा कि हर युग में ऐसे संचार माध्यम रहे हैं, जो संस्कृति को प्रभावित करते हैं लेकिन आज संस्कृति संचार माध्यमों को प्रभावित कर रही है।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति जगदीश उपासने ने कहा कि संस्कृति के पीछे एक दर्शन होता है। संस्कृति से संस्कार आते हैं, जिनमें नीति, नियम, मूल्य सभी समाहित हैं। संस्कृति भारत की आत्मा का शृंगार है। केसन बद्दू ने मॉरीशस के परिप्रेक्ष्य में मीडिया और भारतीय संस्कृति के स्वरूप पर प्रकाश डाला। मॉरीशस के दूसरे विद्वान सत्यदेव प्रीतम ने मॉरीशस में पत्रकारिता के स्वरूप पर सूचनाप्रद विचार प्रस्तुत किए। सत्र में बाबूराम त्रिपाठी, टी.एन. सिंह, राजेंद्र शर्मा, आर. सेतुनाथ, भारती कुठियाला, विजयशंकर चतुर्वेदी, मनोज तिवारी, रीना यादव, आशा रानी, श्रीनिवास पांडेय, गीता सहाय, कविता सहाय, शीला शर्मा, हरेंद्र प्रताप, योगेंद्र प्रताप, मीना यादव, एम.एल. गुप्त, विष्णु लोक बिहारी, आरती कुमारी, निर्मला भुराड़िया आदि ने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए। संचालन सहअध्यक्ष राम मोहन पाठक ने किया।

इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. नव माध्यम को 'सोशल मीडिया' के स्थान पर नई हिंदी नाम दिया जाए। २. भारतीय जनमाध्यमों को विदेशों, विशेषरूप से प्रवासी भारतीय बहुल क्षेत्रों के जनमाध्यमों, प्रसारण सामग्री की प्राप्ति तथा आदान-प्रदान हेतु कार्य योजना तैयार की जाए। ३. भारत में किसी उपयुक्त स्थान पर भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी पत्रकारिता केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। उनके द्वारा पत्रकारिता और पत्रकारों के विषय में व्यक्त विचारों व संपादकीय अग्रलेखों का संकलन तथा प्रकाशन किया जाए। ४. भारतीय तथा विदेशी पत्रकारों-संपादकों के लिए भारतीय संस्कृति के परिचय एवं लेखन शिक्षण का पाठ्यक्रम प्रारंभ हो। ५. मीडिया तथा जनसंचार शिक्षण में भारतीय संस्कृति विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। ६. भारत के संचार माध्यमों (यथा समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन तथा फिल्मों) में इंडिया के स्थान पर 'भारत' के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए। ७. पत्रकारिता एवं संपादन के क्षेत्र में भारत के शीर्ष राजनेताओं के अवदान पर शोध-कार्य हो। ८. महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर के अध्यापकों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी के बढ़ते प्रयोग और उपयोग की दृष्टि से प्रशिक्षण तथा अभिमुखीकरण कार्यक्रम चलाए जाएँ। ९. क्षेत्रीय स्तर पर संस्कृति तथा मूल्यपरक ज्ञान संवर्धन एवं उनके विषय में जागरूकता के लिए सामुदायिक रेडियो के संजाल का विस्तार किया जाए। इस हेतु सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना प्रक्रिया सरल बने। १०. 'व्हाट्स एप' जैसे नवाचारी डिजिटल प्लेटफार्मों का सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में उपयोग किया जाए। ११. भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों पर आधारित प्रकाशन एवं प्रसारण मीडिया अंतर्वस्तु लेख-समाचार, फीचर आदि तैयार कर विभिन्न देशों के मीडिया संस्थानों को उपलब्ध कराने के प्रयास किए जाएँ।

प्रवासी संसार : भाषा और संस्कृति

सम्मेलन के दूसरे दिन 'प्रवासी संसार भाषा और संस्कृति' विषयक सातवें सत्र की अध्यक्षता डॉ. कमल किशोर गोयनका ने की। संयोजन नारायण कुमार ने किया। बीज वक्तव्य में डॉ. प्रेम जनमेजय ने कहा कि प्रवासी देशों में भाषा और संस्कृति पहचान के सबसे सशक्त माध्यम होते हैं। बड़े यत्न से सहेजी गई विरासत को आगे बढ़ाने के लिए युवा लोगों में भाषा एवं संस्कृति को अपनाना आवश्यक है। मॉरीशस के पूर्व प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने कहा कि राजसत्ता को चुनौती देने का कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से ही किया जा सका। मॉरीशस की जीवन संस्कृति में रची-बसी भोजपुरी बोली, पूजा-पाठ एवं फिल्मों के माध्यम से हिंदी भाषा आगे बढ़ी है। हिंदी में हस्ताक्षर कर सकने के कारण ही मॉरीशस के नागरिकों को वोट का अधिकार मिल सका। इसी के बल पर कुली संतानों ने प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने का सफर पूरा किया है।

गयाना के हरिशंकर शर्मा ने संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। हिंदी भाषा और संस्कारों की उपस्थिति के कारण ही आज भारतीय जहाँ भी बसते हैं, वहाँ का मान बढ़ जाता है। त्रिनिदाद के रवि महाराज ने विचार रखा कि भाषा एवं संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए उसे स्थानीय संदर्भों एवं जरूरतों के आधार पर प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए। इंग्लैंड की सुश्री शैल अग्रवाल ने प्रवासी संसार में भारतीय संस्कृति एवं अपनेपन की कमी की ओर ध्यान आकृष्ट किया। संयुक्त राज्य अमेरिका की डॉ. मृदुल कीर्ति ने भाषा एवं संस्कृति के बिखरे सूत्रों को स्वस्थ मन:स्थिति में जोड़ने की बात कही। फीजी के श्री अनिल जोशी ने संस्कृति, भाषा एवं साहित्य में संस्थागत ढंग से हस्तक्षेप करने का प्रस्ताव रखा। सिंगापुर की संध्या सिंह ने दक्षिण-पूर्व एशिया में हिंदी भाषा के शिक्षण एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। हरजेंद्र चौधरी ने मत व्यक्त किया कि हिंदी के जीवित रहने के लिए इसे जिंदगी की जरूरतों से जोड़ना अति आवश्यक है। गुलशन सुखलाल ने प्रवासी भाषा एवं साहित्य को समझने के लिए वर्गीकरण से आगे बढ़कर एक सैद्धांतिकी विकसित किए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। इस सत्र में हिंदी भाषा एवं संस्कृति को फ्रैंकोफोन, दक्षणि एशियाई एवं ल्यूसोफोन क्षेत्रों तक विस्तारित किए जाने हेतु विशेष आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया। सत्र में कुल इक्कीस वक्ताओं द्वारा विभिन्न पक्षों पर मंतव्य रखे गए।

इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. डायस्पोरा देशों में भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन हेतु प्राथमिकता के साथ

प्रयास किए जाएँ। २. प्रवासी भारतीयों के बीच युवा पीढ़ी की जरूरतों के अनुरूप हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजना बनाई जाए तथा उसे क्रियान्वित किया जाए। ३. हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण में प्रवासी दृष्टिकोण को अपनाया जाए। भारतवंशी छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँ। ४. 'क्रियोल' में सृजित हो रहे साहित्य को हिंदी में अनूदित किया जाए। ५. भारतीय संस्कृति एवं भाषा को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए गैर-सरकारी परंतु प्रामाणिक प्रयासों को वित्तीय सहायता दी जाए। ६. प्रवासी भारतीय युवा पीढ़ी को भारत को कर्मभूमि बनाने के लिए प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया जाए। ७. प्रवासी रचनाओं को फ्रांसीसी, डच, अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाए। ८. दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण में संलग्न लोगों को विशिष्ट प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए। ९. हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तैयार किया जाए। १०. विश्व हिंदी सचिवालय की उप-शाखाएँ प्रशांत, कैरेबियाई एवं यूरोपीय देशों में खोली जाएँ। ११. फीजी में हिंदी को राजभाषा का गौरव प्राप्त है, अत: विश्व हिंदी सम्मेलन फीजी में आयोजित किया जाए। १२. गोस्वामी तुलसीदास के नाम पर एक 'सांस्कृतिक ग्राम' स्थापित किया जाए।

हिंदी बाल साहित्य और संस्कृति : 'हिंदी बाल साहित्य और संस्कृति' विषयक आठवें सत्र में बीज वक्तव्य में डॉ. दिविक रमेश ने कहा कि जितना भी सृजनात्मक साहित्य है, वह संस्कृति ही है। कोई भी साहित्य देशद्रोही नहीं हो सकता। हमारे देश में बाल साहित्य पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से आया था। देवेंद्र मेवाड़ी ने सिंधु सभ्यता से लेकर वैदिक काल तथा पुराणों से लेकर हिंदी के भक्ति काल और कृष्ण की लीलाओं की चर्चा करते हुए उसे बाल साहित्य की पूर्व पीठिका के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। अमीर खुसरो की पहेलियाँ भी बाल साहित्य का एक रूप हैं। सह अध्यक्ष डॉ. अलका धनपत ने मॉरीशस के बाल साहित्य की विस्तार से चर्चा की तथा 'मुडिया पहाड़' एवं 'परीसरोवर' की लोक-कथाओं के बारे में बताते हुए कहा कि भारतीय गिरमिटिया में यह कथा अत्यंत चर्चित है।

उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त ने अपील की कि मॉरीशस के बाल साहित्यकार अपनी रचनाएँ अथवा संपादित रचनाएँ उन्हें भेजें। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान उन्हें प्रकाशित करेगा। सुरेंद्र विक्रम ने बाल साहित्य के विकास में राष्ट्रीय बाल भवन, नेशनल बुक ट्रस्ट आदि की चर्चा करते हुए कहा कि आज का बाल साहित्य सपाटबयानी से इतर गंभीर लेखन कर रहा है।

'बाली' से आई उषा पुरी ने बाल साहित्य की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि बाल साहित्य को गंभीर साहित्य नहीं माना जाता, न ही प्रकाशन जगत् में आदर मिलता है। हरे कृष्ण देवसरे, प्रकाश मनु, जयप्रकाश भारती, द्रोणवीर कोहली आदि महत्त्वपूर्ण बाल साहित्यकार हैं। आज के बाल साहित्यकार को अत्यंत सावधानी की जरूरत है। खुले संवाद के अंतर्गत प्रो. मोहन लाल छीपा ने बाल साहित्यकारों से निवेदन किया कि वे गर्भवती महिलाओं के लिए संवाद लिखें, जो अच्छा संस्कार डाल सकें। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, पर है महत्त्वपूर्ण। इसी सत्र में विवेक गौतम, गिरिराज शरण, प्रदीप राव तथा मनोहर पुरी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। 'देवपुत्र' के संपादक एवं सत्र के अध्यक्ष कृष्ण कुमार अस्थाना ने कहा कि बालकों में बाल साहित्य के माध्यम से शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए। आज का बच्चा परीकथाओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझना चाहता है। बच्चे को आज क्या करना चाहिए, यह भी अनिवार्यत: समझना होगा। सत्र का संयोजन डॉ. मधुपंत ने किया।

इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. मॉरीशस के बाल-साहित्य के लेखकों के प्रकाशन की व्यवस्था की जाए। २. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य का एक कॉलम अनिवार्यत: रखा जाना चाहिए। ३. प्रतिवर्ष बाल साहित्य पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की जाए। ४. बाल साहित्य का वार्षिक आकलन किया जाए। ५. हिंदी बाल साहित्य का तथ्यात्मक इतिहास लिखा जाए। ६. बाल साहित्य अकादमी स्थापित की जाए। ७. गर्भवती महिलाओं में अच्छे संस्कार डालने के लिए बाल साहित्य विषयक पुस्तकें एवं कार्यशाला होनी चाहिए। ८. बाल साहित्य में 'युगधर्म' और 'राष्ट्रधर्म' पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। ९. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए बाल साहित्य विषयक उन्मुखीकरण (ओरिएंटेशन) एवं पुनश्चर्या कार्यक्रम (रिफ्रेशर) आयोजित किया जाए। १०. विभिन्न देशों में शिक्षकों का आदान-प्रदान किया जाए।

प्रौद्योगिकी का भविष्य

सम्मेलन के दूसरे दिन 'प्रौद्योगिकी का भविष्य, निकष एवं इमली सहित अन्य प्रौद्योगिकी उत्पाद' पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता भारत के विदेश राज्य मंत्री एम.जे. अकबर ने की। उन्होंने कहा कि सोचने की कभी सीमा समाप्त नहीं होती। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विचार का उल्लेख करते हुए कहा कि तकनीक गरीब का हथियार बन सकती है। यह गरीबी दूर करने में काफी मदद कर सकती है। जब तक हम अपना काम निजी क्षेत्र तक लेकर नहीं जाएँगे तब तक वह अधूरा रहेगा। मॉरीशस गणराज्य के साथ संयुक्त रूप से मिलकर हिंदी को और समृद्ध बनाने की दिशा में कार्य किया जाएगा। इस सत्र में विपिन बिहारी, डॉ. सुरेंद्र गंभीर, डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा, डॉ. हेमंत दरबारी, बालेंदु दाधीच, आदित्य चौधरी, प्रो. वशिनी शर्मा, अनूप भार्गव, डॉ. स्वर्ण

लता, डॉ. विवेक दुबे, अजय कुमार, करीमुल्ला, डॉ. ओम निश्चल, अनुपम श्रीवास्तव और कुमारदत्त गुदारी ने सहभागिता की। संचालन करते हुए प्रो. अशोक चक्रधर ने कहा कि इंटरनेट एवं क्लाउड कंप्यूटिंग से पूरी दुनिया में क्रांति हुई है। अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व अभी भी बना हुआ है। सत्र की शुरुआत में निकष एवं कंठस्थ के बारे में पी.पी.टी. प्रस्तुति का प्रदर्शन किया गया। पी.पी.टी. में निकष को हिंदी में दक्षता का प्रमाण-पत्र बताया गया कि वह पूरे विश्व के लिए भारत का प्रवेश द्वार सिद्ध होगा।

इस सत्र की अनुशंसाएँ थीं—१. निकष को अद्यतन रखा जाए एवं उसके अपडेट्स आई ओएस, माइक्रोसॉफ्ट एवं एंड्रायड प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होने चाहिए। निकष के लिए गुणवत्ता जाँच मीटर की आवश्यकता है एवं कारोके उपकरण द्वारा हिंदी आसानी से सिखाई जा सकती है। निकष और इमली की सफलता कृत्रिम मेधा का उपयोग कर सरलता से प्राप्त हो सकती है। २. निकष को दुनिया की सभी भाषाओं का इस्तेमाल करके बनाया जाए। ३. निकष द्वारा हिंदी ज्यादा-से-ज्यादा लोगों तक पहुँचनी चाहिए। ४. हिंदी प्रौद्योगिकी संसाधन केंद्र को स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए। ५. सर्च इंजन ऑप्टीमाइजेशन पर एवं प्रचार प्रसार पर काम होना चाहिए। ६. इमली एवं निकष के साथ अकादमिक संस्थाओं, युवा वर्ग व छात्रों को जोड़ा जाए। ७. प्रवासी देशों को भी इस प्रौद्योगिकी की यात्रा में शामिल किया जाए। ८. निकष में वयस्कों और बच्चों के लिए विकल्प होना चाहिए। बोलना, समझना, लिखना, पढ़ना हिंदी शिक्षण के इन चारों कौशलों पर आधारित सामग्री का निर्माण होना चाहिए। ९. सभी से प्राप्त प्रतिक्रियाओं और सुझावों पर काम किया जाना चाहिए। १०. निकष आम जन के लिए विश्वसनीय होना चाहिए, ताकि सभी उस पर पूरी तरह भरोसा कर सकें। ११. तकनीक का इस्तेमाल कर रहे उपयोगकर्ता के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। १२. निकष का एक अंतरराष्ट्रीय कोड हो, जिससे भारत और डायस्पोरा देश मिलकर कार्य कर सकें।

काव्यांजलि : सम्मेलन के दूसरे दिन रात में अटलजी की याद में काव्यांजलि का सत्र रखा गया, जिसमें कई कवियों ने अटलजी को काव्यांजलि दी। काव्यांजलि में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज एक श्रोता के रूप में उपस्थित रहीं किंतु समापन के समय वे मंच पर आईं। सुषमाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह विश्व हिंदी सम्मेलन अटलमय हो गया है। उन्होंने अटलजी की कविताओं का सुचिंतित भाष्य भी किया।

विश्व हिंदी सम्मान : सम्मेलन के तीसरे दिन पूर्वाह्न में समापन सत्र में विभिन्न सत्रों की अनुशंसाओं की प्रस्तुति हुई और उसके बाद भारत के १८ तथा विदेशों के १८ हिंदी सेवियों को हिंदी में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'विश्व हिंदी सम्मान' से अलंकृत किया गया। सम्मान पानेवाले भारत के हिंदी विद्वान् थे—सर्वश्री जोरम आनिया ताना, प्रसून जोशी, सुरेश ऋतुपर्ण, इंद्रनाथ चौधरी, प्रेमशंकर त्रिपाठी, ऋता शुक्ल, चमनलाल गुप्त, श्रीधर पराड़कर, श्रीतंजनसोबा आओ, रमेशचंद्र शाह, मालती जोशी, ब्रजकिशोर शर्मा, धर्मपाल मैनी, बशीर अहमद मयूख, अजय कुमार पटनायक, डॉ. के. सी. अजय कुमार, सी. भास्कर राव और सुभाष सी. कश्यप। इनमें पाँच विद्वान्—रमेशचंद्र शाह, मालती जोशी, ब्रजकिशोर शर्मा, धर्मपाल मैनी, बशीर अहमद मयूख विश्व हिंदी सम्मान ग्रहण करने के लिए उपस्थित नहीं हो सके। उन्हें बाद में इस सम्मान से नवाजा जाएगा। विश्व हिंदी सम्मान पानेवाले विदेशी हिंदी विद्वान् थे—सर्वश्री जावेद खोलोव (तजाकिस्तान), रामप्रसाद परसराम (त्रिनिदाद), इनेस फार्नेल (जर्मनी), अन्ना चेल्कोकोवा (रूस), गलीना रुसोवा सोकोलोवा (बुल्गारिया), उन गू ली (दक्षिण कोरिया), गोपाल ठाकुर (नेपाल), सिंगेनामा चानरब (मंगोलिया), नेमानी बैनीवालू (फीजी), ब्रेसिल नगोडा विथान (श्रीलंका), सुनीता नारायण (न्यूजीलैंड), काजूहिको मचीदा (जापान), रत्नाकर नराले (कनाडा), ई मादे धर्मयश (इंडोनेशिया), अलीसन बूच (अमेरिका), उदयनारायण गंगू (मॉरीशस), हनुमान दुबे गिरधारी (मॉरीशस) और केसन बुधु (मॉरीशस)। इनमें अलीसन बूच (अमेरिका) अपरिहार्य कारणों से सम्मान लेने नहीं आ सकीं। उन्हें बाद में यह सम्मान प्रदान किया जाएगा। भारत व विदेशों के ३६ विद्वानों के अलावा पाँच हिंदी सेवी संस्थाओं को भी विश्व हिंदी सम्मान से विभूषित किया गया—सी डैक (पुणे), तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस, आर्य सभा, मॉरीशस और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा। इनमें दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के प्रतिनिधि सम्मान लेने के लिए नहीं पहुँच सके। उन्हें बाद में यह सम्मान प्रदान किया जाएगा। ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन सत्र की अध्यक्षता प. बंगाल के राज्यपाल तथा वरिष्ठ कवि केशरीनाथ त्रिपाठी ने की। समापन-सत्र के मुख्य अतिथि मॉरीशस के कार्यवाहक राष्ट्रपति परमशिवम् पिल्लै वायापुरी, भारत की विदेश मंत्री सुषमा स्वराज तथा मॉरीशस के मार्गदर्शक मंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ थे। आखिर में धन्यवाद ज्ञापन विदेश राज्य मंत्री एम.जे. अकबर ने किया।

११वें विश्व हिंदी सम्मेलन के उपलक्ष्य में १९ अगस्त को मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान में 'पाणिनि भाषा प्रयोगशाला' का उद्‌घाटन भी किया गया। पाणिनि भाषा प्रयोगशाला में कंप्यूटरों के साथ-साथ अन्य संसाधन और अधुनातम सॉफ्टवेयर भारत सरकार ने उपलब्ध कराए हैं।

सम्मेलन की पूर्व संध्या पर मॉरीशस गंगा आरती भी भव्य ढंग से हुई। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव विनोद कुमार मिश्र के संपादन में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सहयोग से प्रतिदिन 'हिंदी विश्व' नामक दैनिक समाचार बुलेटिन भी ११वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान निकाला गया। विश्व हिंदी सम्मेलन की एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इधर उसकी अनुशंसाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। हर तीन महीने में अनुशंसा अनुपालन समिति की बैठक होती है। विदेश मंत्री स्वयं उन बैठकों में भाग लेती रही हैं।

(सा.अ.)

आई.ए. २९०, सेक्टर-३, साल्टलेक
कोलकाता-७०००९७
दूरभाष : ०९८३६२१९०७८

संस्कृतियों को प्रश्नांकित करनेवाले नायपॉल

● राजकुमार कुंभज

(१७-८-१९३२—११-८-२०१८)

भारतीय मूल के ब्रिटिश लेखक, बुकर व नोबेल पुरस्कार से सम्मानित और भारत को 'गुलामों का देश' कहनेवाले अंग्रेजी लेखक वी.एस. नायपॉल का ८५ बरस की उम्र में ११ अगस्त, २०१८ को लंदन स्थित उनके घर में निधन हो गया। उनका जन्म १७ अगस्त, १९३२ को त्रिनिदाद, गाँव चगवानस के एक भारतीय प्रवासी ब्राह्मण के घर में बतौर ब्रिटिश नागरिक हुआ था। वी.एस. नायपॉल को 'सर विद्या' के नाम से भी जाना जाता था, जिनका मूल नाम विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल था। सर नायपॉल के पुरखे संभवत: गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश से बतौर गिरमिटिया त्रिनिदाद गए थे। 'नाइटहुड' की उपाधि से सम्मानित नायपॉल ने इतिहास, धर्म, संस्कृति, राजनीति, आदर्शवाद और उपनिवेशवाद आदि विभिन्न विषयों पर लगभग छह दशक तक लेखन कार्य किया। उनका लेखन विश्वास, उपनिवेशवाद और मानवीय अवस्थाओं की गहरी पड़ताल करता है। ऐसा नहीं है कि भारत के बारे में उनके सोच-विचार को लेकर ज्यादातर लोगों में उनकी छवि भारत विरोधी की ही रही है, लेकिन उन्हें यों ही भारत से निर्मम ममता रखनेवाला लेखक भी नहीं कहा जाता है।

भारत और भारतीय समाज के बारे में अंतरराष्ट्रीय धारणा क्या है, क्या हो सकती है अथवा क्या होना चाहिए; इन सवालों को लेकर यूरोप और पश्चिमी देश अकसर ही किसी-न-किसी द्वंद्व के शिकार रहे हैं, जिन्हें आग्रह या पूर्वग्रह भी कहा जा सकता है। अतिरंजना में कोई चाहे तो सर नायपॉल और सलमान रश्दी में समानता के समान आधार-स्तंभ भी ढूँढ़ सकता है, किंतु अगर उनके औपन्यासिक यात्रा-वृत्तांतों को थोड़ी सूक्ष्मता से देखा जाए तो उनके लेखन का एक आंतरिक सिरा गहरे तौर पर भारत और भारतीय समाज से भी जुड़ा मिलेगा। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि बिना किसी आग्रह, दुराग्रह और पूर्वग्रह के, पहले नायपॉल को बहुतायत से पढ़ा जाना चाहिए, जबकि इधर इस देश में प्रखर राष्ट्रवाद का दौर प्रखर प्रवाह लिये मचल रहा है। अंग्रेजी आलोचक हरीश त्रिवेदी ने उन्हें 'सत्यमेव जयते' का उपासक कहा है।

वी.एस. नायपॉल के विरोध में एक तर्क यह दिया जाता है कि वे भारत को एक यायावर दृष्टिकोण से ही देखते थे और अपने इसी दृष्टिकोण के वशीभूत वे भारत की एक ऐसी तसवीर प्रस्तुत करते हैं, जैसाकि वे यथार्थ में कदापि नहीं हैं। सर नायपॉल की रचनात्मक संवेदनशीलता के संदर्भ में यह एक अर्धसत्य टिप्पणी है। भारत सिर्फ एक भौगोलिक और राजनीतिक इकाई भर नहीं है। यह देश बहु-विकसित से कहीं ज्यादा बहु-विस्तारित सभ्यता-संस्कृति का देश है। यहाँ रहनेवालों को अपने संपूर्ण जीवन-चक्र के दौरान भिन्न-भिन्न यातनाओं, प्रश्नों और भिन्न-भिन्न निष्ठा-उदारताओं से गुजरना पड़ता है। नायपॉल की दृष्टि जितनी पैनी है, उनकी लेखनी, उतनी ही पारदर्शी है। उनका लिखा हर यात्रा-वृत्तांत विश्वास जागनेवाला सच प्रतीत होता है। वे व्यक्ति और समाज की विसंगतियों को दरशाने के मामले में जितने ईमानदार व निर्मम हैं, उतने ही सहज भी। उनका लेखन उत्तर-औपनिवेशिक यातनाओं का प्रामाणिक तथा ऐतिहासिक दस्तावेज है।

तकरीबन एक सदी पूर्व वी.एस. नायपॉल के पूर्वज गंगा के मैदान से बतौर गिरमिटिया उस त्रिनिदाद पहुँच गए थे, जहाँ उन्होंने अन्य लोगों के साथ मिलकर एक ऐसा समाज बनाया, जो भारतीय समाज से कहीं अधिक आपसी मेलजोल रखता था। यह वही समाज था, जिसका वर्ष १८८३ में महात्मा गांधी से साक्षात्कार हुआ था। वर्ष १९६२ में वी.एस. नायपॉल जब पहली बार इस देश को देखने-समझने भारत आए तो चकित रह गए। उन्होंने पाया कि एक सदी का समय यहाँ के धार्मिक संस्कारों से रूबरू होने के लिए पर्याप्त था। नायपॉल मानते हैं कि अनेक भारतीय रुझानों को समझे बगैर भारत को समझ पाना असंभव है। भारतीय समाज की समग्रता उसकी विभिन्न विचित्रताओं में तालमेल बैठाने से ही है। भारत में सामंजस्य ही समग्रता का पर्याय है, जिसे आज की राजनीतिक भाषा में 'साझा विरासत' से परिभाषित किया जा रहा है। जाहिर है कि इस परिभाषा से देश को समझने के लिए उग्र राष्ट्रवादी राजनीति से दूर जाना होगा और अपनी टेबल पर रखे कुछ कथित फोटो सेट बदलने होंगे।

भारत की सभ्यता-संस्कृति कभी भी तोड़नेवाली नहीं, बल्कि जोड़नेवाली ही अधिक रही है। विभिन्न विचित्रताओं के बावजूद भारतीय समाज में सभ्यतागत बहुलता की जो उदारता है, वही इस देश की महानता है।

वर्ष २००१ में जब सर विद्या को साहित्य का 'नोबेल पुरस्कार' प्रदान किया गया, तो यह उनके रचनात्मक योगदान की वैश्विक स्वीकृति थी, क्योंकि उन्होंने अपनी जड़ों से कट चुके लोगों की त्रासदी का मार्मिक चित्रण किया था। अपनी जिंदगी के आखिरी वक्त में वे उन्हीं लोगों के साथ थे, जिनसे उन्हें लगाव था। वरिष्ठ अंग्रेजी आलोचक

हरीश त्रिवेदी ने उन्हें भारत से निर्मम ममता रखनेवाला लेखक यों ही नहीं कहा है। वी.एस. नायपॉल की इस निर्मम ममता को सूक्ष्मता व संवेदनशीलता से परखने की जरूरत है। नायपॉल जब भी भारत की बात करते थे तो वे सिर्फ हिंदू या मुसलमान होकर नहीं, बल्कि दोनों के प्रति ही सहानुभूतिपूर्ण नजरिया रखते हुए भारतीय सभ्यता की बात करते थे। उन्होंने 'नोबेल पुरस्कार' से पुरस्कृत होते समय अपनी जन्मभूमि त्रिनिदाद का नहीं, बल्कि उन्हीं दो देशों का नाम लिया था, जिनसे वे जुड़ाव रखते थे—इंग्लैंड जहाँ वे रहे और भारत जो उनसे कभी भी छूटा ही नहीं।

सर विद्याधर सूरजप्रसाद नायपॉल के जीवन में हिंदू, हिंदू धर्म और भारतीय धार्मिक मान्यताओं की अनूठी प्रभावशीलता सदैव ही बनी रही, जबकि वे कोई हिंदूवादी लेखक नहीं थे। नायपॉल मानते थे कि भारतीय सभ्यता के अलावा दुनिया में ऐसी कोई दूसरी सभ्यता नहीं रही, जिसने कि बाहरी दुनिया से निपटने के लिए इतनी न्यूनतम तैयारी कर रखी हो। भारत जितनी आसानी से बाहरी आक्रमणों और लूटपाट का शिकार हुआ, वैसे शायद ही कोई अन्य देश कभी हुआ होगा।

वे कहते थे कि भारत मेरे लिए एक जटिल देश है। यह मेरा गृह-देश नहीं है एवं मेरा घर हो भी नहीं सकता, लेकिन फिर भी मैं न इसे खारिज कर सकता हूँ और न ही इसके प्रति उदासीन हो सकता हूँ। मैं इसके दर्शनीय स्थलों का पर्यटक मात्र बनकर नहीं रह सकता; मैं एक साथ इसके बहुत निकट और बहुत दूर भी हूँ···भारत के बारे में छानबीन करने के लिए तत्काल राजनीति से परे जाना होगा। यह पड़ताल भारतीय रुझानों के बारे में होगी···यह पड़ताल स्वयं इसकी सभ्यता के बारे में होगी···मैं भारत में एक अजनबी हूँ और इस पड़ताल का आरंभिक बिंदु में स्वयं रहा हूँ; क्योंकि शैशव की क्षणिक छवियों की भाँति मेरे बचपन तक, प्राचीन भारत की चमत्कारी स्मृतियाँ मौजूद हैं, जो मेरे लिए उस संपूर्ण तिरोहित जगत् की प्रस्तावना प्रस्तुत करती हैं···परंतु मैं समझ रहा हूँ कि भारत संबंधी मेरी स्मृतियाँ उस भारत की हैं, जो अतल अतीत में उतरने के चोर दरवाजों जैसी हैं।

सच्चाई को बेबाकी से बयान करनेवाले सर नायपॉल को प्रसिद्धि उनके चौथे उपन्यास 'अ हाउस फॉर मिस्टर बिस्वास' से मिली। उनका यह उपन्यास वर्ष १९६१ में छपा था। इस उपन्यास का मुख्य चरित्र नायपॉल के पिता पर आधारित है, जो पत्रकार और लेखक थे। इस कृति में स्वयं नायपॉल की किशोरावस्था का भी मार्मिक चित्रण है। यहाँ संयुक्त परिवार के उलझते-सुलझते रिश्तों की बेहद विनोदात्मक तसवीर उपलब्ध है, जिसमें पात्रों की असफलताओं और असमर्थताओं के प्रति सहानुभूति है, उपहास नहीं। उनके लेखन में तीव्र तल्खी तो बहुत बाद में आई; जब उन्होंने देखा और पाया कि उपनिवेशवादी ताकतों ने इंडोनेशिया से अफ्रीका और अफ्रीका से लातिनी अमरीका तक जहाँ-जहाँ राज किया, वहाँ-वहाँ उन्होंने मनुष्य एवं समाज को अपनी नकल का गुलाम बनाकर छोड़ दिया। उनका एक उपन्यास 'द मिमिक मैन' (नकलची लोग) इन्हीं विडंबनाओं को पुरजोर तरीके से रेखांकित करता है, जो वर्ष १९६७ में प्रकाशित हुआ था।

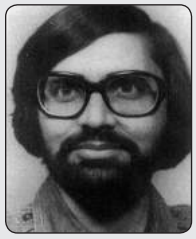

जाने-माने कवि-लेखक। चार काव्य-संग्रह और एक व्यंग्य-संग्रह प्रकाशित। अनेक चर्चित कविता-संकलनों में कविताएँ सम्मिलित तथा अंग्रेजी सहित कुछ भारतीय भाषाओं में अनूदित।

तब तक नायपॉल त्रिनिदाद छोड़कर इंग्लैंड आ गए थे और ऑक्सफोर्ड में पढ़कर बी.बी.सी. में नौकरी करने लगे थे। वे समझना चाहते थे कि आखिर वे हैं कहाँ के और अब रहें कहाँ? वे तीन पीढ़ी बाद यह तलाशने सिर्फ एक बरस के लिए भारत आए कि क्या अपना प्रवास समाप्त करते हुए भारत में रहा जा सकता है? हालाँकि वर्ष १९५० में उन्होंने एक सरकारी स्कॉलरशिप जीत ली थी, जिसके मुताबिक उन्हें उनकी मनचाही यूनिवर्सिटी में दाखिला मिला सकता था; लेकिन उन्होंने ऑक्सफोर्ड जाना पसंद किया। यह जानकर हैरानी हो सकती है और यह उनके भारत-प्रेम को भी दरशाता है कि उन्होंने लंदन में रहते हुए ही भारत स्थित तीन नौकरियों के लिए आवेदन दे दिए थे। किंतु अब वे खुद भारत आकर संभावना तलाशना चाहते थे।

ऐसा नहीं है कि भारत आने पर वे भारतीयों और भारतीय समाज की हर एक विसंगति को देखकर क्षुब्ध ही हुए। यहाँ के हालात देखकर वे इस हद तक विचलित हुए कि अपनी यात्रा के बाद उन्होंने वह सब अपनी पुस्तक 'ऐन एरिया ऑफ डार्कनेस' (अंधकार का दायरा) १९६४ में जस-का-तस ईमानदारी से लिख दिया। 'ऐन एरिया ऑफ डार्कनेस' में भारत की भयानक गरीबी, संपन्न लोगों द्वारा उसका तीव्र तिरस्कार, खुले मैदान में शौच की प्रवृत्ति, अत्याचार व असमानता सहते रहने की प्रवृत्ति, धर्मांधता, भुखमरी, नौकरशाही की धौंस, बेकारी, चापलूसी, विदेशी वस्तुओं के प्रति अंध-मोह और बौद्धिक पाखंड आदि, यह सबकुछ बेहद ही प्रभावशाली और स्वीकार्य लगता है। इस कृति में कुछ-कुछ वैसा ही मोहभंग चित्रित हुआ है, जैसा कि चार वर्ष बाद छपे श्रीलाल शुक्ल के 'राग-दरबारी' में देखा जा सकता है। नायपॉल के लेखन में जीवन व राजनीति, व्यक्ति और समाज तथा सभ्यता एवं संस्कृति सहित उपनिवेशवाद एवं आदर्शवाद का रचनात्मक ही नहीं, बल्कि आलोचनात्मक चित्रण भी है। भारतीय बौद्धिक समाज का उनके प्रति उदासीन या विरोधी रहना अपनी अपूर्णता ही नहीं दरशाता है, बल्कि लेखकीय अन्याय भी है। एक तरफ सलमान रश्दी अगर नायपॉल से असहमत रहते थे तो तस्लीमा नसरीन उन्हें मुसलिम विरोधी करार दती थीं। किंतु वे न तो किसी के समर्थक थे और न विरोधी। वी.एस. नायपॉल सभ्यताओं के अँधेरे में रोशनी तलाशते दो संस्कृतियों को प्रश्नांकित करनेवाले लेखक थे।

३३१, जवाहर मार्ग, इंदौर-४५२००२
दूरभाष : ०७३१-२५४३३८०

कहानी

सहजो की कमाई

● मायाराम 'पतंग'

दिल्ली शहर में तीस वर्ष पूर्व घरेलू महिलाओं के पास कमाई का एक सरल साधन होता था। निम्न-मध्य वर्ग की महिलाएँ लिफाफा उद्योग को आसानी से अपना लेती थीं। इसका सीधा कारण यह था कि न तो इसका प्रशिक्षण लेने कहीं जाना था, न ही कागज खरीदने और न ही लिफाफे बेचने। सारे काम घर बैठे ही हो जाते थे। घरों से अखबार की रद्दी खरीदनेवाले कुछ लाभ कमाकर स्वयं ही घरों में अखबार बेच जाते थे। आटे या मैदा को पकाकर लेही बनाना सब आसानी से सीख जाते थे। कोई अनुभवी महिला कागज अलग साइज में काटना और मोड़ना सिखा देती और बच्चे भी लेही से एक ओर चिपकाना सीख जाते। फिर कोई व्यक्ति सौ-सौ लिफाफों की गड्डियाँ घरों से ही खरीदकर ले जाता या घर का कोई सदस्य साइकिल पर घूम-घूमकर दुकानों में आवश्यकतानुसार निश्चित दर पर बेच आता। सुविधा इतनी कि महिलाओं को कहीं बाहर जाना ही नहीं होता, सब काम घर बैठे ही हो जाते थे। इसमें घर के बच्चे भी कभी शौक से, कभी दबाव से खूब सहयोग करते थे। कुल मिलाकर यह गृह-उद्योग महिलाओं की अतिरिक्त आमदनी का साधन था। जब से पॉलिथीन बैग चल पड़े, तब से यह लिफाफा उद्योग बरबाद हो गया। महिलाओं की आय धीरे-धीरे समाप्त ही हो गई।

सहजो जिस मकान में रहती थी, उसमें बीस कमरे थे। सभी में किराएदार रहते थे। मकान मालिक (सेठ) कहीं और रहता था। उसका मुनीम हर महीने किराया लेने आया करता था। मकान मालिक से न कोई मिलने जाता और न वह कभी मकान देखने आता। सहजो के पास एक कमरा और एक बरामदा था। हर किराएदार के पास एक कमरा ही था; किसी के पास तो मात्र बरामदा ही था, उसी में किवाड़ लगवा लिये थे। लिफाफे का उद्योग सब चलाते थे।

सहजो सबसे आगे इसलिए थी, क्योंकि उसका कमरा मुख्य द्वार के ठीक सामने और नीचे ही था। कागज देनेवाले और लिफाफे लेनेवाले, सब पहले सहजो से ही बात करते थे। सहजो को एक लाभ यह था कि उसके छह बच्चे थे—तीन पुत्र और तीन पुत्रियाँ। सब लिफाफे बनाने में सहयोग करते थे। मकान के मुख्य द्वार के पास ही एक नल था, पास ही शौचालय भी। सभी किराएदार वहीं से पानी लेते और उसी शौचालय का उपयोग करते।

सहजो के बड़े पुत्र की नौकरी लग गई थी। सबसे छोटी पुत्री को छोड़कर सभी विद्यालय जाते थे। परंतु बड़ी पुत्री और बड़े पुत्र को छोड़कर शेष नौवीं तक नहीं पहुँच पाए। पुत्र-पुत्रियाँ विद्यालय से आकर

जाने-माने साहित्यकार। तीन कविता-संग्रह, पाँच नैतिक शिक्षा, छह पुस्तकें शिक्षण साहित्य पर, दो गद्य-संग्रह, दो खंडकाव्य, चार संपादित पुस्तकें, छह गीत-संकलन। हिंदी अकादमी तथा दिल्ली राज्य सरकार द्वारा सम्मानित। संप्रति 'सेवा समर्पण' मासिक में लेखन तथा परामर्शदाता; राष्ट्रवादी साहित्यकार संघ (दि.प्र.) के अध्यक्ष; संपादक 'सविता ज्योति'।

घर में कभी नहीं पढ़ पाते थे, क्योंकि सहजो उन्हें लिफाफे के लिए कागज मोड़ने का या चिपकाने का कोई काम दे देती। माता-पिता प्राय: डाँट-डपटकर बच्चों को पढ़ने बिठाते हैं, परंतु सहजो कहती, ''पहले अपने हिस्से का यह काम पूरा करो, पढ़ाई का काम बाद में।'' विद्यालय का काम रह जाता तो बच्चे बहाना करते, झूठ बोलते, पर सहजो भाभी का काम पहेल करते। वास्तव में सहजो नाम से ही सहजो थी, पर थी बड़ी कड़ी। छोटी-छोटी गलती पर भी इतनी पिटाई करती कि बच्चे बिलबिला जाते। अत: डर के मारे पहले सहजो भाभी के काम को करना उनकी मजबूरी थी।

सहजो को बच्चे माँ या मम्मी नहीं, भाभी कहा करते थे। वास्तव में सहजो के दो देवर भी ऊपर की मंजिल में रहते थे। वे भी भाभी कहते तो बच्चों से भी सहजो ने भाभी कहलाने का इरादा किया। अम्माँ कहलाने से बुढ़िया होने का आभास होता था और भाभी कहलवाकर वह स्वयं को जवान ही समझती थी।

बड़े पुत्र का विवाह भी हो गया। सहजो सास बन गई। बहू भला भाभी कैसे कहती? अब सहजो माँजी और सासूजी कहलाती थी। बहू से ही नहीं, बच्चों से भी सहजो कठोरता से पेश आती। बहू को प्रभावित करने के लिए बेटियों को बात-बात पर खूब डाँटती। कभी गाली बकती और कभी पीट भी देती थी। सहजो शरीर से दुबली-पतली थी, परंतु हाव-भाव, बोलचाल से वह स्वयं को शक्तिशाली दिखाती थी। बहू का डील-डौल देखकर मन में भय खाती थी, अत: गरजकर बोलती और अवसर मिलते ही गलती की ओर संकेत करना न भूलती।

बहू भी अपनी तरह की एक ही थी। चौबीस घंटों में दो बार ही मुँह खोलती। सुबह या शाम, केवल इतना ही पूछती, ''माँजी, सब्जी क्या बनानी है?'' उत्तर जो भी मिलता, उसमें कोई ना-नुकुर नहीं करती। पीहर से सीखकर आई थी—हनुमान चालीसा और गायत्री मंत्र। काम करते-करते दिन-रात मन-ही-मन चालीसा या गायत्री मंत्र का

पाठ करती रहती थी। सब्जी तो प्राय: बची ही रहती थी। कोई बाजार से छोले लाकर खा लेता तो कोई चार आने की दही ले आता। ससुर श्यामलाल सुबह निकल जाते तो दोपहर को आते और खाना खाकर चले जाते तो फिर रात को ही लौटते। सहजो तो मिर्च से ही रोटी खा लेती। इसलिए एक छोटी पतीली में ही सबका पूरा पड़ जाता था।

बच्चे विद्यालय से आकर कपड़े बदलते, खाना खाते और लिफाफे बनाने में जुट जाते। बड़े से छोटे तक खेलना तो किसी ने सीखा ही नहीं। न तो खेलने की जगह थी, न ही खेलने का वातावरण। लिफाफे बनाने से रविवार को भी छुट्टी नहीं होती थी। बच्चों को शिक्षक से अधिक सहजो भाभी की पिटाई से भय लगता था।

दिन भर का कार्यक्रम बताऊँ तो आप दाँतों तले उँगली दबाने लगेंगे। प्रात: तीन बजे से साढ़े चार बजे तक सारी नित्य क्रियाएँ पूरी कर ली जाती थीं। छोटी बेटी कभी उठने में आलस कर जाती तो उसे उठाकर फर्श पर पटक देती थी। एक ही नल जो है, अत: पहले उठकर स्नान करना आवश्यक था। किसी की हिम्मत है, जो बच्ची से सहानुभूति के दो शब्द भी कह दे। बड़ा पुत्र और बड़ी पुत्री दसवीं पास कर गए थे, शेष चार तो नौवीं तक भी नहीं पहुँचे। पहुँचते भी कैसे, उन्हें लिफाफे के काम में लगाए रखना सहजो की नजर में अधिक आवश्यक था। वास्तव में इस काम की कमाई से वह हर महीने सोना खरीदती थी। सोना खरीदती थी, परंतु पहनती नहीं थी, बक्स में जमा करके रखती थी। वह बुंदा भी एक कान में पहनती थी। एक कान तो साड़ी के पल्ले से ढक जाता था, एक ही दिखाई पड़ता था। बनवा सब रखे थे—चूड़ियाँ, कड़े, हार, तगड़ी और जाने क्या-क्या? कमाई में सहयोग सब बच्चों का और सोने की मालिक सहजो।

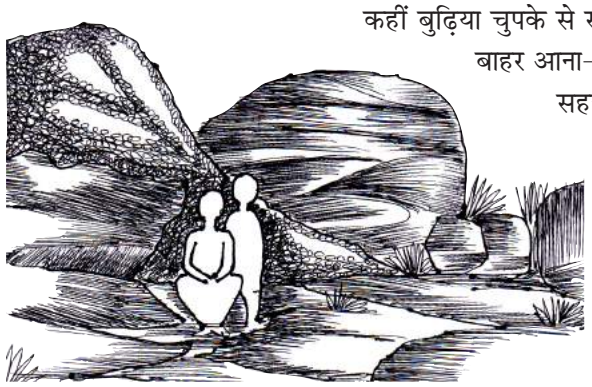

समय बदला, दूसरे पुत्र का भी विवाह हो गया। बेटियाँ एक-एक कर के तीनों ससुराल चली गईं। छोटा पुत्र असमय काल कवलित हो गया। पूरी कंजूसी से वह अपने सोने के गहनों की सुरक्षा करती रही। खर्च के समय भी सोना नहीं निकाला और मुसीबत के समय भी इधर-उधर से ही काम निकाल लिया, पर सोना छाती से लगाए रही।

एक दिन वह मकान ही टूट गया। पुराना तो था ही। मकान मालिक भी किराएदारों से छुटकारा पाना चाहता था। पुराने किराएदार और सस्ता किराया, इनसे छुटकारा पाने की वह तरकीबें सोचता था। ईश्वर ने यह अवसर दे दिया। सभी किराएदार इधर-उधर चले गए। सहजो और श्यामलाल का बड़ा पुत्र पहले ही शहर में जमीन लेकर रह रहा था। उसे पता चला तो अपने परिवार को भी वहीं जमीन दिलवा दी। उसमें दो कमरे बना लिये और परिवार रहने लगा। कमरे बनाने में श्यामलाल ने पूरी कमाई लगा दी, पर सहजो ने सोने के गहने नहीं निकाले। लड़कियाँ तो चली ही गई थीं, परंतु छोटी बहू साथ ही थी। उसके भी बाल-बच्चे थे।

एक दिन श्यामलालजी की आँखें मिच गईं। उनका विधिवत् संस्कार कर दिया गया। सहजो उसी दिन से असहज हो गई। अब उसमें अकड़ कतई न रही। अधिकतर वह अपने कमरे में ही लेटी रहती थी। वैसे वह बीमार नहीं थी। न बुखार, न खाँसी, परंतु बच्चों से भी बात कम ही करती। बहू से तो बोलने की इच्छा ही नहीं थी। सहजो को अपनी जमा पूँजी (गहनों) की चिंता थी। वह गहनों को बहू-बेटियों में अपने हिसाब से बाँटना चाहती थी, परंतु कंजूसी से इकट्ठा की गई जीवन भर की कमाई को बाँटना सहज नहीं था। श्यामलालजी को स्वर्गवासी हुए अभी तीन महीने भी नहीं बीते थे कि छोटी बहू की समझ में सहजो की चिंता आ गई। वह भी निगाह रखने लगी। उसे भी चिंता सताने लगी कि कहीं बुढ़िया चुपके से सारे गहने बेटियों को न सौंप दे। उसने भी बाहर आना-जाना कम कर दिया।

सहजो को उस दिन थकान सी थी, पर वह दवाई लेने नहीं गई। शाम को बेटा आया तो डॉक्टर से दवाई लेने जाना पड़ा। शाम को रोटी भी नहीं खाई। दवाई पीकर सहजो बेसुध हो गई। रात को कमरे की बत्ती जलती रही। प्रात: आठ बजे बहू ने आस-पड़ोस में खबर कर दी कि सहजो चल बसी। रोना-धोना शुरू हो गया। रिश्तेदार आए, बेटियाँ आईं। जार-बेजार रोईं। तेरहवीं भी हुई, सब रिश्तेदार लौट गए। लड़कियाँ आपस में धीरे-धीरे चर्चा करती रहीं, परंतु किसी को पता नहीं चला कि माँ के पास कितने गहने थे और किसको दिए? कहाँ गए? बेटा-बहू भी यही कहते रहे, ''हमें क्या पता कि किसको दिए? चुपसे से बेटियों को ही पूज दिए होंगे? हमें तो दिए नहीं।''

जीवन भर मेहतन की। न अच्छा खाया, न पहना। सदा मिर्च से रोटी खाई। किस काम आई ये कंजूसी और इतनी कमाई? सहजो की याद आते ही मन में यही भाव उभरता है—पुण्य करो, परोपकार करो, दान करो, सेवा करो! कंजूसी से तिजोरी मत भरो! साथ कुछ नहीं जाता। सब यहीं रह जाता है।

एफ-६३, गली नंबर-३, पंचशील गार्डन
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२
दूरभाष : ९८६८५४४१९६

भूल-सुधार

सितंबर-२०१८ के अंक में प्रतिस्मृति स्तंभ में प्रकाशित आलेख के लेखक श्री विजयेंद्र स्नातकजी हैं; भूल से श्रीनारायण चतुर्वेदीजी का नाम छप गया, इसका हमें खेद है।

आलेख

भारतीय चित्रांकन परंपरा में श्रीराम

● ललित शर्मा

भारतीय चित्रांकन परंपरा में शैव, वैष्णव, शाक्त, जैन एवं बौद्ध धर्मों के देवी-देवताओं का चित्रांकन तो खूब हुआ, परंतु भारतीय वैष्णव परंपरा में भागवत धर्म के अंतर्गत कृष्णभक्ति की लीला-कथाओं को अधिक स्थान मिला, वहीं वैष्णव श्रीराम का चित्रांकन वास्तविक रूप में उतना न हो पाया, जितना उनकी रामायण लीला में वृहद स्तर पर हुआ। रामलीला तथा राम दरबार की चित्रांकन परंपरा के अतिरिक्त श्रीराम के अनेक ऐसे चित्र भी देश में मिले, जिनका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है और निजस्व भी।

इतिहास के आधार पर १४वीं सदी में दक्षिण भारत में विजयनगर राज्य की स्थापना के साथ ही वहाँ के वीरभद्र मंदिर लेपाक्षी तथा विट्ठल मंदिर हंपी में रामायण की प्रमुख घटनाओं का मंडप की छत पर चित्रांकन किया गया था। मालवा के प्रसिद्ध मुद्रा विशेषज्ञ डॉ. शशिकांत भट्ट के अनुसार १६वीं सदी में सम्राट् अकबर के नवरत्न टोडरमल ने ७५ हजार श्लोकोंवाले 'टोडरनंद' काव्य ग्रंथ का २३ जिल्द में प्रथम बार संपादन करवाया था। इस ग्रंथ में उन्होंने 'रामावतार' का सचित्र वर्णन किया है। इसी समय अकबर के एक और नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना ने सम्राट् के आदेश पर वाल्मीकि रामायण का संस्कृत से फारसी में अनुवाद और श्रीराम के जीवन की प्रमुख घटनाओं को आकर्षक रूप में मुगल शैली में चित्रांकित किया था। इस चित्रांकन में भरत का वन में आगमन तथा श्रीराम से मिलन और अयोध्या चलकर राजपाट सँभालने का अनुरोध किया गया है। मुगलकाल की यह चित्रांकन परंपरा कई मायनों में विशिष्ट है। इसमें भरत के सैनिक एवं सेवक मुगलकालीन वस्त्र पहने प्रदर्शित किए गए हैं, जो विविध रंगों के हैं। इसमें पगड़ियों पर भी मुगल प्रभाव दर्शित है। कुछ व्यक्ति हाथी के महावतों के रूप में हैं। हाथियों का शृंगार व शारीरिक सौष्ठव उत्तम है। सैनिकों के हाथों में ढाल, तलवार, खड्ग है तथा वे सभी सफेद रंग का पट्टा कमर में बाँधे हैं। उनकी अँगरखी का विन्यास काफी आकर्षक है। सारे सैनिक सघन वन से घिरे क्षेत्र में दर्शाए हैं, जिसके एक छोर पर चट्टानों के ऊपर स्वयं हिंदू शाही वेश में मुकुटधारी भरत नीलवर्णीय श्रीराम के समक्ष अयोध्या पधारने का निवेदन कर रहे हैं। भरत के पीछे बैठे एक अन्य विशिष्ट जन की मुद्रा भी अनुग्रह भाव की है। श्रीराम शांत भाव से पीतवस्त्र पहने बैठे हैं। उनके हाथ में धनुष व पीठ पर तरकश बँधा हुआ है। वे शांत भाव से भरत के अनुग्रह को स्वीकार न करने की विवशता को दरशा रहे हैं।

डॉ. भट्ट के निजी संग्रह में श्रीराम का एक ओर विशिष्ट चित्र मुगलकाल का है, जिसमें श्रीराम और अंगद का मिलाप निहारते हुए भगवान् ब्रह्मा, शिव, विष्णु और वायुदेव चित्रित हैं। इस दुर्लभ चित्र में आकाश में तीनों देवों एवं वायु देव पद्मासन मुद्रा में एक-दूसरे से राम अंगद मिलन को निहारने की वार्त्ता करते विराजे हुए हैं। इनमें ब्रह्मा तथा वायु को गौरवर्णीय ओपरना तथा धोती, माला पहने दरशाया है, जबकि विष्णु को गहरे श्याम रंग व पीतवस्त्र में एवं शिव को आसमानी रंग से पीतवस्त्र धारण किए दरशाया है। उनके गले में गहरे नीले रंग का सर्प भी दरशाया गया है। इनके ठीक नीचे धरती पर एक घने वन में श्याम वर्णीय श्रीराम को राजसी मुकुट (जिस पर मध्य युगीन तीन पँखुडिया जड़ी हैं) पहने, ग्रीवा में मोतियों की लटकनेवाली श्वेतमाला तथा हरे रंग का ओपरना व पीतवस्त्र की धोती पहने दरशाया है। वे अपने दाएँ हाथ की उँगली मुद्रा से समक्ष खड़े वानरराज अंगद को आवश्यक नीति निर्देश देते हुए दर्शित हैं। उनके पीछे उन्हीं की भाँति मुकुट पहने सेवक भाव से लक्ष्मण खड़े हैं। श्रीराम के समक्ष यूथपति मुकुटधारी जांबवंत नील वर्णीय रूप में खड़े हुए हैं, वे अपने दोनों हाथों की मुद्रा से श्रीराम को सलाह देते हुए दर्शित हैं। उनकी धोती, ओपरना भी दर्शनीय है। उनके पास कई श्वेत पगड़ी व श्वेत ओपरना पहने एक धोती धारित सेवक के हाथों में २ तलवारें तथा लंबा भाला है। संभवत: यह दृश्य श्रीराम व जांबवंत के मध्य वार्त्ता तथा दिशा एंव अस्त्र-शस्त्र के उपयोग को लेकर दरशाया गया है। श्रीराम, अंगद, लक्ष्मण तथा अन्य सेवक वानरों के शीश के मुकुट मध्य युगीन हिंदू देवों के शीश पर उत्कीर्ण किए जानेवाले मुकटों की भाँति हैं। सभी की वेशभूषा भी पारंपरिक शुद्ध भारतीय है। उनके पीछे वीर वेश में ढाल-तलवार थामे एक अन्य वानर सेवक भी खड़ा है। अंगद के समक्ष ही युद्ध के अस्त्र-शस्त्र सिरटोप, भाला, वक्ष कबच, तलवार तथा कमर कटार भी रखी है। जिन पर मध्ययुगीन अस्त्रों की शैली है। प्रतीत होता है, सारे वानरपति श्रीराम के समक्ष अस्त्र-शस्त्रों के संग्रहण की सूचना देने तथा इस दूत नीति पर मार्गदर्शन लेने आए हैं, जो अंगद के साथ हैं।

श्रीराम का एक अन्य विशिष्ट चित्र भी इसी काल का है, जिसमें वे वन में स्वर्ण मृग का पीछा करते हुए उकेरे गए हैं। चित्र में वृक्ष-वनस्पति तथा पाषाण खंडों को सुंदरता से अंकित किया गया है। श्रीराम

सुपरिचित लेखक। अब तक १७०० से अधिक लेख, टिप्पणियाँ अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं, ग्रंथों व इतिहास, पुरातत्व के जर्नल्स में प्रकाशित। 'स्व. गौरीशंकर कमलेश राजस्थानी संस्कृति सम्मान', श्रीनाथद्वारा साहित्य मंडल का 'इतिहास-हिंदी सेवा सम्मान', सहित दो दर्जन सम्मानों से अलंकृत। निरंतर लेखन तथा पर्यटन विकास में सक्रिय।

यहाँ मुकुट पहने उकेरे गए हैं। वे अपने हाथों से धनुष पर बाण चढ़ाए स्वर्णमृग पर संधान करने को तत्पर हैं। उनकी इस मृगया मुद्रा से भयभीत स्वर्णमृग वन में कुलाँचे भरता हुआ भाग रहा है। उसके सींग तथा शरीर पर स्वर्ण रंग व उन पर गोलाकार हरी-लाल, सफेद बिंदिया व नीचे का श्वेत भाग एवं मुख अत्यंत प्राणवान है।

यदि इन तीनों विशिष्ट चित्रों का साम्य संत तुलसीदास कृत रामचरित मानस में वर्णित घटनाओं से बैठाया जाए तो इसमें प्रथम चित्र श्रीराम से वन से अयोध्या लौटने का विनय करते भरत का है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास अपने निम्न दोहे में यह घटना इस प्रकार रेखांकित करते हैं—

भरत सीलगुर सचिव समाचू। सकुच सनेह विबस रपुराजू॥
प्रभू करि कृपा पाँवरी दीन्ही। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं॥

अर्थात् इधर तो भरतजी का प्रेम और उधर गुरुजनों, मंत्रियों तथा समाज की उपस्थिति। यह देखकर श्रीराम (रघुराज) संकोच एवं प्रेम के वशीभूत (विवश) हो गए। अंत में उनके प्रेमवश प्रभू श्रीराम ने कृपा करके उन्हें अपनी खड़ाऊ प्रदान कीं और भरतजी ने उन्हें सम्मानपूर्वक अपने सिर पर धारण किया।

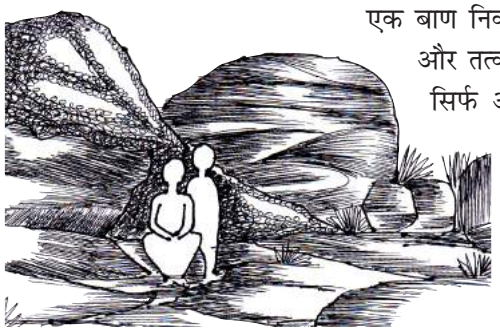

इसी प्रकार द्वितीय विशिष्ट चित्र श्रीराम जांबवंत की वार्त्ता को तथा अंगद से श्रीराम की वार्त्ता निहारते भगवान् ब्रह्मा, शिव, विष्णु, वायुदेव का है। संत तुलसीदास का इस बारे में रामचरित मानस का यह दोहा सटीक बैठता है—

सुनु सर्बग्य सकल डर बासी। बुधि बल तेज धर्म गुन रासी॥
मंत्र कहऊ निजमति अनुसारा। इत पठाइअ बालि कुमारा॥

अर्थात् हे सर्वज्ञ! हे सबके लय में बसनेवाले अंतर्यामी! हे बुद्धि, बल, तेज, धर्म और गुणनिधान! मैं जांबवंत अपनी बुद्धि के अनुसार आपको सलाह देता हूँ कि आपके द्वारा बालिकुमार अंगद को रावण के पास अपना दूत बनाकर भिजवाया जाए।

नीक मंत्र सबके मन माना। अंगद सन कह कृपा निधाना॥
बालितनय बुधि बल गुना धामा। लंका जाहु तात मम कामा॥

अर्थात् जांबवंत की यह अच्छी सलाह सभी के मन में जँच गई। कृपा के निधान श्रीराम ने अंगद से कहा, हे बल, बुद्धि गुणों के धाम बालिपुत्र! तुम मेरे कार्य के लिए लंका जाओ।

तृतीय विशिष्ट चित्र स्वर्णमृग का वन में पीछा करते धनुर्धारी श्रीराम का है। संत तुलसीदास इस बारे में रामचरितमानस में यह दोहा रचते हैं, जो इस चित्र के अंकन पर सटीक बैठता है—

मृगविलोकी कटि परिकर बाँधा। करतल चाप रुचिर सर साँधा॥
प्रभूहि बिलोकी चला मृग भाजी। धाए रामु सरासन साजी॥

अर्थात् स्वर्णमृग को देखकर श्रीराम ने कमर में अपना पटका बाँधा और धनुष को हाथ में धारण कर उस पर सुंदर बाण चढ़ाया। यह देखते ही आखेट के भय से श्रीराम को देखकर मृग कुलाँचें मारते हुए भागा और श्रीराम भी धनुष चढ़ाकर उसके पीछे भागे।

एक अन्य विशिष्ट चित्र रामायण के पत्र से है। इसमें श्रीराम और परशुराम की भेंट है। राजस्थानी शैली का यह चित्र उदयपुर से प्राप्त हुआ है और वर्तमान में मुंबई के छत्रपति शिवाजी वास्तु संग्रहालय की चित्रकला विशिका में क्रमांक ५४.१/१९ पर प्रदर्शित है। चित्रकार मनोहर द्वारा उकेरा यह चित्र ईस्वी सन् १६४९ का है। यह पूरा चित्र ३८×२२.५ सेमी. लंबा एवं ३१.१८ सेमी. चौड़े पत्र पर है। इसे मेवाड़ महाराणा जगतसिंह के राज्याश्रय में बनाया गया था। यह मूलत: रामायण के बिखरे चित्रों में से एक है। इस कथाचित्र में परशुराम श्रीराम के विवाह की बारात को रोकते हुए हैं। वे श्रीराम को उनकी योग्यता प्रामाणित करने हेतु विशाल शिव धनुष को झुकाकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाने की चुनौती देते हैं। श्रीराम आसानी से धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा लेते हैं और एक बाण निकालते हैं। परशुराम इससे अवाक् रह जाते हैं और तत्काल उन्हें यह आभास हो जाता है कि श्रीराम सिर्फ असाधारण मनुष्य हैं। चित्रकार ने इस घटना को पूरी सूक्ष्मता और मनोयोग से उकेरा है और इस हेतु उसने संकेतों, कथा कहने की तकनीक के साथ-साथ बड़े चटक रंगों का भी सुंदर इस्तेमाल किया है। प्रस्तुत चित्रांकन में जो तीन अलग-अलग जगहें दिखाई हैं, वे अलग-अलग रंग की पृष्ठभूमि में हैं। आगे के हिस्से में पंच ऋषि यज्ञ कर रहे हैं। बारात में राम और उनके अनुज रथों पर सवार हैं तथा उनके पीछे सीता तथा दूसरी महिलाएँ दो हाथियों पर रखे हौदों में बैठे पीछे आ रही हैं।

परशुराम देवलोक से उतरकर आए हैं, जिसे हल्के बैंगनी रंग में दरशाया गया है। गुस्से में भरे हुए परशुराम काफी बड़े आकार में दरशाए हैं, जिससे उनका व्यक्तित्व इसमें बड़े प्रभावी रूप में उभर आया है। प्रस्तुत चित्र में भगवान् विष्णु के दो अवतारों के मिलने के इस पल को निहारने के लिए आकाश में देवता एकत्र हुए दरशाए हैं। घटनाओं के क्रम में श्रीराम तथा परशुराम बार-बार दिखाए गए हैं। श्रीराम के अतुलनीय पराक्रम तथा चमत्कार से शांत और विनम्र हुए परशुराम सामान्य मनुष्य के आकार में आ गए हैं और फिर उनके हाथ में धनुष के स्थान पर पुष्प हैं, जो अब संधि तथा श्रीराम के प्रति भक्तिभाव का प्रतीक है। साँवले-सलोने श्रीराम के हाथ में भी एक पुष्प है, जो परशुराम के प्रति आदर समभाव का सूचक है। इस चित्र के अंतिम कोने में इस घटना का अंतिम रूप चित्रित है, जिसमें परशुराम फिर महेंद्र पर्वत की ओर तपस्या करने जाते दिखाई देते हैं।

इस प्रकार मध्यकालीन संस्कृति में भारतीय चित्रांकन परंपरा में श्रीराम का अंकन विशिष्ट गरिमा के साथ दिखाई देता है।

'अनहद' जैकी स्टूडियो, १५-मंगलपुरा
झालावाड़-३२६००१ (राजस्थान)
दूरभाष : ०९८२९८९६३६८

स्मरण

नीरजजी की चुंबकीय परिधि

● अशोक चक्रधर

४.१.१९२५—१९.७.२०१८

नीरजजी को मैं अपने अबोध बचपन से जानता था। जब मैं सात-आठ वर्ष का था, तब अपने मोहल्ले अहीरपाड़ा (खुर्जा) के घर में उन्हें देखा था। मेरे पिता के अनन्य मित्र थे। मुझे साठ साल पहले ही समझ में आ गया था कि ये कुछ अलग हैं। इनके अंदर कुछ है, जो अपनी ओर खींचता है। समझ अधिक नहीं थी, लेकिन इतनी कम भी नहीं थी। गली के बच्चे हमारे घर में झाँकते थे तो मुझे गर्व होता था कि देखा, तुम्हारे घर नहीं, मेरे घर आए हैं।

सैकड़ों किस्से हैं। इन गुजरे साठ सालों में उनके साथ कितने कवि-सम्मेलनों में गया, गिनती नहीं की। सौ से अधिक कवि-सम्मेलनों में तो ऐसा हुआ होगा कि उन्होंने अध्यक्षता की और मैंने संचालन। मैंने उन्हें अपने संचालन में पहली बार जब काव्य-पाठ के लिए बुलाया था तो कुछ इस तरह—

'लीजिए अब पुकारता हूँ गीत सम्राट् को, जिनकी बानी प्रेम की बानी है, जिनका शब्द-शब्द प्यार की कहानी है। कहानी जो भावनगर से अर्थनगर तक जाती है, हालाँकि कई बार अर्थजगत् की तलाश में अलीगढ़ से बंबई जाकर रुक जाती है। लेकिन चूँकि ठाठ फकीरी का है, मामला आँसू के सम्मान का है, सरोकार देश के सबसे गरीब इनसान का है, इसलिए वे कहते हैं चल रे, चल रे बटोही वापस चल। शोखियों में फूलों का शबाब घोला जा चुका है, उसमें शराब भी मिलाई जा चुकी है। तैयार होनेवाले नशे को प्यार का नाम भी दिया जा चुका है। विडंबना है कि बंबई में स्वप्न फूलों की तरह झरने लगे हैं, मीत शूलों की तरह चुभने लगे हैं। चल कवि नीरज वापस कवि-सम्मेलनों की ओर चल। और दोस्तो, आज नीरजजी हमारे बीच हैं, कवि-सम्मेलन की सशक्त वाचिक परंपरा के साथ। मैं नीरजजी के रूप में गीतों के पूरे एक कारवाँ को पुकारता हूँ। श्रोता मित्रो, तालियों के स्वर का ऐसा गुबार उठाओ कि नीरजजी देखते रह जाएँ।'

बड़ी हूक उठती है! अब बुलाऊँ तो किस तरह बुलाऊँ? 'जब तक कुछ अपनी कहूँ, सुनूँ जग के मन की, तब तक ले डोली द्वार विदा क्षण आ पहुँचा।' गीतों का एक कारवाँ चला गया और गुबार और ज्यादा छोड़ गया।

बात १९७९ में कासिमपुर पावर हाउस, अलीगढ़ के एक कवि-सम्मेलन की है। इस कवि-सम्मेलन के आयोजक श्री देशराज मुझसे संचालन करवाना चाह रहे थे, क्योंकि दरियागंज के एलाइंस कवि-सम्मेलन में उन्होंने मेरा संचालन देखा था। नीरजजी मुझे पहचाने नहीं। यद्यपि मेरे पिता भी वहाँ थे, लेकिन उन्होंने पुत्र रूप में मेरा उनसे परिचय कराया नहीं। इधर मेरा नाम भी बदल चुका था। मेरी उपस्थिति में ही उन्होंने देशराजजी से कहा, 'कोई चक्रधर-वक्रधर नहीं, सीधे सोम से कराओ।' देशराजजी ने उनकी चिरौरी की, 'दद्दा, दद्दा! अरे आप देखिए तो सही, चक्रधरजी यूनिवर्सिटी में पढ़ाते हैं। सोमजी का संचालन तो सैकड़ों बार सुना होगा, नयों को भी तो मौका मिले।' नीरजजी ने बीड़ी का एक लंबा कश खींचा, धुआँ नीचे की तरफ छोड़ा और जब धुआँ वापस उन्हीं के नथुनों में आने लगा तो उन्होंने अपनी गरदन ऊपर की ओर घुमाई, छत की ओर देखने लगे। खाँसी आई तो एक हाथ गरदन तक चला गया। देखते छत की ओर ही रहे, जैसे वहाँ कोई रचनाकर्म में तल्लीन मकड़ी विचारों का जाला बना रही हो। ऊपर देखते-देखते ही बोले, 'जो इच्छा करिए, देशराजजी! वैसे सोडा मँगा लिया या नहीं?' देशराजजी मुदित मन बोले, 'जी हाँ, जी हाँ। इंतजाम सारे पक्के हैं।' उन्हें नीरजजी की ओर से क्लीन चिट मिल चुकी थी।

मैंने उस कवि-सम्मेलन का संचालन किया और वे मुझ बालकवि अशोक शर्मा को पहचान गए। उनका जो परिचय मैंने दिया था, वह लगभग-लगभग मैंने ऊपर ही लिख दिया है।

इसमें संदेह नहीं कि पद्मभूषण गोपालदास नीरज ने पिछले सात दशक से कवि-सम्मेलन के मंचों पर एकच्छत्र शासक की पहचान बनाई। पूरे विश्व के हिंदी काव्य-प्रेमी और हमारी वाचिक परंपरा से जुड़े हुए लोग उनसे बेइंतहा प्यार करते हैं। इस निश्छल प्रेम के कारणों को तलाशें तो निष्कर्षों तक पहुँचने में कोई दुविधा नहीं होगी। उनके प्रति अनवरत चाहत का प्रमुख कारण है उनका पारदर्शी जीवन।

उन्होंने पाप किया, पुण्य किया, किया पूरे मन से। कुछ भी छिपाया नहीं। न अपने पीने का अंदाज, न अपने जीने का अंदाज।

उस अंदाज के पीछे रहे हैं उनके मानवीय सरोकार। जो उनसे मिलता है, उनका और उनकी सादगी का हो जाता है। सामाजिक निर्धारित मानकों पर नीरजजी भले ही कुछ लोगों के लिए खरे न उतरें, पर मनुष्यता के हर मानक पर वे पूरे हैं, क्योंकि वे पूरी मनुष्य जाति का भला चाहते हैं। वे एक ऐसे मुसाफिर हैं, जिसने कभी रुकना नहीं जाना और मुश्किलों में सिर झुकाना नहीं सीखा। मंजिल मिलेगी या नहीं मिलेगी, इसकी उन्होंने चिंता नहीं की, क्योंकि मंजिल को वे मानते हैं कि ये सिर्फ डगर पर चलने का बहाना है, 'पंथ की कठिनाइयों से लूँ हार मान, यह संभव नहीं है।' दरअसल, प्राथमिक बात यह है कि उनका जीवन-दर्शन है इनसानियत। इनसान का दर्द। वे अपनी कविताओं में

इनसान-विरोधी तत्त्वों पर निरंतर ताना मारते हैं—

क्या करेगा प्यार वह भगवान् को
क्या करेगा प्यार वह ईमान को,
जन्म लेकर गोद में इनसान की
प्यार कर न पाया जो इनसान को।

उनकी दूसरी खूबी है कि वे मनुष्यों में किसी भी प्रकार की गैरबराबरी के सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते—

जात-पाँत से बड़ा धर्म है
धर्म-ध्यान से बड़ा कर्म है,
कर्म-कांड से बड़ा मर्म है
मगर सभी से बड़ा यहाँ यह छोटा सा इनसान है
और अगर वह प्यार करे तो धरती स्वर्ग समान है।

तीसरी खूबी यह कि नीरजजी ने कर्मठता के साथ अपनी सौंदर्य-दृष्टि को बरकरार रखा है और श्रोताओं से जुड़ने की उनमें अपूर्व और अपरिमित क्षमता है।

चौथी बात यह कि उनकी कविताओं में मृत्यु का भय नहीं है। उन्होंने मृत्यु पर ढेर सारी कविताएँ लिखी हैं। एक कविता जो उन्होंने अपनी धुर जवानी में लिखी थी, मैंने अपने बचपन में सुनी थी—

रह गए धरे के धरे ताख में ज्ञानग्रंथ
छूट गई बँधी की बँधी रत्नवाली गठरी,
लुट गई सजी की सजी रूप की हाट
और देखती खड़ी की खड़ी रही सगरी नगरी,
कुछ ऐसी लूट मची जीवन चौराहे पर
खुद को ही खुद लूटने लगा हर सौदागर।
और जब तक कोई आए, हमको समझाए
तब तक भुगताने ब्याज महाजन आ पहुँचा,
जब तक कुछ अपनी कहूँ, सुनूँ जग के मन की
तब तक ले डोली बिदा क्षण आ पहुँचा।

जीवन कैसे गतिमय रहता है और विदा क्षण है कि करीब आता जाता है। नीरजजी उससे भयाक्रांत नहीं हैं। न अस्पताल से, न डॉक्टरों से, न सलाहकारों से और न नसीहत देनेवालों से। आज भी कवि-सम्मेलनों में जाने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता। श्रोताओं का प्यार उन्हें अपनी ओर खींचता है। यह सबसे बड़ी बात है, जिसने मुझे निरंतर प्रभावित किया है।

बाईस अक्तूबर दो हजार सोलह को छियालीसवें श्रीराम कवि-सम्मेलन में वे छियालीसवीं बार आए। डॉक्टरों के मना करने के बावजूद तिरानबे वर्षीय नीरजजी पिछले एक दशक से काफी बीमार चल रहे थे। विगत जीवन की बदपरहेजियों ने उनके शरीर में तरह-तरह की बीमारियाँ सहेजी हुई हैं। उन्हें चलने में असुविधा थी, व्हील चेयर का सहारा लेना पड़ता था। डॉक्टर आराम की सख्त हिदायत देते थे, लेकिन नीरजजी सलाहों की सलाखें तोड़कर आते रहे। श्रीराम कवि-सम्मेलन में सारे श्रोताओं ने खड़े होकर अपने प्यारे कवि का अभिनंदन किया था।

हिंदी व्यंग्य-लेखन के सशक्त हस्ताक्षर, कविताओं के मंच की शोभा, अनेक पुस्तकें प्रकाशित, बहुप्रशंसित, अनेक ख्यातनाम सम्मानों से सम्मानित। हिंदी अकादमी, दिल्ली तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष। विगत तीन दशकों से विभिन्न संचार माध्यमों में सक्रिय।

उस कवि का लगातार तालियाँ बजाकर स्वागत, जिसके दार्शनिक शृंगारी और मानवीय अंदाज को वे आजादी मिलने से पहले से सराहते आ रहे हैं। इसलिए भी सम्मान किया कि कोई व्यक्ति अपने काव्य-कर्म के प्रति इतना कर्तव्यनिष्ठ है कि इतनी रुग्णावस्था में भी आ गया। रोमांचक क्षण था। सचमुच उनकी हालत अच्छी नहीं थी। शरीर साथ नहीं दे रहा था। व्हील चेयर से उतारकर जब तक उन्हें माइक के आगे कुरसी पर नहीं बिठा दिया, उन्होंने कवि-सम्मेलन में बताया कि मैं यहाँ निरंतर आ रहा हूँ। डॉक्टरों की सलाह की सलाखें मुझे रोक नहीं पाईं, मैंने जिद की कि मुझे जाना है और आ गया।

गजब की स्मरण-शक्ति है उनकी। तीस मिनट कंठस्थ काव्य-पाठ किया। गले की तरन्नुम की खनक अब वैसी तो नहीं है, लेकिन बोलने के अंदाज में कहीं कोई कमी, कोताही नहीं। माइक के सामने आते ही उनकी थकन गायब हो जाती है। उन्होंने काव्य-पाठ बंद किया। व्हील-चेयर आई, लोग उन्हें खड़े होकर तालियाँ बजाकर विदा देते रहे, जब तक कि वे सभागार से निकल नहीं गए।

रह गए कुछ शब्द और उनसे बने रूपक। नीरज जब मंच पर होते हैं तो श्रोताओं को उनकी अनेकानेक कविताएँ याद आने लगती हैं। वे अब फरमाइशें पूरी नहीं कर पाते, लेकिन गूँजते रहते हैं वे शब्द, जो अनेक दशकों से उन्होंने अलग-अलग संदर्भों में सुने हैं। कारवाँ, बूँद, बादल, सूरज, दीपक, मिट्टी, काँटे, फूल, पीड़ा, गीत, घट, पनघट, अंजन, नयन, पुतली, काजल, सूरज, जल, संध्या, चाँद, ऊषा, निशि, कली, लाश, शहनाई, सितार, घुँघरू, संगीत, पायल, दर्पण, चाँद-सितारे, काजल-कंघी, बिंदी, सिंगार, साँझ-सकारे, बुझते-बुझते, अंगारे, घायल इनसानियत। वे सपनों का आना और सपनों का झरना दिखाते हैं। क्या खोना और क्या पाना है के सवाल खड़े कर जाते हैं। एक अजब सा दर्शन दे जाते हैं।

एक चीज है जो अभी खोके अभी खोनी है,
एक बात है जो अभी होके अभी होनी है,
जिंदगी नींद है जो जागकर आनेवाली
जो अभी सोके अभी सोई अभी सोनी है।

काव्य-पाठ से वे स्वस्थ हो जाते थे। उनके लिए इससे बड़ा सुखद समय कोई नहीं है, जब वे सुना रहे हों और लोग सुनकर झूम रहे हों। और फिर वे प्रशंसा सुनने के लिए रुकते नहीं थे। फिर से अस्पताल के बिस्तर पर। मेरे खयाल से श्रीराम कवि-सम्मेलन में आने से उनकी थकान दूर हुई होगी। उनका स्नायु-तंत्र और कुशल हुआ होगा।

चलिए, फिर से जरा पीछे चलते हैं। यादों की रील पीछे की तरफ घुमाते हैं। नीरजजी को पहली बार उन्नीस सौ बासठ में खुर्जा के एस.एम.जे.ई.सी. इंटर कॉलेज में देखा था। यहीं मेरे पिता श्री राधेश्याम 'प्रगल्भ' पढ़ाते थे और कॉलेज में प्रतिवर्ष एक कवि-सम्मेलन आयोजित किया करते थे। नीरजजी जिस समय कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री एल.एन. गुप्ता के कक्ष में आए, मैं वहीं था। आखिरकार कवियों की सूची में बालकवि अशोक शर्मा के रूप में मेरा भी नाम था। बाकायदे न्योतित कवि! उस समय मेरे लिए हैरानी की बात यह थी कि हम सबके लिए सबसे ज्यादा आदरणीय एवं हृदय-लोक में सर्वोच्च पदासीन व्यक्ति, यानी प्रधानाचार्यजी नीरजजी को साक्षात् देखकर परम रोमांचित हो उठे। आंतरिक स्नेहावेश में उनकी कँपकँपी सी छूट रही थी। यह देखकर मैंने पहली बार नीरजजी को जरा ध्यान से देखा।

पर एक अलग तरह की बात हुई, जिसकी चर्चा उनके समकालीन कवियों ने ज्यादा की कि जिन फिल्मों में नीरजजी गीत लिखते हैं, वो तो फ्लॉप हो जाती हैं, पर गीत हिट हो जाते हैं। 'मेरा नाम जोकर' इस बात का एक उदाहरण थी। कहा जाता था कि नीरजजी इस तरह की बातें सुन-सुनकर परेशान हो गए और मुंबई छोड़कर वापस अलीगढ़ आ गए। और मजे की बात यह कि उनके वापस आते ही वह फिल्म हिट हो गई, जिसके गीत लिखकर वे लौटे थे। इस फिल्म का नाम था 'शर्मीली'।

छरहरा लंबा शरीर, गालों पर ही-मैन वाले गड्ढे, बंद गले के कोट में भारतीयता की एक गरिमा, सम्मोहक मुसकान, सबके प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार, निरभिमानी आत्मीय संवाद। उनके आते ही सब खड़े हो गए थे। मैं इतना छोटा था कि लोगों के बीच किसी तरह से घुसकर आगे निकल आया था और चेहरा ऊपर उठाकर उनके मुख से झरते शब्दों को समझने की चेष्टा कर रहा था।

जलवा हुआ करता था नीरजजी का। 'काई-सी फट जाना' एक मुहावरा है, नीरजजी जब किसी सभा में पहुँचते थे तो इस मुहावरे का अर्थ समझ में आता था। यह वह दौर था जब लोगों को साहित्य की खुराक या तो कवि-सम्मेलनों से मिलती थी या अपने कस्बे के वाचनालय से। सब लोग अखबार या पत्रिकाएँ खरीदें, कहाँ मुमकिन होता था। स्वास्थ्य-चिंता अथवा मित्र-मिलन के उद्देश्य से कुछ पढ़े-लिखे लोग टहलने जाते थे और लौटते समय वाचनालय में थोड़ा समय बिताते थे। शहर में कवि-सम्मेलन होना हो तो पूरा शहर उस रात का इंतजार करता था। वह रात उस शहर के लिए साहित्य की रात होती थी। बिना शक कहा जा सकता है कि शहर की साहित्य-सुरुचि का कामना-केंद्र कवि-सम्मेलन होता था, कवि-सम्मेलन के केंद्र में हुआ करते थे गीत और गीत के केंद्र में थे नीरजजी।

हमारे इंटर कॉलेज के कवि-सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सोहनलाल द्विवेदी ने की थी। नीरजजी ने क्या सुनाया था मुझे बिल्कुल याद नहीं, क्योंकि मैं तो अपनी ही कविता के नशे में था। वैसे भी कविगण एक-दूसरे की कविता सुनते ही कहाँ हैं। दाद देना या वाह-वाह करना प्रायः अवचेतन का अभ्यासजन्य कौशल होता है।

कुछ अरसे बाद बुलंदशहर की नुमाइश के कवि-सम्मेलन में पुनः नीरजजी के दर्शन हुए। वहाँ मैंने भी कविता-पाठ किया था। मेरी कविता पर नीरजजी मुग्ध हुए और उन्होंने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि वे अपनी किताबों का पूरा सैट इस बालक को पुरस्कारस्वरूप भेजेंगे। मैं परम प्रसन्न। यह बात मैं सबको बताता घूमता था कि नीरजजी की किताबों का सैट बस आने ही वाला है। पर अफसोस कि नीरजजी सैट की बात भूल गए। किताबों का सैट नीरजजी की पूर्व स्मृति से राइज होने के बजाय विस्मृति के पश्चिम में सन की तरह सैट हो गया। खैर, नीरजजी भूले पर मुझे तो याद रहा।

वर्ष १९६५ में हाथरस में एक कवि-सम्मेलन में मेरी कविता से प्रभावित होकर एक सेठजी ने मुझे इक्कीस रुपए पुरस्कार रूप में दिए। मेरे मन में तब यह भाव था कि मैं कवि हूँ, मुझे पैसों की क्या जरूरत। नीरजजी की किताबों के सैट की तरह पुस्तकें मिलें तो स्वीकार भी करूँ। मैंने इक्कीस रुपए तभी बाढ़-पीड़ितों के लिए दानस्वरूप तहसीलदार महोदय को दे दिए और मंच पर बैठे नीरजजी को पुस्तकों के सैट की याद दिलाई।

फिर नीरजजी को १९६८ में देखा मथुरा में। वे आकाशवाणी के कवि-सम्मेलन में किसी सुंदर सी मित्र के साथ आए। तब तक नीरजजी के सत्संग के किस्से बहुत मशहूर हो चले थे। मैं उन दिनों अपना कैशोर्य पार कर रहा था। मैंने उन्हें प्रणाम किया, पर वे मुझे पहचान नहीं पाए कि यह वही बालक है, जिससे उन्होंने कभी कोई वादा किया था। यहाँ मैं सिर्फ श्रोता की हैसियत से था। शायद पहली बार मैंने नीरजजी को ध्यान से सुना। वे बच्चनजी से गहरे प्रभावित थे। बच्चनजी की उस मधुशाला से, जिसमें शराब कम थी, पर नशा ज्यादा था, उनकी कविताओं में जहाँ एक ओर जन-मन के प्रति एक व्यापक मानवतावादी सोच दिखा, वहीं दूसरी ओर आशा और निराशा के बीच झूलती हुई मृत्यु की अनेक परिभाषाएँ। सरल-सहज भाषा में जीवनानुभूति, प्रेमानुभूति और सौंदर्यानुभूति का सांगीतिक सम्मिश्रण।

बहरहाल, मैं तो १९६८ के बाद अलग सी राह पर निकल पड़ा और कवि के रूप में मुझे मुक्तिबोध मिल गए। थैंक्यू सुधीश पचौरी! मैं आधुनिक भावबोध के कवि मुक्तिबोध में इतना डूबा कि फिर मुझे किसी और कवि अथवा किसी और किस्म की कविता की ओर आकर्षण नहीं जान पड़ा। दस साल निकल गए। १९६८ से १९७८ के बीच मैं कवि-सम्मेलनों में भी नहीं गया। नीरजजी तब तक मुंबई जाकर फिल्मों में बतौर गीतकार अपना नाम और काम जमा चुके थे। नीरजजी के ग्लैमर में फिल्मी कीर्ति और जुड़ चुकी थी।

पर एक अलग तरह की बात हुई, जिसकी चर्चा उनके समकालीन कवियों ने ज्यादा की कि जिन फिल्मों में नीरजजी गीत लिखते हैं, वो तो फ्लॉप हो जाती हैं, पर गीत हिट हो जाते हैं। 'मेरा नाम जोकर' इस

बात का एक उदाहरण थी। कहा जाता था कि नीरजजी इस तरह की बातें सुन-सुनकर परेशान हो गए और मुंबई छोड़कर वापस अलीगढ़ आ गए। और मजे की बात यह कि उनके वापस आते ही वह फिल्म हिट हो गई, जिसके गीत लिखकर वे लौटे थे। इस फिल्म का नाम था 'शर्मीली'।

अपने फ्लैश बैक का समापन मैं १९७९ में कासिमपुर पावर हाउस, अलीगढ़ के उस कवि-सम्मेलन पर करता हूँ, जहाँ मुझे सोमजी के स्थान पर उन्होंने संचालन के लिए क्लीन चिट दी थी। मैं अंदर-ही-अंदर मगन था और संचालन के लिए होमवर्क करना चाहता था, ताकि मेरे संचालन के बाद जब परिचय हो तो नीरजजी को कोई मलाल नहीं साले। उनके परिचय की विशेषण माला मैंने तभी गढ़ी, जो आपने सबसे पहले पढ़ी। धुआँधार तालियाँ बजीं, नीरजजी धुआँधार जमे। कवि-सम्मेलन में श्रोता भी रातभर रमे। बाद में जब नीरजजी को मेरा संपूर्ण परिचय मिला तो वे मेरे लिए स्नेह की सघन बरसात में बदल गए। मैंने याद दिलाया लगभग सोलह साल पुराना वादा, किताबों के सैट का। उसके बाद तो निरंतर उनका सत्संग अब तक जारी था। पर बता दूँ कि आगे आनेवाले सोलह साल तक भी सैट नहीं मिला। मैं बिना अपसैट हुए प्रतीक्षा करता रहा।

कवि-सम्मेलनों में बराबर उन्हें उनके वादे की याद दिलाता रहा। बेशर्म होकर कई मंचों से भी नीरजजी की वादाखिलाफी की चर्चा की। वे मुसकराकर रह जाते थे। एक मंच पर उन्होंने भी सार्वजनिक रूप से कहा कि तीन खंडों में मेरी रचनावली आनेवाली है, आते ही अशोक को दूँगा। सन् चौरानबे में रचनावली भी छप गई, पर मिली मुझे सन् २००० में। यानी वादे के लगभग छत्तीस साल बाद। विलंब तो हुआ, लेकिन भेंट के संबोधनों में उन्होंने पुरानी सारी कसक और कसर निकाल दी। रचनावली के पहले खंड में उन्होंने मुझे 'अप्रतिम व्यंग्य नक्षत्र' कहा, दूसरे खंड में 'हिंदी का सर्वश्रेष्ठ व्यंग्यकार' और तीसरे में 'व्यंग्य का अद्‌भुत कवि' लिखा। मैं संकोच में खड़ा उन्हें लिखते देख रहा था और सोच रहा था कि ये विशेषण हैं अथवा मूलधन के साथ ब्याज।

तिरानबे वर्षीय इस युवा के बारे में तमाम तरह की किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से अधिकांश सुरीली हैं, क्योंकि उनका संबंध सुरा और सुंदरियों से है। नीरजजी की एक कविता में बड़ा रोचक प्रसंग है कि वे एक चूड़ी बेचनेवाली मनिहारिन के यहाँ तरह-तरह की चूड़ियाँ देख रहे हैं, सोच रहे हैं अपनी पत्नी के लिए कौन सी चूड़ी खरीदें कि तभी एक कंगन उनकी तरफ चला आता है। वे कहते हैं—

पर जब तक मैं कुछ मोल करूँ उससे तब तक
खुद मुझे खोजता कोई कंगन आ पहुँचा।
जब तक कुछ अपनी कहूँ सुनूँ जग के मन की,
तब तक ले डोली द्वार विदा-क्षण आ पहुँचा।

नीरजजी कंगन को एक प्रतीकार्थ देना चाह रहे हैं। पर मैंने कवि-सम्मेलन की असंख्य यात्राओं में देखा कि तमाम तरह के कंगन उनकी ओर खिंचे चले आते हैं। मैं दावे से कह सकता हूँ कि बीसवीं सदी में किसी कवि को महिलाओं का इतना निश्छल प्रेम-स्नेह प्राप्त नहीं हुआ होगा, जितना नीरजजी ने हासिल किया।

मैंने देखा कि नीरजजी को उनकी महिला-मित्र एक अद्‌भुत सखाभाव से देखती रही हैं। नीरजजी को अपना ऐसा सखा मानती रही हैं, जिससे अपने जी की तमाम बातें की जा सकती हैं। सखी होने की पूरी लिबर्टी लेती थीं। आत्मीयता से अपने सखा को अधिकारपूर्वक डाँटती थीं, एक पराँठा तो खाना ही पड़ेगा।'''अब और बीड़ी नहीं पीने दूँगी।'''बहुत देर से बातें कर रहे हैं, अब सो भी जाइए, वगैरह-वगैरह। ऐसी स्नेहपूर्ण डाँटें वे निरंतर खाते रहते थे। कोई-कोई सखी अचानक एकाधिकारिणी भी हो उठती और नीरजजी मुसकराते हुए निरीह आज्ञाकारी।

वैसे वे जयोतिष के परम ज्ञाता थे, पर मैंने कभी भी उन्हें किसी महिला का हाथ देखते हुए नहीं पाया। महिलाएँ ही उनका हाथ पकड़कर उन्हें डाँटती-समझाती रहती थीं। अलग-अलग नगरों में मैंने नीरजजी की अलग-अलग सखियाँ देखीं। सभी गंभीर, दायित्वबोध से परिपूर्ण, अपनेपन की आत्मीय प्रतिमाएँ। मैंने नीरजजी के सखाभाव में एक साख पाई। नीरजजी के सुरापान के बारे में मैं साफ कर दूँ कि वे उतनी पीते नहीं थे, जितना झूमते और झुमाते थे।

मंच को नीरज का प्रदेय यह है कि उन्होंने मंच के माध्यम से व्यापक हिंदी जनमानस को प्रेम और इनसानियत में घोलकर अध्यात्म का संदेश दिया है। वर्ग, वर्ण, धर्म, जाति-पाँति से उठकर बृहत्तर मानवीय सरोकारों को उन्होंने बराबर रेखांकित किया। इनसानियत के तमाम सकारात्मक तत्त्वों के प्रति वह बहुत ही आशावान रहे। तीसरा युद्ध नहीं होगा, उनकी बहुत ही महत्त्वपूर्ण कविता है। कारवाँ गुजर गया तो उनकी ऐसी रचना है, जिसे दशकों से दर्शक उनसे सुनते ही सुनते हैं। अपने बारे में वे कहते रहे हैं—

दर्द दिया है, अश्रु स्नेह है, बाती बैरिन श्वास है,
जल-जलकर बुझ जाऊँ, मेरा बस इतना इतिहास है।

और मैं उनके लिए कहता हूँ—

दहकी दर्द-सलाख मिलेगी नीरज में,
अरमानों की राख मिलेगी नीरज में।
तितली, कलियाँ, गलियाँ गिनना बंद करो,
सखा भाव की साख मिलेगी नीरज में।

कैसे गीत हों, कैसे लिखे जाएँ, कैसे नहीं लिखे जाएँ। कैसे गीत सुनाना, लिखना गलत है। उन्होंने कहा—

दुनिया के घावों पर मरहम जो न बनें
उन गीतों का शोर मचाना पाप है!

खड़े किनारे पर ही जो हँसते हुए
सुनते रहे पुकार डूबनेवालों की,
जिनकी वाणी बनकर कीर्ति नहीं गूँजी
तूफानों के गाल चूमनेवालों की,
ऐसे बैरागी-संन्यासी रागों का
द्वार-द्वार पर अलख जगाना पाप है!
दुनिया के घावों पर मरहम जो न बनें
उन गीतों का शोर मचाना पाप है!!
पानी के ही ठंडे-ठंडे दर्पण में
रहे देखते जो जलते सूरज का तन
जिनके सर पर सेहरा बनकर नहीं सजा
सिया हुआ काँटों से लहू-लुहान कफन,
ऐसे सर्द गुलाबों की मुर्दा ऋतु में
बुलबुल तेरा आना-जाना पाप है!
दुनिया के घावों पर मरहम जो न बनें
उन गीतों का शोर मचाना पाप है!!

यह मैंने ऐसे गीत का उद्धरण दिया है, जो प्राय: आपको नहीं सुनने को मिला होगा। नीरजजी ने कभी हाथ में कागज या मोबाइल लेकर कविता नहीं पढ़ी। लंबी-लंबी कविताएँ कंठस्थ रहती थीं। चाहे वह तीसरे विश्वयुद्ध की संभावनाओं के विरुद्ध लिखी हुई कविता हो या उनके लंबे-लंबे गीत। उनके पास खजाना होता था। उनके कंठस्थागार में कुछ इतना सारा होता था कि आप उनके साथ बैठ जाएँ तो रस और ज्ञान की वर्षा के अलावा कुछ नहीं आप पाएँगे।

वे किसी की निंदा नहीं करते थे। की तो मुँह पर ही कर दी। थोड़ी सी करी और छोड़ दिया। उनकी निंदा करनेवालों की कोई कमी नहीं थी। कितनी निंदाएँ नहीं हुईं। उनके गुरुओं ने उनकी निंदा की, उनके अधीनस्थों ने की, उनके परवर्तियों ने की, लेकिन वे ऐसे कबीर थे, जो निंदाओं को जिंदा नहीं रहने देते थे। अपनी मुसकान से, अपने ज्ञानपूरित थोड़े से शब्दों से, कुछ ऐसा कर देते थे कि सामने वाला उनकी चुंबकीय शक्ति की परिधि में प्रविष्ट हुए बिना रह ही नहीं सकता था। अब तो उनकी स्मृतियाँ ही चुंबक हैं।

मॉरीशस में हुए ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन मैं श्रीमती सुषमा स्वराज एक मुख्य सभागार का नाम रखा 'गोपाल दास नीरज सभागार'। सोशल मीडिया के कारण ऐसा मैंने पहली बार देखा कि किसी कवि के जाने पर अब तक गाँवों में, कस्बों में, नगरों में, देश-देशांतर में श्रद्धांजलि सभाएँ हो रही हैं। अब एक बड़ा सा फ्लैक्सी चित्र निकलवाना आज के जमाने में ज्यादा मुश्किल नहीं है। चित्र लगा देते हैं। आगे खड़े होकर नीरजजी के संस्मरण सुनाते हैं। फट से किसी वॉट्सएप ग्रुप पर छायाचित्र या वीडियो आ जाता है। हजारों की संख्या में लोगों ने सभाएँ आयोजित की हैं। इससे पता लगता है कि वे कितने लोकप्रिय थे और कितनी सरलता से लोगों के हृदय में प्रवेश करनेवाले थे।

नौजवान कवियों के लिए उनकी कविता का एक अंश देकर में अपनी बात समाप्त करूँगा—

हो चुके बहुत विघटन विनाश के खेल यहाँ,
अब शेष बची जो उम्र सृजन के नाम करो!
जितना है अपना पाप चिता की भेंट करो,
जितना है अपना पुण्य वतन के नाम करो।

जे-११६, सरिता विहार, मथुरा रोड,
नई दिल्ली-११००४४

साहित्य अमृत

भारत सरकार (गृह मंत्रालय) के राजभाषा विभाग के
पत्रांक ११०१४/८/९६-रा.भा. (प) द्वारा
केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/
सार्वजनिक उपक्रमों/बैंकों/स्वायत्त निकायों/संस्थाओं आदि के लिए
एक विशिष्ट मासिक साहित्यिक पत्रिका के रूप में अनुशंसित एवं अनुमोदित।
एक प्रति का शुल्क : तीस रुपए
एक वर्ष का शुल्क : चार सौ रुपए
शुल्क मनीऑर्डर अथवा बैंक-ड्राफ्ट द्वारा 'साहित्य अमृत' के नाम
४/१९ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२ के पते पर भेजा जा सकता है।
राजभाषा हिंदी तथा सत्साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए
संस्थाओं का सहयोग अपेक्षित है।

पावस और प्रेषितपतिका

● श्याममोहन दुबे

'पति जिसका गया परदेस,
न वापस लौटा अपने देस,
विरहिन सूख रही ज्यों लतिका
वह कहलाती है प्रेषितपतिका।'

अब तो आ जाओ, बरसात आ गई। दिन की चमक को काले बादलों ने ढककर मन में भय पैदा कर दिया है। रात-दिन बिजली की चमक और बादलों की गर्जना मन में अजीब सा भय पैदा कर रही है, और ऐसे में तुम पास नहीं हो। पृथ्वी पावस के स्वागत में हरित वसन धारण किए दुलहन सी बनी हैं, वह पूर्ण तृप्त है, क्योंकि उसके वस्त्र संपन्नता के द्योतक हैं, किंतु मेरे नयनों में जलधार है और प्रतीक्षा की घड़ियाँ मेरे लिए पहाड़ बन गई है। प्यास से व्याकुल नदियाँ, नाले, ताल, झीलें, घहर-घहरकर अब अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं। वाटिका में पौधों की गोद भर गई है। वे अपने शिशु कली और पुष्पों को पवन के हिंडोले पर झूला झुला रहे हैं। रात मेरे सिरहाने का दीप गीले पवन के शीतल झोंकों से सिहर सिहर उठा है, वैसे ही मेरा मन अज्ञात भय की आशंका से अनुप्राणित है। संपूर्ण धरा पर मधु गगरी छलक रही हैं, किंतु मेरा मन प्राण अभी भी मरुभूमि सा शुष्क एवं नीरस है। हरी-हरी दूबों पर मोती जैसी बूँदियों का नर्तन स्पष्टत: मुझे तुम्हारी स्मृति में व्याकुल कर रहा है। निर्बंध पर्वतों की आँखों से झरने फूट-फूटकर द्रुत गति से अपने लक्ष्य की ओर बह रहे हैं। उनमें यौवन की मस्ती है, चंचलता है। उन्मत्त बनानेवाले झकोरों में कदंब का मन फूला नहीं समाता, और मैं उदास हूँ, क्योंकि ऐसे में तुम प्रियवर मेरे पास नहीं हो। पक्षियों के पंख गीले हो गए हैं, वे अपने एकाकी नीड़ों में विश्राम कर आपस के प्रगाढ़ आलिंगन की ऊर्जा से अपने पंख सुखाने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रियतम, तुम्हारी राह देखते-देखते मेरे नयन भर-भर आते हैं। दूर तक एकाकी पथ पर मैंने अपनी दृष्टि-पँखुरियाँ बिछा दी हैं कि शायद आते-आते तुम्हें मेरी प्रतीक्षा का आभास हो सके।

मेरी शैया के सिरहाने रखे दीप की शिखा पर शलभ अपने प्रेम, बलिदान और त्याग का सफल प्रदर्शन कर अपने असाधारण साहस का परिचय दे रहे हैं। संभवत: वे इस मस्ती भरी ऋतु को अपने अमूल्य जीवन से क्रय कर लेना चाहते हैं। क्योंकि ऐसे पल जीवन में बार-बार नहीं आते। वे ऐसी मद भरी ऋतु को हाथ से जाने नहीं देना चाहते और ऐसे में तुम मेरे पास नहीं हो। यह निष्ठुर कठिन विरह की वेला, मेरा अंतर व्याकुल हो उठा है। सहसा ही ये कर्ण तुम्हारी चिर-परिचित वाणी सुनने को आकुल-व्याकुल हो उठे हैं। किंतु प्रतीक्षा के बाद भी निराशा का आँचल हाथ में रह जाता है। चंदन-सा बोझिल शीतल समीरण का सजल, सुवासित झोंका तन में कंपन पैदा कर देता है और मेरा प्राणदीप सिहर-सिहर उठता है। हरी-हरी दूबों पर शबनम सी चमचमाती बूँदें जैसे मुझे इंगित कर कहती हैं, आओ, दो पल यौवन के पल बीत न जाएँ। दो क्षण बादलों के झरोखों से चाँद झाँककर कहता है, आओ पल दो पल चाँदनी में स्नान कर अपना जीवन सफल बना लो। किंतु मैं इन छलियों की बातें क्योंकर मानूँ, क्योंकि ऐसे में तुम पास नहीं हो, मेरी आँखों से अश्रु सूख नहीं पा रहे, शायद तुम्हारी साँसों की तपन इन्हें निश्चित ही सुखा सके। सावन में सखियाँ पेड़ों की डालियों पर पड़े झूलों पर झूल रही हैं, नव विवाहिता सहेलियाँ विवाह के बाद का पहला सावन मनाने मायके में आ गई हैं। सबने मिलकर हाथ-पैरों में मेहँदी रचाई है, किंतु मैं मेहँदी कैसे रचाऊँ, मैं जानती हूँ कि तुम यहाँ नहीं हो, और मेहँदी मुझे सुर्ख नहीं उछलेगी। कैमरों की खपरैल से पानी रिसने लगा है और मेरी आँखों के आँसुओं से उसने होड़ लगा रखी है, क्योंकि ऐसे में तुम यहाँ नहीं हो।

बार-बार कागा छत की मुँड़ेर पर आकर काँव-काँव करता है, मैं मुँड़ेर पर दूध-भात रख देती हूँ, वह खाकर उड़ जाता है। तब मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अब तुम अवश्य आओगे और ये सलोनी और व्यथा भरी बरसात यों ही नहीं बीतेगी। पवन के झोंकों से दरवाजे के कपाट खुल-खुल जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शायद यह तुम्हारे आने का संकेत हो। मेरी बाईं आँख फड़क रही है और मेरा मन कहता है, तुम अवश्य आओगे। मेरा मन इस गीत की पंक्तियाँ गा रहा है।

'साँझ भयी बदरा घिर आए, गए प्रवासी लौट न आए। रात कठिन जीना है दूभर। चैन न आए अब तो पलभर। लंबी रातें बीत न पाएँ, सुस्मृतियाँ झकझोर जगाएँ' गीत पूरा होते-होते ही तुम सचमुच आ गए, अब यह सलोनी बरसात तुम्हारे साथ ही बीतेगी।

१३९२, चौथी गली, कृष्ण कुंज, बाई का बगीचा
धमापुर, जबलपुर-४८२००१
दूरभाष : ०७०४९१५०९००

कहानी

आखिरी ईद

• श्रीधर द्विवेदी

एम.डी., पी-एच.डी., एफ.ए.एम.एस., एफ.आर.सी.पी. (लंदन), नई दिल्ली स्थित जामिया हमदर्द के 'हमदर्द इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च' में डीन व प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं। उनका 'हृदयवाणी' शीर्षक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुआ है। 'तंबाकू चित्रावली' उनकी दूसरी प्रमुख हिंदी रचना है।

बात उन्नीस सौ छप्पन की है—कहने को सुल्तानपुर लखनऊ-कानपुर-इलाहाबाद-बनारस की अपेक्षा छोटा शहर था, पर पढ़ाई-लिखाई के मामले में बहुत पीछे नहीं था। गोमती के किनारे वहाँ के शिया डिग्री कॉलेज की आस-पास के क्षेत्र बहुत प्रसिद्धि थी। कहने को वह मुसलिम विद्यालय था, पर उसमें बहुत अधिक संख्या में गैर-मुसलिम छात्र और शिक्षक दोनों पढ़ते-पढ़ाते थे। वहाँ का पूरा वातावरण अत्यंत सौहार्दपूर्ण था। इसका पूरा श्रेय वहाँ की प्रबंध व्यवस्था और तत्कालीन प्रिंसिपल हिदायत हुसैन साहेब को जाता था। प्रिंसिपल साहेब बड़े उदार और दबंग प्रकृतिवाले व्यक्ति थे। अंदर से अपने मजहब के प्रति पूरी आस्थावाले इनसान, पर अन्य धर्मों के प्रति उनकी दृष्टि काफी सहिष्णु थी। उनकी इसी सोच के कारण वहाँ बहुत अधिक संख्या में होनहार हिंदू सिक्ख अध्यापक काफी समय से टिके हुए थे। अभी तक शिया कॉलेज में डिग्री स्तर पर केवल आर्ट और सामाजिक शास्त्र के विषयों की पढ़ाई होती थी। प्रिंसिपल साहेब की हार्दिक इच्छा थी कि रिटायर होते-होते अपने विद्यालय में विज्ञान की डिग्री कक्षाएँ शुरू हो जाएँ, जिससे गरीब और पिछड़े मुसलमानों के बच्चे, विशेषत: गरीब बच्चे विज्ञान की रौशनी पा सकें और समाज में फैले अज्ञान के अंधकार को दूर किया जा सके। उनका निश्चित मत था, बिना ज्ञान-विज्ञान के समाज और देश का भला नहीं होनेवाला, विकास नहीं होना।

अपने सपने को साकार रूप देने के लिए प्रिंसिपल साहेब ने सबसे पहले विज्ञान के चार वरिष्ठ अध्यापक देवी प्रसाद (जंतु विज्ञान), माखन लाल (वनस्पति शास्त्र), अवधेशशरण (भौतिक विज्ञान) और मुनीर खान (रसायन विज्ञान) को नियुक्त किया। ये चारों लोग आस-पास के प्रतिष्ठित महाविद्यालयों में कार्य कर रहे थे। शायद वे सब सेवानिवृत्ति के करीब थे और सुल्तानपुर आना चाहते थे। देवी प्रसाद, माखनलाल और अवधेश शरण लखनऊ विश्वविद्यालय से अपने-अपने विषय में एम-एस.सी., पी-एच.डी. थे और मुनीर खान अलीगढ़ विश्वविद्यालय से रसायन शास्त्र में पी-एच.डी. थे। चारों में से सबसे वरिष्ठ देवी प्रसाद को विभागाध्यक्ष बनाया गया। उनके कंधों पर बी-एस.सी. डिग्री कोर्स शुरू करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। देवी प्रसाद बहुत जीवटवाले आदमी थे। उन्होंने सबसे पहले अपनी टीम को बी-एस.सी. कोर्स शुरू करने के लिए विश्वास में लिया। अपने लंबे शैक्षिक और प्रशासनिक अनुभव के आधार पर नवनिर्मित विभाग को मूर्त रूप देने की उसमें प्राण फूँकने की कोशिश की। उस समय डिग्री कोर्स शुरू करना बड़ी टेढ़ी खीर थी। पहले सरकार से फिर विश्वविद्यालय से अनुमति लेनी पड़ती थी। सरकार से आवश्यक अनुमति के लिए प्रिंसिपल साहेब ने पहले ही आवेदन कर रखा था। देवीप्रसादजी ने कार्यभार सँभालते ही अपने पुराने रसूख का सहारा लेकर फाइल को आगे बढ़ने की पुरजोर कोशिश की। उस समय शासन का रुख शिया डिग्री कॉलेज के लिए कुछ नरम था। इसलिए बात बनती नजर आ रही थी। मंत्रालय से फाइल निकलते-निकलते लाट साहेब की मंजूरी मिलते-मिलते एक साल लग गया। एक ईद निकल गई। अब बारी थी यूनिवर्सिटी से अनुमति लेने की। देवी प्रसादजी ने अब अपना पूरा जोर विश्वविद्यालय से परमीशन लेने में लगा दिया। विश्वविद्यालय की टीम ने कॉलेज का निरीक्षण किया। काफी हीला-हवाली के बाद कॉलेज को बी-एस.सी. शुरू करने की सशर्त अनुमति मिली। शर्त थी यूनिवर्सिटी अगले दो साल लगातार हर वर्ष निरीक्षण करेगी, तब अंतिम निर्णय देगी। प्रिंसिपल हिदायत हुसैन साहेब बहुत खुश थे, चलो गाड़ी आगे तो बढ़ी। उँगली का सहारा मिल गया तो बाजुओं तक पहुँचने में देर नहीं लगेगी।

शिया डिग्री कॉलेज में बी-एस.सी. एडमीशन के लिए तैयारी शुरू हो गई। पूरे इलाके में खुशी की लहर छा गई। अब औपचारिक एडमीशन के लिए बहुत कम समय था, इसलिए आनन-फानन में प्रवेश परीक्षा का विज्ञापन किया गया। बड़ी सजगता और गोपनीयता से प्रश्न-पत्र लखनऊ विश्वविद्यालय की मदद से तैयार किया गया। यह पूरी जिम्मेदारी देवीप्रसादजी के कंधों पर थी। प्रवेश परीक्षा कॉलेज के प्रांगण में कुशलतापूर्वक संपन्न हुई। मजे की बात यह थी कि इसमें पूरे जिले और आस-पास के काफी-काफी बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। परीक्षा में प्राप्तांक के आधार पर पचास बच्चों को प्रवेश मिला। खास बात यह थी कि इसमें अधिकांश बच्चे गरीब घरों से आए थे, जो अपनी मेहनत और मेधा के बल पर प्रवेश परीक्षा में सफल रहे। हिदायत हुसैन साहेब इस बात को लेकर बहुत खुश थे। उनका कहना था, ये बच्चे अपने घर में रौशनी करेंगे ही साथ ही समाज में नई चेतना और विज्ञान के प्रति नया उत्साह पैदा करेंगे। ये बच्चे निर्धन जरूर थे, पर होनहार थे, इस बात को लेकर विभाग के अध्यापकों में भी काफी उत्साह था।

आखिर ये विद्यालय के विज्ञान विभाग के 'पैलोठी' के छात्र थे। समय सीमा में बच्चों के विधिवत् एडमीशन हो गए। कक्षाएँ आरंभ हो गई। देवीप्रसादजी स्वयं लैक्चर लेते और प्रयोगशाला में खड़े होकर शंका समाधान करते। पूरे शिया कॉलेज में इस कोर्स को लेकर बहुत उत्साह और गहमागहमी थी। इन बच्चों के आने से कॉलेज में रौनक बढ़ गई थी। इस विषय को लेकर सब अध्यापक बेहद खुश थे।

देखते-देखते एक साल बीत गया। दूसरे साल भी काफी नुक्ता-चीनी के बाद विश्वविद्यालय ने इजाजत दे दी, अब विज्ञान विभाग में कुल सौ बच्चे हो गए थे। इनमें से अधिकांश अत्यंत मेधावी छात्र थे। दूसरी ईद भी आ गई। अब तीसरे साल का अहम साल बचा था। इस बीच विभागाध्यक्ष देवीप्रसादजी के रिटायर होने का समय आ गया। उन्होंने कॉलेज से रिटायर होने के बाद शहर में अन्यत्र काम करना शुरू कर दिया, पर शिया डिग्री कॉलेज के लिए उनका प्रेमभाव और आत्मीयता वैसी ही बनी रही। आखिर कॉलेज में विज्ञान की पढ़ाई-लिखाई का श्रीगणेश जो किया था। प्रिंसिपल साहेब से ईद-बकरीद, होली-दीवाली पर मुलाकातों-बधाइयों का सिलसिला बना रहा। संयोग से देवी प्रसादजी के साथ-साथ माखनलालजी भी रिटायर हो गए। वे भी देवीप्रसादजी की भाँति किसी दूसरी जगह लग गए।

देखते-देखते तीसरी ईद आ गई। अध्यापक देवी प्रसाद और माखनलाल दोनों ईद की मुबारकबाद देने प्रिंसिपल साहेब के घर की तरफ रवाना हुए। दूर से ही प्रिंसिपल निवास पर लगा गुलाबी शामियाना नजर आने लगा। उनके आवास के निकट पहुँचते ही दोनों अध्यापक रिक्शे से उतर गए। दोनों के हाथों में गुलाब के गुलदस्ते थे। गेट पर चौकीदार ने देवीप्रसाद मास्टर साहेब को पहचान लिया, मुसकराया और सैल्यूट ठोंका। देवीप्रसादजी को देखते ही प्रिंसिपल साहेब की बाँछें खिल गईं। बड़े गर्मजोशी से उठ खड़े हुए। आगे बढ़े और उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया। देवीप्रसाद ने देखा, प्रिंसिपल साहेब के एक तरफ कॉलेज के बड़े बाबू थे। अत्यंत घाघ होने के साथ-साथ वे उनके नाक के बाल थे। वहाँ कॉलेज के दो और वरिष्ठ लैक्चरर बैठे थे। उनमें से एक मौलाना किस्म के सज्जन थे। उनसे भी ईद की मुबारकबाद का आदान-प्रदान हुआ। औपचारिक भेंट-अंकवार के बाद देवीप्रसाद और माखनलाल बैठ गए। शुरुआती क्षणों में प्रिंसिपल साहेब सामयिक विषयों बातें करते रहे, फिर बात घूम-फिरकर हिंदुस्तान-पाकिस्तान के मसलों पर आकर टिक गई। कश्मीर को लेकर दोनों देशों के बीच रिश्ते किस प्रकार बिगड़ रहे थे और फिरकापरस्त ताकतें किस प्रकार इसका फायदा उठा रही थीं। मास्टर देवीप्रसाद और माखनलाल गलतफहमी से बचने के लिए चुपचाप प्रिंसिपल साहेब की बात सुनते रहे। थोड़ी देर बाद मौलाना साहेब उठ खड़े हुए शायद उन्हें प्रिंसिपल साहेब की खरी-खरी बातें कम सुहाई। उन्होंने जाने की इजाजत माँगी। प्रिंसिपल साहेब ने उन्हें बिदा किया। इतनी देर में देवीप्रसाद और माखनलाल मास्टर साहेब के लिए परंपरागत सेवइयाँ आईं।

प्रिंसिपल साहेब ने खानसामे को विशेष जोर देकर कहा देवीप्रसाद साहेब विशुद्ध शाकाहारी हैं। कोई ऐसी वैसी चीज मत परोसना। हुआ भी यही। सेवक गलती से देवीप्रसादजी को बिरयानी वाली टिकिया ले आया। बड़े बाबू बहुत होशियार और बात-व्यवहार में बहुत कुशल व्यक्ति थे। उठकर अपने संरक्षण में देवीप्रसादजी और माखनलाल मास्टर साहेब के लिए मिष्टान्न-नमकीन भिजवाया। बातों का सिलसिला फिर शुरू हुआ। प्रिंसिपल साहेब ने कहा, तीसरे वर्ष के लिए निरीक्षण हो तो गया, पर विश्वविद्यालय की टीम ने फिर इस बार ढेर सारी आपत्तियाँ खड़ी कर दी हैं। इस विषय में विश्वविद्यालय हमारी एक भी दलील या स्पष्टीकरण सुनने को तैयार नहीं है। हालाँकि कॉलेज ने अपनी तरफ से कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। जरूरत से ज्यादा अध्यापक नियुक्त कर लिए हैं। प्रयोगशालाएँ पूर्णत: सुसज्जित हैं। व्याख्यान कक्ष का विस्तार कर दिया है। खेलने का मैदान, कैंटीन, छात्रवास और मनोरंजन कक्ष पूरी तरह से लकालक है। फिर भी विश्वविद्यालय के कुछ अधिकारी लेन-देन के चक्कर में या अपने गरूर में हमें मान्यता देने में आनाकानी कर रहे हैं। मास्टर साहेब, आप तो जानते ही हैं, परमीशन न मिलने पर सालों की मेहनत पर पानी फिर जाएगा। सब गुड़-गोबर हो जाएगा। सैकड़ों बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। आस-पास के लोग आस लगाए बैठे हैं कि इस साल डिग्री कॉलेज में साइंस सेक्शन को फिर से मान्यता मिल गई तो बच्चों की किस्मत खुल जाएगी। क्या कहें विश्वविद्यालय प्रशासन को? इनकी मति फिर गई है। बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि मैं संबंधित मंत्री से भी कल मिला था। पर उन्होंने कोई विशेष अभिरुचि नहीं दिखाई। मानो उच्च शिक्षा उनके लिए कोई मायने नहीं रखती। देवीप्रसाद ने प्रिंसिपल साहेब को इतना उद्विग्न और दु:खी कभी नहीं देखा था।

मास्टर देवीप्रसाद को इस ईद को एक बात रह-रहकर अखर रही थी। वह थी इस बार उनके शामियाने में रौनक और भीड़-भाड़ की कमी। पिछले तीन वर्षों में ईद के दिन कॉलेज के वरिष्ठ लैक्चरर-टीचर्स की भीड़ लगी रहती थी, पर आज गिनती के दो-तीन लोग ही दिख रहे

मास्टर देवीप्रसाद को इस ईद को एक बात रह-रहकर अखर रही थी। वह थी इस बार उनके शामियाने में रौनक और भीड़-भाड़ की कमी। पिछले तीन वर्षों में ईद के दिन कॉलेज के वरिष्ठ लैक्चरर-टीचर्स की भीड़ लगी रहती थी, पर आज गिनती के दो-तीन लोग ही दिख रहे थे। मास्टर देवीप्रसाद ने सोचा शायद थोड़ी देर बाद और लोग आवें। देवीप्रसाद और माखनलाल प्रिंसिपल साहेब की बात ध्यान से सुनते रहें। उन्होंने इस पुराने प्रतिष्ठित कॉलेज में विज्ञान की स्नातक कक्षाओं के आरंभ करने के लिए कैसे अपनी जिंदगी भर का अनुभव दाँव पर लगा दिया था।

थे। मास्टर देवीप्रसाद ने सोचा शायद थोड़ी देर बाद और लोग आवें। देवीप्रसाद और माखनलाल प्रिंसिपल साहेब की बात ध्यान से सुनते रहें। उन्होंने इस पुराने प्रतिष्ठित कॉलेज में विज्ञान की स्नातक कक्षाओं के आरंभ करने के लिए कैसे अपनी जिंदगी भर का अनुभव दाँव पर लगा दिया था। किस तन्मयता और समर्पण से उन्होंने इस बेल को सींचा था। देवीप्रसाद विभागाध्यक्ष के रूप में जब तक रहे, तब तक प्रिंसिपल साहेब के भगीरथ प्रयास में अनन्य साथी बने रहे। दाहिने हाथ थे वे। उनसे बढ़कर और कौन जानता था।

विज्ञान में स्नातक स्तर की पढ़ाई शुरू करना हिदायत हुसैन साहेब का सबसे बड़ा ख्वाब था। इस आशा की बेल को सींचने में उन्होंने अपनी जान लगा दी थी। आज जब उस सपने के पूरे होने की बारी आई तो किसी निर्दयी की बुरी नजर पड़ गई थी। मास्टर देवीप्रसाद प्रिंसिपल साहेब के अंदर के संत्रास को पूरी तरह से अनुभव कर रहे थे, क्योंकि संस्थापक विभागाध्यक्ष होने के कारण उनकी पूरी जिम्मेदारी बनती थी कि वे विश्वविद्यालय से पत्राचार करें, निरीक्षण कराएँ और डिग्री कोर्स शुरू करें। दो साल से निरंतर बी-एस.सी. की कक्षाएँ चल भी रही थीं, तब तक देवीप्रसादजी के सेवानिवृत्ति का समय हो चुका था। अब कोई दूसरे अखलाक साहेब आ गए थे। वे विभागाध्यक्ष थे। अब वे प्रिंसिपल साहेब के निर्देशन में विश्वविद्यालय से बातचीत कर रहे थे। विडंबना यह थी कि छह महीने की जद्दोजहद के बाद विभाग में सबकुछ ठीक-ठाक होते हुए भी विश्वविद्यालय ने तीसरे साल के परमीशन के लिए कॉलेज को ठेंगा दिखा दिया। प्रिंसिपल साहेब के दिल में यह बात तीर की तरह चुभ रही थी। एक ओर विश्वविद्यालय का अड़ियल और अनुचित रवैया तो दूसरी तरफ उनके रिटायर होने में दो महीने से कम का समय बचा था। वे बड़े भावुक होकर देवीप्रसाद से बोले, मास्टर साहेब! प्रिंसिपल के रूप में इस कॉलेज में मेरी यह अंतिम ईद है। देवीप्रसाद और माखन लाल ने भी सोचा, शायद हम दोनों अध्यापकों के लिए भी इस कॉलेज में यह अंतिम ईद है, क्योंकि शायद ही अब कोई इतना दूरदर्शी, परिपक्व और दीन-ईमानवाला प्रिंसिपल निकट भविष्य में आए। बड़े भारी मन से देवीप्रसाद और माखनलाल अपने-अपने घर लौट आए।

कमाल हो गया। दूसरे दिन सबने लखनऊ से प्रकाशित स्वतंत्र भारत, नव जीवन और कौमी आवाज में खबर पढ़ी—शिया डिग्री कॉलेज, सुल्तानपुर को विज्ञान की स्नातक स्तर की पढ़ाई की अगले पाँच साल के लिए स्थायी राजकीय स्वीकृति मिल गई है। देवीप्रसादजी ने जब यह खबर पढ़ी तो उन्हें लगा, ऊपरवाले ने प्रिंसिपल साहेब को आखिरी ईद पर क्या लाजवाब तोहफा दिया है। देवीप्रसादजी की आँखों में खुशी के आँसू छलक पड़े।

हमदर्द इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस ऐंड रिसर्च
एसोसिएटेड हकीम अब्दुल हमीद सेंटेनरी हॉस्पीटल
जामिया हमदर्द (हमदर्द यूनिवर्सिटी)
नई दिल्ली-११००६२
दूरभाष : ९८१८९२९६५९

दोहा

माँ गंगा का नीर

● अनिल श्रीवास्तव अयान

माँ गंगा का नीर है व माँ बरगद की छाँव।
शीश झुकाता मैं वहाँ जहाँ हैं माँ के पाँव॥

जन्म दिया बड़ा किया यही जग की रीत।
अनमोल सदा होती यहाँ माँ-बेटे की प्रीत॥

बेटा घर पहुँचे नहीं तो माँ रहती बेचैन।
हर पल देहरी ताकते हैं माँ के सूने नैन॥

इस धरती में माँ रही ईश्वर का एक रूप।
सदा छाँव देती हमें वत्सल्य स्नेह स्वरूप॥

जग में पूजा जाता है मात-पिता का कद।
सफल सदा होते वही जिनपे है हस्त वरद॥

पल पल प्रेम उँड़ेलती हो पूत कपूत सपूत।
माँ के अंदर छिपा हुआ परम पिता का दूत॥

माँ तो केवल माँ होती है सदा हुई जयकार।
सुखी वो ना कभी रहा जो करता प्रतिकार॥

स्वर्ग से बढ़कर हुआ, जब माँ का स्थान।
तब से जीवन का हुआ, नित नूतन उत्थान॥

जिसने समझी यहाँ पर, अपनी माँ की पीर।
उसको मीठा लगने लगा, आँखों से बहता नीर॥

घर औ' बाहर दीजिए, अपनी माँ को सम्मान।
निश्चित ही पा जाएँगे, जग में अपना मान॥

माँ का आँचल हो गया, जैसे खुला आकाश।
जिसके हर कोने होता एक अटूट विश्वास॥

माँ जाने निज बेटे का, छिपा हुआ हर भेद।
माँ की वंदना कर रहे, आदि काल से वेद॥

श्रीराम गली, मारूति नगर
सतना (म.प्र.)
दूरभाष : ९५८४८८८५०८

राम झरोखे बैठ के

गुमशुदा की तलाश और 'खात्मा-रिपोर्ट'

● गोपाल चतुर्वेदी

था ने जाने से किसी भी शरीफ का साहस जवाब दे जाता है। फिर वह तो पढ़ा-लिखा है। उसने कई बार पुलिसिया विज्ञापन देखा है, 'आपकी सेवा में तत्काल, तत्पर और प्रस्तुत।' यह 'सेवा' डंडे से होती है या पैसा वसूल कर। छपे हुए शब्दों में निरक्षर को ऊपरवाले जैसी आस्था है। छपा है तो सच ही होगा। सबसे ज्यादा मंदिर, मसजिद और गुरुद्वारों की परिक्रमा करनेवाले भी यही हैं। साक्षरों में भी आस्था की कमी नहीं है। पर वह प्रभु के द्वार भी स्वार्थवश पधारते हैं। नौकरी है तो प्रमोशन की साध से। बेरोजगार हैं तो सरकारी सेवा में चयन की कामना से।

पुलिस की कमाई अधिकार से चलती है, जैसे धर्मगुरुओं की आश्वासनों की भरमार से। एक का दावा जमीनी सत्ता की दलाली का है, तो दूसरों का अदृश्य आकाशीय शक्ति की ठेकेदारी का। एक के पास शासन द्वारा जारी नियुक्ति-पत्र है तो दूसरे के पास भविष्य बाँचने की तथाकथित सिद्धि। शंकालुओं को दोनों पर संदेह है। वे कहते हैं कि सिर्फ समाचार ही 'फेक' या जाली नहीं होते हैं, कई बार सरकारी आदेश भी। जहाँ तक प्रभु के स्वयं नामित ठेकेदारों का प्रश्न है, उनकी सिद्धियाँ भक्तों का मतिभ्रम है। कुछ अस्फुट मंत्र बुदबुदाकर हाथ से यज्ञ की पवित्र राख निकालते हैं, कुछ काजू-किशमिश। दोनों हाथ की सफाई के परिणाम हैं। यह सिर्फ विश्वासी मन का दुराग्रह है, जो इन्हें आसमानी ताकतों के अधिकृत राजदूत होने का दर्जा देता है, वरना यह केवल वर्तमान में प्रचलित छल कपट एवं पाखंड के प्रतिनिधि हैं।

रास्ते भर उसके मन में इसी प्रकार के विचार आते-जाते रहे। अचानक उसके अंतर में एक अविश्वसनीय सी कल्पना कौंधी। कहीं यह पूरा थाना ही तो 'फेक' नहीं है? क्या पता, सबकी नियुक्ति जालसाजों की साजिश और करतूत का नतीजा न हो? फिर उसे लगा कि जब जीवन ही माया है, दार्शनिकों के अनुसार, तो वह खुद और थाना भी कौन सा अपवाद है? यह सोचकर एकबारगी तो उसका मन उल्टे कदम लौटने का हुआ, फिर उसने स्वयं को आश्वस्त किया कि नश्वर संसार में उसका अस्तित्व तो फिलहाल सच है, थाने का भी होगा। कल किसने देखा है? इस खयाल से उसमें साहस का संचार भी हुआ। जब सब ही भ्रम की चाबी से चलते-फुदकते खिलौने हैं तो एक-दूसरे से खौफ क्या खाना?

जब थाने में दाखिल हुआ तो वह आत्म-विश्वास से लबालब था। वह कोई ऐसा-वैसा नहीं, मुल्क का आयकर-भरता नागरिक है। पूरा थाना उसके ही ऐसे लोगों के अंशदान से चलता है, नहीं तो इनका वेतन, वर्दी, गाड़ी, हथियार आदि कैसे उपलब्ध होते? जनता की मदद करके या अपराधों की रोक-थाम से यह कौन सा एहसान करते हैं, उल्टे यही तो इनका कर्तव्य है। यदि इसमें चूके तो हेल्पलाइन पर इनकी शिकायत भी की जा सकती है। प्रवेश के साथ ही उसके कानों में एक कर्कश आवाज गूँजी, ''क्यों बे, सबेरे-सबेरे कैसे आ टपका?'' उसने चौंककर आवाज के स्रोत की ओर नजर डाली। मेज पर पाजामा-बनियान पहने, आँख पर चश्मा चढ़ाए, एक सज्जन विराजमान हैं। उसे न उनकी बदतमीजी का संबोधन, न उनकी मेज पर सवारी का राज समझ आया। कौन कहे कि सभ्य बातचीत का यह थानाई अंदाज हो। जैसे दफ्तर में अफसर को गाली देते भी 'सर' लगाना प्रचलित है, वैसे ही थाने में 'क्यों बे' या माँ-बहन करके आगंतुक का स्वागत!

थानेवालों को पता है कि कोई विवशता में ही थाने का रुख करता है। कौन होगा जो यह सोचने की जुर्रत भी करे कि 'मैं न आया था, तुम्हारे द्वार, पथ ही मुड़ गया था?' यहाँ तो प्रवेश करते लोग दस बार अनिर्णय का शिकार होते हैं। जाएँ कि न जाएँ? जब कोई विकल्प नजर नहीं आता तो अंदर कदम रखना ही पड़ता है। 'क्यों बे' के बावजूद उसने हिम्मत नहीं हारी और झिझकते हुए बोला, ''एफ.आई.आर. लिखवानी है।'' बनियान ने अनुमान लगाया, ''क्या घर में चोरी हो गई है या डकैती?'' उसने इनकार में सिर हिलाया तो बनियान ने क्रुद्ध स्वर में दरयाफ्त किया, ''तो क्या सिर पर आसमान फट पड़ा, जो ऐसे परेशान हो?'' उसने आने का मकसद बताया तो एक अन्य सिपाही ने उसे टोका, ''लड़की है। किसी दोस्त के साथ मौज-मस्ती को निकल गई होगी। जब जी ऊबेगा तो लौट आएगी।'' उसने भी उसी स्वर में उत्तर दिया, ''आप प्राथमिकी लिखेंगे कि नहीं, वरना हमें एस.पी. साहब से शिकायत करनी पड़ेगी।'' बात आगे बढ़ती कि आवाज सुनकर इंस्पैक्टर साहब मूँछों से जैसे चाशनी पोंछते प्रगट हुए। उन्होंने 'बनियान' को देखकर निर्देश दिया, 'क्यों बेकार की बहस कर रहे हैं, मुंशीजी? एफ.आई.आर. लिखिए। किसी पीड़ित से ऐसा व्यवहार उचित नहीं है।''

बनियान ने मेज से उतरकर पीछे रखी कुरसी पर आसन ग्रहण किया। कागज के नीचे कार्बन लगाकर पहले चश्मा उतारा, फिर उसके लेंस पर मुँह की भाप छोड़ी, तत्पश्चात् बनियान से उसकी सफाई की। तब कहीं जाकर कर्तव्य की औपचारिक शुरुआत करते हुए सवाल दागा,

'लड़की का नाम क्या है?', 'माँ-बाप का नाम, पता', 'कब से लापता है?', 'किसी पर शक?', 'किसी से उसकी दुश्मनी?' वह जैसे प्रश्नों की मशीनगन चला रहे थे। उन्होंने कलम कागज पर रखने के पूर्व अंतिम फायर किया, 'लड़की का कोई इश्क-विश्क का चक्कर हो तो बताइए, हम उस कंबख्त लड़के की तलाश कर उसके हाथ-पैर तोड़ देंगे।'

लिखने की श्रम-साध्य प्रक्रिया के पहले वह जैसे थककर सुस्ताने लगे। बमुश्किल, उनके कंठ से स्वर फूटा, 'चलिए, पास के ढाबे से चाय पी आएँ, तब शुभ काम का श्रीगणेश हो।' मरता क्या न करता? आगंतुक ढाबे तक उनके साथ गया। मुंशीजी ने परिचित ढाबे से छोले-भटूरे का डटकर सेवन किया। 'अरे, कुछ मीठा-वीठा है?' जैसा सवाल उछालकर गुलाबजामुन जपे, साथ आए शिकार को भी चखवाए, यह कहकर कि यह यहाँ का खास मिष्टान्न है। खाते-खाते जब पसीना छलकने लगा तो कोशिश कर, बेमन से, कुरसी छोड़कर उठे और बोले, 'चला जाए।' अपनी कुरसी पर धँसते ही जैसे पाचनक्रिया के नशे से उनकी पलकें झुकने लगीं। कुछ अंतराल के पश्चात् नासिका-संगीत की स्वर-लहरी भी गूँज उठी, जैसे खुद पर उनका नियंत्रण विदा होने की स्थिति में हो। उन्होंने तंद्रा में पूरी तरह गुम होते-होते आगंतुक से कल आने का निवेदन किया, ''आपका नमक खाया है, आपसे क्या छिपाना, सबके उसूल होते हैं, हमारे भी हैं। एफ.आई.आर. में सरकारी कागज और समय लगता है। हम फरियादी से इसके पैसे वसूलते हैं। ऐसों की रिपोर्ट हम तत्काल लिखते हैं। आप जैसों के नमक का हक अदा करना हमारा कर्तव्य है। देर-सबेर आप जैसों का काम भी हो ही जाता है। कल इसी समय पधारिए, आपकी प्राथमिकी भी लिख ली जाएगी।''

थाने से निकलकर पढ़े-लिखे व्यक्ति ने राहत की साँस ली। जेब पर बीती तो पर पूरी तरह कटने से बच गई। मुंशीजी ने नमक खाया जरूर पर उसका हक निभाने की भी बात की। इतना ही क्या कम है, सरकार में अधिकतर तो इसे अधिकार की कमाई समझते हैं। काम हो न हो, पर यह तो दफ्तर की मुँह दिखाई है। बाबू की शक्ल देखने की फीस। सरकार से संपर्क में आने की सजा? आका कहता है कि 'न खाएगा, न खाने देगा', पर नैतिकता की नंगई के नायकों के कान नहीं होते हैं। सुनें तो कैसे सुनें? कभी पकड़े गए तो देखा जाएगा। ऐसे वह जानते हैं। हर भ्रष्टाचार-निरोधक संस्था की जाँच का ताला पैसे की कुंजी से खुलता है और बंद भी होता है। वह क्यों चिंतित हों? पढ़े-लिखे व्यक्ति ने समय के इस भ्रष्टकाल में मुंशीजी की 'ईमानदारी' से प्रभावित होकर अगले दिन फिर थाने जाने का निर्णय किया। इस बीच उसकी खोजू प्रवृत्ति ने जोर मारा और वह गुमशुदा की तलाश में अखबारों में विज्ञापन देने के लिए निकल पड़ा।

बाबू की शक्ल देखने की फीस। सरकार से संपर्क में आने की सजा? आका कहता है कि 'न खाएगा, न खाने देगा', पर नैतिकता की नंगई के नायकों के कान नहीं होते हैं। सुनें तो कैसे सुनें? कभी पकड़े गए तो देखा जाएगा। ऐसे वह जानते हैं। हर भ्रष्टाचार-निरोधक संस्था की जाँच का ताला पैसे की कुंजी से खुलता है और बंद भी होता है। वह क्यों चिंतित हों? पढ़े-लिखे व्यक्ति ने समय के इस भ्रष्टकाल में मुंशीजी की 'ईमानदारी' से प्रभावित होकर अगले दिन फिर थाने जाने का निर्णय किया। इस बीच उसकी खोजू प्रवृत्ति ने जोर मारा और वह गुमशुदा की तलाश में अखबारों में विज्ञापन देने के लिए निकल पड़ा।

अखबार इधर समाचार से अधिक विज्ञापन के लिए पलक-पाँवड़े बिछाकर इंतजार करते हैं, इसके वाबजूद संबद्ध प्रबंधक ने विज्ञापन तो सहर्ष स्वीकार किया, पर उनसे गुमशुदा का चित्र माँगते हुए यह भी माना कि यदि फोटोग्राफ साथ होता तो खोज में सफलता की संभावना अधिक रहती। ''यदि चित्र सुलभ नहीं है तो प्रयास तो किया ही जा सकता है।'' विज्ञापनदाता ने प्रबंधक को आश्वस्त किया कि ''लड़की की शक्ल-सूरत में कुछ विशेष नहीं है, वही सामान्य भारतीय के समान नाक-नक्श। दो हाथ, दो पैर, दो आँखें और पाँच फीट, छह-सात इंच की लंबाई, दुबली-पतली, साँवली काया। उसके संवेदनशील, मित-भाषी, शांति-प्रिय स्वभाव वगैरह-वगैरह से तो हम परिचित हैं, पर मजबूर हैं, हमारे पास उसकी कोई तस्वीर नहीं है। कुछ को कैमरे के पास जाने का शौक है, उसे उनसे दूर भागने की आदत। कहीं कोई दिखा भी तो वह उससे बच निकलती। कहती भी थी कि 'इस नश्वर संसार में फोटो खिंचवा-खिंचवा और छपवा-छपवाकर कोई अमर हुआ है क्या? आत्म-प्रचार से अस्थायी कीर्ति के अलावा और कुछ भी हासिल होना संभव है क्या?'

उसके दृष्टिकोण से कोई कैसे सहमत होता! भौतिक समृद्धि और प्रसिद्धि की पूर्ति कुछ के जीवन का इकलौता लक्ष्य है। वह इसके लिए सब त्यागने को तैयार है। ईमान, इनसाफ, उसूल का मोल ही क्या है? किसी की साध सत्ता से तुष्ट होती है, किसी की धन से, किसी की लेखन के काम और नाम से। वह क्या-क्या नाटक नहीं करते हैं इस महत्त्वाकांक्षा की खातिर? कभी पुरखों की पूँजी भुनाते हैं, कभी भिखारी की मुद्रा अपनाते हैं, कभी सेवक की, कभी आत्मसम्मान बेचकर खुशामद की। दूसरों को जिंदगी के फलसफे का पाठ पढ़ानेवाले दर्शनशास्त्र के विद्वान् भी इसमें कोई पीछे नहीं हैं। इनसे कोई दूसरे की चर्चा भी छेड़ दे तो यह उसकी कलई खोलने को प्रस्तुत हैं। ''आप जानते ही क्या हैं? उसने कुछ मौलिक लिखा है क्या? स्वयं की पी-एच.डी. से लेकर आज तक दूसरों के विचारों और किताबों को अपना बनाकर उसने नाम ही नहीं कमाया है, पहचान बनाने का भी प्रयास किया है। दूसरों से अपने बारे में प्रशंसात्मक लेख लिखवाए हैं और सत्ताधारियों से संपर्क बनाए हैं। कुलपति का पद उसे विद्वत्ता और योग्यता से नहीं, जुगाड़ और दंद-फंद से मिला है। जीवन के मूल्य, सिद्धांत बेचकर पाई ख्याति कब तक चलेगी?'' वहीं, वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से भी नहीं चूकते हैं— ''कुछ है जो श्रम-परिश्रम के कीचड़ में खिले कमल हैं, वहीं कुछ ज्ञान के बगीचे के कैक्टस हैं। इनका एकमात्र गुण इनकी कहीं भी उगने

और जमने की क्षमता है।'' विद्वान् का आशय स्पष्ट है, वह स्वयं कमल हैं, दूसरे कैक्टस।

यों विज्ञापन प्रकाशित होने के बाद भी दो-तीन सप्ताह बीत गए पर कोई सूचना नहीं आई। गुमशुदा की खोज में लगा व्यक्ति कुछ निराश सा होने लगा। पुलिस का रवैया भाँपकर उसे उनसे कोई आशा न थी। यों वह अपना फोन नंबर नमक खाए मुंशीजी को दे आया था। वह चौंक उठा, जब एक दिन मुंशीजी का नाम उसके फोन की स्क्रीन पर अचानक चमकने लगा। मुंशीजी ने औपचारिकता अपनाई। कुशल-क्षेम जानकर उसे केस डायरी सुनाई। ''तफशीश पूरी हो चुकी है और हमारा निष्कर्ष है कि खोई इनसानियत नामक लड़की का कोई सुराग नहीं मिला है। इनसान के नाम का दुमछल्ला लगानेवाले तथाकथित संत के जेल में होने की खबर है। फरियादी ने न गुमशुदा की कोई तसवीर दी, न नाम-पता, जो उसे खोजने में मददगार होता। यों जाँच के दौरान कई आदमियों ने इनसान होने का दावा किया, पर इनसानियत का अता-पता होने से वह मुकर गए। फरियादी ने माता-पिता के नाम के स्थान पर अनाथाश्रम का जिक्र किया है। वह आस-पास अस्तित्व में नहीं है। कम-से-कम हमारी तलाश से यही सिद्ध हुआ है। इसी दौरान हमने युनिवर्सिटी में भी दबिश दी कि कहीं छात्रावास में छिपी हो, तो इनसानियत मिल जाए। इनसानियत का सुराग तो नहीं लगा, पर एक प्राध्यापक ने इतना जरूर बताया कि इनसानियत हर धर्म के मूल में है। इनसान होने का दम भरना व्यर्थ है, जब तक किसी में इनसानियत तत्त्व न हो।

''फिलहाल, हरचंद कोशिश के बाद असफल होकर हम इनसानियत की तलाश के केस में रिपोर्ट-खात्मा लगा रहे हैं।''

थाने की खोज में इनसानियत न मिलने से वह निराश नहीं हुआ। जिसका अस्तित्व ही थाने में नहीं है, जो उससे परिचिति भी नहीं है, वह भला उसे कैसे तलाश कर पाता? पर विज्ञापन में उत्तर न आने से उसे अफसोस हुआ। कहीं ऐसा तो नहीं है कि संसार में इनसानियत पर ही खात्मा-रिपोर्ट लग गई हो? जाने, भूले-भटके उसके मिलने की आशा भी है कि नहीं?

९/५, राणा प्रताप मार्ग
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९४१५३४८४३८

नारी

कविता

● स्वाति ग्रोवर

ओ नारी!
तुझे अबला कहें, सबला या बेचारी
क्षमा करना देवी, तेरी भावनाओं को
आहत करने की मंशा नहीं है
इस वीभत्स पुरुष का
अनाचार अभी तक रुका नहीं है,
मैं सोच रही थी कि
अगर उस समय भी संविधान होता
तो मैं कोर्ट के चक्कर लगाती रहती
और दुशासन बड़ी शान से बरी होता,
मेरे केश तो खुले रह जाते
और यह हृदय सदा के लिए छलनी होता
तुम्हारी सरकार का यह कैसा इनसाफ है
बालिग अपराध करके नाबालिग की सजा माफ है
आज भी न्याय किसी सभा में परास्त हो रहा है
तेरा इन अंधे, बहरे, अहंकारियों के बीच
हास-परिहास हो रहा है।
ये चाहते तो ऐसा सम्मान कराते
उस क्रूर को राष्ट्रपति के हाथों सिलाई मशीन दिलवाते
इस पत्र का अंत इस बात से करती हूँ—

नवोदित रचनाकार। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। साहित्य अकादेमी, दिल्ली से सम्मान प्राप्त।

जो दिखता है, वही छीन लिया जाता है,
चीर तो चीर है,
किसी सभा में भी खींच लिया जाता है।
तेरा आत्मसम्मान इस अस्मिता से कहीं बड़ा है,
याद रखना, इसी गौरव के आगे पूरा कौरव वंश
कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर हारकर गिरा पड़ा है,
रीति-रिवाज हमसे हैं हम उनसे नहीं हैं
मन की पवित्रता
किसी के गिराने से गिरी नहीं है
गली में चलते हुए
कोई पागल कुत्ता काट जाए,
तो घर से निकलना बंद नहीं करना,
मैं भी नहीं डरी, तू भी न डरना
आज तू कितने दुशासन और जयद्रथों से घिरी पड़ी है।
सच तो यह है कि तू द्रौपदी से भी बड़ी है
हाँ, तू द्रौपदी से भी बड़ी है।

एक्स १८०५, राजगढ़ कॉलोनी
गली नं.१६, दिल्ली-११००३१
दूरभाष : ९८९९४९६९८६

मोबाइल फोन : खतरे की आहट

● दुर्गादत्त ओझा

वर्तमान काल में मोबाइल फोन हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं। प्रात:काल से रात्रिपर्यंत हम मोबाइल फोन को अपने पास ही रखते हैं। यहाँ तक कि सोते समय भी इसमें अलार्म भरकर तकिए के पास रखते हैं। और फिर जगकर तुरंत इसका उपयोग करना शुरू कर देते हैं। एक आकलन के अनुसार भारत में मोबाइल फोन का उपयोग करनेवाले लगभग ९० करोड़ लोग हैं तथा इनकी संख्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है। हाल ही में हुए एक अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि लोग पूरे दिन के दौरान हर साढ़े छह मिनट पर अपने मोबाइल फोन का इस्तेमाल करते हैं।

प्रायश: मोबाइल का अलार्म सुनकर ही प्रात:काल लोगों की नींद खुलती है। रात में लोग मोबाइल पर अलार्म लगाकर ही बिस्तर पर जाते हैं। फिर जागने से सोने तक के बीच सारा दिन लोग किसी को कॉल करने या कॉल रिसीव करने, मेसेज पढ़ने और भेजने, इंटरनेट का इस्तेमाल करने और इ-मेल करने में लगाते हैं। मोबाइल फोन बनानेवाली एक प्रमुख कंपनी के परामर्शी 'टोनी अहोनेन' के अनुसार मोबाइल के उपयोगकर्ता १६ घंटे की अपनी सक्रिय दिनचर्या के दौरान औसतन १५० बार अपना स्मार्टफोन देखते हैं तथा जिनके पास स्मार्टफोन या एंड्रायड फोन नहीं है, वे भी दिन में कई बार मोबाइल चेक करते रहते हैं। कई लोग समय देखने के लिए भी प्राय: १८ बार मोबाइल फोन हाथ में लेते हैं। टी.वी. और कंप्यूटर के बाद मोबाइल फोन ही एक ऐसा इलेक्ट्रोनिक उपकरण है, जिसे लोगों ने हाथोहाथ अपनाया है।

हमारे देश में दो मोबाइल प्रणालियाँ, यथा जी.एस.एम. (ग्लोबल सिस्टम फॉर मोबाइल कम्युनिकेशन तथा कोड डिवीजन मल्टीपल एक्सेस (सी.डी.एम.ए.) तकनीक। भारत में रिलायंस कम्युनिकेशन, टाटा टेलीसर्विसेज, बी.एस.एन.एल., सी.डी.एम.ए. तकनीक का तथा एयरटेल, वोडाफोन, एयरसेल, बी.पी.एल. मोबाइल, आइडिया ऑपरेटर जी.एस.एम. तकनीक का उपयोग करते हैं। जी.एस.एम. मोबाइल फोन को सी.डी.एम.ए. नेटवर्क में या सी.डी.एम.ए. को जी.एस.एम. नेटवर्क में उपयोग नहीं किया जा सकता है।

जी.एस.एम. में बात करते समय ८९० से ९१५ हर्ट्ज की तरंगें फोन से मोबाइल टॉवर तथा ९३५ से ९६० हर्ट्ज की तरंगें मोबाइल टॉवर से मोबाइल फोन तक निकलती हैं। जबकि सी.डी.एम.ए. में बोलते समय ८६७-८४९ हर्ट्ज और सुनते समय ८६९ से ८८९ हर्ट्ज की तरंगें होती हैं। हमारे शरीर में भी विद्युत् तरंगें होती हैं, जो शरीर के

सुप्रसिद्ध विज्ञान-लेखक। पुरातन एवं अद्यतन विज्ञान विषयों पर हिंदी में ५० से अधिक पुस्तकें, सहस्राधिक विज्ञान आलेख एवं शताधिक शोध-पत्र प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर लेखन, अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों एवं सम्मानोपाधियों से अलंकृत।

अनेक कार्यों के लिए आवश्यक होती हैं। मस्तिष्क को वातावरण में हो रहे परिवर्तनों, संवेदनों की जानकारी विद्युत तरंगों के द्वारा ही पहुँचती है। और मस्तिष्क अपने निर्देश भी विद्युत् तरंगों के माध्यम से विभिन्न अंगों तक पहुँचाता है।

मोबाइल फोन में सुविधाएँ

आधुनिक मोबाइल फोन में बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जैसे कॉल रजिस्टर, टॉर्च, ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम (जी.पी.एस.), संगीत, एम.पी.-३, वीडियो (एम.पी.-४), एफ.एम. रेडियो, अलार्म, मेमोरी एवं डॉक्यूमेंट रिकॉर्ड करना, इंटरनेट, ब्लूटूथ, समय/दिनांक/दिन, पर्सनल डिजिटल असिस्टेंस, वीडियो डाउनलोड, वीडियो कॉलिंग, कैमरा, जी.पी.आर.एस., रिंगटोन, गेम, वीडियो प्लेयर, पुश टू टॉक, मेमोरी कार्ड रीडर, रिंगबैक टोन, इंफ्रारेड, यू.एस.बी., वाई-फाई कनेक्टिविटी, इमेल, ब्राउजिंग, वॉयरलेस मॉडम, ऑनलाइन गेम, टच स्क्रीन, ऑर्गनाइजर, स्टॉपवॉच, वायस रिकॉर्डर, कलेंडर, वर्ल्ड क्लॉक, कैलकुलेटर, कन्वर्टर, मेमो, टेंपलेट, इमेज, वॉलपेपर, साउंड, मल्टीमीडिया, इ-बुक रीडर तथा टी.वी. चैनल जैसी अनेकानेक सेवाएँ उपलब्ध रहती हैं।

इसके अलावा बैंक में रुपए जमा करवाने अथवा निकालने की सूचना भी हमें मोबाइल फोन पर मिल जाती है। इससे हम बस, रेल अथवा वायुयान का टिकट भी आरक्षित करवा सकते हैं। मोबाइल फोन से किसी के जीवन में हो रहे शारीरिक शोषण का वीडियो बनाकर प्रमाण के रूप में न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं।

मोबाइल फोन के खतरे

वस्तुत: मोबाइल सेवा के लिए जगह-जगह टॉवर लगाए जाते हैं। इन टॉवरों से विद्युत् चुंबकीय विकिरण उत्सर्जित होता है। यह विकिरण फोन से भी निकलता है। परंतु इसकी मात्रा मोबाइल टावरों की तुलना में बहुत कम होती है। यदि यह विकिरण एक सीमित मात्रा में हो तो वह

स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव नहीं डालता है या कम मात्रा में डालता है। विद्युत् चुंबकीय विकिरण (ई.एम.आर.) की सुरक्षित सीमा जो तय की गई है, वह ६०० मिलीवाट प्रति वर्गमीटर है। अर्थात् यदि एक वर्गमीटर में ६०० मिलीवाट का विद्युत् चुंबकीय विकिरण है तो इससे मानव स्वास्थ्य पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा। परंतु इससे अधिक का विकिरण मानव स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालता है।

मोबाइल फोन के हानिकारक प्रभाव इसके फायदों से कई गुना अधिक हैं। जब मानव शरीर का विद्युत् चुंबकीय विकिरण से प्रभावन होता है तो यह विकिरण को अवषोशित करता है, क्योंकि हमारे शरीर में ७० प्रतिशत जलीयांश है। इसकी तुलना हम माइक्रोवेव ओवन में भोजन पकाने से कर सकते हैं। जिसमें उपस्थित जल सबसे पहले गरम होता है। माइक्रोवेव (सूक्ष्म तरंग) अवशेषण का प्रभाव सर्वप्रथम शरीर के उन अंगों पर होता है, जिसमें जल की मात्रा सर्वाधिक होती है। मानव मस्तिष्क में ९० प्रतिशत जल की मात्रा पाई जाती है। यह भी देखा गया है कि शरीर के उन अंगों, यथा—आँखों, मस्तिष्क, जोड़, हृदय, उदर आदि में, जहाँ तरल का हिलना-डुलना कम होता है, उनमें यह प्रभाव बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयेाग करने से निम्न प्रकार की समस्याएँ हो सकती हैं—

१. शोध परिणामों के अनुसार मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग करने से हमारी एकाग्रता में कमी आती है। इससे मस्तिष्क के नई विद्या सीखने और याददाश्त प्रदान करनेवाले अंश भी प्रभावित होते हैं। ये प्रभाव बच्चों में विशेष तौर पर अधिक होते हैं।

२. विद्युत् चुंबकीय तरंगों के प्रभाव से कान की पिंडिका (Ear Lobe) भी गरम हो जाती है तथा कान में दर्द होने लगता है।

3. उच्च तापमान के कारण वृषण पर हानिकारक प्रभाव हो जाते हैं, वीर्य में शुक्राणुओं की संख्या तथा इनके गतिशीलन की क्षमता भी प्रभावित होती है। गुणसूत्र भी क्षतिग्रस्त हो सकते हैं तथा नपुसंकता होने का खतरा रहता है।

४. ऊँची गति की विद्युत् तरंगों के कारण आँखों में जलन तथा समय से पूर्व ही मोतियाबिंद होने की आशंका पैदा हो जाती है।

५. प्रायश: लोग एक कान की तरफ ही मोबाइल का प्रयोग करते हैं। अधिक समय तक ऐसा करने से मस्तिष्क के ट्यूमर, ग्लाइकोमा, एक्साटिक न्यूरोमा तथा मैन्खीओमा की आशंका बढ़ जाती है।

६. मोबाइल का अत्यधिक इस्तेमाल करने से तरंगों के प्रभाव से त्वचा में लालिमा, जलन तथा सनसनाहट हो सकती है। इनमें थकान, एकाग्र होने में कठिनाई, नींद में व्यवधान, सिर घूमने, मितली, हृदय अधिक धड़कने तथा उदर विकार की आशंका बढ़ जाती है।

७. मोबाइल फोन के अधिक उपयोगकर्ताओं को रिंगटोन एंजाइटी की समस्या बढ़ जाती है।

८. शोध परिणामों के अनुसार मोबाइल फोन का अधिक उपयोग करनेवालों में ग्रोथ हार्मोन, कार्टोसोन हार्मोन स्राव के चक्र में बदलाव होता है।

९. यदि किसी व्यक्ति के शरीर में पेसमेकर लगा है तो मोबाइल की तरंगें इसके कार्य को बाधित कर सकती हैं, जिसके कारण हृदय की गति अनियमित तथा अनियंत्रित हो सकती है।

१०. वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का उपयोग करना सड़क दुर्घटना का नंबर डायल करने जैसा है। क्योंकि इसके कारण ड्राइविंग में ध्यान केंद्रित नहीं रहता है।

११. मोबाइल फोन में विभिन्न प्रकार के जीवाणु हो सकते हैं। अत: इनको ऑपरेशन थिएटर, सी.सी.यू. आई.सी.यू. में ले जाने से संक्रमण की आशंका बढ़ जाती है।

१२. अस्पताल एवं अन्य स्थान जहाँ संवेदनशील इलेक्ट्रॉनिक उपकरण लगे होते हैं, वहाँ पर ये मशीनों के कार्य में व्यवधान उत्पन्न करते हैं।

१३. मोबाइल फोन से इ-मेल व संदेशों के उत्तर तीव्र गति से देने के कारण जोड़ों में दर्द तथा सूजन हो जाने का खतरा रहता है।

१४. कई देशों के वैज्ञानिकों ने निरंतर मोबाइल फोन का उपयोग करके कैंसर जैसे रोगों की भी पुष्टि की है।

१५. मोबाइल फोन के विकिरण गर्भवती महिलाओं तथा गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालते हैं।

१२ वर्ष से छोटे बच्चों को मोबाइल फोन का उपयेाग नहीं करना चाहिए।

१६. मोबाइल फोन को बनाने में कई हानिकारक पदार्थों यथा कैडमियम, लीथियम, ताँबा, सीसा, पारा तथा जस्ते के यौगिकों का, जो विषाक्त होते हैं, का उपयोग किया जाता है। इन हानिकारक रसायनों के जल व मिट्टी में जाने पर दोनों प्रदूषित हो जाते हैं तथा स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

१७. हवाई जहाज, पेट्रोल पंप आदि स्थानों पर मोबाइल का प्रयोग करना वर्जित किया गया है।

१८. बैंक डकैती, हत्या, कुकृत्य तथा आतंकवादी गतिविधियों में मोबाइल फोन कारगर सिद्ध हुआ है। अत: यह सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर सकता है।

हमारे देश के कई छोटे-बड़े नगरों और महानगरों में ई.एम.आर. की दर १००० से ४००० मिलीवाट प्रति वर्गमीटर है, इस कारण विद्युत् चुंबकीय विकिरण का खतरा दिनोदिन बढ़ता जा रहा है।

विद्युत् चुंबकीय विकिरण का पशु-पक्षियों तथा पर्यावरण पर

पड़नेवाले दुष्प्रभाव पर विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन ने कहा था कि यदि पृथ्वी से मधुमक्खी विलुप्त हो जाए तो पृथ्वी से जीवन के अस्तित्व को खतरा हो जाएगा। आज इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरण (ई.एम.आर.) के कारण मधुमक्खियों पर गंभीर खतरा मँडराने लगा है। यह प्रेक्षित किया गया है कि ई.एम.आर. जो सेलफोन या सेल टावर से उत्सर्जित होते हैं, पशु-पक्षी, वनस्पति एवं पर्यावरण को भी दुष्प्रभावित करते हैं। आपने कभी सेल टावर के समीप मधुमक्खी, कबूतर, गौरैयाँ अथवा अन्य चिड़ियाँ को नहीं देखा होगा। इसका कारण यह है कि मानव शरीर के अपेक्षा पक्षी के पृष्ठीय क्षेत्रफल उनके भार से सापेक्षत: बड़ा होता है, इस कारण वे विकिरण का अधिक अवषोशण करते हैं। चूँकि शरीर के कम भार के कारण उनमें तरल की मात्रा भी कम होती है, इस कारण वे तीव्र गति से गरम हो जाते हैं। और चुंबकीय क्षेत्र उनके नौचालन में व्यवधान पैदा करता है।

युनिवर्सिटी ऑफ लीड के द्वारा कराए गए एक अध्ययन से यह बात स्पष्ट हुई है कि इंग्लैंड और हॉलैंड में १९८० से अब तक मधुमक्खियों के ८० प्रतिशत छत्ते समाप्त हो चुके हैं। जबकि फ्लोरिडा में २००७-०८ के दौरान मधुक्खियों के ३५ प्रतिशत छत्ते नष्ट हो गए। अभी हाल ही में एक भारतीय वैज्ञानिक डॉ. वी.पी. शर्मा ने अपने शोध के निष्कर्ष से ज्ञात किया कि ई.एम.आर. के सीधे संपर्क में रहनेवाले छत्तों में रानी मक्खी के अंडे देने की दर में गंभीर गिरावट आई है। साथ ही पराग एकत्र करने और वापस छत्ते में लौटने में भी दिशाभ्रम हो रहा है। ई.एम.आर. से गौरैयों पर भारी संकट आया है तथा इनकी जनसंख्या तीन-चौथाई कम हो गई है। अन्य पशु-पक्षी भी इससे प्रभावित हो रहे हैं।

डेयरी का व्यवसाय करनेवाले लोगों का मानना है कि उनके क्षेत्र में सेल टॉवर लग जाने के पश्चात् गायों के दूध देने की क्षमता में कमी हुई है। सेल टॉवर के समीप रहनेवाले पालतू पशुओं के स्वास्थ्य में भी गिरावट देखी गई है।

सेल टॉवर से निकलनेवाले विद्युत् चुंबकीय विकिरणों से सब्जियों, फसलों तथा विभिन्न वनस्पतियों के उत्पादन में भी कमी देखी गई है। इसका कारण यह है कि ई.एम.आर. से बीजों का अंकुरण एवं जड़ की वृद्धि रुक जाती है, जिससे फसल उत्पादन दुष्प्रभावित होता है। इसी प्रकार ई.एम.आर. से विभिन्न फलों, जैसे आम, अमरूद, नारंगी एवं नारियल के उत्पादन में भी कमी प्रेक्षित की गई है।

मोबाइल टॉवर के खतरे

अभी हमारे देश में ४.५ सेल टॉवर हैं, जिनमें से प्रत्येक १०० वाट की पावर पारेशित होती है। देश में धनार्जन हेतु अनेक व्यक्तियों ने अपने घरों, छत पर भी मोबाइल टावर लगाए हैं, जबकि इन्हें धनी बस्ती से दूर होने चाहिए। मोबाइल टावर के आस-पास रहनेवालों में सिरदर्द, चिड़चिड़ापन अधिक पाया गया है। इससे निकली तरंगों के कारण कार्य क्षमता, स्मरण शक्ति तथा एकाग्रता भी प्रभावित होती है। मोबाइल टावर के कारण होनेवाले अन्य दुश्प्रभावों का खतरा भी अधिक होता है।

खतरों से बचाव हेतु सुझाव

मोबाइल फोन आधुनिक जीवन की आवश्यकता बन गए हैं। इनसे संभावित दुष्प्रभावों से बचाव हेतु निम्न सुझाव हैं—

१. जब लैंडलाइन फोन की सुविधा उपलब्ध हो तो मोबाइल की अपेक्षा उस फोन का ही उपयोग करें।

२. मोबाइल फोन पर लंबी बातचीत नहीं करें। दोनों कानों की तरफ से इसका उपयोग करें। बात करते समय कान से दूरी रखें। क्योंकि मोबाइल से निकलने वाली तरंगें दूरी के साथ घटती हैं।

३. बाहर वर्ष से कम आयु के बच्चों को मोबाइल फोन का उपयोग नहीं करना चाहिए।

४. कुछ मोबाइल फोन में सेल/वेव गार्ड होते हैं। ये मोबाइल से निकलनेवाली तरंगें कम कर देते हैं। अत: इनका इस्तेमाल करना चाहिए।

५. यदि संभव हो तो एस.एम.एस. ही करना चाहिए।

६. कम विशिष्ट अवशोषण अनुपात (एस.ए.आर.) वाले सेलफोन का प्रयोग करना चाहिए।

७. मोबाइल फोन को हृदय की तरफ तथा अन्य अंग पर चिपकाकर नहीं रखना चाहिए। वरन् शरीर से दूर रखकर बात करनी चाहिए।

८. पेसमेकर लगाए व्यक्ति को पेसमेकर की तरफ से इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

९. मोबाइल टॉवर आवासीय क्षेत्रों से दूर लगाने चाहिए। कम क्षमतावाले ट्रांसमीटर लगाने चाहिए।

१०. मोबाइल टॉवरों पर रिपीटर्स नामक छोटा एंटीना लगाना चाहिए।

११. स्कूल, कॉलेज, अस्पताल आदि संवदेनशील क्षेत्रों के पास मोबाइल टावर नहीं लगाने चाहिए।

१२. घर के आस-पास वृक्षारोपण करना चाहिए। बालकनी तथा छत पर भी पौधे लगाने चाहिए।

१३. गहरे रंग के फलों, यथा काले एवं लाल रंगों के फलों—जामुन, आलूबुखारा, चेरी, स्ट्राबेरी, फालसा आदि का तथा पालक, अलसी आदि का सेवन करना चाहिए।

अत: उपर्युक्त सुझावों पर अमल करके हम मोबाइल फोन से होनेवाले दुष्प्रभावों से कुछ हद तक बच सकते हैं। इस कार्य में जन चेतना होनी चाहिए तथा लोगों की सहभागिता अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

साअ
ब्रह्मपुरी, हजारी चबूतरा
जोधपुर-३४२००१ (राज.)
दूरभाष : ९४१४४७८५६४

राष्ट्रसंत तरुण सागरजी और कड़वे वचन

● प्रणय श्रीवास्तव 'अश्क'

१ सितंबर, २०१८ की सुबह अचानक हमारे राष्ट्रसंत पूज्य तरुण सागरजी महाराज संलेखना कर सुबह लगभग ३:३० बजे दिल्ली के राधेपुरी में निर्वाण को प्राप्त हो गए। विश्वास ही नहीं होता कि जिनसे २०१० में होली के महोत्सव के समय प्रत्यक्ष दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ था, उनके अंतिम दर्शन हेतु हम सबको द्रवित होना पड़ेगा। तरुण सागरजी महाराज एक क्रांतिकारी राष्ट्रवादी संत के रूप में इस विश्व को अपने कड़वे प्रवचनों के माध्यम से दिशा-निर्देश देते रहे एवं समग्र मानवता को सही रास्ता दिखाने के लिये मार्गदर्शक बने रहे। तरुण सागरजी जो हमारे मध्य प्रदेश के दमोह जिले के गुहाची गाँव में २६ जून, १९६७ को जनमे थे, जिनके बचपन (सांसारिक) का नाम पवन कुमार जैन था। लगभग १३ वर्ष की उम्र में अहिंसा परमोधर्म सिद्धांत पर चलते हुए तीर्थंकर महावीर स्वामीजी के धर्म को स्वीकार करते हुए दीक्षा ग्रहण कर बैरागी बन गए। दमोह जिले के गुहाची गाँव की वह भूमि पवित्र एवं पूजनीय है, जिसने विश्व को ऐसा प्रणेता दिया। भारतमाता को ऐसा राष्ट्रसंत दिया, जिसने जीवन भर अपने प्रवचनों की ज्योति से सारी दुनिया के अंधकार को दूर किया।

परम पूज्य राष्ट्रसंत तरुण सागरजी महाराज के प्रथम बालाघाट आगमन हेतु बालाघाट के धर्मप्रेमी जन प्रतिनिधि माननीय गौरीशंकरजी बिसेन तत्कालीन कैबिनेट मंत्री मध्य प्रदेश शासन, तत्कालीन नगरपालिका अध्यक्ष रमेश रंगलानी जैन समाज के प्रेरणास्त्रोत भाई सोहन वैद्य, अभय सेठिया, ऋषभदासजी वैद्य, महेंद्र सुराना, सुभाष लोढ़ा, ज्ञानचंदजी बाफना, त्रिलोकचंद्रजी कोचर, कोठारीजी, संचेतीजी, भाई जिनेंद्र जैन सहित भारी तादाद में निष्ठावान कर्मठ जैन धर्म के अनुयायियों सकल जनसमाज एवं बालाघाट जिले की धर्मप्रेमी जनता ने जो एकता और सहयोग दिखाया था, फलस्वरूप वह २०१० का फाल्गुन माह निश्चित रूप से महाराज श्री के प्रवचनों के रंग-बिरंगे प्रभाव से एक ऐतिहासिक उत्सव का रूप धारण कर चुका था। महाराजजी को बालाघाट आमंत्रित करने में जैन समाज के वरिष्ठ जनों का अनुरोध खाली नहीं गया और राजनाँदगाँव, डोंगरगढ़ होते हुए महाराष्ट्र के गोंदिया शहर को पवित्र करते हुए महापुरुष दिव्य संत हमारी बाई नदी को पार कर रजेगाँव होते हुए जिस भव्य स्वागत के साथ बालाघाट की वैनगंगाजी के तट पर पधारे थे, उसे स्मरण करते हुए महाराज तरुण सागरजी की यादें ताजा हो जाती हैं। महाराजजी जो कि किसी होटल में या रेस्ट हाउस में कभी नहीं ठहरे, क्योंकि वे कहा करते थे—''वास्तव में होटल का अर्थ वहाँ से टल जाना ही समझना चाहिए। शाकाहार का पालन करनेवालों को चाहिए कि कभी भी उस होटल में भोजन मत करो, जहाँ मांसाहारी भोजन भी बनता हो। वैसे भी घर में पका भोजन ही श्रेष्ठ होता है, क्योंकि उसमें वात्सल्य-प्रेम रहता है।'' ऐसी पवित्र धारणा रखने वाले महाराज जी तरुण सागरजी को भाजपा जिला कार्यालय के नवनिर्मित भवन में ठहराया गया, जितने दिन महाराजजी बालाघाट में रहे, इस नवनिर्मित भवन में ही रहे। मेरे अभिन्न मित्र अभय सेठियाजी ने मुझसे कहा था कि ''महाराजजी को लेने रजेगाँव चलना है।'' व्यवस्तता के कारण मैं महाराजजी को लेने नहीं जा सका किंतु उसी रात, जिस रात महाराज जी बालाघाट में थे, अचानक मेरे सपने में प्रगट हुए और उन्होंने मुझे माँ वैनगंगाजी पर साहित्य लिखने को कहा, यह कहते हुए कि जिस नदी को इतने दिनों से पार करते आ रहे हो, उस पर कोई गीत क्यों नहीं गा रहे हो, क्यों नहीं कलम चला रहे हो।

महाराजजी के द्वारा सपने में आकर जो बात कही गई, उससे मेरी नींद तो टूट गई और तभी से देर तक सोकर उठने की एक बुरी आदत भी छूट गई। जो आज तक छूटी हुई है। मुझे अपनी अंतर आत्मा को पहचानने बाध्य होना पड़ा। दैनिक क्रियाओं से मुक्त होकर रात्रि करीब ४ बजे की वेला मैं स्नान कर पूजन कर जब लेखनी लेकर माँ वैनगंगाजी पर कुछ लिखने बैठा, तो ऐसा महसूस हुआ कि तरुण सागरजी की दिव्य शक्ति काम कर रही है और संस्कृत भाषा में माँ वैनगंगा अष्टक, माँ वैनगंगा स्तोत्र एवं माँ वैनगंगाजी की आरती का सृजन एक ही बैठक में बिना किसी काटछाँट के जैसे हो गया, मुझे स्वयं आश्चर्य है, क्योंकि हिंदी की एक छोटी सी कविता बनाने में अनेक बार काटछाँट करनी पड़ती है, शब्दों को बार-बार बदलना पड़ता है, किंतु जिस दिव्य प्रेरणा से माँ वैनगंगाजी का अष्टक, स्तोत्र (संस्कृत में), माँ वैनगंगाजी की आरती हिंदी में निर्मित हुई, उसके लिए मैं पूर्णत: राष्ट्रसंत तरुण सागरजी महाराज का आशीर्वाद ही मानता हूँ। इस सृजन के पश्चात् मैंने बड़े भाई जिनेंद्र जैनजी से जो कि महाराज श्री की सेवा एवं व्यवस्था में बालाघाट में कहा तो उन्होंने मुझे तत्काल महाराजजी से भेंट करने का सुझाव दिया।

स्थानीय शैलू कंप्यूटर्स के संचालक मेरे शिष्य राजेश पटले से

उक्त रचना को टाइप करवाकर दूसरे दिन सुबह स्नान-ध्यान करके बालाघाट जाने के लिए निकला तब साढ़े चार बजे थे और सुबह पाँच बजे मैं बालाघाट में महाराजजी के सम्मुख उपस्थित था। मुझे देखते ही महाराजजी मुसकरा दिए, तब मैंने उनसे कहा कि आप कल रात मेरे सपने में आकर माँ वैनगंगाजी पर कुछ लिखवा गए, उसे टाइप करवाकर लाया हूँ, इस पर कृपया महाराजजी हस्ताक्षर कर दीजिए। तब महाराजजी ने मुसकराकर कहा, ''मैं कागज पर हस्ताक्षर नहीं करता, मेरे हस्ताक्षर लोगों के दिलों पर रहते हैं।'' सुनकर मन गद्‌गद हो गया। मैंने महाराजजी से कहा, ''आप इसके लिए आदेश कर दीजिए, मैं इसकी प्रतियाँ छपवाकर बँटवाना चाहता हूँ। तब तरुण सागरजी ने मुझसे अति आत्मीय भाव से कहा कि मैं किसी को आदेश नही देता, पहले छपवा तो लीजिए, बाँटने हम आ जाएँगे। महाराजजी की यह वाणी सुनकर मन ही मन मैंने सोचा कि पुस्तक छपी तो तरुण सागरजी से ही विमोचन करवाऊँगा। यह सोचकर मैंने महाराजजी के चरण स्पर्श किए, उन्होंने पीठ ठोंकी, आशीर्वाद दिया और फिर मैं निकल पड़ा शुभकामना संदेश लेने। महाराजजी की ऐसी कृपा रही कि आदरणीय गौरीशंकरजी बिसेन, सोहन वैद्यजी, मित्र अभय सेठिया, आदरणीय निर्दोष माडलजी के शुभकामना संदेश उसी दिन प्राप्त हो गए और हमारे कुछ मित्रों के शुभचिंतकों के संदेश भी प्राप्त हो गए। तत्पश्चात् जो घटना क्रम घटा, वह अत्यधिक उल्लेखनीय है। तरुण सागरजी के आशीर्वाद से कुछ मित्रों का सहयोग प्राप्त हो गया।

पुस्तक का कवर पेज छपवाने के साथ ही अपनी बेटी दिव्या को दुबई भेजने की तैयारी एक ही दिन हुई और जब मैं दुबई की फ्लाइट जाने के पश्चात् नागपुर के जिस लक्ष्मी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस के सामने गया, जिनसे मेरा पहले से कोई परिचय नहीं था, वे महाराष्ट्रीयन जैन थे, जिन्होंने मुझे देखते ही पूछा कि क्या आप तरुण सागरजी के कार्य से आए हैं? मुझे आश्चर्य हुआ, तब मैंने उनसे कहा, आपको कैसे मालूम कि मैं तरुण सागरजी के कार्य से आया हूँ। उन सज्जन ने कहा, हमारी प्रेस में जो भी आता है, वह महाराजजी के कार्य से अवश्य आता है, आप अंदर आइए और देखिए। जैसे ही मैं दुकान के अंदर प्रविष्ट हुआ, वहाँ देखा कि लगभग २०-२५ पोस्टर अलग-अलग मुद्रा में मुनि तरुण सागरजी के चिपके हुए थे, जिनमें से एक पोस्टर मुझे दिखाते हुए कहा, ''जब तरुण सागरजी पहली बार नागपुर में प्रवचन देने आए हुए थे, यह पोस्टर तब का है, इसे मैं आपकी पुस्तक में छापूँगा।''

मैंने स्वीकृति प्रदान की एवं तत्काल ऑर्डर कर वारासिवनी वापसी के लिए निकल पड़ा। उक्त सज्जन ने २४ घंटे के अंदर ही लगभग २००० प्रतियाँ छापकर मुझे दूसरे दिन फोन पर बताया कि किसी को लेने भेज दो और मुझे राधा माधव सत्संग मंडल से जुड़े अपने मित्र नीरज वर्मा से संपर्क कर एक युवा साथी को वारासिवनी से बाईक से पुस्तक के कवर पेज लेने नागपुर भेजना पड़ा। उसी दिन यह संदेश आया कि तरुण सागरजी महाराज बालाघाट से सीधे सिवनी न जाकर वारासिवनी होकर जाएँगे तथा वारासिवनी में भी एक दिन के लिए विश्राम करेंगे, यह

कवि एवं साहित्यकार। वैनगंगा अष्टक एवं स्तोत्र (संस्कृत में), माँ वैनगंगा चालीसा एवं माँ वैनगंगाजी की आरती (हिंदी में) कृतियाँ राष्ट्रसंत तरुण सागरजी महाराजजी द्वारा विमोचित। छोटे-बड़े दर्जनभर सम्मान-पुरस्कार प्राप्त।

खबर सुनकर मन आत्म-विभोर हो उठा आस्था चैनल के कृष्णा भैया के माध्यम से निर्दोष माडलजी के निवास पर यह सुनिश्चित हो गया कि मुनि तरुण सागरजी महाराज वारासिवनी स्थित दादाबाड़ी के कक्ष में मेरे द्वारा रचित 'माँ वैनगंगा अष्टक, माँ वैनगंगा स्तोत्र एवं माँ वैनगंगाजी की आरती' की पुस्तक का विमोचन स्वयं करेंगे, जिससे मुझे अपने जीवन में नई प्रेरणा और नया रास्ता प्राप्त हुआ मेरे साहित्य की दशा और दिशा ही बदल गई, क्योंकि मैं पूर्व में हास्य-व्यंग्य ही लिखता था, अध्यात्म या धर्म संबंधी कुछ भी सृजन मैंने नहीं किया था। अंततोगत्वा वह दिन आया जब महाराजजी ने अपने करकमलों से वारासिवनी की पुण्य धरा पर स्थित दादाबाड़ी भवन के कक्ष में अपने पवित्र करकमलों से मेरी पुस्तक का विमोचन किया और स्वयं अपने करकमलों वितरित भी किया विश्व इतिहास में मेरे द्वारा रचित माँ वैनगंगा अष्टक, स्तोत्र, माँ वैनगंगा की चालीसा एवं माँ वैनगंगाजी की आरती विश्व की पहली रचना है, जो माँ वैनगंगाजी पर केंद्रित है, इस रचना का सस्वर गायन मेरी बेटी दिव्या श्रीवास्तव ने किया है, जिसका ऑडियो सीडी का विमोचन क्षत्रिय पवार समाज के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. बी.एम. शरणागत एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हीरालालजी ताम्रकार राममंदिर समिति के पदाधिकारी सुरेश सोनीजी मेरे मित्र पंचम हनवत, अशोक चौबे, राजेंद्र शुक्ल सहज, अशोक सागर मिश्र एवं प्रीति बरखा की उपस्थिति में बालाघाट के शंकर घाट पर हुआ था।

इस उपलब्धि पर मैं अपनी ओर से राष्ट्र संत तरुण सागरजी महाराज के श्रीचरणों में बारंबार नमन करता हूँ और यह भी उल्लेख करना चाहता हूँ कि मेरे जीवन में बहुत से संत-महात्मा आए, किंतु जिस चमत्कारी रूप में तरुण सागरजी महाराज ने दिव्य शक्ति के माध्यम से विश्व स्तरीय कार्य करवाया, उसे जीवन भर भुला नही पाऊँगा। तरुण सागरजी कहते हैं, ''धनाढ्य होने के बाद भी यदि लालच और पैसों का मोह है, तो उससे बड़ा गरीब और कोई नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति लाभ की कामना करता है, लेकिन उसका विपरीत शब्द अर्थात् भला करने से दूर भागता है।'' वास्तव में आधुनिक युग परमपूज्य तरुण सागरजी के कड़वे प्रवचनों को सुनते हुए अपना जीवन सफल बना सकता है। अंत में मुनिश्री को सादर विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

सा.अ.
वार्ड नं. ०५, गांधी उद्यान के पीछे,
वारासिवनी, जिला-बालाघाट (म.प्र.)
दूरभाष : ९४२४९७९६७८

वर दे, आया तेरे द्वार

• विश्वास पाटील

ब्रह्म मुहूर्त का समय, सुप्रसन्न धरा, सुरभित गगन मन के पूजा मंदिर में देव प्रतिमाओं का जमघट सजा है। कंठ से शंकराचार्यजी का अन्नपूर्णा स्तोत्र स्रवित हो रहा है। जगदंबा के महाद्वार पर आकर उपस्थित हूँ, 'ओम भवति भिक्षां देहि' घोष प्रकट हुआ। मन पूछ रहा है, यहाँ कौन भिक्षा माँग रहा है? किससे माँग रहा है? क्या वे अपने आपके लिए भिक्षा माँग रहे हैं? क्या वे अपनी माँग के लिए महाद्वार पर आकर माता से प्रार्थनारत हैं? मेरा मन यह सबकुछ नहीं मानता है। मैं सोच रहा हूँ भगवती अन्नपूर्णा के महाद्वार पर प्रार्थनारत आचार्य प्रवर की याचक मुद्रा मेरे मन को एक विलक्षण ऊर्जा अर्पण कर रही है। यह भिक्षा प्रेम की है। यह भिक्षा ज्ञान की है। यह क्षुद्रता का मोह टालनेवाली है। यह भव्यता की पूजा करनेवाली है। यह सीने पर गुलाब पुष्पों के हार को सुशोभित करा लेने जैसी है। यह भोग प्रधान जीवन को भाव प्रधान बनानेवाली है। यह भिक्षा उत्तुंग है, पावन है, उन्नत है। आत्मपरायण बनानेवाली है। अध्यात्मपरायण बनानेवाली है।

ऋषि-मुनियों ने देवी माँ की स्थापना सर्वोच्च मूल्यवत्ता के लिए की। सामर्थ्य, सृजन और सात्त्विकता इन तीन प्रधान गुणों का प्राकट्य इस नारायणी रूप में ऋषि प्रज्ञा ने किया। विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं महासरस्वती। वैभव संपदा की ऊर्जस्वल देवी हैं महालक्ष्मी। बल संपन्नता की वरेण्य देवी हैं महाकाली। सत्त्व, रज और तम के मानदंडरूपी ये महिला शक्ति के प्रारूप हैं। ये नारी देवता हैं। नवरात्र का अर्थ है नव ज्ञान का प्रकाश विकीर्ण करनेवाली महासत्ता। इनका पूजन कभी व्रतों के माध्यम से तो कभी साधना के माध्यम से हुआ। कभी प्रदक्षिणा के माध्यम से तो कभी नृत्य के माध्यम से, कभी जाप के माध्यम से हुआ तो कभी कलाविष्कार के नाना मनोरम माध्यमों से प्रकट होता रहा। देशभर में जगज्जननी की आराधना अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग दृष्टि-बिंदुओं से अखंड रूप में जारी रही।

मैं दुर्गा सप्तशती की वाक् गंगा में अवगाहन कर रहा हूँ। उसका विलक्षण दैवी रूप मन को अपूर्व प्रसन्नता अर्पित करता है। मन की थकान को हरता है। क्षुद्रता को दूर करता है। कल्मष के बीज को नष्ट कर देता है। उदासभाव को समाप्त कर देता है। चैतन्य जगाता है। उन्नतता का प्रकाश फैलाता है। समनुभाव को प्रकटाता है। आप-पर भेद को हटाता है। हे सिंहवाहिनी माँ! मेरी प्रार्थना है कि मेरे अंत:करण के कालिख भरे कोष में काम-क्रोध के समान व्याघ्र-सिंहों की बस्ती है। हे माँ! तुम वहाँ आकर सिंह पर सवार होना। मुझे यह वाक्शक्ति लगती है। धनलक्ष्मी लगती है। महाकाली तो वह होती ही होती है।

पुराणों में एक कथा आती है। रुद्र के माथे पर ब्रह्महत्या का पातक सवार होता है। रुद्र शिव के हाथों साक्षात् ब्रह्मदेव की हत्या हो जाती है।

हिंदी में कुल ग्यारह ग्रंथ प्रकाशित, चार ग्रंथ पाठ्यक्रमांतर्गत, मराठी में कुल तेरह ग्रंथ प्रकाशित, गुजराती और मराठी में अनुवाद कार्य, मराठी कथा एवं एकांकिका नाटक लेखन तथा मंचन। राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीय अनेक पुरस्कार प्राप्त, पुणे विश्वविद्यालय द्वारा इनके लेखन पर एम. फिल. का शोध जारी। संप्रति प्रपाठक एवं शोध निर्देशक स्नातकोत्तर हिंदी विभाग कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय शहादा, जिला नंदुरबार (महाराष्ट्र)।

अब रुद्र के हाथों जगत् की निर्मिति करनेवाले ब्रह्मदेव का सिर है। रुद्र का उन्मत्त नृत्य जारी है। हाथ में ब्रह्मकपाल है। अब वही भिक्षापात्र बन गया है। घर-घर जा शिवजी भिक्षा माँग रहे हैं। वे रुद्र भैरव रूप में हैं। वे महाविष्णु के जगमगाते आँगन में भिक्षा पात्र लिये खड़े हैं। विष्णु के पार्षदों ने उन्हें रोक लिया है। पार्षद का नाम है विश्वक्सेन। रुद्र ने त्रिशूल विश्वक्सेन के गले पर स्थिर किया है। अब उस पार्षद की गरदन रुद्र के त्रिशूल के मध्यवर्ती हिस्से में टँगी है। रुद्र ने अपना भिक्षापात्र सीधे महाविष्णु के सम्मुख धर दिया है। विष्णु ने अपने मस्तक की एक शिरा खींचकर रुद्र के भिक्षापात्र में अर्पित कर दी है। भिक्षापात्र में खून टपक रहा है, फिर भी भिक्षापात्र भरता नहीं है। ब्रह्महत्या का पातक मस्तक पर शाप के समान तिर रहा है। रुद्र विष्णु से पूछ रहे हैं, 'इस ब्रह्महत्या से बचने के लिए मैं भला कहाँ जाऊँ?. विष्णु का उत्तर है कि वे वाराणसी की राह अपनाएँ। रुद्र की गति बढ़ जाती है। आक्रोश भयंकर हो जाता है। अब रुद्र शिव का कंपन बढ़ता रहता है। हाथ में खप्पर है। मस्तक पर ब्रह्महत्या का जलता शाप है, घाव है। साथ में महाविष्णु हैं। चलते-चलते वाराणसी का सीमा प्रदेश दिखाई देने लगता है।

वाराणसी का पुण्यपावन विस्तीर्ण भू-प्रदेश। इस प्रदेश पर किस-किस की अधिसत्ता स्थापित हुई थी। बौद्धों के मतानुसार रेणु राजा के महागोविंद नामक महामंत्री ने वाराणसी को बसाया। पुराणों के निवेदनानुसार राजा दिवोदास को इस नगरी की निर्मिति का श्रेय जाता है। वाराणसी के पुण्यवान भू-क्षेत्र में महाविष्णु के पीछे-पीछे रुद्र का आगमन होता है। रुद्र के हाथ में जो ब्रह्मकपाल है, वह सहस्र खंडों में बिखर जाता है। सारे खंड एक जलकुंड में समा जाते हैं। यह ब्रह्म कमल बनता है। ब्रह्मकपाल का ब्रह्मकमल बनता है। यही कपालमोचन क्षेत्र है। ब्रह्महत्या इस कुंड में समा जाती है। रुद्र को ब्रह्महत्या के पातक से त्राण मिलता है। पुराण की कथा आगे जारी रहती है। मुझे यह कथा इस बिंदु तक मौल्यवान लगती है।

कथा में आया हुआ ब्रह्महत्या का संदर्भ मुझे अलग कोण से संकेत करते रहता है। रुद्र ब्रह्मदेव की हत्या करने के लिए क्यों प्रवृत्त हुए। रुद्र

का ही तमस तत्त्व आगे चलकर शिव में मांगलिक सत्त्वसंपन्न बनकर शेष बचता है न? ब्रह्मा ने सृष्टि का निर्माण किया। इस सृष्टि से उसकी प्रीत हो गई। यह पिता के लिए सहज घटना थी, लेकिन इस प्रीति का अर्थ वात्सल्य न रहते हुए काम भावना में परिवर्तित हो गया। वाक् उनकी कन्या थी। ब्रह्मदेव साक्षात् उसी पर मोहित हो गए। आसक्ति जागी। इससे शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ, साक्षात् जन्मदाता पिता की यह हरकत देखकर वाक् चकित हो गई। वह अपनी जान बचाने के इरादे से दौड़ने लगी। ब्रह्मदेव उसका पीछा कर रहे थे। अपने जन्मदाता को अपने पीछे कामातुर हो दौड़ते देख वाक् शक्ति ने हिरनी का रूप धारण किया। फिर ब्रह्माजी भी हिरन बन उसके पीछे दौड़ने लगे। यह दौड़ अरण्य में गूँज उठी। यह भयंकर दृश्य रुद्र ने देखा। उसके धनुष की प्रत्यंचा तन गई। रुद्र शेर ने मृग रूपी ब्रह्मा का शिकार किया। सृष्टि निर्माता ब्रह्मदेव का मस्तक अधिकार भावना से उन्मत्त हो गया था। अहंकार से त्रस्त हो गया था। रुद्र ने उस मस्तक का भेदन कर डाला था। फिर वाक्शक्ति ने, नाद शक्ति ने रुद्र को नृत्य का अर्थ समझाया। विश्व के पालनकर्ता महाविष्णु ने स्वरक्त से रुद्र का खप्पर भर दिया।

वाराणसी में रुद्र को ब्रह्मदेव के अहंकारी कपाल से मुक्ति मिल गई। महासरस्वती ने शिव के तांडव महानृत्य को अभिनव पदन्यास से अभिमंत्रित किया। यह महासरस्वती। यह विद्या की अधिष्ठात्री देवी। यह सृष्टि निर्माता की मानस कन्या। कामगंध मुक्त साधक पर वह प्रसन्न होती है। शिव मदनहर्ता सिद्ध होते हैं। माँ भगवती, तू ही तो वाक्शक्ति बनकर रुद्र के हाथों बाण सौंपती है न। तू ही तो ब्रह्मद्वेष्टाओं के विरोध में अभियान जगाती है न। अपनी निर्मिति के बारे में अहंकार भाव रखना यही तो है ब्रह्मद्वेष की भावना। अपने ही कोष में बंदिस्त रहनेवाले ही तो ब्रह्म द्वेष करनेवाले हैं। आत्मसंतुष्ट लोग ही तो सही माने में ब्रह्मद्वेष्टा हैं न? अपनी निर्मिति के बारे में अहंभाव, आग्रह और मोह की स्थिति जागना ही तो ब्रह्म का द्वेष करना है न? मोह ही तो है ब्रह्म द्वेष। फिर ब्रह्मा के ध्वस्त हो जाने से क्या होता है? उसकी नश्वर काथा सायंकालीन लालिमा धारण कर लेती है। यह संध्या का समय है। यह ध्यान का समय है। यह आत्मचिंतन का समय है। वाक्शक्ति का यह अभिराम रूप है। यह महासरस्वती की अनोखी पहचान है। ब्रह्म के अहंभाव को, मद को चकनाचूर करनेवाला रूप है यह। कालिदास ने कुमारसंभव के अष्टम सर्ग में सांध्यकालीन समय का वर्णन करते हुए लिखा है कि पश्चिम का आसमान शुष्क सरोवर की तरह दिखाई दे रहा है। एक ओर क्वचित् जल झलक रहा है। यह जल वाक्शक्ति के अस्तित्व की निशानी है। शुष्क सरोवर मानो ध्वस्त ब्रह्मा की निस्पंद काया दुर्गा सप्तशती का घोष मेरे मन के किले के चहुँओर मजबूती से घिरा हुआ है। मातेश्वरी राक्षस समूह को बरजती है, यह कहकर गर्ज-गर्ज क्षण मूढ़ यावत् मधु पिबाम्यहम् मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवता: अर्थात् हे महामूर्ख! तू क्षणभर गर्जना कर ले, देख रहा है न मेरे हाथों में यह मदिरा भरा चषक। इसमें समाया हुआ है तुम्हारा मद, अहंकार मोह और दंभ। इस रसायन का मैं प्राशन कर रही हूँ। इसे गटकने के बाद मेरे हाथों तुम्हारी मौत निश्चित है। यह सुनकर देवगणों के हर्षोल्लास की शुरुआत होगी। देवसत्ता के अधिराज्य का विलास आरंभ होगा।

तमाम भक्तों को मोहित करनेवाली जगदंबा का यह रूप क्या हिंसक है। क्या यह दुर्गा शस्त्रधारिणी हैं? मुझे तो यह मातृरूपिणी लगती हैं। माँ के हाथों में भी तो संटी होती है न बच्चों को अनुशासित करने के लिए। गलतियों को ठीक करती है। माँ अज्ञान को दूर करती है। इस मंत्र में वर्णित राक्षस मुझे तो कहीं भी नजर नहीं आ रहा है। मेरा ही विकारी मन गरदन झुकाए मेरे सम्मुख खड़ा है। अपराध भाव से वह झुका हुआ है। जगदंबा मुझे ही लक्ष्य कर तो कह रही हैं न कि मैं तेरे ढोंग और दंभ को प्राशन कर रही हूँ, क्या तू अपने आपको विद्वान् समझता है? क्या अपने आपको नियंता मान बैठा है? अभिभावक मानता है, क्या तू अपने आपको, अपने आपको मालिक समझ बैठा है क्या? तू अधिकारों से प्रमत्त हो गया है। मैं तेरे मद को कुचल दूँगी। तुममें बैठे हुए उन्मत्त भैंसे को खड्ग के एक ही प्रहार से छिन्न-विच्छिन्न कर दूँगी। तलवार के एक ही आघात से बेल धराशायी हो जाती है न, उस प्रकार से तेरी आसक्ति की बेल को धरा पर गिरा दूँगी। देख तो तुममें स्थित देवशक्ति किस प्रकार से भयभीत हो गई है? जरा देख तो सही, देवगण कितने भयचकित हो गए हैं? मैं उन्हें भयमुक्त करूँगी। शिव का खप्पर किस प्रकार से भर गया है। जगदंबा का खप्पर मेरे उफनते अहंमद से भर जाए। माँ अहंकार को शमित करती हैं। पाशमुक्त करती हैं। पशुभाव को समाप्त करती हैं। शुंभ यह नियंता भाव है। निशुंभ यह उपभोक्ता भाव है। माता इन दोनों भावों और भावनाओं को समाप्त करती हैं।

मुझे गोस्वामी तुलसीदासजी की विनय पत्रिका का एक पद स्मरण हो रहा है। प्रसंग राम-रावण युद्ध का है। इस प्रकार के रणवाद्य तो हर एक के मन में गरजते रहते हैं। कौन कहाँ का रावण? कौन रामराजा? कहाँ लंका में स्थापित रणकुंड? कौन इस समरांगण में किससे जूझ रहा है? तुलसी बाबा कहते हैं—

मोह दसमौलि तद्भ्रांत अहंकार पाकरिजित काम विश्रामहारी,
लोभ अतिकाय मत्सर महोदर दुष्ट क्रोध पापिष्ठ बिबुधांतकारी

अर्थात् हमारा अज्ञान ही मोह है, मोह दशानन, अहंकार कुंभकर्ण, काम इंद्रजीत, लोभ, मत्सर और क्रोध रावण दल के सेनाधिपति अतिकाय, महोदर और बिबुधांतक हैं। यम-नियम देवता हैं। मोक्ष का साधन तो रघुनाथ के सैन्य दल के बंदर और रीछ हैं। ज्ञान सुग्रीव है। विरागी भावनाओं का प्रत्यंतर हनुमंत के हृदय में प्रकट हुआ है। माता जगदंबा हरेक के अंत:करण के रणांगण में जूझनेवाले असुर दल को परास्त कर राम के विजय का पथ प्रशस्त करती हैं।

महालक्ष्मी का जो वर्णन ऋषि-मुनियों ने किया है, वह 'अनपगामिनीम्' अर्थात् पैररहित है। लक्ष्मी आर्द्र हैं। स्निग्ध हैं। यह

भाव मातृत्व का है। वात्सल्य का है। स्तन्य का है। दुग्धधारा का है, यह है सनातन भाव। इस भावना के ही कारण जगदंबा का महाद्वार सबके लिए खुला है। वह सबको पुष्टी-तुष्टी-संतुष्टी देनेवाला है। धनसत्ता को उत्कांत करनेवाला है। शुद्ध चैतन्य ही महालक्ष्मी का रूप है। महालक्ष्मी सत्त्वसंपन्न हैं। सृष्टि के मूल रहस्य की उद्गात्री हैं, उद्घोषिका हैं। यह है धनलक्ष्मी का रूप। यह असार वस्तु जगत् को सारवान बनाती है। यह मानो मोहिनी मंत्रविद्या है।

हमें महालक्ष्मी चाहिए, लेकिन अलक्ष्मी नहीं चाहिए। भगवान विष्णु ने भी अलक्ष्मी का त्याग करते हुए लक्ष्मी को अपनाया है। कौन है यह अलक्ष्मी? सागर-मंथन हुआ। कालकूट विष प्रकट हुआ। फिर आई अलक्ष्मी, लक्ष्मी नहीं जी, यह ज्येष्ठा भगिनी। लक्ष्मी की बड़ी बहन। बंगाल में आश्विन अमावस्या को गोबर से क्षणिका अलक्ष्मी गढ़ते हैं। लक्ष्मी के ही समान उसकी पूजा कर उसे विसर्जित करते हैं। महाराष्ट्र में इसे, 'अक्का बाई' के नाम से जानते हैं। इसका प्रकटीकरण दरिद्रता, दैन्य और आपदारूपी होता है। सागर से ऊपर उठते ही उसने पूछा कि उसके वास्तव्य का स्थान कौन सा है? देव शक्ति बोली, ''सुनो, कोयला, भूसा और बाल जहाँ हैं, वहाँ पर तुम निवास करना।'' अलक्ष्मी पिपासा-क्षुधा से भरी हुई है। इस अलक्ष्मी से कौन भला विवाह करेगा? पद्मपुराणकार का कथन है कि विष्णुजी ने इसका विवाह उद्दालक नामक एक युवक से करा दिया। लिंगपुराण के अनुसार इसका विवाह दुःसह नामक युवक से हुआ। अलक्ष्मी से विवाह होने के बाद उद्दालक खूब चिढ़ गया। उसके भाग्य में तो यह अलक्ष्मी ही लिखी हुई थी न? अलक्ष्मी को मद्य ही प्रिय है। उसे द्यूतक्रीड़ा में रस है। वह कलहप्रिय है। उसकी भाषा कर्कश एवं कठोर है। आगम और विष्णुपुराण साक्षी हैं कि अलक्ष्मी कृष्णवर्ण, रक्तनेत्र, द्विभुज, लंबी नासिका वाली है। उसके स्तन और पेट बड़े हैं। वह कमल एवं काकध्वज धारण करती है। उसका मुख वृषभाकार है। झाड़ू उसका हथियार है। इस प्रकार की पत्नी से संवाद कर गृहस्थी बसाना उद्दालक के लिए संभव ही नहीं था। आखिरकार थककर उसने एक पीपल के पेड़ तले उसका त्याग कर दिया। तपाचरण हेतु सुदूर अरण्य में चल पड़ा, अलक्ष्मी को उसका स्मरण हुआ, उसकी आँखो में आँसू भर-भर आए, लेकिन उद्दालक तो दूर चला गया था। अब उसे कोई न तो पुकारता था और न कोई बुलाता ही था। न स्वागत न सम्मान। लक्ष्मी को अपनी बड़ी बहन की यह अवस्था जान बहुत दुःख हुआ। उसने एक दिन भगवान् विष्णु से शिकायत की, जिससे भगवान विष्णु सप्ताह में एक दिन कम-से-कम उसे मिल तो लें। उसको सांत्वना तो दें। विष्णु ने यह तय किया। वह दिन था शनिवार का। इससे शनिवार के दिन पीपल की पूजा होती है।

महाविष्णु के प्रति हमारी प्रार्थना के स्वर हों, 'हे दयाघन परमात्मा! इस अलक्ष्मी को परे धकेल। दूर हटा।' ऋषि परंपरा ने बड़े ही सार्थक शब्द का प्रयोग किया है, वे लिखते हैं, 'निर्णुद', इसका अर्थ यह है कि बिना सोचे-विचारे उच्चाटन कर देना, यह अलक्ष्मी क्या है? अभूति और असमृद्धि है। आलस्य और ऐदीपना है। अकर्मण्यता और अशक्ति है। असंतोष और अतृप्ति है। आत्मरति और आत्मसंतुष्टि है। अज्ञान और अभाव है। कंगाली और उदासीनता है। प्रमाद और निद्रा है। क्षुधा और पिपासा है। हमारी करबद्ध प्रार्थना यह हो कि हे नारायण! मेरी एषणा को दूर कर। वित्तैषणा को हटा। कीर्ति की भूख से बचा। कर्महीनता को दूर धकेल। क्षुधा और पिपासा को अमल बना, मलरहित बना, निर्मल बना, मेरे घर धनलक्ष्मी का वैभव जागे। धान्यलक्ष्मी का निवास हो। धैर्यलक्ष्मी का वास रहे। शौर्यलक्ष्मी का अधिराज्य हो। विद्यालक्ष्मी विराजित हो। विजयलक्ष्मी बसे, राज्यलक्ष्मी का साम्राज्य स्थापित हो, सत्तालक्ष्मी का वैभव सजे, भाग्यलक्ष्मी की जय-जयकार हो। मन के आँगन में शंकराचार्यजी के स्तोत्र का अवतरण उजाले की दीप्ति के समान तैर रहा है।

मायाहस्तेर्पयित्वा भरण कृतिकृते मोहमूलोअवं माँ
मातः कृष्णाभिधाने चिर समय मुदासीनभावं गतासि
कारुण्यैकाधिवासे सकृदपि वदन नक्षसे त्वं मदीयं
तत्सर्वज्ञे न कर्तुं प्रभवति यवती किं नु मूलस्य शान्तिम्

माता कृष्णे, सुन मेरा तो जन्म ही मोह के मूल नक्षत्र में हुआ है न और तू मेरा लालन-पालन करने हेतु माया नामक धाय के हाथों सौंप रही हैं न। वह क्या दुग्धपान कराएगी भला? ना, ना, वह तो मीठा जहर ही पिलाएगी न! और हे माते, तुम ऐसी पीठ क्यों मोड़ ले रही हो, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, क्यों कठोर बनी हो मातेश्वरी? तुम तो करुणा की खान हो। भक्त जनों ने तुम्हें इसी नाम से तो पुकारा है न बार-बार। तुम्हारी महिमा तो सभी जानते हैं न माते! और तुम बालक को विमुख क्यों भला कर रही हो? जाने दो, छोड़ो भी माँ, करुणा व्रत के महिमान की बात को छोड़ देते हैं, लेकिन माते! तुम तो सर्वज्ञ हो न। माते! तुम अपने बालक को मूल नक्षत्र के कुप्रभाव से बचाने के लिए जरा भी उपाय नहीं जानती हो क्या माँ?

यह शंकराचार्य का प्रश्न है। यह कैसा अबोध और कैसा प्रबोधशील है? अजान बालक के समान, लेकिन कैसा प्रज्ञासंपन्न, इससे एक महाभाव का प्रकटीकरण हो रहा है। मातेश्वरी, मैं तेरे द्वार पर आकर खड़ा हूँ। तुम्हारे मंदिर के आँगन में नहीं, साक्षात् तुम्हारे द्वार पर, वरदे मुझे क्षमा करना। तमोगुण के प्रभाव के कारण मैं देवशक्ति से बिछड़ गया हूँ, बुद्धि में जड़ता उपज जाए तो मांगलिकता का उदय कैसे हो सकता है? आलसी को लक्ष्मी का पूजन करना कैसे भला संभव है? भीरु मनोवृत्ति वाला भी क्या कभी काली की उपासना कर सकता है? तुम्हारा बालक जड़ता को वरकर क्या कभी माँ सरस्वती की पूजा कर सकता है? मन में लाभ-लोभ की राशि को सँवारकर भी क्या कभी लक्ष्मी का पूजन कर सकता है भला? छाती में भय भरकर भी क्या कभी तेरा बालक महाकाली की वंदना कर सकेगा? वह जड़त्व को दूर हटाएगा। मन के दैन्य भाव को दूर करेगा। चैतन्य का गीत ओठों पर सजाएगा सर्वमंगल की आस मन में जगाएगा, सर्वहित की दिशा में अग्रसर होगा। कर्मपुष्पों से उसकी अंजुलि सदा ही समृद्ध रहेगी। संपूर्ण आत्मीयता से उसका हृदय द्रवित होगा। तब तेरी उपासना का अर्थ और फलितार्थ संपन्न होगा।

कृष्णाबंरी, सरस्वती कॉलोनी
जिला : नंदुरबार, शहादा-४२५४०९ (महाराष्ट्र)
दूरभाष : ०९७६७४८७४८३

चित्रा और पाँच भाई

मूल : **उज्ज्वला केलकर**
अनुवाद : **सुशीला दुबे**

मराठी की सुपरिचित लेखिका श्रीमती उज्ज्वला केलकर का जन्म ९ अक्तूबर, १९४२ को हुआ। एम.ए., एम.एड. तक शिक्षा प्राप्त। बाल साहित्य में अठारह बाल नाटिका, चार बाल कविता, एक बाल उपन्यास, चार कहानी-संग्रह, दो कविता संग्रह, दो संकीर्ण अनुवाद, हिंदी से मराठी में अनूदित २० पुस्तकें प्रकाशित। कई साहित्यिक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त। यहाँ उनकी चर्चित कहानी 'चित्रा और पाँच भाई' का हिंदी रूपांतर दे रहे हैं।

एक गाँव था। गाँव में चित्रा नाम की एक लड़की रहती थी। एक छोटा सा मकान था। वह अपने पाँच भाइयों के साथ रहती थी। बहन-भाई एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। चित्रा घर का सारा काम करती थी। नदी से पानी लाती, खाना बनाती। उसके भाई उनके छोटे से खेत में काम करते थे। सुबह नाश्ता करके दोपहर के भोजन के लिए सब्जी-रोटी लेकर जाते थे। दिन ढलने तक खेत में मेहनत करते और शाम को घर आते।

एक दिन चित्रा के भाई नाश्ता करके और खाना लेकर खेत पर गए। चित्रा नदी से पानी ला रही थी। इतने में एक पंचरंगी तोता आकर उसके कंधे पर बैठा। उसने चित्रा से पूछा, ''क्या मैं तुम्हारे घर आ सकता हूँ? मुझे बहुत भूख लगी है।''

चित्रा ने कहा, ''आओ न! निश्चिंत होकर आओ।''

''तुम मुझे क्या-क्या खिलाओगी?''

''भिगोई हुई दाल, हरी मिर्च और खेत से अमरूद के पेड़ पर से अमरूद लाकर खिलाऊँगी।''

तोता चित्रा के साथ घर आया। इसके बाद वह हर रोज आने लगा। उसकी और चित्रा की अच्छी दोस्ती हो गई। चित्रा उससे गपशप करती रहती। उसके भाइयों को भी उसका यह नया दोस्त पसंद आया। शाम को चित्रा के भाइयों के घर आने के बाद तोता हमेशा की तरह अपने ठिकाने राजा के बगीचे में लगे पेड़ पर चला जाता था।

राजा की रानी स्वरूपा देवी बहुत खूबसूरत थी और उसकी बेटी शिल्पा भी बहुत सुंदर थी। रानी तथा राजकन्या समझती थीं कि शिल्पा जैसी सुंदर लड़की इस दुनिया में कोई नहीं है। शिल्पा के पिताजी के राज्य से वैशाली का साम्राज्य बहुत बड़ा था। वैशाली नरेश का बेटा विजय कुमार ने निश्चय किया था कि वह दुनिया की सबसे ज्यादा खूबसूरत लड़की से शादी करेगा। रानी को भरोसा था कि शिल्पा की शादी युवराज विजय कुमार से होगी। रानी और राजकन्या कभी-कभी बगीचे में जाती थीं। वहाँ के पंचरंगी तोते से पूछतीं—

''तोते-तोते घूमते हो दुनिया भर में,
बोलो-बोलो कौन है सुंदर इस जहाँ में?''

तोता कहता, ''दुनिया में सबसे सुंदर तुम्हारी कन्या शिल्पा रानी।'' जब तोता ऐसा कहता तो वे दोनों खुश हो जाती थीं। शिल्पा को अपनी सुंदरता का घमंड था। एक दिन कुछ अलग ही घटना घटी। तोते के चित्रा को देखने के कुछ दिन बाद रानी और शिल्पा बगीचे में आईं। उन्होंने हमेशा की तरह सवाल पूछा, पर तोते ने हमेशा की तरह जवाब नहीं दिया। उसने कहा, ''दुनिया में सुंदर है शिल्पा; लेकिन उससे ज्यादा सुंदर है चित्रा।''

तोते ने सही कहा था। चित्रा बहुत सुंदर थी। रानी और राजकन्या को गुस्सा आया। रानी ने सोचा, अगर विजय कुमार को यह बात मालूम हो गई तो वह शिल्पा से शादी नहीं करेगा। चित्रा से करेगा। नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। रानी ने सिपाहियों को हुक्म दिया, ''चित्रा को पकड़कर ले आओ और ध्यान रहे कि यह बात किसी को मालूम न हो!''

दूसरे दिन चित्रा के भाई खेत पर चले गए। चित्रा पानी लाने नदी पर गई। तोता सीटी बजाता उसके आगे-आगे उड़ रहा था। सिपाहियों ने उसे देखा—''राजकन्या से ज्यादा खूबसूरत लड़की यही होगी!'' उन्होंने चित्रा को उठाकर घोड़े पर बैठाया। घोड़ा दौड़ पड़ा। चित्रा भाइयों को पुकारने लगी, लेकिन वे बहुत दूर खेत में काम कर रहे थे। सिपाही चित्रा को ले गए, तब तोता खेत पर गया। उसने चित्रा के भाइयों को बताया कि सिपाही चित्रा को पकड़कर ले गए हैं।

''लेकिन क्यों? उसने ऐसा कौन सा अपराध किया है?'' भाई पूछने लगे।

''चित्रा राजकन्या से ज्यादा खूबसूरत है, यही उसका अपराध है।'' सब भाई अपनी बहन से बहुत प्यार करते थे। उन्होंने निश्चय किया कि कुछ भी हो जाए, चित्रा को छुड़ाकर लाना ही है। खेत का काम छोड़कर वे राजधानी की ओर भागने लगे। वे दोपहर से भाग रहे थे। अब वे थक गए थे। सामने नदी दिखाई दी। बड़ा भाई बोला, ''हम लोग यहाँ रुकेंगे। थोड़ा आराम करेंगे। साथ लाया हुआ खाना खाएँगे। फिर हमें दौड़ने के लिए ताकत मिलेगी।'' सबने हाथ-मुँह धोए। रोटी की पोटली खोली। वे खाने ही जा रहे थे कि एक बूढ़ा वहाँ आ गया। उसने कहा, ''मैं बहुत

दिनों से भूखा हूँ। मैं बूढ़ा हो गया हूँ। मेहनत नहीं कर सकता। कभी खाने को मिलता है, कभी नहीं। तुम मुझे थोड़ी रोटी दो!'' बड़े भाई ने कहा, ''दादाजी, मेरे हिस्से की रोटी आप खा लीजिए। वैसे भी मुझे भूख नहीं है। सुबह नाश्ता जरा ज्यादा ही हुआ था।'' बूढ़े ने रोटी खाई, लेकिन उसका पेट भरा नहीं। फिर दूसरे-तीसरे सभी भाइयों ने अपनी रोटी उसे दी। सब रोटियाँ खाने के बाद डकार लेते हुए बूढ़ा बोला, ''बच्चो, आज मेरे कारण तुम्हें भूखा रहना पड़ा।''

''नहीं-नहीं दादाजी, आप ऐसा मत कहिए। आप कितने दिनों से भूखे थे। हमने सुबह पेट भर नाश्ता किया था।'' दूसरा भाई बोला, ''पता नहीं, अब ऐसा नाश्ता कब नसीब होगा?'' तीसरे ने आह भरी, ''क्यों? ऐसा क्यों कह रहे हो?'' बूढ़े ने पूछा तो उन्होंने पूरी घटना सुना दी। बूढ़ा सोच में पड़ गया। फिर बोला, ''बच्चो, तुमने मेरी भूख मिटाई है, अब मैं तुम्हारे काम आऊँगा। मैं तुम एक-एक को ऐसी शक्ति दूँगा कि उसका उपयोग तुम अपनी बहन को ढूँढ़ने और छुड़ाने में कर सकोगे। लेकिन काम पूर्ण होने के बाद मेरी दी गई शक्तियाँ तुम्हें लौटानी होंगी।''

सब भाइयों ने कबूल किया। फिर उन्होंने बड़े भाई के सिर पर हाथ रखकर कहा, ''तुम कितना भी बोझ लेकर पंछी की तरह उड़ते हुए कहीं भी आ-जा सकोगे।'' दूसरे भाई के सिर पर रखकर कहा, ''तुम्हारे हाथ लोहे जैसे मजबूत होंगे। तुम्हारे मुक्के से दीवार भी गिर जाएगी।'' तीसरे से कहा, ''तुम्हारा सारा शरीर इस्पात का होगा। किसी भी शस्त्र का तुम पर कोई असर नहीं होगा।'' चौथे से कहा, ''तुम कुल्ली करके जिस दिशा में पानी डालोगे, वहाँ नदी बन जाएगी।'' पाँचवें से कहा, ''तुम जिस व्यक्ति का स्मरण करोगे, वह व्यक्ति कहाँ है, इसका तुम्हें पता चल जाएगा तथा वह ठिकाना तुम्हें दिखाई देगा।'' सब भाइयों ने बूढ़े को प्रणाम किय। ''यशस्वी भव!'' आशीर्वाद देकर बूढ़ा चला गया।

छोटे ने आँख बंद कर ली और अपनी बहन का स्मरण किया। उसकी आँखों के सामने एक दृश्य आया—राजमहल की उत्तर दिशा में एक पहाड़ है। उसके चारों ओर खाई है। खाई में पानी है। पहाड़ पर एक महल है। महल के पीछे के एक अँधेरे कमरे में चित्रा को रखा गया है। वह रो रही है और अपने भाइयों को पुकार रही है। महल के चारों तरफ सिपाही पहरा दे रहे हैं। उनके हाथ में नंगी तलवारें हैं।

बड़े भाई ने कहा, ''आइए मेरे कंधे पर बैठ जाइए।'' बड़े भाई के एक-एक कंधे पर दो-दो भाई बैठे। बड़े भाई ने हाथ फैलाए। वे उड़ने लगे। छोटा राह दिखाने लगा। वे महल के पीछे उतरे। दूसरे भाई ने अपने सख्त हाथों से मुक्के मार-मारकर दीवार गिराना शुरू किया। फिर वे उस कमरे में गए, जहाँ चित्रा को बंदी बनाकर रखा था। अपने भाइयों को देखकर चित्रा बहुत खुश हुई। उसी समय पहरेदार सिपाही तलवारें लेकर दौड़े। बाकी भाइयों को पीछे ढकेलकर तीन नंबर का भाई सामने आया। सिपाहियों ने तलवार से उस पर वार किए। चित्रा ने डर से आँखें बंद कर लीं। सिपाहियों की तलवारें उस पर वार कर रही थीं। लोहे पर पटके जाने जैसी खण-खण आवाज आ रही थी। उसने अकेले ही सब सिपाहियों को मार गिराया। खाई के दक्षिण में राजमहल था। रानी और राजकन्या की चित्रा पर नजर थी। चित्रा के भाई आए और उन्होंने मार-पीट शुरू की, यह देखकर रानी ने सेना की एक टुकड़ी को चित्रा के भाइयों को बंदी बनाने के लिए भेजा। सैनिकों ने खाई पर पुल बनाए। पुल पर से सेना पहाड़ पर जाने लगी। चौथे भाई ने वहाँ हौद से पानी लेकर कुल्ली की और वह पानी राजमहल के सामने डाला। पानी गिरते ही राजमहल से पानी उठने लगा। बड़े भाई ने कहा, ''चलो, जल्दी करो, सब लोग मेरे कंधे पर बैठ जाओ।'' भाई उसके कंधे पर बैठे और चित्रा उसकी पीठ पर बैठी। बड़े भाई ने ऊँची छलाँग लगाई। वह उड़ने लगा। ऊँचे आसमान में उड़ते हुए उसने देखा। पानी के सैलाब के साथ राजा, रानी, राजकन्या, सिपाही सब बह गए। महल के छत के ऊपर से पानी बहने लगा और पहाड़ डूब गया।

छोटे ने आँख बंद कर ली और अपनी बहन का स्मरण किया। उसकी आँखों के सामने एक दृश्य आया—राजमहल की उत्तर दिशा में एक पहाड़ है। उसके चारों ओर खाई है। खाई में पानी है। पहाड़ पर एक महल है। महल के पीछे के एक अँधेरे कमरे में चित्रा को रखा गया है। वह रो रही है और अपने भाइयों को पुकार रही है। महल के चारों तरफ सिपाही पहरा दे रहे हैं। उनके हाथ में नंगी तलवारें हैं।

जहाँ बूढ़ा मिला था, वहाँ सब आ गए। बूढ़ा एक पेड़ के नीचे बैठा था। सब भाई-बहन ने उन्हें प्रणाम किया।

''दादाजी, आपके आशीर्वाद से और आपकी दी हुई शक्तियों के सहारे हम कामयाब हुए। हमारा काम हो गया है। आप अपनी शक्ति वापस ले लीजिए।'' दादाजी उनके सिर पर हाथ रखा और शक्ति वापस ले ली।

चित्रा ने कहा, ''दादाजी, आप अकेले मत रहिए। हमारे साथ चलिए।''

दादाजी ने कहा, ''बेटी, तुम जैसे संकट से घिरे लोगों की मदद करने मुझे जाना ही होगा।'' दादाजी चले गए। चित्रा और उसके भाई घर लौटे।

चित्रा की खूबसूरती के चर्चे विजय कुमार तक पहुँचे। उन्होंने चित्रा के लिए रिश्ता भेजा। विजय कुमार की शादी चित्रा से हुई। चित्रा के भाई अलग-अलग पद पर अधिकारी बनकर काम करने लगे। राज्य की रक्षा का काम ज्यादा सतर्कता से होने लगा!

प्लॉट नं. ३०३ बिल्डिंग डी-२
शिवसागर को.आप.सो.
माणिक बाग, सिंहगढ़ रोड, पुणे-४११०५१
दूरभाष : ९४२३०११६४३

साहित्यकारों के लिखने के ढंग और मन:स्थिति

• विनोद शंकर गुप्त

साहित्यकार अनेक विधाओं में बड़े-बड़े ग्रंथ लिखते हैं। उनकी रचनाएँ—कहानी, उपन्यास, निबंध, समीक्षा और कविता आदि हम सब पढ़ते तो अवश्य हैं, परंतु हम उनके व्यक्तिगत जीवन, उनके संघर्ष और उनकी साहित्य साधना के विषय में नहीं जानते। महान् लोगों की आत्मकथा या जीवनी पढ़कर उनके व्यक्तिगत जीवन और अनुभवों के बारे में बहुत कुछ जानने को मिलता है। साहित्यकार अपनी रचना का सृजन कब, किस प्रकार, किन परिस्थितियों में करता है, वह भी जानना जरूरी है। वे कभी स्वांत: सुखाय, कभी यश अर्जन और कभी अर्थक्रते लिखते हैं। वे विद्यार्थियों के लिए भी लिखते हैं और पाठकों के लिए भी। लेखक के लिखने के ढंग अलग-अलग होते हैं। कोई देर रात तक जागकर लिखता है तो कोई सुबह सूर्य उदय से पहले या फिर दिन में जब उसका मूड हो। कोई मेज-कुरसी पर बैठकर लिखता है, कोई अपने पलंग पर ही। कोई एक लेख को एक ही बैठक/सिटिंग में पूरा कर लेता है तो कोई बड़ा लेख हो तो दो-तीन सिटिंग में पूरा करता है। कोई अपने लेख को एक बार लिखने के बाद दुबारा उसमें काट-छाँट नहीं करता तो कोई अपने ही लेख में काट-छाँट घटा-बढ़ाव करता है। कोई फुलस्केप पेपर पर लिखता है तो कोई जो भी कागज उपलब्ध हो, चाहे बच्चों की कॉपियों के पन्ने ही क्यों न हों, लिखना शुरू कर देता है। बड़े रोचक और ज्ञानवर्धक होते हैं उनके लिखने के ढंग। मैं डॉ. पद्मसिंह शर्मा कमलेशजी की पुस्तक 'मैं इनसे मिला', जिसमें उन्होंने कुछ प्रतिष्ठित साहित्यकारों से लिये साक्षात्कार संकलित हैं, उनमें से कुछ अंश यहाँ दे रहा हूँ। देखिए—

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन को लोग 'अज्ञेय' के नाम से अधिक जानते हैं, जिन्हें 'ज्ञान पीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। उन्होंने 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' तथा 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास तथा 'विपथगा', 'परंपरा', 'जय बोल', 'काठारी की बात', 'शरणार्थी', अमखल्लरी कहानियों की रचना की। अपने लिखने के ढंग के बारे में उन्होंने कहा है, ''कहानी तो मैं आम तौर पर दो सिटिंग में लिखता हूँ। कभी-कभी एक सिटिंग में भी लिख डालता हूँ। उपन्यास के लिए ४-६ महीने सोचना पड़ता है। नोट्स लेता हूँ। जब सामग्री तैयार हो जाती है, तब १०-१२ घंटे की सिटिंग में लिखता हूँ। 'शेखर' के दूसरे भाग का आखिरी खंड एक सिटिंग में सबेरे ८ बजे से रात के २:३० बजे तक लिखा। बीच में दो बार चाय पी थी। थकने पर टहलने लगता था और उँगलियों के दुखने पर दो उँगलियों से कलम पकड़कर लिखता था। ५०-५५ फुलस्केप पेज तक एक सिटिंग में लिख लेता हूँ। उन दिनों पढ़ना बंद रहता है। डाक खोलकर भी नहीं देखता। परिचितों से भी नहीं मिलता। किसी प्रकार की बाधा नहीं चाहता।

जाने-माने साहित्यकार। 'बाबू गुलाबराय व्यक्तित्व और कृतित्व : एक झलक', 'जीवन पाथेय', 'बाबू गुलाबराय की हास्य-व्यंग्य रचनाएँ','बाबू गुलाबराय के विविध निबंध', 'मेरे मानसिक उपादान : बाबू गुलाबराय', 'मेरी कहानी मेरी जुबानी', 'बाबू गुलाबराय विचार-सार' (संपादित ग्रंथ) एवं विविध पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक व पुरातत्त्व विषय पर लेख प्रकाशित।

''मैं प्रयत्न करता हूँ कि अनुभव के विस्तार और गहराई को बनाए रखूँ। इसलिए नोट्स लेता रहता हूँ और प्लानिंग करता रहता हूँ। यहाँ तक कि कागज पर लिखने से पहले दो-एक बार तो रचना को मन में ही लिख लेता हूँ। अच्छे वाक्यों, कथोपकथन के अंशों, मार्मिक उक्तियों आदि को नोट करता रहता हूँ। कोई अच्छी इमेज सूझती है तो उसे लिख लेता हूँ। कभी वाद-विवाद के लिए कोई प्रश्न लिख लेता हूँ। एक अच्छे संचय में से उपन्यास लिखते समय अवसर के अनुकूल उपयुक्त सामग्री ले लेता हूँ या तत्काल पुन: ढाल लेता हूँ।''

उदय शंकर भट्टजी ने कई नाटक लिखे हैं। भट्टजी के ऐतिहासिक, पौराणिक नाटकों में 'सागर विजय', 'अंबा', 'विक्रमादित्य', 'दाहर या सिंघ विजय', 'मत्स्यगंधा', 'विश्वामित्र', 'शक विजय' प्रमुख हैं। इनके 'एकला चलो रे' और 'कालिदास' नाम के रेडियो नाटक भी प्रकाशित हुए हैं। श्री भट्टजी कहते हैं, ''लिखने का मेरा ढंग यह है कि मैं साल में ५-६ महीने पढ़ता हूँ। इधर-उधर की यात्रा करता हूँ और फिर लिखने की बात सोचता हूँ। कविता तो रात भर लिखता रहता हूँ। पान-तंबाकू पास होता है। सामने कागज, दवात और कलम रख लेता हूँ। सुपारी काटकर तंबाकू बनाता हूँ। मुँह में तंबाकू डाला कि लिखना शुरू किया, और फिर तो लिखता ही चला जाता हूँ। चार-पाँच घंटे लगातार लिखता रहता हूँ। मैं मेज-कुरसी पर नहीं लिखता, बल्कि बड़े तकिए पर पैड रखकर लिखता हूँ। थकने पर तकिए के सहारे लेटकर लिखता हूँ। पान को मुँह में रखने से प्रेरणा मिलती है और तंबाकू, चूना तथा सुपारी से उसमें तीव्रता आती है। स्वभाव में अव्यवस्था होने से न कागज ठीक से रहता है, न चिट्ठियों का ढंग। इसलिए जो कागज मिल जाता है, उसी पर लिखने लगता हूँ। कभी-कभी तो लिफाफे पर ही कविता लिख डालता हूँ। रात को दो बजे लिखने की प्रेरणा होने पर दवात के लिए किवाड़ खटखटाता रहता हूँ। कागज के लिए ट्रंक तक छान मारता हूँ और जब कागज नहीं मिलता तो बच्चों की कॉपी पर ही लिखना शुरू कर देता हूँ। कई बार तो ऐसा होता है कि छत पर सो रहा हूँ और लिखने की इच्छा

हुई, बस चुपचाप नीचे उतरता और १-१:३० बजे तक लिखता रहता। लिखने का कोई नियम नहीं है। हाँ, सवेरे नहीं लिखता। जो कुछ लिखा है, वह रात के पहले पहर में ही लिखा है। नींद कम ही आती है। आम तौर पर ३-४ बजे सोता हूँ। कविताएँ प्राय: एक-दो सिटिंग में लिख डालता हूँ। हाँ, पुस्तक नियम से लिखता हूँ। जो समय निश्चित होगा, उसी पर लिखूँगा। समय के व्यवधान में क्रम बिगड़ जाएगा। नाटक लिखते समय एकांत छोड़ देता हूँ। उस समय मैं लोगों की बातचीत और हँसने के ढंग को पढ़ने की चेष्टा करता हूँ। नाटक के पात्र मुझे आस-पास ही मिल जाते हैं। बहुत लिखने की इच्छा होने पर कॉफी-हाउस या सिनेमा में जाकर स्त्री-पुरुषों तथा बच्चों की बातचीत का ढंग देखता हूँ। नाटक लिखना इसीलिए शुरू किया कि मुझे मनुष्य के चरित्र को ठीक-ठीक उतारना था।''

महादेवी वर्मा विरह-वेदना की कवयित्री हैं। वे दु:ख को ही आराध्य मानती हैं। 'दीपशिखा' इनकी प्रमुख कृति है। 'नीहार' और 'रश्मि' के बाद इनकी 'नीरजा' और 'सांध्या-गीत' नाम की दो पुस्तकें निकली हैं। वे 'साहित्य-सृजन के विषय में कहती हैं, ''मेरा मन क्रियात्मक कार्यों में अधिक रमता है। साहित्य-सृजन मेरे लिए उतने महत्त्व का नहीं, जितना कोई क्रियात्मक जनोपयोगी कार्य। इसलिए मैं बिना दूसरा कार्य किए जी नहीं सकती। यह पहला ध्येय है। साहित्य तो विराम के क्षणों की वस्तु है। जब कार्यों से छुट्टी मिलती है, जब मैं थकान दूर करने के लिए लिखती हूँ। लिखने के लिए कभी पहले से सोचती भी नहीं। न अच्छे कागजों पर ही लिखती हूँ। रद्दी-सद्दी जो भी कागज मिला, उसी पर लिख डाला। कभी-कभी तो अखबार के खाली हाशिए पर ही लिखती हूँ और जहाँ-जहाँ जगह होती है, लिखती जाती हूँ। हाँ, प्रेस-कॉपी करते समय मैं अवश्य ढंग से लिखती हूँ। गीत में एक ही क्षण का लेखा होता है, इसलिए पूरा गीत एक ही बार में लिख देती हूँ। जब कभी अधिक कार्यवश उसे बीच में छोड़ना पड़ता है तो वह बेकार हो जाता है, क्योंकि फिर उसमें वह आनंद नहीं रहता। प्रबंध-काव्य में तो ऐसा चल सकता है, परंतु गीतों में नहीं। सृजन मेरा ध्येय नहीं और न मैं चाहती हूँ कि मेरा नाम हो। मुझे तो इससे कोई ममता भी नहीं। प्रधान काम तो जनहित का है और उसी में मेरा जी अधिक रमता है।''

सुदर्शन—इनका पूरा नाम पं. बदरीनाथ भट्ट था। ये सुदर्शन उपनाम से लिखते थे। मुंशी प्रेमचंद की भाँति ये भी उर्दू में लिखते थे। बाद में हिंदी कथा-साहित्य के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए और हिंदी पाठकों ने पढ़ा। उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके 'अमर अभिलाषा', 'भागवंती' आदि उपन्यास अत्यंत लोकप्रिय हुए हैं। सृजन के पूर्व और सृजन के बाद की उनकी क्या मन:स्थिति थी, देखिए उन्हीं के शब्दों में—

''अर्ज (urge) आती है और परेशानी बढ़ती है। कुछ खटपट-सी मचती है। क्या चीज है, इसे जानने की बेचैनी होती है। कुछ अच्छा नहीं लगता। लिखते समय प्रसन्नता होती है। लिखने के आठ-दस दिन बाद असंतोष होता है।

''मेरे लेखन का समय दो-ढाई बजे दिन का होता है। अकसर घर से बाहर चला जाता हूँ। अर्ज (urge) आते ही एकदम लिख डालता हूँ। एक बार मैं बनारस में ठहरा था। सुबह के ८ बजे थे। मैं नहाने जा रहा था। सामने सड़क पर एक ताँगा और साइकिल में टक्कर हो गई। एकदम प्लाट सूझा। मैं नहाने न गया। बीच से लौट आया। कमरा बंद कर लिया। तब ९-९:३० बजे थे। लिखना शुरू किया और शाम के ५ बजे तक लिखता रहा। यह कहानी 'घोर पाप' थी। यह सन् १९२५ की बात है।

''कहानी को शुरू करना मुश्किल होता है, मुश्किल क्या, एक समस्या होती है—कैसे शुरू किया जाए? शुरू होने पर कहानी अपने आप चलती रहती है। खत्म होना उसका काम है। प्लाट जो सोचता हूँ, बीच में ही बदल जाता है। कई प्लाट वर्षों से दिमाग में हैं, पर उनके लिए अर्ज (urge) (प्रेरणा/ललक) नहीं आई। फिल्म-स्टोरी छोड़कर मैंने कोई कहानी पूर्व-संयोजित (Preplanned) नहीं लिखी। कहानी में थीम शुरू की रहती है, केवल उसका रूप बदल जाता है।''

बाबू गुलाबराय ने उत्तर द्विवेदी युग में समालोचना, निबंध, दर्शन-साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने 'नव रस', काव्य विमर्श नाट्य विमर्श, काव्य के रूप, सिद्धांत और अध्ययन, मेरी असफलताएँ ठुलुआ कल्ब, जीवन रश्मियाँ, कुछ उथले कुछ गहरे व तर्क-शास्त्र, कर्तव्य-शास्त्र जैसे अनेक ग्रंथ लिखे हैं। बाबूजी ने अपनी पुस्तक 'मेरी असफलता' में लिखा है—''मैं लिखता तो बिना विचारे ही हूँ, कभी-कभी पछताना भी पड़ता है, लेकिन बहुत कम। लेख के प्रारंभ में थोड़ा अवश्य परिश्रम कर लेता हूँ। बिना तीन-चार कागजों का बलिदान दिए किसी सफल लेख का श्रीगणेश नहीं होता। मेरे लेख में काट-छाँट और घटा-बढ़ी भी होती है। बीच में वे ऐरो (Arrow) लगाकर जोड़ा भी जाता है; इस कारण अक्षर-ब्रह्म को उँगलियों पर नचाने वाले कंपोजीटर लोग मेरे लेखों से बहुत परेशान रहते हैं।''

बाबूजी लेखन का कार्य घर में कभी मेज-कुरसी पर बैठकर करते थे तो कभी अपने पलंग पर। लिखने का समय कोई निश्चित नहीं होता था। वे कभी सुबह के समय तो कभी दोपहर में। बाबूजी लेख लिखने के लिए कागज के साईज की चिंता नहीं करते थे; परंतु फुलस्केप साइज के पेपर पर लिखना अधिक पसंद करते थे। कभी बच्चों के स्कूल की कॉपियों के पन्ने हों, विज्ञप्तियों के खाली पृष्ठ हों या लिफाफे, वे इन पर भी लिखते थे। कागज सफेद हो, बादामी हो या लाइनदार, उसकी चिंता लिखने के लिए नहीं की। लिखने के लिए दवात-कलम, पेंसिल, फाउंटेन पेन, जो मिल जाए, उससे लिखने बैठ जाते थे। कभी-कभी लकड़ी में निब बाँधकर या बच्चों की सरकंडे की कलम से भी लिखते थे।

बाबूजी ने लिखा है 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठों में'—''मैं उन लोगों में से हूँ, जो अपने निजी निबंधों के लिए बिना कुछ पढ़े नहीं लिख सकता। वास्तव में मेरे लेखन में एक-तिहाई दूसरे से पढ़ा होता है। एक बटा छह उसके आधार से स्वयं प्रकाशित और ध्वनित विचार होते हैं, एक बटा छह सप्रयत्न सींचे हुए विचार होते हैं और एक-तिहाई मलाई के लड्डू की बर्फी बना चोरी छिपाने वाली अभिव्यक्ति की कला

रहती है।''

बाबूजी ने डॉ. पद्म सिंह शर्मा कमलेश को दिए गए साक्षात्कार में कहा था, ''लिखना ही मेरा मुख्य व्यवसाय है। मैं इस कार्य में पर्याप्त सावधानी से काम लेता हूँ। मेरा विश्वास है कि जब तक अच्छा, चटपटा आरंभ न हो तब तक लेख शुरू ही नहीं करना चाहिए। लिखने से पूर्व कभी-कभी मैं प्रारंभिक एक-दो अनुच्छेदों का मानसिक प्रारूप तैयार कर लेता हूँ। जब तक किसी विषय से प्रभावित नहीं होता, तब तक मैं उस विषय पर लेखनी नहीं उठाता। मैं विद्यार्थियों के हित को ध्यान में रखकर लिखता हूँ और इससे मुझे प्रसन्नता होता है। इसीलिए मेरी रचनाएँ 'अर्थकृते' होते हुए भी 'स्वांत: सुखाय' का रूप धारण कर लेती हैं। जब मैं किसी विषय से प्रभावित हो जाता हूँ और मेरे हृदय में लेखन-रस उत्पन्न हो जाता है, तब घर का शोरगुल, बच्चों का ऊधम और जीवन की समस्याएँ उसमें बाधा नहीं डालतीं।''

हिंदी समालोचना को प्रगतिशील विचारधारा की ओर उन्मुख करने में डॉ. रामविलास शर्माजी का नाम सर्वप्रमुख है। इनकी आलोचना बड़ी प्रखर और मौलिक सूझबूझ वाली होती है। 'प्रेमचंद और उनका युग', 'भारतेंदु हरिश्चंद्र', 'भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा', 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना', 'निराला की साहित्य साधना' (तीन भाग), 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नव-जागरण', 'भाषा और समाज' इनकी महत्त्वपूर्ण समीक्षा पुस्तकें हैं।

डॉ. रामविलास शर्माजी सृजन पर मन:स्थिति के बारे में कहते हैं, ''लिखने से पहले सोचना आवश्यक होता है। जिस विषय पर मुझे लिखना होता है, उस पर रात के वक्त मैं काफी देर तक सोचता रहता हूँ। यह काम विषय और समस्या के अनुसार कभी दो-चार दिन में होता है, कभी दो-चार हफ्तों में और कभी दो-चार महीनों में। रात्रि की शांति में जब सब लोग सो जाते हैं, तब छत पर टहलते हुए तरह-तरह की समस्याओं पर विचार करने में मुझे काफी आनंद आता है। सवेरे उठकर घूमकर लौटने तथा अन्य क्रियाएँ समाप्त करने के बाद जब लिखना होता है, लिखने बैठ जाता हूँ। लिखते समय मुझे सबसे अधिक भद्र मित्रों का लाभ होता है। इसलिए जब वे आ जाते हैं तो कहने पर भी जल्दी उठने का नाम नहीं लेते। इसके लिए मैंने 'अतिथि' शीर्षक एक लेख लिखा था और उसे 'रानी' में छपाया था तथा असमय आनेवाले मित्रों को उसे दिखा देता था। नतीजा यह हुआ कि कुछ मित्र उस लेख को देखने के बहाने आने लगे, तब मैंने उसे बंद कर दिया।''

''लिखने के विषय में एक बार सुभद्राकुमारी चौहान से बात हो रही थी। उन्होंने बताया कि चिकना कागज और सुंदर फाउंटेन पेन कविता लिखने के लिए जरूरी है और इसके बिना उन्हें लिखने में विशेष उत्साह नहीं होता। यह सुनकर कि मेरे पास चिकने कागज का अभाव है तो कविता लिखने के लिए उन्होंने मुझे सुंदर सजिल्द कॉपी भेंट की। और हुआ यह कि मैं एक भी कविता न लिख सका। फाउंटेन पेन से लिखने में मुझे दिक्कत होती है। कॉपी साइज के कागज पर लिखने से भी जी ऊब जाता है। कलम-दवात और फुलस्केप साइज का कागज लिखने में मदद करते हैं। शायद इसका कारण यह है कि कॉपी और फाउंटेन पेन देखकर मुझे हमेशा क्लासरूम की याद आ जाती है।''

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने 'हृदय की प्यास', 'हृदय की परख', 'गोली', 'सोमनाथ', 'वैशाली की नगरवधू', 'धर्मपुत्र', 'खग्रास', 'वयं रक्षाम' 'आत्मदाह', मंदिर की नर्तकी आदि अनेक उपन्यास और 'अक्षत', जरकण, 'सिंहगढ़', 'विजय' आदि कहानी-संग्रह की रचना की। उन्होंने ८५ के लगभग ग्रंथ, २५० के लगभग कहानियाँ तथा एकांकी तथा १० हजार पृष्ठ का फुटकर साहित्य लिखा। अपने लिखने के ढंग के बारे में वे कहते हैं, ''वास्तव में इसका कोई नियम नहीं है। कभी-कभी तो मैं हफ्तों, दिन-रात सोता रहता हूँ। और कभी लिखने में दिन-रात कब व्यतीत हुए, इसका ज्ञान नहीं रहता। ८-८ दिन तक अपने कमरे से बाहर तक न निकलना साधारण घटनाएँ हैं। लोगों से मिलना-जुलना मुझे पसंद नहीं। उनकी बातों से मैं तुरंत ऊब जाता हूँ। परंतु साधारणतया मैं रात को २ से ५ बजे तक नियमित रूप से लिखता हूँ। लिखते समय मैं केवल लेखक ही नहीं रहता, बल्कि अपनी-अपनी सृष्टि का दृष्टा भी रहता हूँ। भावुकता के नाजुक प्रसंगों पर कभी-कभी मेरी हालत ऐसे खराब हो जाती है कि मैं कई दिनों तक किसी से बात करने के योग्य भी नहीं रहता। लिखने से पहले कोई तैयारी नहीं करता, खासकर कथा-साहित्य की रचना में।

''आजकल एक सस्ता कलम काम में ला रहा हूँ, जिसका निब हर महीने घिस जाता है तो फिर नया बदल देता हूँ। कलम-घिसाई जो ठहरी।

''जब नुस्खे लिखता था और बड़े-बड़े हिज़ हाइनेस अर्दली में खड़े साँस रोककर मेरे एक-एक वाक्य को ब्रह्म-वाक्य की भाँति समझते थे। तब सोने की कलम से लिखता था और सोना बरसता था। परंतु अब क्या? साहित्यिक और सोने की रास तो एक है, पर है—जन्म का बैर।''

मैंने यहाँ केवल सात सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के बारे में जो कुछ लिखा है, वह सब उन्हीं द्वारा कही बाते हैं, जो उन्होंने डॉ. पद्मसिंह शर्माजी को इंटरव्यू के समय बताई थीं। अंत में यहाँ मैं एक रोचक संस्मरण डॉ. पद्मसिंह शर्मा कमलेशजी के संबंध में दे रहा हूँ, जो बाबू गुलाबरायजी ने अपनी पुस्तक 'मेरी असफलताएँ' में 'मेरी दैनिकी का एक पृष्ठ' में लिखा है—''बच्चों को मैं पढ़ाता बहुत कम हूँ। यहाँ तक कि मेर बच्चे भी मुझ पर इस बात का व्यंग्य करने लगते हैं। मेरे एक शिष्य (डॉ. पद्मसिंह शर्मा कमलेश) प्रवर ने किसी प्रसंग से कहा कि हम तो आपके बच्चे हैं। आपका आशीर्वाद चाहते हैं। मेरे कनिष्ठ पुत्र विनोद ने, जिसकी उम्र प्राय: बारह साल की है, तुरंत उत्तर दिया—'आप बाबूजी के बच्चे बनेंगे तो वे आपको पढ़ाना छोड़ देंगे, क्योंकि वे बच्चों को नहीं पढ़ाते।' डॉ. पद्मसिंह शर्मा कमलेशजी मेरे पिताजी के प्रिय शिष्यों में से एक थे। मैं उन्हें बड़े भाई साहब के समान सम्मान देता था।''

ए-३, ओल्ड स्टाफ कॉलोनी,
जिंदल स्टेनलैस लि.
ओ.पी. जिंदल मार्ग, हिसार
दूरभाष : ९४१६९९५४२२

कालचक्र का घूमे पहिया

● कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

सुपरिचित कवि, गीतकार एवं समीक्षक। 'फिर भी शेष रह गया', 'बतियाती भोर' (गीत-संग्रह); 'गीत खुशी के गाओ तुम' (बालगीत-संग्रह) के अलावा अब तक लगभग ७ हजार रचनाएँ प्रकाशित। काव्य शिरोमणि, काव्यश्री, साहित्यश्री, गीत शिरोमणि, तुलसी सम्मान, हिंदी सम्राट् सहित दर्जनभर सम्मान प्राप्त। महाराष्ट्र सरकार द्वारा दसवीं के पाठ्यक्रम में रचनाएँ शामिल।

: एक :

कब तक और मौन साधोगे, साधक शब्दों में बोलो,
आखर-आखर किए इकट्ठे, इनकी गठरी अब खोलो।
सुर व्यंजन के तालमेल का
अद्भुत संगम कर डाला,
शब्द-शब्द इस तरह मिल गया
ज्यों दिन-रात चले माला।

होती नित अनवरत अर्चना, मोती-मणियों को रोलो,
कब तक और मौन साधोगे, साधक शब्दों में बोलो।
दूर-सुदूर करी यात्राएँ
भेद नहीं फिर भी जाना,
जीवन मोद-प्रमोद बिताया
मिला अयाचक परवाना।

सुध-बुध विचल गई फिर सारी, बँधी हाथ मुट्ठी खोलो,
कब तक और मौन साधोगे, साधक शब्दों में बोलो।
भावशून्य आखर धुँधुवाते
आहुति पर आहुति डाली,
समिधा बने शब्द अंतस के
सबके सब खाली-खाली।
अवसर मिला 'अचूक' तुझे जो, इधर-उधर क्योंकर डोलो,
कब तक और मौन साधोगे, साधक शब्दों में बोलो।

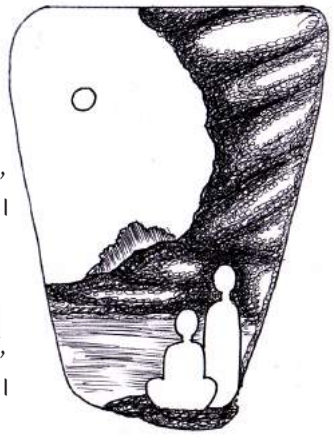

: दो :

यह संसार अपरचित सारा, किस-किस से परिचय करना,
पलभर के हैं संगी-साथी, सोच-समझ अब तय करना।
घूम रहे सिर लादे गठरी
भले-बुरे सब करमों की,
चारों ओर बज रही तूती
भाँति-भाँति के धरमों की।
बजे सदा बेसुरी बाँसुरी, किसको किसका भय करना,
पलभर के हैं संगी-साथी, सोच-समझ अब तय करना।

कहता है तू सबकुछ मेरा,
वह बोले है गद्दारी,
कालचक्र का घूमे पहिया
चल करने की तैयारी।

निश्चय यह अटूट अलबेला, इसमें मत संशय करना,
पलभर के हैं संगी-साथी, सोच-समझ अब तय करना।
पूजा-अर्चन करता किसकी
पता ठिकाना भूल गया,
चतुराई के चक्कर में आ
ब्याज गया भी मूल गया।

मन यदि जीत सके सच बाजी, बस यह खुद निश्चय करना,
पलभर के हैं संगी-साथी, सोच-समझ अब तय करना।
अजब खेल का खेलन हारा
खेल रहा होशियारी से,
प्यास बुझेगी जल मीठे से
और नहीं जल खारी से।

आ 'अचूक' सद्गुरु शरण में, सदा-सर्वदा जय करना,
पलभर के हैं संगी-साथी, सोच-समझ अब तय करना।

३८-ए, विजय नगर, करतारपुरा,
जयपुर-३०२००६
दूरभाष : ०९९८३८११५०६

आलेख

ग्रामोदय : स्वप्न से संकल्प तक

● वेदप्रकाश

किसी भी राष्ट्र की सबसे छोटी और महत्त्वपूर्ण इकाई गाँव है। फिर भारतवर्ष को तो गाँवों का देश कहा गया है। इसलिए सशक्त राष्ट्र की संकल्पना ग्राम विकास के बिना अधूरी है। आज के भूमंडलीकरण के युग में गाँव धीरे-धीरे हाशिए पर पहुँच गए हैं। गांधीजी ने भी 'मेरे सपनों का भारत' की संकल्पना में 'गाँवों की ओर', 'ग्राम स्वराज्य', 'पंचायत राज', 'ग्रामोद्योग' तथा 'ग्राम-प्रदर्शनियाँ' आदि के माध्यम से सशक्त तथा स्वावलंबी गाँव की बात कही थी। अपने विभिन्न लेखों तथा भाषणों में वे इस विषय पर स्पष्टता से तथा जोर देकर कहते हैं, ''मेरा विश्वास है और मैंने इस बात को असंख्य बार दुहराया है कि भारत अपने चंद शहरों में नहीं, बल्कि सात लाख गाँवों में बसा हुआ है···अधिकांश आबादी लगभग भुखमरी की हालत में रहती है···हमें तो अपना ध्यान गाँवों की ओर लगाना चाहिए···हमें आदर्श ग्रामवासी बनना है···लियोनेल कर्टिस ने हमारे गाँवों का वर्णन करते हुए उन्हें 'घूरे के ढेर' कहा है। हमें उन्हें आदर्श बस्तियों में बदलना है। ग्राम बस्तियों का पुनरुत्थान होना चाहिए। हमें गाँवों को अपने चंगुल में जकड़कर रखनेवाली जिस त्रिविध बीमारी का इलाज करना है, वह इस प्रकार है—(१) सार्वजनिक स्वच्छता की कमी, (२) पर्याप्त और पोषक आहार की कमी, (३) ग्रामवासियों की जड़ता।···ग्राम स्वराज की मेरी कल्पना यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा, जो अपनी अहम जरूरतों के लिए अपने पड़ोसी पर भी निर्भर नहीं होगा।'' स्पष्टत: गांधीजी के सपनों का गाँव विविध प्रकार की मूलभूत व्यवस्थाओं तथा सुविधाओं से युक्त होगा। 'मेरे सपनों का भारत' नामक पुस्तक में विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से लगभग ३० पृष्ठों में ग्राम-विकास की संकल्पना पर प्रकाश डाला गया है। तटस्थता से विचार करने पर स्पष्ट होता है कि जिस 'भारत का तथा भारत के गाँवों का स्वप्न गांधीजी ने देखा था, वह ७० वर्षों से विखंडित ही हुआ है। राजनीतिक नारेबाजी तो खूब हुई, किंतु जर्जर हालत में असाध्य रोगी से पड़े गाँवों की कराहट तथाकथित गांधीवादी नेताओं के कानों में नहीं पड़ी, शासन व्यवस्थाएँ एक 'सुदृढ़ भ्रष्टतंत्र' विकसित करने में ही संलग्न रही, फिर ग्राम-विकास की संकल्पना कैसे साकार होती?

प्रधानमंत्री श्री मोदीजी गांधीजी को स्मरण करते हैं, उनकी खादी की संकल्पना, गरीब की चिंता, किसान की चिंता तथा स्वच्छता आदि के स्वप्नों को पुन: स्मरण करते हैं। 'गांधीजी के सपनों का भारत' १५ अगस्त, २०१४ के उनके लाल किले के पहले भाषण से ही शुरू हो गया है। 'ग्राम-विकास' का गांधीजी का पूरा स्वप्न 'सांसद आदर्श ग्राम योजना' में पूर्णत: निहित है—'सांसद अदर्श ग्राम योजना', ''मैं सांसदों से आग्रह करता हूँ कि वे अपने इलाके में ३-५ हजार की आबादी का कोई भी गाँव तय कर लें और कुछ पैरामीटर तय हों···हर सांसद २०१६ तक अपने इलाके में एक गाँव को आदर्श गाँव बनाएँ···देश बनाना है तो गाँव से शुरू करें।'' प्रधानमंत्रीजी 'मन की बात' के ३ अक्तूबर, २०१४ के पहले ही प्रसारण में गांधीजी को स्मरण करते हैं—''कल २ अक्तूबर महात्मा गांधीजी की जन्म जयंती पर 'स्वच्छ भारत' का अभियान सवा सौ करोड़ देशवासियों ने आरंभ किया है।''

सुपरिचित लेखक। अब तक चार पुस्तकें तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध लेख प्रकाशित। मध्यकालीन साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में विशिष्ट अभिरुचि। संप्रति हिंदी विभाग, हंसराज महाविद्यालय दिल्ली में असिस्टेंड प्रोफेसर।

गांधीजी तथा मोदीजी दोनों ही ऐसे जन-नायक कहे जा सकते हैं, जिनका भरोसा 'लोक' से शक्ति पाता है। क्योंकि दोनों ही अनेक भ्रमणों से उस भारत की समझ अर्जित करते हैं, जो गाँवों में बसता है। इसलिए इनके भारत विषयक 'स्वप्न और संकल्प' 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' से नितांत भिन्न हैं। ग्रामीण जीवन के दो महत्त्वपूर्ण आधार हैं—(१) कृषि (२) पशुपालन। गांधीजी भी इनपर विस्तार से चर्चा करते हैं और मोदीजी भी।

३१ मई, २०१५ के 'मन की बात' में वे कहते हैं, ''पशुपालन भारत के ग्रामीण जीवन का परंपरागत काम है और कृषि में एक प्रकार से सहायक होनेवाला क्षेत्र है···भारत इसमें बहुत पीछे है···परंपरागत रूप से तो हम बहुत कुछ करते हैं, लेकिन वैज्ञानिक तौर-तरीकों से आगे बढ़ना जरूरी है और तभी जाकर के कृषि के साथ पशुपालन भी आर्थिक रूप से हमें मजबूती दे सकता है, किसान को मजबूती दे सकता है, पशुपालन को जमबूती दे सकता है।''

'आदर्श गाँव' का स्वप्न गांधीजी भी देखते हैं और मोदीजी भी। १६ जनवरी, १९३७ के 'हरिजन सेवक' में गांधीजी लिखते हैं—''आदर्श भारतीय गाँव इस तरह बसाया और बनाया जाना चाहिए, जिससे वह संपूर्णतया निरोग हो सके, मकानों में काफी प्रकाश और वायु आ-जा सके। आगे-पीछे इतना बड़ा आँगन हो, जिसमें गृहस्थ अपने लिए साग-सब्जी लगा सकें और अपने पशुओं को रख सकें।···जहाँ तक हो सके धूल न हो,···जरूरत के अनुसार कुएँ हों, गोचर भूमि हो, प्राथमिक और माध्यमिक शालाएँ हों, एक ग्राम पंचायत भी हो···एक आदर्श गाँव की मेरी अपनी यह कल्पना है।''

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी द्वारा संकल्पित 'सांसद आदर्श ग्राम योजना' में भी बुनियादी सुविधाओं में सुधार, आजीविका के बेहतर अवसर, असमानताओं को कम करना तथा व्यापक सामाजिक गतिशीलता

आदि बिंदु सम्मिलित हैं। वे २५ अक्तूबर, २०१५ के 'मन की बात' प्रसारण में उन्होंने झारखंड के कुंती जिले के परसी गाँव, मिजोरम के ख्वालाहीलंग गाँव तथा छत्तीसगढ़ के राजनंद के केश्ला आदि गाँवों का विस्तार से वर्णन किया, जहाँ 'आदर्श ग्राम योजना' का कार्य शुरू हो चुका है। उन्होंने बताया कि 'दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति कार्यक्रम', 'पंचायती राज दिवस' (२४ अप्रैल) तथा 'उज्ज्वला योजना' से घर-घर गैस कनेक्शन आदि से गाँव विकास की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

९ अगस्त, २०१७ 'भारत छोड़ो आंदोलन' की ७५वीं वर्षगाँठ के अवसर पर संसद् के विशेष सत्र में मोदीजी गांधीजी को पुन: स्मरण करते हैं—''महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज का सपना, कितना पीछे छूट गया है। क्या कारण है कि लोग गाँव छोड़ करके शहरों में बस गए। गाँव की उस चिंता को, गांधीजी का जो, उनके मन में जो गाँव था, क्या हम उसके भीतर उसे पुन: जीवित कर सकते हैं?

प्रधानमंत्रीजी के विभिन्न कार्य योजनाओं में राष्ट्र-निर्माण का संकल्प निहित है। वे जानते हैं कि ग्राम-विकास में ही राष्ट्र-निर्माण के सूत्र विद्यमान हैं। इसलिए वे 'ग्रामोदय से भारतोदय अभियान' (१४ से २४ अप्रैल) आरंभ करते हैं। २४ अप्रैल, २०१६ के मन की बात में वे कहते हैं, '''पंचायती राज दिवस' इस अभियान ने एक बहुत बड़ा जागरूकता का काम किया है। हिंदुस्तान के हर कोने में गाँव के स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाएँ कैसे मजबूत बनें? गाँव स्वयं आत्मनिर्भर कैसे बनें? ग्राम स्वयं अपने विकास की योजना कैसे बनाएँ? 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान सफलतापूर्वक कैसे चले। गाँवों में विविध कार्यक्रम १० दिन चलें, यह बहुत कम होता है। गाँवों में जो जागरूकता आई है, वही तो भारत-उदय की गारंटी है। भारत-उदय का आधार ग्राम-उदय ही है।''

स्पष्टत: गांधीजी के स्वप्नों से आरंभ हुई 'ग्राम-विकास' की संकल्पना आज मोदीजी के संकल्पों तथा योजनाओं में साकार हो रही है; क्योंकि 'ग्रामोदय से ही भारतोदय' का संकल्प सिद्धि को प्राप्त होगा।

२९८, पॉकेट-सी,
सरिता विहार, नई दिल्ली-११००७६

ए.टी.एम.

लघुकथा

• लता कादंबरी

''दो साल हो गए बिटिया को यहाँ काम करते हुए, अब तो काम भी सीख गई है, दुगनी तनख्वाह बढ़ाओ तब बिटिया को यहाँ छोड़ूँगी, नहीं तो मैं इसे लेकर चली।'' कहती हुई कामवाली बाई कार्टून देख रही अपनी बिटिया पूजा की ओर लपकी।

बाहर मालकिन और माँ की बातचीत से अनजान वह दस साल की अबोध माँ को देखकर बोली, ''हम न जाई, हमको यहाँ पर सब लोग बहुत चाहत है, कल गाड़ी से जाकर भाभी हमें नई गुलाबी फ्रॉक दिलवाएँगी।'' पर उस समय गुस्से के मारे उसकी माँ राजकुमारी को कुछ नहीं सूझ रहा था। कसकर उसका हाथ मरोड़कर बोली, ''चलती है कि नहीं हरामिन, मुँह लड़ाती है, मैंने तुझे जन्म दिया चंडिका और आज ये तेरी माँ बन बैठी।'' उसके मुँह पर दो थप्पड़ मारकर वह उसे तेजी से खींचकर अपने घर ले जा रही थी और उधर पूजा बिटिया का रो-रोकर बुरा हाल था। उस समय वो रो-रोकर चिल्ला रही थी, ''मालकिन बहुत अच्छी है, तुम्हारे घर में घमौरियाँ हैं, यहाँ ठंडे-ठंडे ए.सी. में अच्छा लागत है। ये लोग मुझे गाड़ी में घुमाते हैं, होटल में खाना खिलाते हैं, हमका यहाँ पर अच्छा लागत है, हम घर न जाईब।'' कहकर उसने माँ से अपना हाथ छुड़ाना चाहा।

उधर से मालकिन बोली, ''काहे मारती हो बिटिया को!'' कहकर उन्हें शांत करवाने की कोशिश कर रही थी। उसके चेहरे की खिसियाहट मुझे साफ नजर आ रही थी। पर पड़ोसियों के मामले में भला मैं होती कौन हूँ बालनेवाली?

फिर भी दिल न माना। मेरे घर के पास से जब पूजा की अम्माँ गुजरी तो उसको शांत करवाते हुए मैंने सुबह घटा सारा माजरा जानना चाहा, मेरी सहानुभूति पाकर वह फट पड़ी, ''देखो टप्पी की मम्मी, आप ही बताओ कि ढाई हजार रुपए में लौंडिया से चौबीस घंटे बेगार करवावत हैं और फिर गरीब के बच्चे को ए.सी., टी.वी., मोटरकार और होटल की गंदी लत लगवाकर बड़ी भली बनती हैं ये बँगलेवाली। (बिटिया के मुँह पर फिर से एक तमाचा मारते हुए) उस पर यह लौंडिया भी अब मेरा कहना नहीं मानती, जाने कौन सा जादू-टोना कर दिया है लौंडिया पर।'' इस प्रकार बोलती-बड़बड़ाती वह अपनी ही धुन में चली जा रही थी।

उस समय अपने बँगले के गेट पर खड़ी मैं सोच रही थी, 'आज नन्ही पूजा अपनी माँ को दुश्मन और मालकिन को अपनी माँ से बढ़कर मान रही है, पर वह अबोध इस दुनिया का कमीनापन क्या जाने? एक तरफ माँ-बाप उसे जन्म देकर वक्त से पहले ए.टी.एम. मशीन बना देना चाहते हैं, वही माँ-बाप से टूटी यह बच्ची मालकिन के मीठे जहर भरे चंगुल में समाती जा रही है। सच तो यह है कि उनमें से कोई भी उसकी शिक्षा की बात नहीं करता, जबकि इस उम्र के बच्चों के लिए हर जगह सरकार ने मुफ्त पढ़ाई की व्यवस्था कर रखी है।'

उस क्षण 'ऐसी बदकिस्मत नसीमन के लिए क्या रोएँ और क्या हँसे?' इस प्रकार सोचते हुए मैं गंभीर हो गई।

७/२०२ स्वरूप नगर
कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष : ७६०७३४५६७८

भय

मूल : **रेमन डेल वालेक्लेन**

अनुवाद : **भद्रसैन पुरी**

धीमी और भयावनी ठंडक जो मृत्यु का आगमन प्रतीत होती है—भय की वास्तविक ठंडक, मैंने एक ही बार महसूस की है। यह स्थिर भू-संपत्तियों के समय से कई वर्ष पहले की बात है जब फौजी सेवा द्वारा श्रेणी एवं पदवी पाई जाती थी।

मुझे अभी-अभी हथगोलामारों में अश्वारोही का कोर्डन दिया गया था। शाही संतरी का पद मेरी प्राथमिकता थी परंतु इसपर मेरी माँ को आपत्ति थी। अत: पारिवारिक परंपरा के अनुसार—मैं राजा के रेजिमेंट में गोलामार बन गया। मुझे याद नहीं कि यह कितने वर्ष पुरानी बात है परंतु मेरे होंठों पर रोएँ उग आए थे और आज मैं लगभग सफेद बालोंवाला आदमी हूँ।

रेजिमेंट में शामिल होने से पहले मेरी माँ मुझे अपना आशीर्वाद देना चाहती थी। वह भद्र महिला गाँव की सीमा पर एकांत में रह रही थी जहाँ हमारा पैतृक मकान था और उन दिनों मैं आज्ञाकारी और विनम्र था।

मेरे वहाँ पहुँचने पर दोपहर को उसने ब्रांडेसो प्राइयोर को बुलाया, ताकि परिवार के चर्च में वह मेरी स्वीकृति सुन सके। मेरी बहनें; मोरिया, इसाबिनें और मोरिया फरनेंडा, जो छोटी लड़कियाँ थीं, बाग में गुलाब चुनने गईं और इन फूलों से मेरी माँ ने वेदी के गुलदानों को भर दिया। फिर उसने अपनी प्रार्थना पुस्तिका को उसे देने के लिए कोमलता से कहा और मुझे अपने अंत:करण के परीक्षण के लिए उपदेश दिया।

''आसन पर जाओ, मेरे बेटे,'' उसने कहा, ''तुम्हारे लिए वह उत्तम स्थान है।''

किले का आसन चबूतरे के केंद्र में था जिसके साथ ही पुस्तकालय था; चर्च अँधेरे, नमी और प्रतिध्वनियों से भरा हुआ था। अप्रधान स्थान में इसबिग और फरनेंडा द्वारा ब्रांडागिन के लॉर्ड, वेडो उग्यार डे टोर जो एल. चियो (दि एम) के नाम से भी जाना जाता था और एल. बीजो (वृद्ध आदमी) को दी गई कवच संबंधी छवियाँ थीं। वह प्रसिद्ध शूरवीर वेदी की दाईं ओर दफनाया गया था; उसके ऊपर कवच पहने एक श्रेष्ठ पुरुष का बुत प्रार्थना की मुद्रा में झुका हुआ था। रत्न-जड़ित पवित्र लैंप अपनी मंद रोशनी के साथ प्लेटफार्म के सामने दिन-रात जलता रहता था। मुलम्मा चढ़े पवित्र फलों के गुच्छे अपने आपको भक्तों को पेश करते प्रतीत होते थे। संरक्षक सेंट धार्मिक पूरब का राजा था जो उन तीन बुद्धिमानों में से एक था जिन्होंने शिशु ईसा को लोबान दिया था। सोने से मढ़े किनारोंवाली उसकी पोशाक पूरब के चमत्कार के गहन तेज से जगमगा रही थी। चाँदी की जंजीर से लटकी लैंप की रोशनी भीरु पक्षी की तरह सेंट के कंधों पर जाने के लिए फड़फड़ा रही थी।

मेरी माँ की इच्छा थी कि उस दोपहर को वह अपने हाथों से फूलों की पिटारी एक भक्त की भेंट के रूप में सेंट के चरणों में रखे। जब यह हो गया तो वह मेरी बहनों के साथ वेदी के सामने झुकी। ऊपर से मैंने उसकी केवल मरमर की आवजा सुनी। उन्होंने ईव मेरियाज को टूटे शब्दों में दोहराया, परंतु जब उत्तर देने की बच्चों की बारी आई तो मैंने रस्म का एक शब्द सुना।

दोपहर शोकावस्था में गुजरती रही और प्रार्थनाएँ चर्च के मौन अँधेरे, खोखलेपन में शोकाकुल और प्रभावशाली ढंग से, उत्तेजना की प्रतिध्वनि की तरह खड़खड़ाती रहीं। मेरी आँखें भारी हो गईं। उनकी पोशाकें पादरी के लबादे की तरह सफेद थीं। मैं अपनी माँ का धुँधला साया देख सकता था जब वह प्रधान पादरी के स्थान पर प्रार्थना कर रही थी। उसके हाथों में एक खुली पुस्तक थी जिसको वह सिर झुकाकर पढ़ रही थी।

कुछ देर बाद, हवा ने ऊँची खिड़की के परदे को हिलाया तो मैंने अँधेरे आकाश में चाँद के गोलाकार को देखा जो जंगल और दलदल में पूजा करती हुई किसी देवी की तरह अलौकिक और पीला था।

मेरी माँ ने ठंडी साँस लेकर पुस्तक बंद कर दी और अपनी बेटियों को पुकारा। मैंने उन्हें प्रधान पादरी के स्थान से दो भूतों की तरह गुजरते देखा और अनुमान लगाया कि वे एक बार उसकी बगल में झुकेंगी। लैंप की रोशनी की दुर्बल किरणें उनके सुंदर हाथों पर पड़ रही थीं जब उन्होंने पुस्तक को खोल। पुस्तक पढ़ते समय उसकी धीमी और पवित्र आवाज मौन को भंग करने से डरती थी। लड़कियाँ सुन रही थीं और मैं धुँधलेपन में उनकी लटों को उनकी सफेद कमीजों पर और उसी ढंग से उनके चेहरों के दोनों तरफ फैले हुए देख रहा था जो उनपर दु:खदायी और ईसा जैसा भाव भेंट कर रही थीं।

मैं सो गया था लेकिन मेरी बहनों की चीखों ने एकाएक मुझे जगा दिया। मैंने देखा कि वे प्रधान पादरी के स्थान के मध्य में मेरी माँ से लिपट रही थीं। वे भय से चीख रही थीं। मेरी माँ ने उनके हाथ पकड़े और वहाँ से भाग गईं।

मैं जल्दी से नीचे आया। मैं उनका पीछा करना चाहता था, परंतु भय के कारण रुक गया। प्राचीन शूरवीर के बुत की हड्डियाँ खड़ाखड़ा रही थीं, जिसने हैरान कर दिया। चर्च मृत्यु की तरह मौन हो गया था और कोई भी खोखलेपन को, पत्थर के तकिए पर खोपड़ी के भयावने घुमाव को स्पष्टतया सुन सकता था। मुझपर ऐसा भय छा गया जिसका पहले कभी अनुभव नहीं हुआ था, परंतु मैं नहीं चाहता था कि मेरी माँ और बहनें मुझे कायर समझें, इसलिए मैं प्रधान पादरी के स्थान के मध्य,

आधे खुले दरवाजे पर नजर जमाए, निश्चल खड़ा रहा। छोटे लैंप की रोशनी लहक रही थी। ऊँची खिड़की का परदा पीछे की ओर उड़ा तो देखा कि चाँद के ऊपर से बादल गुजर रहे थे जो हमारे मर्त्य जीवन की तरह नजर आते थे और रह-रहकर छिप जाते थे।

एकाएक दूर से उत्तेजित कुत्तों का भौंकना और छोटे घुंघरुओं की झनक सुनाई दी। गिरजे से एक गंभीर उभरी आवाज उभरी—

''यहाँ काराबेल! यहाँ केपीटान!''

यह ब्रांडेसों का प्राइयोर था जो मेरी स्वीकृति प्राप्त करने आया था। फिर मैंने अपनी माँ की भयावह और कंपायमान आवाज सुनी तथा दूर भागते कुत्तों के पैरों की पटपटाहट को स्पष्टतया सुना। गिरजे की गंभीर आवाज गौरव के साथ जार्जियन गाने की तरह ऊँची हुई—

''अब हम देखेंगे कि यह क्या था—वस्तुत: कुछ भी अलौकिक नहीं। यहाँ काराबेल! यहाँ केपीटान!''

और ब्रांडेसो का प्राइयोर अपने भूरे कुत्ते के पीछे, चर्च के दरवाजे पर नजर आया।

''राजा के हथगोलामार, क्या हुआ?''

''श्रीमान् प्राइयोर, मैंने मकबरे में पिंजर को काँपते सुना।''

प्राइयोर धीरे से चर्च के पार हो गया। वह लंबा-चौड़ा गर्वीली आकृतिवाला था क्योंकि अपनी युवावस्था में वह भी राजा का हथगोलामार रहा था। वह अपने सफेद कपड़ों की ढीली तहों को उठाए बिना मेरे पास आया और अपना हाथ मेरे कंधे पर रखकर तथा मेरी आँखों में झाँकते हुए पवित्रता से बोला—

''परमात्मा करे कि ब्रांडेसो का प्राइयोर यह कहने में कभी योग्य न हो कि उसने राजा के हथगोलामार को काँपते देखा।''

उसने मेरे कंधों से हाथ नहीं हटाया और हम एक-दूसरे को चुपचाप देखते, स्थिर खड़े रहे। उसी क्षण हमने एक शूरवीर की खोपड़ी को मुड़ते सुना। प्राइयोर का हाथ नहीं काँपा। हमारे निकट कुत्तों के कान खड़े हो गए और उनकी गरदनों के बाल तन गए। हमने नए सिरे से खोपड़ी को पत्थर के तकिए पर घूमते सुना। प्राइयोर ने मुझे हिलाया और कहा, ''श्रीमान् हथगोलामार, हम देखना चाहते हैं कि यह पिशाच है या डायन।''

वह बुत के पास पहुँचा और पत्थर की चौरस पटिया में लगी तांबे की दो चूड़ियों को पकड़ा—पटिया, जिससे शरीर ढका हुआ था और जिसपर स्मृति लेख लिखा हुआ था। मैं काँपते हुए आगे बढ़ा। प्राइयोर ने बिना अपने होंठ खोले मेरी ओर देखा। मैंने एक चूड़ी में उसके हाथ के साथ अपना हाथ रखा और खींचा। हमने पत्थर को धीरे से उठाया। काला और घिसा छेद हमारे सामने था। मैं देख रहा था कि शुष्क और पीली खोपड़ी अब भी हिल रही थी। प्राइयोर ने अपना हाथ कब्र में डाला और भयावनी वस्तु को थाम लिया और फिर बिना कुछ कहे, मुझे दे दी। मैंने काँपते हुए उसे ले लिया। मैं प्रधान पादरी के स्थान के मध्य में खड़ा था और लैंप की रोशनी मेरे हाथों पर पड़ रही थी। जैसे ही मैंने देखा, भय ने मुझे जकड़ लिया और मैंने वेग से हिलकर खोपड़ी को गिरा दिया, क्योंकि उसके अंदर साँपों के बच्चे थे जो सी-सी की आवाज करके अपने आपको खोल रहे थे जब खोपड़ी सीढ़ियों पर लुढ़की। प्राइयोर ने कवचनुमा अपनी टोपी के नीचे से मुझे भयानक नजरों से देखा।

''श्रीमान् राजा के हथगोलामार, तुम्हारे लिए मोक्ष नहीं है। मैं कायरों को मुक्त नहीं करता।''

और वह अपनी पोशाक को समेटता हुआ चर्च से चला गया। ब्रांडेसो के, प्राइयोर के शब्द देर तक मेरे कानों में गूँजते रहे। मैं अब भी उन्हें सुन सकता हूँ। संभवत: उन्हीं शब्दों के बाद मैंने मृत्यु पर हँसना सीखा है जैसे सुंदर स्त्री पर हँसा जाता है!

('स्पेन की श्रेष्ठ कहानियाँ' पुस्तक से साभार)

अक्षर-अक्षर मधुक्षरा

कविता

• प्रियदर्शी दत्ता

सरस्वती वंदना

शंखधवल संकल्पना
देवी श्वेत-कमलासना
स्वर निर्झर
सुर सरित-धार
झंकृत उद्गीत वीणा।
शंखधवल संकल्पना, देवी।

हंसध्वनी मुखरित आवेश
मुकुलित उद्घोषणा
स्फुरित अखिल प्रज्ञा मूले,
तव ललित सृजन-तृष्णा।
शंखधवल संकल्पना, देवी।

अक्षर अक्षर मधुक्षरा
उपचित वाक्-वैखरी मोहना,
वीनापाणी वाणी-दात्री
प्रज्वलित परा-पश्यंति-मध्यमा
शंखधवल संकल्पना देवी।

स्वच्छ भारत

उनको छुपके नहीं था रहना
बिकना नहीं था नुमाइश में
उनको खिलना था धूप की तरह
बिना किसी के फरमाईश के।

उनके बागी हुए तेवर
बक्शे के बंधन को तोड़ दिया,
ईशा आर्ट कॉलेज से आ रही थी घर,
उसके सुंदर हाथों को भी छोड़ दिया।

एक-एक रंग लुढ़ककर गिरा,
रोने लगे सड़क पर, वापस नहीं जाना
बनना नहीं किसी कैनवसों की लाली,
उन्हें इस शहर को है जग मगाना।

पहले तो ईशा के ही छूट गए रंग,
सोचा अब कैसे होगा चित्रकार बनना,
पर फिर बदला उसने सोचने का ढंग,
तय किया रंगों के साथ है चलना।

ईशा ने अपने क्लासमेटों से मिलके
शुरू की एक अनोखी मुहिम,
धब्बेदार और गंदी दीवारों तक चलके
ब्रश से बनाएँगे उनको रंगीन।
दीवारों पर सूरज उगा,
दीप जले, और खिले फूल,
ईशा के हाथ अब गए थे खुल,
स्वच्छ ही नहीं केवल, सुंदर भी हो भारत,
ईशा ने बदली अपनी शहर की सूरत।

९१/ए द्वितीय तल, प्रतीक मार्किट,
मुनीरका, नई दिल्ली- ११००६७
दूरभाष : ९८९९१४६८४१

वो नन्हा फरिश्ता

● प्रेमपाल शर्मा

२५ मार्च, २०१७ : निशा का अवसान हो रहा है, प्रात: होने को है। यह वेला ऐसी कही गई है कि बीमार भी चैतन्य महसूस करता है, और फूल भी हँसने लगते हैं। पर मेरे घर को शोक की घोर अँधियारी ने घेर लिया है। मंद-मृदुल समीर भी तीर सा चुभ रहा है। पक्षियों का कलरव कर्णकटु हो गया है। इसी वेला में वह छत पर नित्य दैनिक क्रिया से निवृत्त होने के लिए जाया करता था। एक पल भी शांत न बैठनेवाला वह नन्हा फरिश्ता आज नि:चेष्ट पड़ा है। हमारे नकली रोने पर वह विह्वल-अबोध बालक सा उद्विग्न हो जाया करता था, आज पूरा घर दहाड़ें मारकर जार-जार रो रहा है, पर वह इन सबसे बेखबर चिरनिद्रा में सो रहा है। हमारे घर को खुशियों से भर देनेवाला वह फरिश्ता उन खुशियों को साथ ले अनंत की यात्रा पर निकल पड़ा है। हम उसे कहीं से लाए नहीं थे, किसी से माँगा भी नहीं था, ऊपरवाले ने भेजा था, अपने आप!

आज से कई साल पहले एक दबंग की दबंगई से हमारा जीवन नरक सा बनकर रह गया था। पूरे घर में श्मशान सी मुर्दनी छाई रहती। मेरे बच्चे घर में रहना ही नहीं चाहते थे। प्रात: ही घर से निकल जाते, इधर-उधर समय बिताते। गृहस्वामिनी भी रोते-धोते पूरा दिन दुश्चिंता में बिता देती। एक-दो मित्र और पिताजी के अलावा सांत्वना देनेवाला भी कोई नहीं था। यार-दोस्त, रिश्तेदार, यहाँ तक कि रक्त-संबंधों ने भी दूरी बना ली थी। हँसना-खिलखिलाना हम पूरी तरह भूल गए थे। जिंदगी को सब लोग बस जैसे-तैसे ढो रहे थे। पूरा घर गहरे अवसाद में जी भर रहा था। शायद ऊपरवाले से हमारा यह दु:ख देखा न गया और २०१५ की दीपावली की पूर्व संध्या पर मेरी बेटी रिचा की एक सखी एक गिफ्ट-बास्केट लेकर हमारे घर पधारी—देवदूत सी। गिफ्ट-बास्केट में से निकला एक नन्हा सा गोल-मटोल मखमली फरिश्ता—लेब्रा डॉगी। नाम बताया, 'रफ्तार'।

दो दिन तक मुझे इस नन्हे मेहमान की भनक न लगी। मेरे बच्चों ने इसे मुझसे छिपाकर रखने की हर कोशिश की, पर एक दिन उसका-मेरा आमना-सामना हो ही गया। मेरे बेटा-बेटी ने बहाना बनाया कि यह हमारा नहीं है। मैंने बच्चों को डाँटते हुए समझाया कि डॉगी पालने से आस-पड़ोस में झगड़े होते हैं, घर गंदा रहता है, और फिर यहाँ इनसानों को रहने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है, तो डॉगी कहाँ रहेगा? मेरी डाँट-फटकार और समझाइश सब बेकार गई, कारण—विरोध करने वाला मैं अकेला, बाकी सब उसके तरफदार! वह नन्हा फरिश्ता गैलरी में शौच-पेशाब करता, तो मेरे बच्चे गहरी नींद से भी उठकर तुरंत साफ-सफाई कर देते। पूरी-पूरी कोशिश करते कि मुझे चिल्लाने और शिकायत का कोई मौका न मिले। वह इतना छोटा था कि ठीक से कुछ भी ग्रहण नहीं कर पाता था, पतला करने पर बस सेरेलक ही चाट पाता था, पर रिचा और पीयूष उसकी ऐसी ममतामयी माँ बन गए कि कोई भी शिशु का पालन-पोषण करना इनसे सीख सकता है। अब श्मशान सरीखे इस घर में मानव-गतिविधियाँ होने लगीं, देखते-ही-देखते घर का माहौल बदल गया। बच्चे स्कूल-कॉलेज जाते तो उन्हें शीघ्रातिशीघ्र घर लौटने की जल्दी रहती। उस नन्हे फरिश्ते की तीमारदारी में श्रीमतीजी को समय का कुछ पता ही न चलता! घर में पसरी मायूसी भाग खड़ी हुई। घर के कोने-कोने में दुबकी पड़ी खुशियाँ बाहर निकल आईं। अब पूरे घर में केवल नन्हे रफ्तार की पुकार सुनाई देती। बच्चों के चेहरों पर आई खुशी ने मुझे बाध्य कर दिया कि मैं इस नन्हे फरिश्ते का विरोध न करूँ।

मैं नहीं जानता कि उसे कैसे पता चला कि घर का मालिक और उसका विरोध करनेवाला मैं ही हूँ। उसने सबसे पहले मुझे ही अपने मोह-पाश में बाँधा। दिनोदिन उसका यह मोह-पाश कसता चला गया। मैं कुरसी की अपेक्षा स्टूल पर बैठकर लिखा करता हूँ। सर्दी हो गरमी, वह मेरे पैरों में आकर बैठता। मैं अपना काम करता रहता, वह नीचे बैठा स्टूल की टाँगों पर अपने दाँतों की आजमाइश करता रहता। मेरे स्टूल पर उसके पैने दाँतों की छाप निशानी के तौर पर रह गई है। कभी मौज में आकर नीचे बराबर में रखी रैक में रखी फाइलों से कागज खींच लेता, मैं उसे मना करता, वह मान जाता। खैर, अब तो मुझे भी उससे लगाव हो गया था। जब बच्चे घर पर नहीं होते और रफ्तार शौच कर देता, तो मैं उठाकर फेंक दिया करता।

शायद इस नस्ल के डॉगी जन्मजात समझदार होते हैं या फिर

सुपरिचित लेखक-संपादक। बुलंदशहर (उ.प्र.) के मीरपुर-जरारा गाँव में जन्म। देसी चिकित्सा लेखन में विशेष दक्षता। 'जीवनोपयोगी जड़ी-बूटियाँ', 'स्वास्थ्य के रखवाले, शाक-सब्जी-मसाले', 'सचित्र जीवनोपयोगी पेड़-पौधे', 'घर का डॉक्टर', 'स्वस्थ कैसे रहें?', 'स्वदेशी चिकित्सा सार', 'शुद्ध अन्न, स्वस्थ तन' कृतियाँ चर्चित। पत्र-पत्रिकाओं में विविध लेख प्रकाशित। श्रीनाथद्वारा (राज.) की सुप्रसिद्ध संस्था 'साहित्य मंडल' द्वारा 'संपादक-रत्न' की मानद उपाधि। संप्रति 'सवेरा न्यूज' (साप्ताहिक) का संपादन एवं आयुर्वेद पर स्वतंत्र लेखन।

रफ्तार ही समझदार था। नन्हे रफ्तार के लिए अंदर के लिविंग-रूम के एक कोने में उसके रहने-सोने के लिए गद्दी लगा दी थी, वह रहता-सोता वहीं था, पर शौच और लघुशंका करने कमरे से बाहर गैलरी में ही जाता था। महीने भर बाद ही, सर्दियों में पीयूष तड़के ही उसे घुमाने के लिए सड़क पर ले जाने लगा तो वहाँ उसने रोज टहलने आनेवाले एक अंकलजी से दोस्ती गाँठ ली। वे अपना डॉगी छोड़ उसके साथ खेलने लग जाते। जो भी उसे देखता, बस प्यार करने लग जाता। वह था ही इतना भोला और मासूम। उसका चेहरा-मोहरा, चाल-ढाल सब चुंबकीय था। वह दूसरे डॉगियों की तरह टाँग उठाकर पेशाब नहीं करता था और न ही शौच। ठीक एक बालक की तरह पेशाब करता और शौच करते हुए ऊँ-ऊँ की आवाज निकालता। कुछ महीने बाद उसके दूध के दाँत गिरने लगे, हम सब बड़े हैरान थे, पहले कभी कुत्ते के दाँत गिरते हुए नहीं देखे थे। एक-दो दाँत तो मेरे छोटे बेटे ने अभी भी सहेजकर रखे हुए हैं। उसके नए दाँत आ गए थे। कठोर चीजों पर वह उनकी आजमाइश करता रहता तो उसे बनावटी हड्डी लाकर दे दी गई। कई बार वह हड्डी छिपाकर भूल जाता और फिर दूसरी हड्डी ले लेता।

छोटे बच्चों से उसे बड़ा लगाव था। बच्चे भी उसके साथ खेलना चाहते। वह जब घर के अंदर होता तो मोहल्ले के बच्चे हमारे दरवाजे पर आकर उसे 'बाबू-बाबू' और 'रफ्तार-रफ्तार' कहकर पुकारते। वह बाहर निकल उनके साथ खेलने के लिए मचलता, पर हम लोग उसे बाहर जाने न देते थे। कारण—वह बच्चों के पीछे दौड़ता, उन्हें चाटकर अपना प्यार जताता तो बच्चे चीख-पुकार मचाने लगते। किसी का बच्चा डर न जाए या उसके दाँत न लग जाएँ, हमें इसी का डर लगा रहता। हालाँकि वह काटता बिल्कुल नहीं था। हमारा पूरा हाथ या पैर का पंजा अपने मुँह में ले लेता और ताज्जुब! अपना जबड़ा उतना ही दबाता कि दाँत न गढ़ें। उसकी समझदारी पर बड़ी हैरानी होती। छोटा बेटा पीयूष प्रात: उसे पार्क में घुमाने ले जाता। वहाँ तो उसने अपने चाहने वाले और दोस्तों की पूरी एक जमात खड़ी कर ली थी। बेटे के दोस्त उसके पक्के दोस्त बन गए थे। कई बार रफ्तार ऊपर छत पर होता और बेटे का कोई दोस्त हमारे घर के आगे आकर पीयूष को पुकारता तो वह उसकी आवाज तुरत पहचान जाता। बिना भौके ही छत से सीढ़ियों पर ऐसी दौड़ लगाता कि पल भर में नीचे आकर उनके साथ मस्ती करने लगता। मस्ती और ऊधम का वह बड़ा शौकीन था। आधुनिक हीरो की भाँति चश्मा लगाकर उसने बेटे के सब दोस्तों के साथ अलग-अलग पोज में कितने ही फोटो खिंचवा रखे हैं—किसी में जीभ निकाले, किसी में होंठ दबाए। उसे जैसा बोला जाता, वह वैसा ही स्टैच्यू सा बन जाता।

स्कूटी पर बैठकर घूमने का उसे बड़ा चाव था। पीयूष जब कॉलेज या अन्यत्र कहीं से घर लौटता तो उसकी स्कूटी की आवाज वह तुरत पहचान जाता। जैसे ही दरवाजा खोला जाता, वह फौरन बाहर गली में निकल स्कूटी पर बैठ जाता और अंदर आकर खड़ी करने से पहले ही कूद जाता। स्कूटी किसी की भी हो, उसे तो चड्डू खाने से मतलब। हमारे सामनेवाले पड़ोसी वासू के पापा सुबह अपनी स्कूटी लेकर ड्यूटी के लिए निकलते और हमारा दरवाजा खुला होता तो वह जिद्दी बालक की तरह दौड़कर झट से उनकी स्कूटी पर बैठ जाता, और फिर वे बेचारे उसे आगे सड़क या चौक तक घुमाकर लाते, तब ही वह स्कूटी पर से उतरता। पार्क में घूमने जाते हुए अपनी स्कूटी पर इस शान से बैठता कि गरदन टेढ़ी करके लोगों को देखता जाता। तब वह सबके आकर्षण का केंद्र बन जाता। हमारी श्रीमतीजी रात्रि में मिर्च जलाकर उसकी नजर जरूर उतार देतीं। भला अपने सबसे प्यारे बच्चे पर पड़ने वाली कुदृष्टि को वे कैसे बरदाश्त करतीं! जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ तो शौच के लिए छत पर जाने लगा। जितनी बार भी शौच लगती, वह छत पर ही जाता था। आस-पड़ोस या गली में उसने कभी शौच नहीं की। जब उसे शौच या पेशाब लगता तो ऊँ-ऊँ कर मेरी कोहनी पकड़कर खींचता। मैं उसे शांत रहने के लिए कहता तो वह कुछ पल रुककर फिर मेरा ध्यान अपनी ओर खींचता, तब मैं समझ जाता कि रफ्तार को शौच लगी है। मैं कलम रख इतना भर कहता, 'चलो भाई!' और वह तब तक चार सीढ़ियाँ चढ़ जाता और फिर पीछे मुड़कर देखता कि मैं आ भी रहा हूँ कि नहीं?

एक ब्राह्मण परिवार में पला-बड़ा होने के कारण वह जीवन-पर्यंत शुद्ध शाकाहारी रहा। हम जो भी खाते, सब वह बड़े चाव से खा लेता, कभी नखरे नहीं करता था। रोटी, चावल, खिचड़ी, दाल, सब्जी, दूध, लस्सी—सबकुछ रुचि के साथ खाता। गृहस्वामिनी उसे दिन में तीन बार भोजन करातीं। जब उसे भूख लगती तो रसोई के दरवाजे पर या श्रीमतीजी के पैरों में आकर बैठ जाता। यदि वह छत पर होता या दूसरे कमरे में, 'रफ्तार, रोटी खा ले', श्रीमतीजी के इतना पुकारने पर फौरन हाजिर हो जाता। पूरी साबुत रोटी सामने रख देने पर उसे सूँघता भी नहीं था, तोड़कर दूध-लस्सी या सब्जी में मिलाकर उसके बरतन में रख देने पर खा लेता। पीयूष तो उसे अपने सामने बिठा छोटे बच्चे की मानिंद रोटी का एक-एक टुकड़ा सब्जी के साथ अपने हाथ से खिलाता, जैसे कोई माँ अपने छोटे बच्चे को खाना खिलाती है। इसमें वह बड़ा सुख मानता था। खाना खाने के बाद उससे कहते, 'रफ्तार, जाओ पानी पी लो,' तो वह अपने बरतन में पानी पी लेता। कभी-कभी रसोईघर से कच्चा आलू उसके हाथ लग जाता तो पहले बॉल की तरह उससे खेलता, फिर उसे कुतर-कुतरकर खा जाता। खीरा, गाजर भी बड़े शौक से खाता, लेकिन आम, चीकू और पपीते का वह बड़ा शौकीन था। जब मैं सायं को बेड पर बैठा आम खा रहा होता और वह नीचे बैठा देख रहा होता तो उसके मुँह के दोनों ओर से बेतहाशा लार टपकने लगती, वह आम देने के लिए कूँ-कूँ कर बार-बार मुझे ध्यान दिलाता, पर जब धैर्य चुक जाता तो दो पैरों पर अकड़ू बालक-सा खड़ा होकर माँगता। मेरे आम देने पर वह आम खाने लगता तो उसके मुँह में से आम फिसल जाता, वह बड़ी फुरती से उसे अपने पंजों में दबा उस पर पिल पड़ता और फिर छिलके-गुठली तक का नाम-निशान मिटा देता, लेकिन पूरा फर्श चिपचिपा हो जाता तो फिर से पोंछा लगाना पड़ता।

उसके पपीता प्रेम की कहानी भी बड़ी मजेदार है। एक बार रफ्तार को जबरदस्त पीलिया हो गया। कुछ भी खा नहीं रहा था। डॉक्टर ने

दवाई दी, पथ्य में पपीता तथा आइसक्रीम खिलाने की हिदायत दी। सुबह-शाम एक-एक रसगुल्ला भी खिलाना था, जिससे उसके रक्त में प्लेटलेट्स कम न हो जाएँ। पपीता व आइसक्रीम बिना हील-हुज्जत के खा लेता। कई दिनों तक उसका यही आहार रहा, फिर खीरा भी देने लगे, पर पपीते का स्वाद उसकी जुबान पर ऐसा चढ़ा कि बड़ा बेटा अंकुर अकसर अपने लिए पपीता लाया करता है। जब वह बाइक खड़ी कर पपीते की पोलीथीन लटकाए घर में प्रवेश करता, तो रफ्तार उसके हाथ में पपीता देखते ही खुशी के मारे उछलने-कूदने लगता और नदीदे बालक की तरह टेबल पर रखे पपीते को जीभ लपलपाकर एकटक देखता वहीं बैठा रहता, तब अंकुर उसे पपीता जरूर खिलाता। छोटा बेटा पीयूष जिम जाया करता है, तो कसरत के बाद फलों में चीकू-केला आदि खाता है। रफ्तार को चीकू के स्वाद का पता न था। एक बार मैंने ऑफिस से घर पहुँचने के बाद चीकू खाया तो आधा चीकू उसे भी दिया। उसने बड़ा रस लेकर खाया। एक दिन स्टील की फ्रूट टोकरी में आठ-दस चीकू नीचे ही रखे थे। सब लोग छत पर गए हुए थे कि रफ्तार ने सारे चीकू साफ कर दिए। प्रात: जब पीयूष ने अपने खाने के लिए चीकू देखे तो वहाँ दो-चार बीज और छिलके ही पड़े थे। वह सबसे पूछने लगा कि मेरे चीकू किसने खाए? इतने चीकू खाकर रफ्तार का हाजमा बिगड़ गया, उसकी शौच में चीकू के बीज निकले तो मामला सामने आया कि चीकू रफ्तार ने खाए थे। अंगूर, संतरा के अलावा कुलफी भी वह बड़े मजे लेकर खाता था।

वह नन्हा फरिश्ता ऊँच-नीच, घृणा-प्यार और मान-सम्मान भी खूब समझता था। प्यार पाने के मामले में वह बड़ा स्वार्थी था। जब श्रीमतीजी किसी का बच्चा अपनी गोद में लेकर उसके सामने 'बाबू-बाबू' कहकर प्यार-दुलार करतीं तो वह इसका बहुत बुरा मानता। पहले तो भौंककर अपनी नाराजगी व्यक्त करता, उसकी बात न सुनने पर वह रूठकर अपने बिस्तर पर अपने पैरों में मुँह गढ़ाकर बैठ जाता। लाख पुकारने पर मुँह उठाकर देखता भी नहीं था, इस दौरान उसकी भौंहें दाएँ-बाएँ जरूर चलती रहतीं। हारकर उसे मनाना पड़ता, गोद में बिठा 'बाबू-बाबू' कह उसके सिर पर हाथ फेरते और देर तक मान-मनौवल करते तो मान जाता। उसे कोई जोर से दुत्कार देता तो भी वह मुँह फुला लेता, इतना ही नहीं, उसकी आँखों की कोरें भीग जातीं। एक बार पीयूष ने उसकी शरारत पर डाँटकर उसे एक थप्पड़ लगा दिया। इसके बाद वह ऊपर कमरे में जाकर लैपटॉप पर कुछ काम करने लगा। शाम को लगभग साढ़े आठ बजे मैं ऑफिस से घर पहुँचा तो रोज की तरह रफ्तार दरवाजे पर नहीं आया। मैंने अंदर आकर उसे पुकारा तो भी वह मेरे पास नहीं आया। पत्नी ने बताया कि पीयूष ने डाँट दिया है। मैंने उसके पास जाकर उसे मनाने की बहुत कोशिश की, पर उस दिन वह माना नहीं। मैंने देखा, उसकी आँख की कोर भीगी हुई हैं। मैंने ऊपर जाकर बेटे को डाँटकर कहा, ''रफ्तार रो रहा है, तुमने उसे क्यों मारा? नीचे जाकर तुम्हीं उसे मनाओ!'' बेटा फौरन नीचे गया, तरह-तरह से उसे मनाने लगा। बात बनती न देख बेटे ने उसे गोद में भर लिया और खुद भी रोते हुए बोला, ''रफ्तार, मेरे बाबू! तू बुरा मान गया। तू भूल गया, मैं रात-रात भर तुझे गोद में लेकर बैठा हूँ, तेरी सेवा करता हूँ।'' बेटा उसके मुख को अपनी दोनों हथेलियों में थाम, उसकी आँखों में आँखें डाल उसे मना रहा था। आखिर वह मान गया, फिर तो दोनों ने गिला-शिकबा भूलकर खूब देर तक खूब मस्ती की।

दिन में सब लोग उसे प्यार करते तो पीट भी देते, तब बेचारा कुछ न बोलता। जब मैं शाम को घर पहुँच जाता तो फिर वह मेरा साथ न छोड़ता। मेरी उपस्थिति में कोई उसे कुछ बोलता या छेड़ता तो तुरंत भौंककर प्रतिरोध करता। तब मेरे बच्चे कहते, ''दिन में इसे कितना ही पीटो, तब तो यह चूँ भी नहीं करता। पापा के आने पर तो शेर बन जाता है।'' वह कितनी भी शरारत करता, मैं उसे कभी मारता नहीं था। बच्चे को डाँटने की तरह मैं थप्पड़ दिखाकर मारने का नाटक करता। वह अच्छी तरह जानता था कि मैं उसे मारूँगा नहीं। मेरी श्रीमतीजी शिकायत करतीं, ''थप्पड़ ही दिखाते रहते हैं, मारते तो हैं नहीं।'' मुझे वह कुछ अधिक ही चाहता था। ऑफिस से घर लौट अपनी साइकिल खड़ी कर जब मैं दरवाजे की कुंदी खटखटा इतना ही कहता, 'रफ्तार, दरवाजा खोलो!' मेरे बच्चे अब कहने लगे थे कि पापा हमारा किसी का नाम नहीं लेते, जैसे रफ्तार ही दरवाजा खोलेगा। वह तो साइकिल की आवाज सुनकर ही दरवाजे पर हाजिर हो जाता, उछल-उछलकर दरवाजे पर पैर मारता, सब लोग अंदर कमरे में सामने ही बैठे उसकी बेचैनी का मजा लेते। उसे चिढ़ाते, ''तू ही पापा का लाड़ला बेटा है, अब तू ही दरवाजा खोल!'' वह उन्हें बुलाने दौड़कर अंदर जाता, भौंककर अपनी भाषा में दरवाजा खोलने के लिए कहता। इतनी सी देर में वह अंदर-बाहर दरवाजे के तीन-चार चक्कर लगा देता। आखिर उनमें से कोई आकर दरवाजा खोलता। मेरे अंदर आने से पहले ही वह बाहर निकल आता, फिर मेरे ऊपर अपने दोनों पंजे जमा देता। मैं 'चलो-चलो, अंदर चलो' कहता अंदर आता। वह कोई चप्पल उठा लेता, तेजी से पूँछ हिलाता मेरे आगे-आगे चलता और खेलने की इतनी उतावली होती कि मुझे कपड़े उतारना भी मुश्किल हो जाता। फिर मैं उसके साथ छुआछुई खेलता। खेल होता—उसके मुँह से चप्पल या कोई कपड़ा छीनने का। वह यहाँ-वहाँ, कभी सोफे पर दौड़ाकर मुझे नचा देता या कभी उसके मुँह से कपड़ा छीनने की रस्साखींच प्रतियोगिता होती। वह खूब हाँफने लगता। आखिर मैं उसके दोनों कान पकड़ लेता और वह तुरत चारों खाने चित्त हो जाता। मैं उसकी गरदन के नीचे खरेरी करता, तब वह अपना एक पंजा मेरे हाथ पर रख लेता। खुजली करने के बाद वह आराम की

अवस्था में आ जाता। फिर मैं बाथरूम में हाथ-मुँह धोने जाता। वह वहाँ भी पहुँच जाता और बच्चे की तरह मेरे चुल्लू से पानी पीता। यह सब तो हम दोनों का रोजाना का खेल था।

जिस दिन उसे स्नान कराया जाता, उस दिन उसके प्राण गले में आ जाते। अघोरी बालक की तरह नहाने से बचने के लिए इधर-उधर छिपता फिरता। आखिर कहीं शरण न मिलती तो मेरे स्टूल के पीछे आकर सिकुड़कर बैठ जाता। मेरी बेटी रिचा उसे डाँटती हुई आ पहुँचती, 'पापा क्या तुझे बचा लेंगे?' रिचा को जब वह पानी की बालटी, साबुन, शैंपू आदि जुटाते देख लेता तो फौरन समझ जाता कि उसके स्नान की तैयारी हो रही है, बस तभी से छिपना शुरू कर देता। आखिर रिचा के आगे उसका वश न चलता। वह लाचार-निरीह आँखों से मेरी ओर देखता, मैं भी इतना ही कहता, 'रफ्तार भाई! नहा लो, कुछ नहीं होगा। जाओ!' तब रिचा उसका पट्टा पकड़कर ले जाती और वह आज्ञाकारी पर ढीठ बालक की तरह बेमन से नहाने बैठ जाता। बेटी टूथ-ब्रुश से पहले उसके दाँत साफ करती। वह दाँती भींच डाँट खाते हुए अपने दाँत साफ करवाता। बेटी उसे डाँटती जाती, ''रोज दाँत साफ किया कर, नहीं तो ये सड़ जाएँगे, समझा कि नहीं?'' वह भौंहें ऊपर-नीचे कर देखता रहता। शैंपू से स्नान होता, कान साफ किए जाते। फिर सूती कपड़े से पोंछ छत पर धूप में खटोले पर बिठा दिया जाता। वहाँ वह अपना शरीर सुखाता। सूखने पर एकदम मखमली सफेद हो जाता।

सर्दियों में वह छत पर खूब धूप सेंकता। लेकिन नीचे दरवाजा खटकने पर अपनी ड्यूटी बजाने फौरन नीचे भागता। दरवाजा बंद होता तो नीचे वाले छज्जे की रेलिंग से गरदन बाहर निकाल बाहर की स्थिति का जायजा लेता। जब बच्चे गली में खेल रहे होते तो रेलिंग में से गरदन बाहर निकाल बच्चों का खेल देख-देखकर खुश होता। बच्चे भी गली से या अपनी छतों से 'रफ्तार-रफ्तार' पुकारते रहते। शाम को वह छत पर बैठा चारों ओर टकटकी लगाकर देखता। आसमान में जहाज को वह टेढ़ी गरदन करके आँखों से ओझल होने तक देखता रहता था।

बीमारीरोधी, एंटी रेबीज टीके पीयूष ने उसे बचपन में ही लगवा दिए थे। उसका कार्ड भी बनवा लिया था। पीयूष अपने खर्चे दरकिनार करके कभी उसका पट्टा ले आता, कभी सर्दी के कपड़े। उसकी जंजीर भी स्टील की बढ़िया वाली लेकर आया। पर उसे जंजीर से बाँधकर नहीं रखा जाता था, पूरे घर में स्वच्छंद घूमता रहता। रात्रि को अंदर वाले कमरे में अपने गद्दे पर, और दिन निकलते ही बाहर वाले कमरे में सोफे पर बैठता या सो जाता। बेटी सुबह जल्दी कॉलेज जाती है तो तड़के ही झीने का दरवाजा खोल देती, वह छत पर शौच करने जाता, फिर वहीं खाली डिब्बा, छड़ी या कपड़े से खेलता रहता, जब मन भर जाता तब तक वह नीचे आ बाहर वाले सोफे पर बैठ जाता। शौचादि के बाद मैं वहीं हल्का व्यायाम करता, वह मौन हो देखता रहता। इसके बाद मैं सोफे पर बैठ अखबार पढ़ता, वह मेरी बगल में से मुँह निकाल मेरी जाँघ पर अगले दोनों पैर रखकर बैठ जाता, लगता जैसे अखबार पढ़ रहा हो! शुरू-शुरू में बच्चे कहते भी थे—'मम्मी, देखो, रफ्तार पापा के साथ अखबार पढ़ रहा है।'

इस समय नित्य श्रीमतीजी चाय-नाश्ता दे जातीं या छुट्टी वाले दिन मैं खुद ले आता। मैं चाय में बिस्कुट डुबोकर खाता। जितना बिस्कुट चाय में भीग जाता, उतना मेरा और बाकी बचा रफ्तार का होता। चार बिस्कुट में हम दोनों आधा-आधा खाते, यह भी लगभग रोज का नियम था। मैं कुछ भी खाता, उसमें रफ्तार का हिस्सा जरूर होता। घूमने का वह बहुत शौकीन रहा। रात्रि को खाना खाने के बाद हममें से कोई मजे लेने के लिए जरा सा कह भर देता, 'चलो-चलो, घूमने चलें' या 'पीयूष, रफ्तार को घुमा ला'। फिर तो वह पीयूष का बैठना भी मुश्किल कर देता। भौंक-भौंककर उसे जल्दी चलने के लिए उकसाता, कभी उसकी पैंट पकड़कर खींचता, कभी उसका हाथ या कोहनी मुँह में पकड़ लेता। पीयूष भी मजे लेने के लिए खड़ा होकर बैठ या लेट जाता, तब हठीले बालक की तरह ऊँ-ऊँ करके वह फैल जाता। उसकी अधीरता का सब लोग खूब आनंद उठाते। मजबूरन पीयूष जाने को तैयार होता तो वह दौड़कर उससे पहले दरवाजे पर पहुँच जाता। दरवाजा खोलते ही बेहद उमंग और खुशी में उछलता हुआ गरदन फुलाकर पीयूष के आगे-आगे चलता। घूमकर आने के बाद वह बड़ा चैतन्य और संतुष्ट दिखाई देता। शौच कराने के लिए मुझे तथा घूमने के लिए पीयूष को पकड़ता।

उसे हम घर पर अकेला मजबूरी में ही छोड़कर जाते थे। अकेला होने पर वह बड़ा मासूम सा हो जाता। उसे खाना खिलाकर, उसके बरतन में पीने का पानी रखकर बाहर वाला कमरा भी उसके लिए खुला रखते थे। इस बार फरवरी में मेरी ममेरी बहन की शादी थी। मैं ऑफिस से ही उधर चला गया था, बाकी सब लोग रात नौ बजे के करीब शादी में जाने के लिए घर से निकले थे। शादी में भी सबको चिंता रफ्तार की ही थी। करीब ग्यारह बजे मैं ही सबसे पहले घर लौटा। सामने वाली बहनजी से चाबी लेकर ज्यों ही दरवाजा खोला, वह अनाथ बालक सा ऊँ-ऊँ कर बड़ी करुण आवाज निकालता मेरे से बुरी तरह चिपट गया, जैसे शिकायत कर रहा हो कि मुझे यों अकेला छोड़कर क्यों गए? मैंने उसे गोद में भर लिया और फिर उसे अंदर लेकर आया। बाहरवाले कमरे में जैसे ही घुसा, कमरे की हालत देखकर दंग रह गया। उसने गुस्से में सोफे की गद्दियाँ घायल कर फर्श पर बिछा दी थीं, सोफा-कवर भी नीचे पड़ा था। कुछ कागज भी चिंदी-चिंदी कर डाले थे। पहले भी हम लोग कई बार उसे अकेला छोड़कर गए थे, पर ऐसा गुस्सा उसने कभी नहीं दिखाया था, न ही कभी कोई चीज इधर-से-उधर की थी।

घर का कोई सदस्य कुछ दिन उसे दिखाई न दे तो उसको याद करता। इस जनवरी में मैं अपने मित्रों के साथ आठ दिन के लिए द्वारका-सोमनाथ-डाकोर की तीर्थयात्रा पर गया था। तीसरे दिन ही श्रीमतीजी ने फोन पर बताया कि रफ्तार तुम्हें रोज तुम्हारे कमरे में देखने जाता है। ठीक साढ़े आठ बजे (मेरे ऑफिस से घर लौटने का समय) दरवाजे पर तुम्हारा इंतजार करता है। आज यह बहुत उदास बैठा है, लो इससे बात करो, और उन्होंने मोबाइल फोन रफ्तार के कान पर लगा दिया। मैंने कहा, ''रफ्तार! कैसे हो? बाबू, चिंता मत करो, मैं तीन-चार दिन में आकर तुम्हारे साथ खेलूँगा।'' श्रीमतीजी ने बताया कि तुम्हारी आवाज सुनकर रफ्तार कनखियों से इधर-उधर देख रहा है कि आवाज कहाँ से

आ रही है ? अब यह उठ बैठा है और पूँछ हिला रहा है। मेरी आवाज वह खूब पहचानता था। इतने भर से वह काफी चैतन्य हो गया। मुंशी प्रेमचंद ने अपने एक उपन्यास में कहीं कहा है कि दुखी मन को सांत्वना के दो बोल भी कम प्यारे नहीं होते! प्यार की भाषा जानवर इनसानों से ज्यादा समझते हैं, फिर रफ्तार की तो बात ही क्या!

हमारे घर में, दूसरी मंजिल के शौचालय की दुछत्ती में कबूतरों ने अपना बसेरा कर लिया। उनकी आबादी और उनके उत्पात इतनी तेजी से बढ़े कि हमें इन्हें भगाने के उपाय करने पर मजबूर होना पड़ा। कबूतरों का परिवार अपनी शौच से दिन-रात घर के आगे और वाश-बेशिन को तो गंदा करता ही, छज्जे पर स्थित बल्ब का होल्डर भी बैठ-बैठकर तोड़ डाला। अब दुछत्ती में ढक्कन लगवा दिया गया। जब कबूतर आपस में झगड़ते या एक-दूसरे में गुँथकर किलोल करते तो उनकी फड़फड़ाहट की आवाज रफ्तार को नागवार गुजरती और वह उन्हें सबक सिखाने के लिए दौड़कर ऊपर जाता, उन पर झपटता। पर वे परिंदे थे, उड़कर ऊपर बैठ जाते। रफ्तार ज्यादा से ज्यादा उछल ही सकता था। रेलिंग पर दो पैरों से खड़ा हो उन्हें पकड़ने की कोशिश करता। कई बार अचानक धावा बोलकर रफ्तार एकाध को धर दबोचता, परंतु तुरंत छोड़ देता, उन्हें मारता नहीं था। वह तो उसके घर पर अवैध रूप से किए गए अतिक्रमण से चिढ़ता था। खिड़की लगाने के बाद भी कबूतरों ने उस स्थान को नहीं छोड़ा। सर्दियों में हमने पूरे छज्जे को पन्नी से ढक दिया। लेकिन कबूतर भी बेदिमाग नहीं होते। दिन या रात, जैसे ही छत का झीना खुलता, आँख बचाकर वे वहाँ से अंदर आ जाते। छज्जा ही नहीं, अब वे अंदर के कमरे तक अपनी घुसपैठ बनाने लगे, पर रफ्तार उन्हें बराबर खदेड़ता रहता, आखिर वह इस घर का रखवाला था। रफ्तार के न रहने पर अब कबूतरों की फिर से मौज हो गई है।

घर में अकसर आस-पड़ोस से छोटी-छोटी चुहिया घुस आतीं। पत्नी और बच्चे तथा कभी-कभी मैं भी 'चुहिया पकड़ो' खेल में शामिल होता, परंतु इस खेल का सबसे बेस्ट खिलाड़ी था रफ्तार। श्रीमतीजी झाड़ू फटकारकर सिलेंडर या डिब्बों आदि के पीछे से चुहिया को निकालतीं, हुस्स-हुस्स की आवाज करतीं, रफ्तार हम सबसे आगे कूदकर वहाँ अपना मुँह घुसेड़ देता। कई बार चुहिया बाहर निकल आती और रफ्तार पंजा मार देता, पर उसे जान से न मारता। कई बार हमारी पकड़ में आई चुहिया को वह अपनी उछल-कूद और उतावली से भागने का मौका दे देता। चुहिया पकड़ने का उसे बड़ा जुनून था। अगर वह कभी हमारे बहुत पुकारने पर भी छत पर से नीचे नहीं आ रहा होता तो बस हमारे 'चुहिया-चुहिया' चिल्लाते ही वह सिर पर पैर रखकर आ पहुँचता और मना करने के बावजूद घर का कोना-कोना छान मारता। इसी तरह वह हमारी श्रीमतीजी और बेटी के साथ छुपमछुपाई खेलता। श्रीमतीजी चुपचाप रसोईघर के दरवाजे के पीछे छिप जातीं और बड़ी बारीक आवाज में उसे पुकारतीं—'रफ्तार!' वह दौड़-दौड़कर अंदरवाले कमरे के परदों के पीछे, बेड के नीचे, फिर बाथरूम और फिर बाहर वाले कमरे में ढूँढ़ता। प्रथम प्रयास में वह गच्चा खा जाता, आवाज की दिशा का अनुमान न लगा पाता। परंतु दूसरे-तीसरे प्रयास में उन्हें जरूर ढूँढ़ निकालता। इस तरह अकसर दोनों यह खेल खेलते और हम लोग उन्हें देखते, कोड वर्ड में उसकी मदद भी करते। उनको जब वह ढूँढ़ लेता तो उनकी साड़ी पकड़कर उन्हें बाहर लाता और उछल-उछलकर खूब खुश होता। मतलब कि घर में खूब मस्ती का आलम रहता!

रफ्तार की एक आदत और मजेदार थी। जैसे छोटा बालक पालने या बिस्तर में पड़ा-पड़ा किलकारी मारकर अकेला ही खेलता रहता है। ठीक उसी तरह रफ्तार सोफे या अपने बिस्तर पर किसी कपड़े या लकड़ी का टुकड़ा अथवा खाली बोतल को उछाल-उछालकर खेलता रहता और प्रसन्नता में हल्की घुरघुराहट की आवाज निकालता रहता। वह सोते समय खर्राटे भी लेता और नींद में चारों पैर ऊपर कर लेता, मानो नींद में कभी आसमान गिर पड़े तो उसे पैरों पर ही थाम ले।

सर्दियाँ अभी समाप्ति पर थीं कि रफ्तार को जोरों के दस्त लगे। पानी जैसी शौच कब-कहाँ निकल जाती, उसे पता न चलता। खाना-पीना सब छोड़ दिया था, पूरा घर कई-कई बार फिनाइल से धोना पड़ता। परंतु रफ्तार बहुत कष्ट में था। उसकी पीड़ा और बेबसी उसकी आँखों में साफ दिखाई देती। हम सब उसकी हालत देखकर बहुत घबरा गए, पर पीयूष ने हिम्मत नहीं हारी। सिंह डॉग क्लीनिक पर बराबर ले जाता रहा। पूरी-पूरी रात जागकर उसकी साफ-सफाई और देखभाल कर समय पर दवाइयाँ देता रहा। उस समय बेटी और श्रीमतीजी हिमाचल की तीर्थयात्रा पर गई हुई थीं। वे बराबर फोन पर उसका हाल-चाल लेती रहतीं। वहाँ उन्होंने रफ्तार की सलामती के लिए हर तीर्थ पर दुआ माँगी। इस बीमारी में रफ्तार इतना कमजोर हो गया था कि सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर जाने में असमर्थ था। हम गोद में उठाकर उसे शौचादि कराने ले जाते। धीरे-धीरे दवा और शायद दुआ ने भी अपना असर दिखाया। चार-चार इंजेक्शन उसे रोज लग रहे थे। उसके दस्त रुक गए। दो दिन हमने उसे ग्लूकोज के पानी पर तथा दो दिन दाल के पानी पर रखा। उसके परहेज में हमने कोई चूक न होने दी। अगले दिन उसे पतली खिचड़ी बनाकर खिलाई, उसने पूरे मन से खाई। प्रात: मैं जल्दी उठकर रसोई बना देता, फिर ऑफिस चला जाता। दोपहर-शाम को पीयूष उसके लिए खिचड़ी बना लेता। धीरे-धीर रफ्तार पूर्ण स्वस्थ हो गया और पहले की तरह मस्ती करने लगा। कुछ दिनों बाद यानी सर्दियों में मस्ती करते हुए उसके पिछले बाएँ पैर में मोच आ गई। वह अपनी एक टाँग उठाकर कष्ट के साथ चलता। पहले तो घर पर ही पैर पर फिटकरी का पानी ढाला, पैर पर हल्दी-गुड़ बाँधा, इससे कुछ आराम जरूर आया, लेकिन एक दिन पीयूष उसे डॉक्टर के पास ले गया। उसने रफ्तार की जाँच की, फिर बोला, ''पैर तो ठीक हो

जाएगा, कोई विशेष बात नहीं है, लेकिन गंभीर बात यह है कि तुम लोग इसकी इतनी सेवा क्यों करते हो, इतना ज्यादा क्यों खिलाते हो? जितनी इसकी उम्र है, उस हिसाब से इसका वजन आधा होना चाहिए। इसका हीमोग्लोबिन बहुत ज्यादा हो गया है। कुछ दिनों बाद यह अपनी चुस्ती-फुरती खो बैठेगा। इसके कान इतने लाल हैं कि रक्त अभी चू पड़ेगा।'' हमने डॉक्टर की हिदायत पर तीनों समय उसकी एक-एक रोटी कम कर दी, पर रफ्तार को जोरों की भूख लगती। वह कुछ भी खाने के लिए लालायित रहता। सर्दियाँ बीत गईं। सबकुछ ठीक चल रहा था, होली पर उसने होली खेली, होली मिलने आनेवालों ने गुलाल से उसका चेहरा भी लाल-पीला कर दिया।

२२ मार्च को वह थोड़ा सुस्त जरूर था, पर सायं को मेरे साथ खूब खेला और छत पर शौच करने भी गया, परंतु २३ मार्च को उसे उल्टियाँ होने लगीं, खाना उसने बिल्कुल त्याग दिया। पीयूष उसे रोहिणी स्थित सिंह डॉग क्लीनिक लेकर गया, डॉक्टर ने इंजेक्शन लगाए और उसे पानी न देने की हिदायत दी, लेकिन दवाई से कोई आराम नहीं आया, जरा सा ग्लूकोज का पानी भी पी लेता, फौरन उल्टी कर देता। सुबह मैं पौधों में पानी लगाने गया और पाइप से पानी देने लगा, वह पीछे से कब छत पर पहुँच गया, मुझे पता न चला, मैंने देखा तो वह टोंटी से टपकता पानी पी रहा था, उसे प्यास बराबर लग रही थी। जब तक मैं उसे हटाता, वह काफी पानी पी गया था। २४ मार्च को पीयूष अपने एक दोस्त के साथ रफ्तार को लेकर पुन: डॉक्टर के पास गया। उसने फिर इंजेक्शन लगाए और बताया कि इसे पपीता और आइसक्रीम खिलाना। दो दिन में ही वह काफी कमजोर हो गया। जब पीयूष क्लीनिक से रफ्तार को लेकर लौट रहा था तो पंजाबी बस्ती (नांगलोई) में रफ्तार स्कूटी से उतरकर पंजे लंबे कर सड़क पर लेट गया। आसपास के दुकानदार इकट्ठा हो गए, बोले, इसको क्या हुआ है? पीयूष ने बताया—यह बीमार है, इसे डॉक्टर से दिखाकर आ रहा हूँ। उन्होंने यह सुनकर आसपास झुक आए लोगों को दूर हटा दिया और बोले कि इसे थोड़ा आराम कर लेने दे। कुछ देर आराम करने के बाद भी रफ्तार बेहद थकान महसूस कर रहा था। बहुत कोशिश करने के बाद भी वह स्कूटी पर बैठने की हिम्मत नहीं जुटा सका, तब मार्केट वालों ने एक रिक्शा करवा दिया। पीयूष बड़ी कठिनाई से उसे घर लेकर आया, पीयूष को यहाँ-वहाँ उसके पंजों की खरोंचें लग गईं। घर आकर वह फर्श पर लेटा रहा, तब भी काफी चैतन्य था। पीयूष उसके लिए आइसक्रीम ले आया और फिर जिम चला गया।

साढ़े आठ बजे जब मैं घर पहुँचा तो श्रीमतीजी बोलीं कि कपड़े बाद में उतारना, पहले पपीता ले आओ, कल से रफ्तार ने कुछ नहीं खाया। मैं तुरंत बाजार गया और पौने दो किलो का एक पपीता ले आया। हमने थोड़ा सा पपीता काटकर उसके बरतन में डाला, पर रफ्तार ने सूँघा तक नहीं। जब पीयूष जिम से लौटा तो उसने भी उसे खिलाने की कोशिश की, नाममात्र को उसने आइसक्रीम जरूर चाट ली। आज रफ्तार को तेज बुखार भी था। उसकी हालत देखकर पीयूष बहुत बेचैन हो रहा था। अभी भी रफ्तार की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ था। तब रात साढ़े नौ बजे पीयूष ने प्रेम नगरवाले सुनील शर्मा चाचाजी के बताने पर नांगलोई के सोनू क्लीनिक वाले डॉक्टर से फोन पर बात की और सारी स्थिति बताई। उसने उल्टी रोकने की दवा लिखवाई। दवा लेने पीयूष फौरन स्कूटी पर नांगलोई के लिए दौड़ गया। दवाई एक पतला कागज जैसा था, जो रफ्तार की जबान पर चिपकाया। यह मुँह में अपने आप गल जाता है और उल्टियाँ रुक जाती हैं। बुखार की टेबलेट भी खिलाई। पर ग्यारह बजे रफ्तार ने फिर उल्टी कर दी और काँपने लगा। उसकी हालत देख पीयूष बेहद विचलित हो गया, तुरंत डॉक्टर को फोन पर मरीज की ताजा स्थिति बताई। डॉक्टर ने सलाह दी कि इसे अस्पताल ले जाओ। रात के साढ़े ग्यारह बजे आनन-फानन में तैयार हो दोनों भाई रफ्तार को उसके कंबल में लपेट राजौरी गार्डन स्थित संजय गांधी एनीमल केयर सेंटर ले गए। पीयूष ने हमें फोन पर बताया कि रफ्तार को ग्लूकोज लगा दिया है, आप चिंता मत करो। फिर घंटा भर बाद फोन आया कि डॉक्टर कल सुबह नौ बजे इसका ब्लड टेस्ट करेंगे।

मैंने दोनों बच्चों को सलाह दी कि तुम्हें नौ बजे तक वहाँ रुकना पड़ेगा। दिन भर तुम भागे-दौड़े हो, रफ्तार को घर ले आओ। तुम लोग थोड़ा आराम भी कर लोगे, सुबह जल्दी लेकर चले जाना। रात के लगभग ढाई बज रहे थे, दोनों भाई रफ्तार को लेकर आ गए। रात को हल्की सर्दी हो गई थी। रफ्तार फर्श पर लेट गया, मेरे पुकारने पर पूँछ हिलाने लगा। रफ्तार अब काफी सचेत लग रहा था। अंदर वाले कमरे में उसके लिए कंबल बिछा दिया, ताकि रात को ठंड महसूस हो तो रफ्तार इस पर बैठ जाएगा। अंकुर ऊपर वाले कमरे में सोने चला गया, पीयूष उसके पास ही अंदर बेड पर सोया। हम बाहर वाले कमरे में सो गए। रफ्तार रात को बाहर से उठकर अंदर कमरे में कब गया, यह किसी को पता नहीं। लगभग पौने पाँच बजे पीयूष की आँख खुल गई, क्योंकि वह रफ्तार को अस्पताल जल्दी लेकर जाना चाहता था। जगते ही पीयूष ने रफ्तार को देखा तो रोते हुए चीखा—'मम्मी! रफ्तार को क्या हो गया?' हम उठकर तुरंत अंदर दौड़े। मैंने रफ्तार के शरीर पर हाथ फेरा, वह नन्हा फरिश्ता शांत हो चुका था। मैं स्तब्ध रह गया। हा-हा! विधाता, यह क्या किया? रुँधे गले से इतना ही बोल पाया, 'बेटा, रफ्तार चला गया।' बड़ा बेटा भी नीचे आ चुका था। छोटे दोनों बहन-भाई दहाड़ें मारकर रोने लगे, श्रीमतीजी भी अपने आँसू नहीं रोक पाईं। घर का मुखिया होने के नाते मुझे बच्चों के सामने रोने की इजाजत नहीं। पर अंदर मेरे हाहाकार मचा हुआ है। शायद अंतिम बार आई हरी-पीली उल्टी उसके पास से बहकर सूख गई और पास में ही उसका कंबल ज्यों का त्यों बिछा हुआ है।

मन को कड़ा कर बच्चों को मैं बहुतेरी सांत्वना देने की कोशिश कर रहा हूँ, पर बच्चे रो-रोकर बेसुध हो रहे हैं। शोक और पीड़ा से विह्वल पीयूष अनर्गल प्रलाप करने लगा, भगवान को अपशब्द कहने लगा। अपने आँसुओं को जब्त कर मैंने उसे समझाने की असफल कोशिश की, ''बेटा, स्वार्थी न बनो, भगवान् बड़ा दयालु है। तुमसे ज्यादा किसी और को उसकी जरूरत आ पड़ी है, इसीलिए भगवान् ने उसे किसी और रूप में वहाँ भेज दिया है, फरिश्तों का तो काम ही यही है। तुम पढ़े-लिखे समझदार हो, दोनों बहन-भाई चुप हो जाओ।'' फिर दोनों को सीने से लगाकर चुप कराने की कोशिश की। फिर मैंने

बड़े बेटे से पूछा कि बेटा, अब क्या करना चाहिए? जो भी करें, जल्दी करें, इनका रो-रोकर बुरा हाल हो रहा है। बेटा बोला, ''पापा, मैंने अपने दोस्त मन्नू को बुलाया है, वह आता ही होगा।'' श्रीमतीजी सामने आंटी के घर फावड़ा लेने गईं तो सब हाल सुनते ही आंटी फौरन हमारे घर दौड़ी आईं, दोनों बच्चों को अपने अंक में भरकर उन्हें सांत्वना दी, तरह-तरह से समझाकर चुप कराया। श्रीमतीजी दो-ढाई मीटर सफेद नया कपड़ा ढूँढ़कर ले आईं। मैंने कहा, थोड़ा गंगाजल और ले आओ! गंगाजल के छींटे देकर मैंने रफ्तार के पार्थिव शरीर को पवित्र किया, फिर बड़े बेटे और मैंने प्यारे रफ्तार को कफन में लपेट दिया। अभी थोड़ा अँधेरा ही है। अंकुर का दोस्त आ गया। अंकुर रफ्तार को गोद में लेकर स्कूटी पर बैठ गया। नमक की एक थैली साथ रख ली। रफ्तार को बेहद प्यारा कंबल भी उसके साथ रख दिया। हम सब ने आँसुओं की सौगात दे उस फरिश्ते को अंतिम विदाई दी। कैसा संयोग है कि स्कूटी पर घूमने का बेहद शौकीन रफ्तार अपनी अंतिम यात्रा के लिए स्कूटी पर जा रहा है। दोनों मित्र उसे ले जाकर बड़े पार्क के पास भूमि-समाधि दे आए।

रिचा और पीयूष रोते-रोते बेड पर अचेत से औंधे पड़े हैं। उनके किनारे श्रीमतीजी अपने पल्लू में मुँह छिपा सुबक रही हैं। बड़ा बेटा ऊपर है। मैं बाहर वाले कमरे में आ सोफे पर बैठ गया हूँ। अब तक किसी तरह रोके रखा आँसुओं का सैलाब तटबंध तोड़ फूट पड़ा। जितना मैं आँसुओं को रोकने की कोशिश कर रहा हूँ, हिचकी के साथ ये बार-बार उतने ही वेग से फूट पड़ते हैं, तब मैंने इन्हें बह जाने दिया। समय जैसे ठहर गया है। पूरे घर में डरावना सा सन्नाटा पसर गया है। लगभग घंटा भर बाद उठकर मैंने ही जैसे-तैसे चाय बनाई। किसी ने चाय नहीं ली। चाय लेकर मैं रोज की तरह अपने स्टूल पर बैठा। आज बिस्कुट नहीं लिये, मेरा बिस्कुट पार्टनर जो नहीं है। वह मेरे हर रोज के नाश्ते का पार्टनर था। चाय पीते हुए उस पर कुछ लिखने की कोशिश की, पर आँसुओं के वेग ने तीन पंक्तियों से ज्यादा नहीं लिखने दिया।

नहा-धोकर ऊपर के कमरे में स्थित पूजा-स्थान में धूपबत्ती करने गया, रोज ही जाता हूँ। योगेश्वर कृष्ण के सम्मुख हाथ जोड़ खड़ा हुआ कि जोरों की अश्रुधारा बह चली। भीगी आँखों मुझे भगवान् की सूरत भी दिखाई नहीं दे रही है। जैसे दु:ख या घोर संकट की घड़ी में किसी हिमायती या संरक्षक के आने पर व्यक्ति फूट-फूटकर रोने लगता है, मेरी स्थिति ठीक वैसी ही है। मेरा हिमायती मेरा कन्हैया है। हाथ जोड़ मैंने उनसे इतना ही कहा, 'प्रभु! आप जो करते हैं, अच्छा ही करते हैं, आपकी लीला कोई समझ नहीं पाता है, पर इस फरिश्ते को मेरे घर में कुछ दिन और रहने देते तो अच्छा रहता। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हूँ, आप ही बताइए, मैं क्या करूँ? इन बच्चों को कैसे सांत्वना दूँ?' पूजा के बाद कपड़े पहन अपने रोजाना के समय पर मैं ऑफिस चला गया। आज घर में खाना नहीं बना। ऑफिस से ग्यारह बजे पत्नी को फोन किया कि पीयूष के दोस्तों को फोन करके बुला लो। वे इसे अपने साथ ले जाएँगे, घर से बाहर इसका कुछ तो मन बहलेगा। उन्होंने ऐसा ही किया। उसके दोस्त यह खबर सुनकर दुखी हो गए, सब दौड़े चले आए, रफ्तार इन सब का भी दोस्त था। वे पीयूष को अपने साथ ले गए। बहुत तरह से समझाया भी। लेकिन पीयूष की पीड़ा गहरी है। शाम को मैं घर पहुँचा, स्थिति जस-की-तस लगी। रात को खाना बना, सबने मुश्किल से एक-एक, दो-दो रोटी खाई। वह नन्हा फरिश्ता चित्त से हटता ही नहीं।

रात को पीयूष फर्श पर उसी स्थान पर सोया, जहाँ पर रफ्तार ने शरीर छोड़ा था। अब तो सोते-सोते अचानक 'रफ्तार-रफ्तार' चिल्लाने लगता है। मैंने रफ्तार के चेन, पट्टा, खाने का बरतन उठाकर रख दिए थे, उसने ढूँढ़कर निकाल लिये। उसके बरतन में रोज पानी भरकर रखता है कि मेरा रफ्तार क्या प्यासा रहेगा? उसका चेन, पट्टा भी अपनी आँखों के सामने रखता है, जिम जाना भी छोड़ दिया है। सुबह-शाम रफ्तार के लिए रोटियाँ बनवाता है, रात को खूब गाढ़ा दही जमवाता है, प्रात: दही के साथ रोटी ले जाकर सड़क पर कुत्तों-पिल्लों को अपने हाथ से खिलाता है। घर आकर बड़ा विह्वल होकर बताता है कि मम्मी, उन पिल्लों ने बिल्कुल रफ्तार की तरह मेरे हाथ से रोटी लेकर खाई! मैंने पत्नी को बोल दिया है कि यह जो बताए, वैसा कर दिया करो, किसी तरह इसके मन को तसल्ली तो मिले! सयाने लोग सलाह देते हैं कि जल्दी-से-जल्दी एक डॉगी ले आओ। चार दिन ऐसे ही निकल गए। पीयूष के चित्त से रफ्तार का ध्यान हटता ही नहीं है। दिन में लैपटॉप पर रफ्तार के फोटो और मोबाइल में बनाए उसके वीडियो देखता रहता है।

आखिर कोई उपाय न देख बड़ा बेटा अंकुर ३१ मार्च को मोती नगर से एक लेब्रा डॉगी ले आया। मुश्किल से महीने भर का होगा। बहुत कमजोर भी है। अब पीयूष इसकी सेवा-शुश्रूषा में लग गया है। तीन-तीन घंटे बाद रात को जागकर भी उसे सेरेलक खिलाता है। अब काफी हद तक उस अवसाद से उबर गया है, जिम भी जाने लगा है। पर जूनियर रफ्तार को बाहर वाले किसी को देखने नहीं देता है, छिपाकर रखता है। नजर आदि से बचाने के लिए इसके मस्तक के बाईं ओर काजल से काला टीका लगा दिया है। गली के छोटे बच्चों को पता चल गया है, जूनियर रफ्तार की एक झलक पाने के लिए हमारे दरवाजे के आगे से बार-बार गुजरते हैं। पीयूष से उसकी एक झलक दिखाने का आग्रह करते हैं, पीयूष कहता है—अभी नहीं, तीन महीने बाद दिखाऊँगा। जूनियर रफ्तार भी पूरे घर में दौड़ा फिरता है और यह भी अपने नन्हे-नन्हे दाँतों की मेरे स्टूल पर आजमाइश करता है।

लेकिन उसमें और इसमें फर्क है—वह आया था अपने आप, भगवान् का भेजा हुआ, इसे लाया गया है सयत्न, रफ्तार की प्रतिपूर्ति के लिए। मेरे जेहन में अब भी ये पंक्तियाँ बराबर गूँजा करती हैं, 'ओ नन्हे से फरिश्ते! तुम से यह कैसा नाता, कैसे ये दिल के रिश्ते। ओ नन्हे से फरिश्ते!' रफ्तार की जगह कोई नहीं ले सकता। उसने हमें ढेरों खुशियाँ दीं, हम क्या दे रहे हैं उसे? चंद आँसू ही तो बहा रहे हैं उसकी याद में! ओ नन्हे फरिश्ते! मैं तुम्हारा कर्जदार रहना चाहता हूँ, ताउम्र—जीवन की आखिरी साँस तक!

जी-३२६, अध्यापक नगर,
नांगलोई, दिल्ली-११००४१
दूरभाष : ९८६८५२५७४१

क्रांति की अग्नि

• नीति विद्रोही देब

नारी आजादी

नारी आजादी यहाँ
इक बहलावा सा लगती है
रक्षक बन बैठे हों भक्षक जहाँ
हो दूभर साँस लेना भी
अजन्मी बच्चियों का
दुर्गा काली को नमन कर
करते हों नारी से दुर्व्यवहार जहाँ
पुरुष-प्रधान समाज के
नियम संहार करते हैं
हर मोड़ पर खड़े
समाज के ठेकेदार
अबला की इज्जत हरते हैं
नारी आजादी यहाँ
इक बहलावा सा लगती है।

कन्या पूजकर उसकी ही
अस्मत आबरू लूटते हैं
एक तरफा तराजू में
नारी के सपनों को तौलते हैं
त्याग-समर्पण के भावों से
कोमल हृदयों को मोढ़ते हैं
नारी आजादी यहाँ
इक बहलावा सा लगती है।

ओ विप्लव के साथियो

ओ विप्लव के साथियो,
विजय मिली विश्राम न समझो,
सबकी नजरे आज तुम्हीं पर ठहरीं
जीत लिया पूर्ण स्वराज न समझो,
पूरब हो या पश्चिम का वासी
संसारी हो चाहे संन्यासी
चाहे कुछ भी हो पर भूलें नहीं
सभी के बलिदानों से आजादी पाई
जब तक सुख के स्वप्न अधूरे
पूरा अपना काम न समझो,
ओ विप्लव के साथियो,
विजय मिली विश्राम न समझो।

युगारंभ के प्रथम चरण की
गतिविधि को परिणाम न समझो,
अर्पित करो श्रद्धा और सच्चाई
आत्मा के बल को आज टटोलो
महलों में हो या मैदानों में
दुश्मन को कभी छोटा न समझो,
दुःख बाँटो या सुख बाँटो
खोले रखो इनसानियत का खाता
प्रेम और त्याग की भाषा
ऊँच-नीच का न भेद करो

समर शेष सजग देश है
सचमुच युद्ध-विराम न समझो,
ओ विप्लब के साथियो,
विजय मिली विश्राम न समझो।

विद्रोह

विद्रोह परिवर्तन की परिभाषा है
परिवर्तन ही नवजीवन की आशा है
हम लड़कर जीनेवाले परवाने

बैंकर एसबीआई बैंक। अपनी कविताओं के द्वारा समाज, देश एवं मानवीय आधारों से जुड़े विभिन्न रूपों को जन-मानस के समक्ष रखना। विरह, प्रेम, नारी जीवन, वीर रस और देशप्रेम को उजागर करने में विशेष रुचि।

परिवर्तन हमको ही लाना है
हमारी हिम्मत तुम और बढ़ाते हो
निर्बल अबला समाज को
जब भी भय दिखलाते हो
जगता क्यों नहीं ऐ नौजवां
भारत माँ का कर वंदन
संघर्षों बलिदानों से
निज भारत नया बनाएँगे

अब और सीता सा तप नहीं
काली का रूप दिखाना है
जहाँ इज्जत न लगे
द्रौपदी की दाव पर
ऐसा शंखनाद सुनाना है
माँ भारती की लाज बचाए
क्रांति की अग्नि बन
धर नया रूप धरती पर
माँगे प्रत्युत्तर निरंतर
क्यों नन्ही की लुटती अस्मत?
क्यों नारी की बिकती इज्जत?
समाज के ठेकेदारों का कर मर्जन
कर गर्जना, दुर्गा बन करे विप्लव नर्तन
पुण्यभूमि के हित में
परिवर्तन हमको ही लाना है।

४१९-ए विट्ठल भाई पटेल हाउस
रफी मार्ग नई दिल्ली-११०००१

आदिवासी जनजातियाँ और उनके लोकोत्सव

• एम.डी. मिश्रा 'आनंद'

हमारा देश विभिन्न जातियों, धर्मों, समुदायों, भाषा-बोली तथा प्राकृतिक रचनाओं का अद्‌भुत संगम है और अनेकता में एकता को समाहित किए हुए है। आज हम प्रत्येक क्षेत्र में विकास कर रहे हैं। संसार के साथ कदम मिलाकर चलने का प्रयास कर रहे हैं। जैसे—शिक्षा, रहन-सहन, व्यवहार, आवागमन के साधनों में प्रगति, किंतु अगर संपूर्ण क्षेत्र पर नजर डालें तो आज भी जनजीवन में अत्यंत विषमताएँ हैं। जिनको अनदेखा नहीं किया जा सकता है। आवागमन में बैलगाड़ी से लेकर हवाई जहाज चल रहे हैं। उसी प्रकार एक समुदाय, जिसे हम आदिवासी या जनजाति कहते हैं, से प्रारंभ होकर संपूर्ण शिक्षित और विकसित परिवार हैं। अब विचारणीय है कि इक्कीसवीं सदी में जनजातीय लोग कैसे रह रहे हैं और उनके आमोद-प्रमोद के साधन क्या हैं? और पूर्व में वे क्या थे? कितने विस्मृत होते जा रहे हैं और कितने आज भी हैं? इसके लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम उस क्षेत्र का चुनाव करना है, जिसके लिए सब जानकारी एकत्र की जाए। चूँकि मैं बुंदेलखंड का निवासी हूँ और जीवन का अधिक समय यहीं बिताया है, हालाँकि देश के अनेक क्षेत्रों में भी भ्रमण किया है और लोगों के रहन-सहन तथा संस्कृति को देखा-समझा है। किंतु सबसे अधिक बुंदेलखंड के क्षेत्र में निवास करनेवाले जन-जीवन पर जो अध्ययन किया है, संपूर्ण आलेख इसी पर आधारित है।

वैसे तो आदिवासियों में अनेक जातियाँ, उपजातियाँ होती हैं। जो अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार पाई जाती हैं, जैसे आज अंगरिया, भील, भिलाला, वैगा, भरिया, भाइना, भट्‌टा, भंजिया, विजवार, विरहूल, वियार, भूमिया, धनवार, दामोर, गोंड़, गड़वा, गरलिया, हलवा, कमार, कोरकू, कमोर, कनवर, कोर, वोपची, खैरवार, खारिया, कींड़, खोंड़, कोल, कोलम, कोरवा, कोर मझवार, मुंडा, माँझी, नोसिया, निहाल, नट, नवदीगर, धनका, धनगढ़, परधान, पारधी, परजा, पनिका, पाओ, सबूनरा, सावार, सहरिया सेहरिया, सौंर और रावत।

अब जिन जनजातियों का यहाँ निवास है, वे हैं सौंर तथा रावत। ये लोग वन-जंगल-पहाड़ों के निकट बस्तियाँ बनाकर रहते हैं। इनके मकान घास-फूस, लकड़ी और कवेलू के बने होते हैं और यह लोग जंगली पशुओं का शिकार करते हैं तथा जंगली फल, कंद का आदर करते हैं। जंगलों से सूखी जलाऊ लकड़ियाँ लाकर गाँव बस्ती में बेचकर आटा, दाल, सब्जी, नमक, मिर्च, तेल आदि आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदते हैं। कुछ लोग गाँव बस्ती में अब मेहनत-मजदूरी भी करने लगे हैं। स्वभाव से ये लोग सीधे, सरल और ईमानदार होते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर गरीब हैं तथा शिक्षा आज भी ग्रहण नहीं कर पाते हैं। इनमें थोड़ा-बहुत अक्षर ज्ञान तो आया है, किंतु अधिक शिक्षित नहीं पाए जाते हैं।

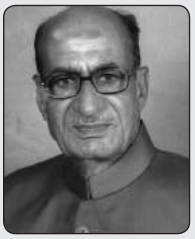

जाने-माने लेखक एवं कवि। प्रमुख कृतियाँ हैं—'मोक्ष की राह', 'मैं कौन हूँ', 'पंख' (काव्य-संग्रह), 'इंद्रधनुष से रंग जीवन के संग' (कहानी-संग्रह)। आकाशवाणी छतरपुर से काव्यधारा तथा सब टीवी पर कार्यक्रमों का प्रसारण। म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति भोपाल एवं साहित्य मंडल, नाथद्वारा सहित कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

भाषा

जनजातियों की इस क्षेत्र में बोल-चाल की भाषा अपभ्रंश टूटी-फूटी हिंदी तथा बुंदेली है, जो सामान्य लोगों की बोल-चाल से कुछ भिन्न है। बाहरी लोग इसे कम ही समझ पाते हैं, पर इन जनजातियों की तो जबान पर चढ़ी है।

धर्म

ये लोग हिंदू धर्म के अनुयायी हैं, मूर्तिपूजक हैं किंतु सामान्य हिंदुओं की अपेक्षा इनके इष्टदेव कुछ अलग हैं। जैसे देवी माँ इन लोगों की इष्टदेव हैं और ये लोग भूत-प्रेतों को भी पूजते हैं, जिनमें मुख्य रूप से गौंड़बाबा-करूआ बाबा, घटौइया बाबा और मसान हैं। इनकी पूजा में पशु-पक्षी की बलि तथा शराब चढ़ाने का भी रिवाज चला आ रहा है। इनके शादी-विवाहों में भी यही होता है। इसी के अनुरूप इनके व्यवहार उत्सव, नृत्य-गीत भी होते हैं।

नृत्य और गीत त्योहारों के मनाने के तौर-तरीके सभी पारंपरिक पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे रीति-रिवाज हैं। कोई लिखित लिपिबद्ध साहित्य नहीं पाया जाता है। सभी मौखिक अलिखित हैं। शरद ऋतु में इस समुदाय के लोग जब शाम को फुरसत के समय अलाव जलाकर बाहर बैठते हैं तब कहानियाँ भी सुनाते हैं। ये किस्सा-कहानियाँ राजा-रानी, भूत-प्रेत, जंगल, पहाड़, नदी, तालाबों तथा जंगली जानवर शेर, चीता, स्यार, लोमड़ी-गोहा से संबंधित होती हैं। यही इनके मनोरंजन के साधन हैं। ये लोग कभी-कभी देवीजी के भजन, लोकगीत, फागुन गीत भी गाते हैं, जो मौसम और त्योहारों के अनुरूप होते हैं।

उत्सव और त्योहार

विवाहोत्सव, देवी देवताओं, भूत-प्रेतों की पूजा का उत्सव त्योहारों

में तो हिंदू रीति-रिवाज अनुसार होते हैं जैसे नवदुर्गा, दशहरा, दीपावली, फाग और रक्षाबंधन के। इन उत्सव और त्योहारों पर इनके गीत अलग-अलग तरह के होते हैं, जिनका विवरण आगे दिया जा रहा है। सभी उत्सव त्योहारों के साथ इनके नृत्यों की शृंखला अवलोकन करते हैं, जो मुख्य रूप से (१) रावला (२) स्वाँग (३) मोनियां, जुगिया नृत्य प्रचलित हैं।

नृत्यों की विरासत और लोकनृत्य मन में जब उमंग हो तो मन मयूर नाचने लगता है। नव दुर्गा उपासना जन-जातीय बड़े उत्साह से मनाते हैं। इसमें देवीजी का व्रत रखते हैं और प्रात: नहा-धोकर महिलाएँ तथा पुरुष जल चढ़ाते हैं एवं शाम को महिलाएँ एकत्र होकर देवीजी के गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं—

देवी गीत

नथुनिया लटक रही गोरे गाल पै हो माँ
ठंडों सो पानी गरम कर लाए
सपरौ खोरो फिर चली जाव हो माँ!
दूधा के लड्डवा ताती जलेबी
जैवो फिर चली जाव हो माँ!
सोने के लोटा गंगा जल पानी
पी लो फिर चलीं जाव हो माँ!
पीरी अँगोछी पीतम रंग सारी
पैरों फिर चली जाव हो माँ!
नथुनिया लटक रही
गोरे गाल पै हो माँ!

देवी गीत में माताजी के शृंगार का वर्णन करते हुए उनसे प्रार्थना करते हैं कि आपके स्नान हेतु पानी को गरम करके लाए हैं। आप सपरें खोरें मतलब स्नान कर लें और दूध के लड्डू तथा गरम जलेबी प्रसाद हेतु तैयार हैं। प्रसाद ग्रहण करने के पश्चात् स्वर्ण कलश में गंगा जल है, ग्रहण कर लें। तत्पश्चात् पीले रंग के वस्त्र तैयार हैं, इन्हें धारण करके ही आप प्रस्थान करें।

भोग-प्रसाद सेवा-पूजा के उपरांत भक्तगण गीत के माध्यम से विनय करते हैं—

सुमर-सुमर माई तौरौ जस गाऊँ,
चरण छोड़ कहाँ जाऊँ हो माँ!
दुखन की मारी
गोरी ठांडी, विरछ तरें
अँसुवा रही बहाय हो माँ

माताश्री पूँछती हैं कि—

कै तोरी सास ननद दु:ख दीन्हो,
कै मायके तोरे दूर हो माँ
न मोरी सास ननद दु:ख दीन्हों,
न मोरे मायके दूर हो माँ!
घरई के सँइया बाँझ कहत हैं
जे दु:ख सहे न जाय हो माँ!
सुमर सुमर माई तोरो जस गाऊँ
चरण छोड़ कहाँ जाऊँ हो माँ!
अंधन को तो नैन दये हैं
कोढ़िन को दई काया हो माँ!
निर्धन को माया दई तुमने
बांझन भर दई गोद हो माँ!

देवी माता को स्मरण कर चरण वंदन करके एक स्त्री पेड़ के नीचे खड़ी दु:खी होकर आँसू बहा रही है। देवी माता जानना चाहती हैं कि तुम्हारी सास-ननद ने दु:ख दिया है अथवा तुम्हारे माता-पिता अथवा मायका दूर है? इस कारण से तुम दु:खी होकर रोदन कर रही हो। जिस पर स्त्री कहती है कि मेरी सास-ननद ने कोई दु:ख नहीं दिया और न ही मेरा मायका दूर है, बल्कि मेरा पति मुझसे बाँझ कहता है, इसलिए माता मुझे संतान दे दो। क्योंकि मैं बाँझ अर्थात् नि:संतान हूँ।

हे मातेश्वरी आपको कुछ भी अदेय नहीं है। आप अंधे व्यक्तियों को ज्योति और कोढ़ी की काया को सुंदर बना देती हैं और नि:संतान को संतान देती हैं। माताजी प्रसन्न होकर स्त्री की मनोकामना पूर्ण कर देती हैं।

इसी आस्था के साथ देवीभक्ति, पूजा-भजन करते हैं। देवी शक्ति की पूजा करते हैं और भूत-प्रेत योनियों में विश्वास करते हैं, जिसमें गोंड बाबा, करुआ बाबा तथा घटौइया एवं मसान को पूजते हैं। त्योहारों पर नाच-गान, खाना-पीना होता है। गोंड बाबा का चबूतरा बनाकर स्थापना कर पूजा-भजन, नृत्यों का आयोजन किया जाता है। इसी प्रकार करुआ बाबा के स्थान स्थापित किए जाते हैं। किंतु घटौइया बाबा तो नदी-नालों के घाटों पर ही चबूतरा बनाकर पूजे जाते हैं। जिस नदी-नाले के घाट पर घटौइया विराजमान होते हैं, उस रास्ते से शादीशुदा कोई भी बेटी निकलती है तो वहाँ रुककर पूड़ी, पपड़ियाँ, मीठा, बताशा, नारियल चढ़ाती हैं। जो ऐसा नहीं करती हैं तो उनकी ऐसी मान्यता रहती है कि उस बहू-बेटी पर घटौइया प्रेत सवारी कर लेता है और उसे परेशान करने लगता है। जिसके निवारण के लिए उन्हीं की बिरादरी में तांत्रिक होते हैं। वे भूत भगाने, घटौइया को साथ छोड़ने के लिए मनाते हैं, जिसके लिए

पशु-पक्षी की बलि चढ़ाई जाती है, शराब भी चढ़ाते हैं। फिर लोग उस पशु-पक्षी के मांस को पकाते-खाते, उत्सव मनाते और गीत गाते हुए नृत्य भी करते हैं।

मसान

जिन बालकों का यानी असामायिक अल्प आयु में निधन हो जाता है, कहते हैं कि उनकी आत्मा प्रेत योनि में भटकती रहती है। और ऐसी प्रेत योनि को मसान के रूप में पूजते हैं। जब मसान बाबा किसी पर रुष्ट हो जाते हैं तो तांत्रिक पूजा कर इन्हें मनाते हैं, तब पीड़ित को मुक्ति मिलती है।

विवाहोत्सव एवं लोकनृत्य

विवाहोत्सव प्रत्येक समुदाय में खुशी का समय, नाच-गान का अवसर माना जाता है। सर्वप्रथम हम यहाँ वरपक्ष के विवाहोत्सव का वर्णन करते हैं, जिसमें दूल्हा को 'बना' कहा जाता है और दुलहन को 'बनी' कहते हैं। दूल्हा का शृंगार उबटन, हल्दी तथा स्नान पश्चात् नए वस्त्र धोती-कुरता, पगड़ी एवं लाल कपड़े का 'वागौ' (दूल्हा का परिधान) पहनाया जाता है। आँखों में काजल, हाथ में कंगन और बगल में कटार लटकाते हैं। घर में महिलाएँ मंगल गीत गाती हैं, जिसे 'बना गीत' कहा जाता है—

बना की बनरी हेरे बाठ बना मोरो कब घर आवेजू
बना के आजुल चतुर सुजान बना खों ऐसो सजदवो जू
जैसे सज गये लछमन राम भरत खों आगें करलवो जू
बना के बाबुल चतुर सुजान बना खों ऐसो सजदवो जू
जैसे सज गए लछमन राम शत्रुघन आगें करलवो जू
हाथी घुड़ला सजे सवार तुरई रमतूला बाजे जू
बना की बनरी हेरे बाठ बना मोरो कब घर आवेजू

यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि वरपक्ष को राम और वधूपक्ष को सीताजी मानकर संबोधित किया जाता है।

दूल्हा सजकर तैयार, बारात सज-धजकर तैयार होकर तुरई रमतूला बजाती नगड़िया ढोलक के साथ दुलहन के घर पहुँचती है।

जुगिया नृत्य

जब बारात वधूपक्ष के यहाँ चली जाती है, उस समय महिलाएँ जुगिया बाबा का नृत्य करती हैं। कुछ महिलाएँ मर्दों का भेष बना लेती हैं। मर्दों जैसे कपड़े पहनकर अपने चेहरे पर नकली दाढ़ी-मूँछ लगा लेती हैं और हाथ में शस्त्र स्वरूप नकली बंदूक और धान कूटनेवाला मूसल लेकर मुहल्ला-गाँव में भ्रमण कर आपस में हँसी-ठिठोली करती, हँसी-मजाक करती और पुरुष भेषवाली अन्य साथी महिलाओं के साथ मिलकर गाती-नाचती हैं। इसे 'जुगिया नृत्य' भी कहते हैं।

जुगिया नृत्य जहाँ एक हँसी-मजाक, मनोरंजन है, वहाँ इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि बारात में अधिकांश मर्द वधूपक्ष के यहाँ चले जाते हैं, घर में अकेली महिलाएँ रह जाती हैं तो जुगिया नृत्य के बहाने रातभर जागकर मर्द बनकर चोर, बदमाशों से रक्षा करती हैं। रातभर नृत्य एवं जागरण होता है, जिससे घर एवं झोंपड़ी सूनी नहीं रहती है। सब महिलाएँ एक समूह में एकत्र रहती हैं, उन्हें अकेलापन एवं असुरक्षा महसूस नहीं होती है। मनोरंजन के साथ-साथ स्त्रियोचित दमित इच्छाएँ भी इसके माध्यम से प्रकट कर पाती हैं। दैनिक जीवन में स्त्री-पुरुष के प्रसंगों को अपने तरीके से जीती हैं और हर्षोल्लास के साथ जुगिया नृत्य तड़के तक चलता रहता है। हमारे सभ्य समाज में लोक परंपराएँ पिछड़ेपन की निशानी बन पीछे छूटती जा रही हैं, या सभ्य समाज द्वारा बिसराई जा रही हैं, परंतु आदिवासी जन-जातियाँ आज भी अपनी लोक परंपराओं, रीति-रिवाजों, गीत-नृत्य आदि को सहेजे हुए हैं।

आनंद भवन, मेन रोड पृथ्वीपुर
जिला-टीकमगढ़-४७२३३८ (म.प्र.)
दूरभाष : ०९६६९०५३७०५

इस अंक के चित्रकार

सुभाष केकरे

सुपरिचित चित्रकार। ८ जुलाई, १९४७ को ग्वालियर में। एम.ए. चित्रकला, डिप्लोमा इन फाईन आर्ट (ग्वालियर)। मध्य प्रदेश कला परिषद्, फाईन आर्ट कला अकादमी तेजपुर, कलकत्ता, अमृतसर, रायपुर, जयपुर, मुंबई आर्ट सोसाइटी, भारत भवन बिनाले भोपाल, राजस्थान ललित कला अकादमी, राष्ट्रीय कला मेला दिल्ली, मुंबई, जयपुर, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर, केंद्रीय विद्यालय शिक्षक प्रदर्शनी, जवाहार कला केंद्र जयपुर। कालीदास स्मृति प्रदर्शनी, भारत कला एवं संस्कृति संस्थान, अक्षय ऊर्जा निगम, नई दिल्ली से सम्मानित। संपत्ति सेवानिवृत्ति के बाद से पूर्णतः स्वतंत्र चित्रण।

संपर्क : 'आशीर्वाद', रंगपुर रोड नं. ४,
डडवाड़ा, कोटा-३२४००२

अयोध्या अपराजेय आस्था की नगरी

• सुशील सरित

कल-कल बहती सरयू के जल में अठखेलियाँ करती नावों की लंबी सी पंक्ति, किनारे दूर-दूर तक फैले घाटों की सीढ़ियों पर पूजा-अर्चना के उपक्रम में लगे साधु एवं गृहस्थ और सरयू-किनारे बने ढेर सारे प्राचीन मंदिरों से उठकर नदी की लहरों से टकराती घंटा-घंटियों की मधुर ध्वनि, सचमुच अयोध्या को नैसर्गिक सौंदर्य उन्नीस सौ बानबे के रामजन्मभूमि बाबरी मसजिद कांड के बाद भी फीका नहीं पड़ा है। सच तो यही है कि खोखली आस्था मन को बाँध नहीं पाती और बाबरी मसजिद श्रीरामजन्मभूमि विवाद ने अयोध्या के प्रति मन में विरक्ति ही पैदा कर दी थी। आज तक जो भी अयोध्या यात्रा करके लौटा, उसके यात्रा-वृत्तांत का केंद्र रामलला का जन्मस्थल उसके चारों ओर फैली थका देनेवाली बैरीकेटिंग, सी.आर.पी.एफ. के जवानों की घेराबंदी और इन सबको पार करने के बाद जन्मस्थल के नाम पर एक तंबू में श्रीराम की मूर्ति रखी है, जैसी सूचनाएँ ही रहीं। इसी कारण जब मेरे योग परिवार के साथियों ने अयोध्या भ्रमण की योजना बनाई तो स्वीकृति देनेवालो में मेरा नाम अंतिम था और अयोध्या पहुँचने तक भी वही अन्मयस्कता मेरे मन को घेरे हुए थी। वैसे उ.प्र. के फैजाबाद जिले में बसी, अवध प्रदेश की इस प्राचीन राजधानी, मुसलिम काल में अवध प्रांत के गवर्नर की सीट रह चुकी अयोध्या, जिसे गौतम बुद्ध के काल में तत्कालीन पाली भाषा में 'अयोझा' कहा जाता था, तक पहुँचने के सभी मार्ग सुगम एवं आम आदमी की पहुँच के भीतर हैं। दिल्ली से ५५५ कि.मी. पूरब में बसी प्राचीन कौशल राज्य की राजधानी तक सड़क एवं रेलमार्ग से आसानी से पहुँचा जा सकता है, किंतु हम सभी को पूर्व अनुबंधित मिनी बस द्वारा जाना ही सुविधाजनक लगा।

जाने-माने कथाकार। पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का सतत प्रकाशन।

अयोध्या हिंदुओं की पवित्रतम ७ नगरियों (सप्त पुरियों—काशी, उज्जैन, हरिद्वार, मथुरा, जगन्नाथ पुरी, कांची) में शीर्षस्थ मानी जाती है।

इतिहास की बात करें तो १२७ ईसवीं में कुणाल वंश के सफल शासक कनिष्क ने 'साकेत' नाम से प्रसिद्ध इस अयोध्या नगरी पर विजय प्राप्त की और इसे अपनी पूर्वी राजसत्ता का प्रशासनिक केंद्र बनाया था, लेकिन पौराणिक दृष्टि से राजा मनु द्वारा निर्मित राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित यह नगरी सूर्यवंशीय राजाओं द्वारा शासित विश्व की प्राचीनतम हिंदू नगरियों में से एक है। इसे मोक्षदायिनी नगरी का सम्मान प्राप्त था। इस नगरी का क्षेत्रफल २५० कि.मी. तक फैला हुआ था। राजा दशरथ सूर्यवंशीय पीढ़ी के ३६वें शासक थे, जिनके घर श्रीराम का, जिन्हें उनकी अभूतपूर्व क्षमताओं, योग्यताओं एवं चमत्कारिक पराशक्तियों के कारण विष्णु का ७वाँ अवतार माना गया, जन्म हुआ।

जैनधर्म के प्रवर्तक ऋषभदेव सहित यह पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि भी मानी जाती है। मौर्य एवं गुप्त साम्राज्य-काल में यहाँ कई बौद्धमंदिरों के होने के प्रमाण भी मिलते हैं। स्वामीनारायण संप्रदाय के संस्थापक स्वामीनारायणजी का बचपन भी इसी नगरी में बीता। उन्होंने नीलकंठ के रूप में अपनी सात वर्षीय यात्रा यहीं से प्रारंभ की। ६०० ईसा पूर्व यह नगरी व्यापार का प्रमुख केंद्र थी। यह स्थल बौद्ध धर्म का केंद्र भी रहा और यहाँ गौतम बुद्ध का कई बार आगमन हुआ। फाहियान ने यहाँ के बौद्ध धर्म का जिक्र किया है। भारत के प्रथम चक्रवर्ती राजा भरत एवं सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र भी इसी नगरी में जनमे। अयोध्या नगरी की विश्वव्यापी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि थाई राजधानी अयोध्या एवं इंडोनेशिया सल्तनत योग्या कर्ता नाम अयोध्या नाम से प्रेरित होकर ही रखा गया। १४वीं शताब्दी में रामानंदजी ने इसे रामभक्ति आंदोलन का आध्यात्मिक केंद्र बना दिया।

ऐसे पौराणिक स्थल पर स्थानीय सूत्रों के अनुसार यदि साढ़े छह हजार मंदिर हैं तो इसमें आश्चर्य क्या! निश्चित रूप से बाकी सारे मंदिरों का महत्त्व कम नहीं है और उनमें से कम-से-कम एक दर्जन मंदिर तो ऐसे हैं ही, जिन्हें पौराणिक एवं पर्यटन दोनों ही दृष्टि से दर्शनीय माना जा सकता है। लेकिन बावरी मसजिद कांड के बाद श्रीरामजन्मभूमि को जो विश्वव्यापी लोकप्रियता मिली और भारतीय हिंदू समाज में इसके प्रति जो क्रेज पैदा हुआ, उसका परिणाम सामने था, यानी हमारे साथ आए सभी १२ परिवारों ने धर्मशाला में रुकते ही पहली इच्छा यही जाहिर की कि सरयू स्नान के बाद श्रीरामजन्मभूमि का दर्शन ही प्रथम कार्यक्रम रहेगा। रात्रि के नौ बज रहे थे, इस कारण इस इच्छा की पूर्ति तो सुबह ही होना संभव थी, इस कारण हमने तुरंत फैसला किया हनुमान गढ़ी जाने का।

रात्रि प्रारंभ हो चुकी थी, इस कारण श्रद्धालुओं की भीड़ न तो सड़कों पर थी, न ही मंदिर में। हनुमानगढ़ी नगर के लगभग बीचोबीच स्थित है और कहीं से भी वहाँ तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। हम सब भी मुश्किल से दस मिनट की पैदल यात्रा करके वहाँ पहुँच गए। सामने किले की तरह सुरक्षित हनुमानगढ़ी की सीढ़ियाँ हमारा स्वागत कर

रही थीं। चारों ओर से चौकोर दीवारों से घिरे इस मंदिर के चारों कोने (दीवालों के) गोलाकार हैं। इस कारण वहाँ खड़ा होना बेहद मुश्किल है। संभवत: यह निर्माण सुरक्षा की दृष्टि से किया गया था।

तथ्यों के अनुसार अवध के तत्कालीन नबाव ने १०वीं शताब्दी में यह भूमि दान में दी और उसके ही एक हिंदू दरबारी ने इस मंदिर का निर्माण करवाया। बाद में अंग्रेजी शासन काल में नबाव मंसूर अली ने अपने दरबारी टिकैत राय के द्वारा इसे गढ़ी (किले जैसा) रूप दिया। जन मान्यता है कि जन्मभूमि अथवा रामकोट की रक्षार्थ पवनपुत्र हनुमान यहाँ सूक्ष्म रूप में निवास करते हैं। ७६ सीढ़ियाँ चढ़कर जब हम ऊपर पहुँचे तो मंदिर के पावन वातावरण ने हम सब को ही प्रभावित किया। अंदर गुफानुमा मंदिर में माता अंजनी की गोद में शिशु हनुमानजी की मूर्ति दर्शनीय है और श्रद्धा जगाती है। हरिद्वारी पत्ती, बसंतिया पत्ती उज्जैनिया पत्ती एवं सागरिया पत्ती नाम से संतों के ४ दल हैं, जिनका प्रमुख 'गद्दीनशील' कहलाता है और इस गढ़ी का प्रबंध देखता है।

लगभग १५ मिनट की हनुमानगढ़ी की इस आनंद यात्रा के बाद रात्रि सुखद रही और हम सब सुबह रामघाट पर थे। रामघाट सरयू का सबसे व्यस्त स्थल है, लेकिन इस समय यहाँ बिल्कुल ही सामान्य सी चहल-पहल थी और हमें सरयू के पावन स्पर्श का पूर्ण आनंद भी मिला। वैसे अयोध्या में सरयू के किनारे अगर घाटों की चर्चा करें तो अनेक महत्त्वपूर्ण घाटों का नाम चर्चा में आता है। रामघाट जहाँ हम सबने स्नान किया, निश्चय ही इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि रामनवमी अर्थात् श्री राम अवतरण दिवस पर यहाँ स्नान अत्यंत पुण्यदायक माना जाता है। सभी नर, नाग, यक्ष, गंधर्व एवं देव सूक्ष्म रूप में इस अवसर पर यहाँ स्नान कर श्रीराम के भव्य स्वरूप का दर्शन पाते हैं। ऐसा विश्वास जन-जन में व्याप्त है। गुरु वसिष्ठ ने भी इस पर्व के स्नान को मोक्षदायी बताया है। प्रत्येक वर्ष कार्तिक शुक्ल नवमी को लगनेवाली चौदह कोसी परिक्रमा एवं कार्तिक शुल्क एकादशी को लगनेवाली पंचकोसी परिक्रमा के बाद यहाँ स्नान की सदियों पुरानी परंपरा है।

हनुमान गढ़ी, अयोध्या

लेकिन इस घाट के अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण घाटों में कंचन भवन के पास ऋणमोचन घाट, जहाँ स्नान कर ऋण न चुकाने के पाप से मुक्ति मिल जाती है, ऋणमोचन घाट के दक्षिण में राजघाट, जहाँ प्रसेनजित् के राजकाल में कल्पमुनि का आश्रम था और जहाँ निकट ही बने ऋषभदेव उद्यान में जैन धर्म के प्रवर्तक ऋषभदेव की प्रतिमा स्थापित है। लक्ष्मण घाट के पश्चिम में गोला घाट, जहाँ माघकृष्ण चतुर्दशी का स्नान कुसंग जनित पाप से मुक्ति दिलाता है और लक्ष्मण घाट, जिसे सहस्र धारावाला घाट माना जाता है, सर्वाधिक उल्लेखनीय है। लक्ष्मण घाट के निकट ही एक छोटा सा किला भी है, जिसे लक्ष्मण किला कहा जाता है और रीवा के दीवान दीनबंधु द्वारा बनवाया आकर्षक मंदिर भी है।

वर्ष १९६४-८५ में कुंभ आदि के महापर्व पर ऋद्धालुओं की बढ़ती संख्या देखते हुए एक बृहत् पक्के घाट का निर्माण भी उ.प्र. सरकार द्वारा करवाया गया, जिसमें पंपसेटों द्वारा सरयू का जल ही आता रहता है। इसे 'राम की पैड़ी' नाम दिया गया। लेकिन आज भी सामान्य रूप में श्रद्धालु परंपरागत घाटों पर स्नान को प्राथमिकता देते हैं। सारे अन्य तीर्थस्थलों के समान यहाँ भी पंडों की बहुतायत है और श्रद्धालुजनों से उनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही परंपरा कायम भी है।

स्नान के बाद तो सबका एक ही लक्ष्य था, जल्दी-से-जल्दी श्रीरामजन्मभूमि का दर्शन। यों संपूर्ण अयोध्या नगरी बहुत बड़ी नहीं है। किंतु फिर भी हमें वहाँ पहुँचते-पहुँचते साढ़े नौ बज ही गए। हमें पहले से ही बता दिया गया था कि वहाँ किसी भी वस्तु को ले जाना मना है। इस कारण लगभग सभी लोग अपना मोबाइल, कैमरा आदि धर्मशाला में ही छोड़ गए। यों वहाँ लाकर की बहुत सुविधाजनक व्यवस्था है। जहाँ नाममात्र के शुल्क पर आपका सामान सुरक्षित रखा जाता है। श्रीराममंदिर क्षेत्र की सीमा प्रारंभ होते ही परंपरागत प्रसाद, पुष्प, तसवीरें आदि की दुकानों से सजा बाजार नजर आता है। लेकिन लाकर रूम से मुड़ते ही सामने इतनी लंबी लाइन थी कि हममें से कई को यह लगा कि ग्यारह बजे अर्थात् दर्शन बंद होने की सीमा तक शायद ही मंदिर निर्माण स्थल तक पहुँच सकें। किंतु जब यहाँ तक आए हैं, तो और उपाय भी क्या था।

श्रीरामजन्मभूमि और बावरी मसजिद विध्वंस कांड इस सदी की प्रमुखतम महत्त्वपूर्ण धार्मिक-राजनैतिक घटना मानी जाती है, लेकिन सच तो यह है कि अयोध्या जिसका अर्थ ही 'वह स्थल, जिसके विरुद्ध कभी युद्ध न किया जा सके' और उसका हृदय स्थल सदियों से ध्वंस एवं निर्माण का इतिहास रचते रहे हैं। इतिहास गवाह है कि मौर्य शासनकाल को दौरान जब बौद्ध धर्म का प्रभाव अपनी चरम सीमा पर था, एक तिरिक राजा मिरांदा बौद्ध भिक्षु का भेष बनाकर आया और फिर उसने अयोध्या पर धोखे से आक्रमण कर न केवल अयोध्या पर अधिकार कर लिया वरन् श्रीराम जन्मस्थल पर बने मंदिर को भी ध्वस्त कर डाला। लगभग १५० ईसा पूर्व से इस मंदिर पर प्रथम आधिकारिक आक्रमण था। लेकिन ३ माह बाद ही शुंगवंशीय राजा द्युमुत सेन से मिरांदा पराजित हुआ और मारा गया। अयोध्या स्वतंत्र हो गई और विक्रमादित्य द्वारा इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराया गया। इतिहास में विक्रमादित्य नाम के छह राजाओं का उल्लेख है। इनमें से यह मंदिर किस विक्रमादित्य ने

बनवाया, इस पर इतिहासकार एक मत नहीं हैं। किंतु यह सभी मानते हैं कि विक्रमादित्य ने न केवल यह मंदिर वरन् अन्य ३६० मंदिरों का निर्माण कराया।

इस संदर्भ में एक उल्लेखनीय तथ्य यह भी है कि श्रीराम को विष्णु के अवतार के रूप में ईसा से कुछ शताब्दीं पूर्व ही प्रतिष्ठा मिली। चौथी शताब्दी के प्राप्त शिलालेखों में राम का वर्णन विष्णु अवतार के रूप में किया गया है। बाद में साहित्यकारों ने श्रीराम को विष्णु अवतार मानते हुए अनेक ग्रंथों की रचना की।

जानकी मंदिर, अयोध्या

कालिदास का रघुवंश इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। संस्कृत कवि भास ने श्रीराम को अर्चना अवतार काव्य-ग्रंथ में जोड़ा। इस बात के भी प्रमाण मौजूद हैं कि १२वीं शताब्दी में अर्थात् बावर के आक्रमण से तीन शताब्दी पूर्व अयोध्या में पाँच प्रमुख मंदिर मौजूद थे, जिनमें भारत भर के श्रद्धालु पूजा-अर्चना हेतु आते थे। ये थे—गोपताहार का गुप्त हरी मंदिर, स्वर्गद्वार का चंद्रहरी मंदिर, चक्रतीर्थ हार का विष्णुहरी मंदिर, स्वर्गद्वार का धर्महरी मंदिर एवं जन्मभूमि स्थल का विष्णु मंदिर।

बारहवीं या १३वीं शताब्दी में लिखे गए ग्रंथ अयोध्या माहात्म्य में इन सबका एवं रामनवमी पर अयोध्या आकर स्नान-दर्शन करने से व्यक्ति पुर्नजन्म से मुक्ति पाकर मोक्ष को प्राप्त करता है, इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। बाबर ने भारत में सन् १५२६ में प्रवेश कर लिया था और अपना राज्य स्थापित करने के बाद उसने १५२८ में अपने सिपहसालार मीर बाकी को अयोध्या पर आक्रमण कर इस मंदिर को ध्वस्त कर मसजिद बनाने का फरमान जारी कर दिया। अयोध्या में भयंकर युद्ध हुआ और २३ मार्च, १५२८ तक इस युद्ध में एक लाख तिहत्तर हजार लोग अयोध्या को बचाने के लिए वीरगति को प्राप्त हुए और अयोध्या न केवल पराधीन हो गई वरन् विक्रमादित्य का बनवाया हुआ मंदिर भी नेस्तनाबूद कर डाला गया। देखा जाए तो मिरांडा के बाद यह दूसरा अवसर था, जब मंदिर पूरी तरह ध्वस्त हुआ। मीर बाकी ने बाबर के आदेशानुसार मसजिद बनवानी प्रारंभ की। इस क्रम में एक रहस्यमय घटना हुई, जिसका उल्लेख बाबर लिखित पुस्तक 'जोग बाबर' में भी है। कहते हैं कि इधर मसजिद की दीवारें दिनभर बनाई जातीं और शाम ढले ही गिर जातीं। मीर बाकी परेशान हो उठा, उसने बाबर को इस बात की सूचना दी। बाबर स्वयं इस नजारे को देखने पहुँचा और यह देखकर चकित रह गया कि जो कुछ मीर बाकी ने कहा, सच था। दीवारें दिनभर बनाई जाती थीं और शाम को गिर जाती थीं । बाबर ने तुरंत कुछ हिंदू फकीरों-संतों को बुलवाया और उनसे मदद माँगी। संतों, फकीरों ने कई दिनों के विचार-विमर्श के बाद बाबर को पाँच सुझाव दिए। पहला सुझाव था कि मसजिद का नाम सीता रसोई या सीता-पाक रख दिया जाए। दूसरा सुझाव था कि मंदिर की परिक्रमा को जारी रखा जाए। तीसरे सुझाव में संतों ने कहा कि सदर (मुख्य) गुंबद के दरवाजे में लकड़ी लगा दी जाए। चौथा सुझाव था कि मीनारें गिरा दी जाएँ और पाँचवाँ सुझाव था कि हिंदू महात्माओं को इस स्थल पर भजन करने की अनुमति दी जाए।

बाबर ने पाँचों सुझावों को मान लिया और फिर मसजिद बनने में कोई भी बाधा नहीं आई। अगर यह घटना सत्य है तो कोई भी जागरूक व्यक्ति यह सवाल उठा सकता है कि संतों-फकीरों को ऐसे सकारात्मक सुझाव देने की क्या आवश्यक्ता थी। निश्चित रूप से यदि फकीरों-संतों ने सुझाव न दिए होते तो मसजिद का बनना नामुमकिन था। सत्य जो भी हो, लेकिन मंदिर तो दूसरी बार ध्वस्त हो ही गया। हुमायूँ एवं अकबर के काल तक हिंदू राजाओं ने रामजन्मभूमि को मुक्त कराने के बीसियों प्रयास किए, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली। ऐसे प्रयास करनेवालों में देवीदीन पांडे, महाबख्त सिंह, राणा रणविजय, रानी जयराज कुमारी एवं स्वामी महेश्वरानंद का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है।

अकबर क्योंकि भारत की जनता की नब्ज पहचानता था एवं उदारतावादी था, अत: उसने नर्मी बरतते हुए और हिंदुओं की भावना का सम्मान रखते हुए मसजिद के बिल्कुल आगे एक चबूतरा बनाने एवं उस पर पूजा करने का अधिकार हिंदुओं को दिया। उस चबूतरे को 'राम चबूतरा' नाम दिया गया। अकबर ने राम-सीता चित्र मुद्रित सिक्के भी ढलवाए, जिन्हें उसने 'राम टका' नाम दिया। इसके साथ ही उसने रामायण की सचित्र प्रतियाँ भी तैयार करवाई। अबुल फजल ने अपनी पुस्तक में इस स्थल को राम जन्मभूमि माना है। इस तरह इस स्थल पर एक तरह से हिंदुओं का अधिकार हो गया, लेकिन औरंगजेब ने पुन: इस सौहार्द भरे वातावरण को नष्ट करने का बीड़ा उठाया। उसने अपने सरदार जाँबाज खान को अयोध्या भेजा, लेकिन गुरु गोविंद सिंह के अकालियों ने उसे हरा दिया। इस असफलता से क्रोधित होकर सन् १६६४ में औरंगजेब स्वयं गया और अयोध्या पर हमला कर राम चबूतरा ध्वस्त कर डाला। इस युद्ध में १०००० लोग मारे गए। इस प्रकार एक बार फिर यह स्थल अपनी प्रतीकात्मक छवि भी खो बैठा, लेकिन अयोध्या में रामनवमी उत्सव फिर भी जोर-शोर से होता रहा। इसके बाद भी कई बार हिंदुओं ने इसे मुक्त करवाने का प्रयत्न किया, लेकिन वे सफल नहीं हुए और फिर १९८४ में विश्व हिंदू परिषद् के द्वारा जो

आंदोलन छेड़ा गया, उसकी परिणति स्वरूप लाखों लोगों ने बाबरी मसजिद ढाचे को सन् १९९२ में ध्वस्त कर डाला। इसके देशव्यापी घातक परिणाम और फिर लंबी कानूनी प्रक्रिया सर्वज्ञात है। लेकिन इससे जो वातावरण निर्मित हुआ, उसके कारण संपूर्ण विश्व के ध्यान का केंद्र तो यह स्थल बन ही गया।

जैसा सुनता आया था, वैसी ही ऊबाऊ प्रक्रिया लंबी लाइन में होकर कैदखानेनुमा घुमावदार गलियारे, बाहर सी.आर.पी.एफ. के पहरा देते जवान और रामलला के जन्मस्थल पर रखी श्रीराममूर्ति के आगे एक क्षण रुकने की अनुमति, फिर लगभग धकिया कर आगे बढ़ने के संकेत के साथ बाहर आकर जब चैन की साँस ली, तब पहला विचार मन में यही आया कि श्रद्धा और राजनीति के इस अखाड़ा बने केंद्र को अगर श्रीराम स्वयं भी आकर देखते तो वितृष्णा से भर उठते। लेकिन इस विश्वस्तरीय लोकप्रिय स्थल के अलावा अभी अयोध्या में बहुत कुछ था, जो मेरे जैसे ज्ञान-पिपासु को राहत देनेवाला था और उनमें से प्रथम स्थान था कनक भवन।

कनक का सीधा सा अर्थ है सोना। कहते हैं कि मूल रूप से स्वर्ण से मढ़े इस महल को श्रीराम की पत्नी सीताजी को कैकयी ने मुँह दिखाई में भेंट किया था। श्रीराम एवं सीता के गोलोकवासी होने के बाद उनके पुत्र कुश ने इसे मंदिर का स्वरूप देकर श्रीराम एवं सीता के विग्रह यहाँ स्थापित करवाए। एक अन्य कथा के अनुसार द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने इस मंदिर का पुनर्निर्माण कराकर श्रीराम-सीता की प्रतिमाएँ यहाँ रखवाईं।

लगभग २०१६ वर्ष पूर्व महाराजा विक्रमादित्य ने, तत्पश्चात् महाराज समुद्रगुप्त ने पुनः इसका जीर्णोद्धार करवाया और अंतिम बार इस भवन का जीर्णोद्धार ओरछा राज्य की महारानी विश्वभानु कुँवरि ने करवाया। इस प्रकार यहाँ तीन युगल देव मूर्तियाँ स्थापित हैं। प्रस्तर युगल मूर्ति में श्रीराम एवं सीता दोनों के मुखमंडल जीवंत लगते हैं। निश्चय ही कारीगर ने दोनों प्रतिमाओं में प्राण फूँक दिए हैं। अंदर से वृहद् विशाल सभागार एवं बाहर से आकर्षक महल के मुख्य द्वार का रूप, इस भवन की समृद्ध स्थापत्य कला प्रमाण है। मंदिर के बाहर आँगन में सीता कूप है और ऊपर विश्राम कक्ष, जहाँ चाँदी की एक पतली परत पर चारों भाइयों के चरण-चिह्न उकेरे गए हैं। कनक भवन का शांत किंतु आस्था युक्त वातावरण और विग्रहों का स्वरूप निश्चय ही दर्शनीय एवं आनंददायक है।

वासदेव घाट क्षेत्र में वाल्मीकि भवन दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थल है, जिसे आधुनिक होने के बावजूद स्थायी आकर्षण माना जाता है। बाबा मणिरामदास की छावनी स्थित इस भवन की दीवारों पर संस्कृत में संपूर्ण वाल्मीकि रामायण लिखी हुई है, साथ ही श्रीराम कथा से संबंधित विशाल चित्र भी हैं। यहाँ लव-कुश के साथ वाल्मीकिजी की भव्य प्रतिमा है, साथ ही लाइब्रेरी में संस्कृत के मूल्यवान ग्रंथों का भंडार सँजोया गया है।

नृत्य गोपालदास के निर्देशन में यहाँ अंतरराष्ट्रीय सीताराम बैंक का संचालन भी किया जाता है। रामकथा लेखक के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि है। कनक भवन के निकट ही रत्न सिंहासन भवन है। जहाँ सचमुच रत्नों के सिंहासन पर ही रत्न जड़ी श्रीराम-सीता की काले पत्थर की प्रतिमाएँ विराजित हैं। साथ ही तीनों भाई भी विराजमान हैं और ऊपर कल्पवृक्ष की छाया है। बिल्कुल निकट ही जांबवान, विभीषण, गुरु वसिष्ठ, विश्वामित्र, सुग्रीव एवं अंगद की प्रतिमाएँ भी स्थापित की गई हैं। इसी कारण इस मंदिर को 'राजगद्दी' भी कहा जाता है।

इन महत्त्वपूर्ण स्थलों के अतिरिक्त दर्शनीय स्थलों में हनुमानगढ़ी चौराहे से ५०० मीटर दूर हनुमान बाग स्थित दिव्य शीश महल, जिसमें राम, लक्ष्मण एवं सीताजी की प्रतिमाएँ एवं कट ग्लास का आकर्षक काम है। रामगंज चौराहे पर नेशनल हाइवे से ३०० मीटर दूर बना तुलसी स्मारक भवन, रविदास मंदिर, रंगमहल, त्रेता के ठाकुर (यहाँ राम ने अश्वमेध यज्ञ किया), गुप्तार घाट (जहाँ राम ने शरीर छोड़ा), धीरेश्वरनाथ मंदिर (जिसे कौशल्या ने सीताजी के लिए बनवाया), सीता रसोई, कालाराम मंदिर (राम की पैड़ी के निकट स्वर्गद्वार क्षेत्र में यहाँ विक्रमादित्य के काल की मूर्तियाँ हैं), गुरुद्वारा ब्रह्मकुंड (ब्रह्मघाट के निकट, कहते हैं यहाँ ब्रह्माजी ने ५००० साल तप किया एवं गुरुनानक, गुरु तेगबहादुर एवं गुरु गोविंद सिंहजी ने भी यहाँ ध्यान लगाया) का नाम लिया जा सकता है। राम की पैड़ी के निकट धर्महरी महल पर आषाढ़ शुक्ल एकादशी पर विशाल उत्सव मनाया जाता है। कहते हैं कि धर्मराज ने श्रीविष्णु से यहाँ सदा रहने का वर माँगा, इस कारण भावरूप में दोनों यहाँ विराजमान हैं।

जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ कि अयोध्या जैन धर्म अनुयाइयों के लिए भी श्रद्धा का केंद्र है, क्योंकि जैन धर्म के आदि प्रवर्तक आदिनाथ सहित यह पाँच जैन तीर्थंकरों की जन्मस्थली है। नबाब फैजाबाद के कोषाध्यक्ष केसरी सिंह ने इन जन्मस्थलों को चिह्नित कर ५ मूर्तियाँ बनवाकर १७८१ विक्रम संवत् में स्थापित कराई। ये स्थल हैं स्वर्ग द्वार के निकट आदिनाथ मंदिर, गोलाघाट पर अनंतनाथ मंदिर, रामकोट के निकट सुमंतनाथ मंदिर, सप्तसागर के निकट अजीतनाथ मंदिर एवं सराय के निकट अभिनंदन नाथ मंदिर। रामगंज में २१ फीट ऊँची आदिनाथ की प्रतिमा भी दर्शनीय है।

अयोध्या नगर निश्चय ही पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण एवं आकर्षणों से युक्त स्थल है और न केवल श्रद्धालु वरन् आम पर्यटक भी यहाँ पूर्ण आनंद ले सकता है। लेकिन खेद है कि इसके प्रचार केंद्र में केवल श्रीरामजन्मभूमि है, इस कारण अन्य विशिष्ट स्थलों की ओर देश-विदेश के रुचिवान पर्यटक का ध्यान नहीं जाता है। यदि अन्य स्थलों का समुचित प्रचार-प्रसार किया जाए तो अयोध्या को विश्व पर्यटन मानचित्र पर भी एक प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में रेखांकित किया जा सकता है।

३६, अयोध्या कुंज ए,
आगरा-२८२००१ (उ.प्र.)

बाल-गीत

हर आँगन में उजियारा हो

● राजेंद्र निशेश

सुपरिचित रचनाकार। अब तक सात व्यंग्य-संग्रह, तीन बालगीत-संग्रह प्रकाशित। विभिन्न प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः सभी विधाओं पर रचनाओं का निरंतर प्रकाशन। चंडीगढ़ साहित्य अकादेमी एवं हरियाणा साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित।

दीपों का मेला

दीपों का मेला दीवाली,
रात सजी ज्यों तारों वाली।

कुमकुम, चंदन और मिष्टान्न,
सुमनों से महकी है थाली।

प्रेम, एकता, भाईचारा,
सारे भेद मिटानेवाली।

जुआ खेलना बुरी बला है,
कभी न लाए यह खुशहाली।

वातावरण शुद्ध रखने को,
सजे पटाखों बिन दीवाली।

आशाओं का बस वंदन हो,
आलोकित पथ, बात निराली।

हर आँगन में उजियारा हो,
रात किसी की रहे न काली।

दीपों का मेला दीवाली,
सारे भेद मिटानेवाली।

गंगा की पीड़ा

पर्वत, घाटी मुझको भाती,
गाँवों, शहरों चलती जाती।

तीर्थ, घाटों की पटरानी,
मन में पवित्र भाव जगाती।

मुझको पावन गंगा कहते
फिर क्यों दूषित मैं बन जाती?

कूड़ा-कचरा मुझमें डलता,
मेरी धारा सूख जाती।

रूठ रहे हैं मेरे जलचर,
मुझको उनकी व्यथा सताती।

तुम्हारी आस्था का प्रतीक,
पग-पग पर मैं छलती जाती।

विषैले रसायन डालो तुम,
मेरी घायल होती छाती।

विचलित-व्याकुल मैं हूँ रहती,
निज पीड़ा सही नहीं जाती।

मिलकर मुझे बचाना होगा,
तभी रहेगी पावन धाती।

प्रदूषण भगाते बादल

रिमझिम-रिमझिम पानी बरसाते बादल,
धरती की आकर प्यास बुझाते बादल।

आसमान में उड़ते आते पक्षियों से,
पेड़-पौधों को खूब ही भाते बादल।

खुशियों का चहुँओर लगता है मेला,
नदी संग अठखेलियाँ दिखाते बादल।

गुस्सैल गरमी के तड़पाते दिनों में,
मौसम को रंगीन बना जाते बादल।

हमारी नाकामियाँ दूर हटाने को,
वायु-प्रदूषण को दूर भगाते बादल।

बिना भेदभाव अपना सबकुछ लुटाते,
इसीलिए स्नेह सभी का पाते बादल।

मनभावन सावन

रिमझिम-रिमझिम पड़ती फुहार,
मनभावन सावन आया है!

कूक रही कोयल मतवाली
झूम रही हर डाली-डाली,
सरिता कलकल स्वर में गाती,
चहुँओर फैली हरियाली।

मस्त मोर है नाच दिखाता,
मनभावन सावन आया है!

उमड़-घुमड़कर बादल आते,
भर-भर झोली पानी लाते,

कैसे-कैसे रंग दिखलाते।
इंद्रधनुष कभी सज जाता,
मनभावन सावन आया है।

हँसते मुखड़े लगते प्यारे,
झूलों को लहराते सारे,
जोश-जोश में पेंग बढ़ाते,
इनके सभी खेल हैं न्यारे।
धूम मची है पकवानों की,
मनभावन सावन आया है!

२६९८, सेक्टर-४०-सी
चंडीगढ़-१६००३६
दूरभाष : ९४१७१०८६३२

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

'साहित्य अमृत' का अगस्त अंक वैश्विक हिंदी विशेषांक के रूप में बहुत अच्छी जानकारियों से भरपूर संग्रहणीय अंक लगा। आदि से अंत तक सभी आलेख, स्मरण, प्रतिस्मृति अच्छे लगे। सभी आलेख हिंदी भाषा को समर्पित हैं। विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर यह उचित ही है। कुछ कविताएँ स्वतंत्रता पर भी होतीं तो अच्छा होता। हिंदी भाषा के लिए आपका प्रयास सराहनीय है।

—विजयपाल सेहलंगिया, महेंद्रगढ़ (हरि.)

'साहित्य अमृत' का सितंबर अंक प्राप्त हुआ, प्रसन्नता हुई कि इतनी जल्दी मिल गया। संपादकीय में 'एक इतिहासपुरुष का महाप्रयाण' शीर्षक से अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर बहुत अच्छा लिखा गया है। वे कवि थे, कविहृदय थे। वे कहा करते थे कि राजनीति ने उनको कविता के क्षेत्र में कार्य करने से वंचित कर दिया। पुस्तक अंश के अंतर्गत 'अपनी बात' में अटल बिहारी वाजपेयीजी ने अपने जीवन के बारे में जो लिखा, वह पढ़ने को मिला। उसमें उनकी कविताएँ भी पढ़ने का आनंद आया। प्रतिस्मृति के अंतर्गत श्री शिवपूजन सहाय जी पर श्रीनारायण चतुर्वेदीजी का आलेख पढ़ा। उनके जीवन के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। डॉ. मालती शर्मा का आलेख 'देवनागरी लिपि से ही होगी भारतीय अस्मिता और भाषाओं की रक्षा' बहुत ही अच्छा सुझाव है कि हमारी सरकार इस पर ध्यान दे। सरकारें आती हैं, जाती हैं, पर इस विषय पर मौन हैं। एक और आलख है आचार्य बलवंत का 'अंग्रेजी मानसिकता से मुक्त हों', जिसमें अंग्रेजी से मुक्ति और हिंदी को प्राथमिकता के लिए कहा गया है। हिंदी पर ही दीपक शर्मा का आलेख अच्छा है। रामदरश मिश्र जी का 'शिक्षक दिवस' पर डायरी अंश में संस्मरण पढ़ने को मिला। इस अंक में पाँच कहानियाँ हैं। 'घोष बाबू का स्कूल' में प्रकाश मनुजी ने बच्चों की पढ़ाई के विषय में लिखा है। 'विकास की ओर' कहानी में इंदु शुक्ला ने छोटे-छोटे लोगों ने किस प्रकार विकास किया, लिखा है। रेणु आस्थाना की कहानी 'एडवांस बुकिंग' में मंदिरों में दर्शन और आरती के लिए पहले से एडवांस बुकिंग कराने की प्रथा पर व्यंग्य किया है। रजनी गोसाईं की कहानी 'बरसे मेघा फिर से' उत्तराखंड की कहानी है केदरानाथ मंदिर की, जब बहुत वर्षा हुई थी। गुंजन गुप्ता द्वारा लिखी चार धाम की यात्रा बहुत रोचक है।

—विनोदशंकर गुप्त, हिसार

'साहित्य अमृत' का सितंबर अंक मिला। वैसे तो हर बार ही पत्रिका बेजोड़ होती है (कोई तुलना ही नहीं), किंतु इस बार के अंक में अंतोन चेखव की कहानी 'वह शर्त' पढ़कर आँखें जार-जार रोती रहीं। बहुत सुंदर कहानी और उतना ही सटीक अनुवाद भी। धन्यवाद व बधाई बाल मुकुंदजी व साहित्य अमृत को, जिन्होंने इतनी सुंदर कहानी से हमें रूबरू कराया, बाकी रचनाएँ भी सुंदर हैं। पुनः धन्यवाद।

—माला वर्मा, प. बंगाल

'साहित्य अमृत' का सितंबर अंक समय पर प्राप्त हुआ। सभी रचनाएँ स्तरीय लगीं। अटलजी का जीवन चरित्र, विकास यात्रा, कविरूप और पत्रकार का प्रस्तुतीकरण बहुत भाया। उनकी कविता 'हिंदू तनमन हिंदू जीवन रग-रग हिंदू मेरा परिचय' ने लाखों हिंदू युवकों में देश पर जीने-मरने की उत्कंठा जगाई। संपादकीय में स्थान देने और उन पर लेख लिखने के लिए धन्यवाद। गिरिराज शरण अग्रवालजी की कविता 'कहाँ रहोगे तुम' एक भावपूर्ण रचना लगी। प्रकाश मनु कृत 'घोष बाबू का स्कूल' अपनी तरह की अनोखी रचना है। सदियों से दलित वर्ग में निराशा और बेबसी का वातावरण है, उससे कौन अनभिज्ञ है। घोष बाबू को समाज-सेवक के रूप में प्रस्तुत कर मनुजी ने 'आदर्श' की नींव रखी है। इंदु शुक्ला रचित 'विकास की ओर' एक कहानी न होकर एक आलेख कही जानेवाली रचना है। आज के नवयुवक-नवयुवतियाँ जाति-पाँति भूलकर कोई-न-कोई काम ढूँढ़कर अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहे हैं। वे ऐसे तनावपूर्ण और खौफजदा माहौल में भी जीवनराग ढूँढ़ने का प्रयास करते रहते हैं। लेखिका ने इसके कई उदाहरण भी प्रस्तुत कर अपना मंतव्य स्पष्ट किया है। आलोचना तो लोकतंत्र में होती ही है। अपना-अपना नजरिया है। बेशक देश विकास की ओर अग्रसर है। ऐसा मेरा विश्वास है। ऐसी सामयिक रचना के लिए इंदु शुक्लाजी को बधाई।

—बी.डी. बजाज, दिल्ली

'साहित्य अमृत' का सितंबर अंक समय से मिल गया। आवरण पृष्ठ पर विभिन्न कार्यक्रमों में अटलजी की उपस्थिति उनके साहित्य प्रेम को दरशाती है। संपादकीय आलेख में उन्हें इतिहास-पुरुष के रूप में याद किया गया है, अटलजी बहुआयामी व्यक्तित्व थे। संपादकीय हर बार कई समस्याओं पर बेबाक टिप्पणियों से सजा होता है। अपनी बात के माध्यम से अटलजी के जीवन के बारे में बहुत सी बातें जानने को मिलीं। प्रकाश मनु कृत 'घोष बाबू का स्कूल' प्रेरणादायी है, सेवानिवृत्त लोग इस प्रकार से अपना खाली समय रचनात्मक कार्यों में लगा सकते हैं। तुलसी देवी तिवारी की 'और वह रो पड़ा' कहानी बड़ी मार्मिक है। 'विकास की ओर', 'बरसे मेघा फिर से' भी प्रेरणादायी कहानियाँ हैं। डॉ. मालती शर्मा ने हिंदी को लेकर होनेवाले फसाद का सटीक समाधान बताया है। देवनागरी लिपि के संरक्षण में सभी भारतीय भाषाएँ पुष्पित-पल्लवित हो सकती हैं। आचार्य बलवंत ने अंग्रेजी मानसिकता रखनेवालों की अच्छी खबर ली है। सत्य शुचि की लघुकथाएँ मारक एवं पूरी कहानी का आनंद देती हैं। पावस के दोहे मन को हर्षित करनेवाले हैं। कुलभूषण सोनी की कविताएँ अच्छी लगीं। गुंजन गुप्ता ने घर बैठे ही चार धाम की यात्रा बखूबी करा दी है, उन्हें साधुवाद। वीर कुँवर सिंह स्वाधीनता संग्राम के कुछ अद्‌भत योद्धा हैं, लोककाव्य में उनकी वीरता की कहानियाँ गाई जाती हैं। रामदरश मिश्रजी की डायरी शिक्षक दिवस पर मन पर छाप छोड़ गई। गिरिराज शरण की कविताएँ मन को छू गई। पूरा अंक पठनीय एवं संग्रहणीय बन पड़ा है।

—रामप्रकाश राय, गोरखपुर (उ.प्र.)

वर्ग पहेली (१५७)

अगस्त २००५ अंक से हमने '**वर्ग पहेली**' प्रारंभ की, जिसे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा—

१. प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।
२. कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।
३. प्रविष्टियाँ ३१ अक्तूबर, २०१८ तक हमें मिल जानी चाहिए।
४. पूर्णतया शुद्ध उत्तरवाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें दो सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।
५. पुरस्कार विजेताओं के नाम-पते दिसंबर २०१८ अंक में छापे जाएँगे।
६. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।
७. अपने उत्तर '**वर्ग पहेली', साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२** के पते पर भेजें।

वर्ग पहेली (१५५) का शुद्ध हल

१ वृ	द्ध	२ पु	३ रु	ष	■	४ भा	र	५ ती
ष	■	६ ल	त	■	७ मा	ला	■	स
८ भ	९ र	■	१० बा	११ र	ह	■	१२ सी	मा
■	१३ स	१४ भा	■	ह	■	१५ सा	धा	र
१६ अ	■	१७ व	य	स्य	भा	व	■	खाँ
१८ स	१९ ह	ज	■	म	■	२० न	२१ ई	■
२२ मा	या	■	२३ आ	य	२४ त	■	२५ ख	२६ रा
न	■	२७ सं	ज्ञा	■	२८ द	२९ या	■	व
३० ता	क	त	■	३१ अ	नु	क	र	ण

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **डॉ. महेश्वरी रंगनाथन**
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
पाँचवा तल, मूर मार्केट कॉम्प्लेक्स
दक्षिण रेलवे, चेन्नै-३

२. **श्रीमती निशि राजेश**
१०२/४, सेक्टर-१२
अक्कुलगरम, विशाखापत्तनम्
(आं.प्र.)

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई।

वर्ग-पहेली १५५ के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं—सर्वश्री ब्रह्मानंद 'खिच्ची', फकीरचंद ढुल (कैथल), विजयपाल सेहलंगिया (महेंद्रगढ़), निखिल नाहड़िया (नारनौल), माणिक तुलसीराम गौड़ (बेंगलुरु), ए. श्रीनिवासन (मदुरै), रामेश्वर कुलमित्र (कबीरधाम), विनीता सहल (मुंबई), प्रभात कुमार गुप्ता (मोहाली), रुक्मणी संगल (पटियाला), पुखराज वार्ष्णेय, सुभाष शर्मा (दिल्ली), रेणु मिश्र (जयपुर), शिवशरण दुबे (कटनी), राधारमण त्रिपाठी (राजगढ़), मोहन जगदाले (उज्जैन), बद्रीलाल व्यास (ब्यावरा), शिवानंद सिंह सहयोगी (मेरठ), ओंकारनाथ मिश्र, खुशी चतुर्वेदी (लखनऊ), मिथलेश कुमारी (कन्नौज)।

बाएँ से दाएँ—

१. शक्कर की अधिकता से उत्पन्न एक रोग (४)
४. किसी व्यक्ति के प्रतिनिधि रूप में काम करने का कानूनी अधिकार प्राप्त व्यक्ति (४)
७. सच्ची स्थिति, यथार्थता (५)
८. प्रिय, आनंददायक (२)
१०. वह वस्तु, जिससे रोग दूर हो (२)
११. प्रजापति ब्रह्मा का जीवन-काल (४)
१२. नाना (४)
१३. कैदी, बंदी (४)
१५. चालाकी (४)
१७. रजनी, निशा (२)
१८. माता के पिता (२)
१९. पश्चात्ताप करना (२,३)
२१. टाल देना (४)
२२. वेतन (४)

ऊपर से नीचे—

१. सुंदर, आकर्षक (४)
२. सूखा फल (२)
३. दस्तकारी (४)
४. अभियोग (४)
५. चिट्ठी (२)
६. सारथि (४)
९. वेदव्यास कृत एक ग्रंथ (५)
१०. हवा की कमी से साँस रुकना (२,३)
१३. पतन, अवनति (४)
१४. फिसलना (४)
१५. पुत्री वंश (४)
१६. स्वेच्छाचारी शासक (४)
१९. ···मारना, सिलाई करना (२)
२०. मैदे से बनी एक प्रकार की बड़ी रोटी (२)

वर्ग पहेली (१५६) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (१५७)

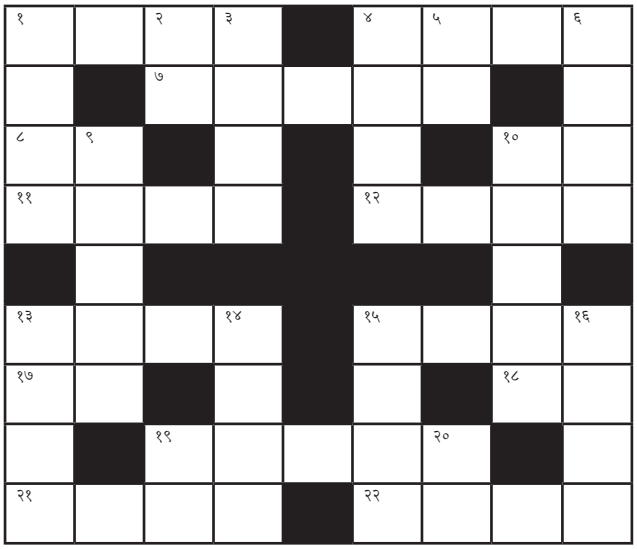

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

दूरभाष : .....

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार घोषित

३१ अगस्त को प्रो. सदानंद गुप्ता की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा वर्ष २०१८ के पुरस्कारों की सूची जारी की गई, जिसमें सर्वश्री रमेश चंद्र शाह को 'भारत-भारती पुरस्कार', मथुरेश नंदन कुलश्रेष्ठ, हरिमोहन मालवीय, अमरनाथ सिन्हा, आचार्य निशांत केतु, देवीसहाय पांडेय 'दीप', राम नरेश सिंह 'मंजुल', नंदलाल मेहता 'वागीश', सत्यधर शुक्ल, रामबोध पांडेय, रमेश चंद्र शर्मा, राम सहाय मिश्र, सुंदरलाल कथूरिया, पशुपतिनाथ उपाध्याय, ओमप्रकाश सिंह, मिथिलेश दीक्षित, चमनलाल गुप्त, चंद्रकिशोर सिंह, अनुज प्रताप सिंह, दीप्ति गुप्ता, दयानंद पांडेय को 'साहित्य भूषण'; रवींद्र नाथ श्रीवास्तव 'जुगानी भाई' को 'लोक भूषण सम्मान', क्षेत्रपाल गंगवार को 'कला भूषण सम्मान', कैलाश देवी सिंह को 'विद्या भूषण सम्मान', गणेश शंकर पालीवाल को 'विज्ञान भूषण सम्मान', रमेश नैयर को 'पत्रकारिता भूषण सम्मान', मृदुल कीर्ति को 'प्रवासी भारतीय हिंदी भूषण सम्मान', शकुंतला कालरा को 'बाल साहित्य भारतीय सम्मान', सुधाकर सिंह को 'मधु लिमये साहित्य सम्मान', गोविंद व्यास को 'पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी साहित्य सम्मान', विष्णु गिरि गोस्वामी को 'विधि भूषण सम्मान', अनिल प्रभा कुमार को 'हिंदी विदेश प्रसार सम्मान', वागीश दिनकर व अशोक कुमार दुबे को 'मदन मोहन मालवीय विश्वविद्यालय स्तरीय सम्मान', अशोक प्रभाकर कामत, टी.वी. कट्टीमनी, बनारसी त्रिपाठी, माणिक्यांबा 'मणि', विनोद बब्बर, एन.जी. देवकी, ए.बी. साई प्रसाद, विनोद कुमार गुप्त 'निर्मल' विनोद, मेयार सनेही 'शब्बीर हुसैन', श्रीवत्स शर्मा को 'सौहार्द सम्मान', शीला पांडे को 'सूर पुरस्कार', उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ' को 'मलिक मुहम्मद जायसी पुरस्कार', ओम प्रकाश शुक्ल 'अमिय' को 'श्रीधर पाठक पुरस्कार', शिवमूर्ति सिंह को 'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार', दयाराम वर्मा 'बेचैन' को 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार', हरिलाल 'मिलन' को 'कबीर पुरस्कार', आचार्य देवेंद्र देव को 'तुलसी पुरस्कार', सरोजिनी अग्रवाल को 'भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार', मरियम शर्मा को 'मदन मोहन मालवीय पुरस्कार', वदन उपाध्याय को 'भगवानदास पुरस्कार', रविशंकर पांडेय को 'महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार', मुकेश कुमार को 'बीरबल साहनी पुरस्कार', राधेश्याम शुक्ल को 'पं. सत्यनारायण शास्त्री पुरस्कार', सूर्यनाथ सिंह को 'प्रेमचंद पुरस्कार', देवेंद्र देव को 'जयशंकर प्रसाद पुरस्कार', अलका प्रकाश को 'रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार', हरिओम को 'आचार्य नरेंद्र देव पुरस्कार', रघोत्तम शुक्ल को 'सुब्रह्मण्यम भारतीय पुरस्कार', बृजनाथ श्रीवास्तव को 'निराला पुरस्कार', अभिनव अरुण को 'दुष्यंत कुमार पुरस्कार', ओमप्रकाश सिंह को 'बाबू विष्णुराव पराड़कर पुरस्कार', पंकज प्रसून को 'के.एन. भाल पुरस्कार', भगवंत अनमोल को 'बालकृष्ण शर्मा नवीन पुरस्कार', सचींद्र शुक्ल को 'संपूर्णानंद पुरस्कार', राम नगीना मौर्य को 'यशपाल पुरस्कार', सुरेश कुमार सिंह को 'हजारी प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार', मुन्ना तिवारी को 'पं. रामनरेश त्रिपाठी पुरस्कार', अनूप शुक्ल को 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय पुरस्कार', एम.आई. राजस्वी को 'पांडेय बेचन शर्मा उग्र पुरस्कार', कुसुम बुढलाकोटी को 'सरस्वती पुरस्कार', शशि शुक्ला को 'महादेवी वर्मा पुरस्कार', आलोक सक्सेना को 'हरिशंकर परसाई पुरस्कार', कन्हैयालाल चंचरीक को 'विजयदेव नारायण साही पुरस्कार', संतोष कुमार सिंह को 'सोहनलाल द्विवेदी पुरस्कार', इंद्रबहादुर सिंह 'इंद्रेश' को 'वंशीधर शुक्ल पुरस्कार', इंद्रेश प्रकाश गुप्ता को 'हृषीकेष चतुर्वेदी पुरस्कार', सुमित्रा पांडेय को 'भिखारी ठाकुर पुरस्कार', अशोक कुमार गुप्त 'अशोक' को 'नजीर अकबराबादी पुरस्कार', दयाराम मौर्य 'रत्न' को 'अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' पुरस्कार', विजय सिंह राघव को 'बाबू श्याम सुंदरदास पुरस्कार', सांत्वना मिश्रा को 'नंद किशोर देवराज पुरस्कार', मदन कुमार वर्मा को 'के.एम. मुंशी पुरस्कार', देवव्रत चौबे को 'गुलाब राय पुरस्कार', विनम्रसेन सिंह को 'भोलानाथ तिवारी पुरस्कार', राधेश्याम मौर्य को 'आचार्य रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी पुरस्कार', कैलाश द्विवेदी को 'डॉ. सतीश चंद्र राय पुरस्कार', बालेंदु द्विवेदी को 'अमृतलाल नागर पुरस्कार', चंद्रभूषण त्रिपाठी को 'आनंद मिश्र पुरस्कार', व्यास मणि त्रिपाठी को 'रामबिलास शर्मा पुरस्कार', राजेंद्र त्रिपाठी 'रसराज' को 'ईश्वरी प्रसाद पुरस्कार', छाया चक्रवर्ती को 'काका कालेलकर पुरस्कार', जयकृष्णराय तुषार को 'बलबीर सिंह रंग पुरस्कार', शिवकुमार बिलगरामी को 'अदम गोंडवी पुरस्कार', कैलाश नाथ पांडेय को 'धर्मवीर भारती पुरस्कार', दिलीप तिवारी को 'आर्यभट्ट आशिष पुरस्कार', अवंतिका सिंह को 'डॉ. रांगेय राघव पुरस्कार', संजीव कुमार गंगवार को 'होमी जहाँगीर भाभा पुरस्कार', मोनिका को 'रामप्रसाद विद्यार्थी रावी पुरस्कार', सतीश चतुर्वेदी शाकुंतल को 'विद्यानिवास मिश्र पुरस्कार', सत्य प्रिय पांडेय को 'बलभद्र प्रसाद दीक्षित पढ़ीस पुरस्कार', कृष्ण कुमार पांडेय को 'जगदीश गुप्त पुरस्कार', सत्येंद्र पाल सिंह को 'विष्णु प्रभाकर पुरस्कार', अशोक अंजुम को 'धर्मयुग पुरस्कार', मंजरी शुक्ल को 'विद्यावती कोकिल पुरस्कार', आर.वी. सिंह को 'शरद जोशी पुरस्कार', ब्रजेंद्र नारायण द्विवेदी 'शैलेश' को 'नरेश मेहता पुरस्कार', शुभम श्रीवास्तव ओम को 'हरिवंश राय बच्चन युवा गीतकार सम्मान', बीना शर्मा को 'पं. बद्री प्रसाद शिंगलू स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया जाएगा। □

श्री अरविंद कुमार सम्मानित

विगत दिनों हिंदी भवन के सभागार में राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन की १३७वीं जयंती के अवसर पर प्रख्यात पत्रकार पंडित भीमसेन विद्यालंकार की स्मृति में प्रतिवर्ष हिंदी भवन द्वारा दिए जानेवाले 'हिंदीरत्न' सम्मान से श्री अरविंद कुमार को उनकी दीर्घकालीन हिंदी सेवा के लिए सर्वश्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, बालस्वरूप राही, विजयकुमार मल्होत्रा, राकेश टंडन, गोविंद व्यास एवं महेशचंद्र शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। संचालन श्रीमती सरला माहेश्वरी ने किया तथा धन्यवाद डॉ. गोविंद व्यास ने ज्ञापित किया। □

श्रद्धांजलि एवं सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों उत्तर प्रदेश के कासगंज स्थित श्रीमती गंगा देवी धर्मशाला में श्रीमती रंजना सक्सेना (नीरजजी की पुत्रवधु) की अध्यक्षता में विश्वविख्यात गीतऋषि पद्मभूषण गोपालदास नीरज की स्मृति में श्रद्धांजलि एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें टू मीडिया द्वारा प्रकाशित सितंबर अंक का लोकार्पण श्री प्रभात गुंजन के करकमलों

से संपन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री अमरपाल सिंह, गुंजन (नीरजजी का पुत्र), गिरीश पांडेय, गयाप्रसाद मौर्य रजत, राजेश मंडार, रेखा दीक्षित 'बरखा', श्रुति बघेल, आलोक वर्मा, उमारानी बंसल, विद्युत लता कुलश्रेष्ठ, श्रीकृष्ण शरद, श्रवण कुमार, राकेश चौधरी, अजय झंवर, राजवीर सिंह, आयुष भारद्वाज ने अपना योगदान दिया। इस अवसर पर श्री ओम प्रकाश प्रजापति को प्रतीक-चिह्न एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। सर्वश्री जय को 'परमपूज्य महाराज बाबा पंडित रामदयाल स्मृति पुरस्कार', पुष्पा जोशी को 'स्व. भरत सिंह नंबरदार स्मृति पुरस्कार', गयाप्रसाद मौर्य रजत को 'स्व. चौब सिंह स्मृति पुरस्कार', राजेश मंडार को 'स्व. प्यारेलाल वर्मा स्मृति पुरस्कार', गिरीश पांडेय को 'स्व. नेत्रपाल सिंह स्मृति पुरस्कार', प्रमोद प्यासा को 'स्व. अनार सिंह स्मृति पुरस्कार', ओमप्रकाश प्रजापति को 'स्व. नेतराम सिंह स्मृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। आभार डॉ. चंद्रपाल मिश्र 'गगन' एवं श्री नरेंद्र मगन ने व्यक्त किया। ☐

सम्मान समारोह संपन्न

५ अगस्त को टीकमगढ़ के 'आकांक्षा' पब्लिक स्कूल में डॉ. के.पी. त्रिपाठी की अध्यक्षता में स्व. पन्नालालजी नामदेव स्मृति पंचम सम्मान समारोह, म.प्र. लेखक संघ जिला इकाई का 'वार्षिक उत्सव' एवं कवि सम्मेलन डॉ. गौरी शंकर उपाध्याय 'सरल' के मुख्य आतिथ्य तथा श्री के.के. पाठक व मो. शकील के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. गौरी शंकर उपाध्याय 'सरल' को 'स्व. पन्नालालजी नामदेव पंचम स्मृति साहित्य सम्मान' एवं डॉ. के.पी. त्रिपाठी को 'स्व. रूपाबाई नामदेव स्मृति सम्मान २०१८' से सम्मानित किया गया। इसी क्रम में श्री राना लिधौरी द्वारा संपादित जिले की एकमात्र साहित्यिक पत्रिका 'आकांक्षा' के १३वें अंक एवं श्री यदुकुल नंदन खरे के कहानी-संग्रह 'आपके शहर में' का विमोचन किया गया। डॉ. रूखसाना सिद्दीकी ने पुस्तक की समीक्षा पढ़ी। संचालन श्री अजीत श्रीवास्तव ने किया तथा आभार श्री राजीव नामदेव ने व्यक्त किया। ☐

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों लखनऊ के इंदिरानगर में श्री कृष्ण कुमार यादव की अध्यक्षता में साहित्य के लिए डॉ. कौशलेंद्र पांडेय, चित्रकला हेतु श्री अमरनाथ गौड़, नाट्य के क्षेत्र में श्री ललित सिंह पोखरिया एवं संगीत के लिए सुश्री मीरा माथुर को 'कला गुरु सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री संगीता श्रीवास्तव, सरोज खुल्बे, राखी अग्रवाल, ममता त्रिपाठी ने गीत गायन किया। संचालन श्री अखिलेश्वर नाथ पांडेय ने किया तथा आभार श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने व्यक्त किया। ☐

श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' सम्मानित

विगत दिनों वाराणसी के पराड़कर स्मृति भवन में डॉ. विद्याकांत तिवारी की अध्यक्षता में श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' को उनके नवप्रकाशित गजल-संग्रह 'सीपियाँ हड़ताल पर' के लिए 'रामदेवी गहलौत स्मृति सजल सुरभि पुरस्कार' से श्री चंद्रसेन विराट के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री हरिराम द्विवेदी, नर्वदेश्वर राय, विजय राठौड़ के विशिष्ट आतिथ्य में सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें शॉल, कंठहार, स्मृति-चिह्न, सम्मानोपाधि के साथ पाँच हजार एक सौ एक रुपए की राशि भेंट की गई। आभार श्री संतोष कुमार सिंह ने व्यक्त किया। ☐

व्याख्यानमाला एवं सम्मान समारोह संपन्न

सागर में हिंदी दिवस पर 'श्यामलम्' संस्था द्वारा डॉ. अजय तिवारी की अध्यक्षता में 'हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ' विषय पर व्याख्यामाला आयोजित की गई, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया, विशिष्ट अतिथि श्री शैलेंद्र जैन, सारस्वत अतिथि प्रो. सुरेश आचार्य, सर्वश्री अनीता नेमा, उमाकांत मिश्र, शिव रतन यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. चंचला दवे ने किया। द्वितीय सत्र में 'लोकचेतना पर्व' के तहत सर्वश्री अशोक मनवानी को 'श्यामलम् हिंदी सेवा सम्मान', अनिल चंद्र मैत्रा को 'कर्मशील जीवन सम्मान', रामरतन पांडेय को 'गोविंदप्रसाद शास्त्री संस्कृत सम्मान', गोवर्धन को 'शादीलाल आचार्य संस्कृति सम्मान', संजीव अग्रवाल को 'डॉ. रामदास तिवारी चिकित्सा सम्मान', संजीव रोहितास को 'व्ही.के. पाठक निष्ठावान कर्मचारी सम्मान', धर्म रक्षा संगठन को 'श्रीमती ज्योत्स्ना दुबे समाज-सेवा सम्मान', अखिलेश चौरसिया को 'आर.एन. शुक्ला आदर्श शिक्षक सम्मान', आशीष तिवारी को 'श्यामाकांत मिश्र रंगकर्मी सम्मान', हरीकांत दुबे को 'एम.पी. बलैया ललित कला सम्मान', आकाश चौरसिया को 'मनोहरलाल जैन श्रेष्ठ युवा सम्मान', यशपाल अरोरा को 'महेश कुमार ज्योतिषी खेल गौरव सम्मान', रेशु जैन को 'देवेंद्र सिंह गौर पत्रकारिता सम्मान', अमरकुमार जैन को 'डॉ. विजय त्रिपाठी उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान', आभा भारती को 'डॉ. सरोज तिवारी नारी प्रतिभा सम्मान', विष्णु आर्य योगाचार्य को 'स्वामी विवेकानंद सम्मान', घरौंदा सामाजिक संस्था को 'श्रीमती लीलावती शुक्ला मानवता सम्मान', बिहारी सागर को 'हीरा सागर बुंदेली लोक सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ. आशीष द्विवेदी के संपादन में इंक मीडिया इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित 'इंक पावर' के हिंदी साहित्य विशेषांक का विमोचन किया गया। संचालन सर्वश्री रमाकांत शास्त्री, आशीष ज्योतिषी व कपिल बैसाखिया ने किया तथा आभार श्री संतोष पाठक ने व्यक्त किया। ☐

'तंत्र के पंजों में लोकतंत्र' कृति विमोचित

१० अगस्त को दिल्ली के हिंदी भवन में श्री बालस्वरूप राही की अध्यक्षता में श्री बी.एल. गौड़ द्वारा रचित पुस्तक 'तंत्र के पंजों में लोकतंत्र' का लोकार्पण श्री रामबहादुर राय के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री आलोक मेहता, राहुल देव, राकेश पांडे के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। संचालन डॉ. अशोक ज्योति ने किया। ☐

चार कृतियाँ लोकार्पित

२९ जुलाई को कोलकाता के 'उदंत मरुतृण' के तत्त्वावधान में श्री लखवीर सिंह 'निर्दोष' की अध्यक्षता में सर्वश्री सत्यप्रकाश भारतीय के 'शिखर से नीचे—मेरी ही बातें हैं', शिव प्रकाश दास के 'अपने हिस्से का सूरज', अमित कुमार अंबष्ट 'आमिली' के 'खुशियों का ठोंगा' एवं अमरदीप कुलश्रेष्ठ के 'बात वो नहीं है' काव्य-संग्रहों का लोकार्पण श्री विश्वंभर नेवर के मुख्य आतिथ्य एवं श्री रामेश्वर नाथ मिश्र 'अनुरोध' के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री अनिल उपाध्याय, अभिज्ञात, अजयेंद्र नाथ त्रिवेदी, संजय जायसवाल, शशि कुमार

शर्मा, जितेंद्र जीतांशु ने अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद श्री अमरदीप कुलश्रेष्ठ ने ज्ञापित किया। ☐

'ओम फट् फटाक' कृति लोकार्पित

१० सितंबर को अलीगढ़ के संत फिदेलिस स्कूल जूनियर विंग में श्री अशोक 'अंजुम' के नाटक-संग्रह 'ओम फट् फटाक' का लोकार्पण किया गया, जिसमें सर्वश्री भारती शर्मा, अजयदीप सिंह, प्रेम कुमार, वेदप्रकाश, सुबोध नंदन शर्मा, फादर सनी कोटूर, राजेश कुमार, हरीश बेताब, मुजीब शहजर, प्रमोद राघव, सुनील वाजपेयी 'सरल', सुदर्शन तोमर ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. पूनम शर्मा ने किया।☐

विशेषांक लोकार्पित

२५ अगस्त को भोपाल के राज्य संग्रहालय में प्रो. रमेश दवे की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में साहित्य और संस्कृति की त्रैमासिकी 'पहला अंतरा' के विशेषांक का लोकार्पण श्री मनोज श्रीवास्तव के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री संतोष चौबे, चंद्रसेन विराट, अभिलाष के विशिष्ट आतिथ्य में श्रीमती इंद्रजीत पबरा द्वारा किया गया। सर्वश्री नरेंद्र दीपक, राजकुमारी शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री विनय उपाध्याय ने किया तथा आभार श्री योगेश शर्मा ने व्यक्त किया। ☐

'कहाँ गए ये लोग' कृति लोकार्पित

विगत दिनों हिंदी भवन के सभागार में ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित समारोह में श्रीमती सविता चड्ढा के लेख-संग्रह 'कहाँ गए ये लोग' का लोकार्पण डॉ. बिंदेश्वर पाठक ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री राजकुमार सैनी, घमंडीलाल अग्रवाल, अतुल प्रभाकर, सुधाकर पाठक, गोविंद व्यास, हरीश नवल, श्याम सिंह शर्मा, बी.एल. गौड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. शिवशंकर अवस्थी ने किया तथा आभार डॉ. सरोजिनी प्रीतम ने व्यक्त किया। ☐

'हॉकर से हाकिम' कृति लोकार्पित

विगत दिनों जयपुर के चौड़ा रास्ता में श्री विजय सिंह द्वारा लिखित कृति 'हॉकर से हाकिम' का लोकार्पण श्री मुन्नालाल यादव के मुख्य आतिथ्य एवं श्री अजय यादव के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। ☐

लोकार्पण समारोह संपन्न

विगत दिनों क्षितिज संस्था द्वारा मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति के सभागार में श्री सूर्यकांत नागर की अध्यक्षता एवं श्री राकेश शर्मा के मुख्य आतिथ्य में डॉ. वसुधा गाडगिल के प्रथम संग्रह 'साझा मन' एवं उनके द्वारा व श्रीमती अंतरा करवड़े द्वारा संपादित 'कृति आकृति' का लोकार्पण किया गया, जिसमें सर्वश्री सतीश राठी, ब्रजेश कानूनगो, संतोष सुपेकर, अलकनंदा साने, ज्योति जैन, जितेंद्र गुप्ता, संदीप राशिनकर, पद्मा सिंह, अश्विनी कुमार दुबे, चैतन्य त्रिवेदी ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. गरिमा संजय दुबे ने किया तथा आभार डॉ. वसुधा गाडगिल ने व्यक्त किया। ☐

कवि सम्मेलन संपन्न

१४ अगस्त को पोर्ट ब्लेयर के हिंदी भवन में श्री इंद्र पाल सिंह के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. नवलेंद्र सिंह के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री जगदीश नारायण राय, व्यास मणि त्रिपाठी, जय बहादुर शर्मा, ब्रजेश तिवारी, दुर्ग विजय सिंह 'दीप', राम कृपाल तिवारी, डी.एम. सावित्री, मंजू नायर, एन. लक्ष्मी, स्मृति आनंद, बासू कुमार, आदित्य कुमार शुक्ल, रागिनी राय, लक्ष्मी, रितेश कुमार सिंह, नवीन कुमार सिंह, भरत शर्मा ने काव्य पाठ किया। संचालन डॉ. व्यास मणि ने किया तथा धन्यवाद श्री जगदीश नारायण राय ने ज्ञापित किया। ☐

परिचर्चा एवं काव्यपाठ संपन्न

१२ अगस्त को इलाहाबाद के प्रकृति संरक्षण-मंच 'साहित्यांजलि प्रज्योदि' के तत्त्वावधान में डॉ. पृथ्वीनाथ पांडेय की अध्यक्षता एवं प्रो. रामकिशोर शर्मा के मुख्य आतिथ्य में आयोजित 'सोनेवाले! जागो अब' विषयक नुक्कड़ परिचर्चा में सर्वश्री रणविजय निषाद, प्रदीप चित्रांशी, रोशनी शुक्ल, धारवेंद्र प्रताप त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पर्यावरण विषयक आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री कैलाशनाथ पांडेय, उर्वशी उपाध्याय, एस.पी. श्रीवास्तव, केशव सक्सेना, मुनींद्र श्रीवास्तव, कविता उपाध्याय, देवेश, जयशंकर मिश्र, उमेश श्रीवास्तव ने काव्य-पाठ किया। संचालन डॉ. प्रदीप चित्रांशी ने किया तथा आभार श्री सुनील मिश्र ने ज्ञापित किया। ☐

काव्य-गोष्ठी संपन्न

२२ अगस्त को भोपाल में भोजपाल साहित्य संस्थान द्वारा श्री प्रियदर्शी खैरा की अध्यक्षता में आयोजित काव्य-गोष्ठी में सर्वश्री विजी श्रीवास्तव, मलय जैन, गोकुल सोनी, जगदीश किंजल्क, अशोक गौतम, गोपेश बाजपेयी, अशोक व्यास, सतीश श्रीवास्तव, प्रमोद तिवारी, रमेश नंद ने श्री अशोक निर्मल के मुख्य आतिथ्य एवं श्री सुदर्शन कुमार सोनी के विशिष्ट आतिथ्य में रचना पाठ किया। संचालन श्री गोकुल सोनी ने किया तथा आभार श्री सुदर्शन कुमार सोनी ने व्यक्त किया। ☐

चर्चा-गोष्ठी संपन्न

विगत दिनों नारायणी साहित्य अकादमी एवं ताराचंद विमला देवी फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में वृंदावन सभागार में श्री एल.एस. सोलंकी की अध्यक्षता में 'विभिन्न संस्थानों की गृह पत्रिकाओं का हिंदी एवं सामाजिक विकास में योगदान' विषय पर चर्चा आयोजित की गई, जिसमें मुख्य अतिथि श्री त्र्यंबक शर्मा, सर्वश्री मृणालिका, रजनीश यादव, समीर दीवान, साकेत सहाय ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री राजेंद्र ओझा ने किया तथा धन्यवाद श्री अजय अवस्थी किरण ने ज्ञापित किया। द्वितीय सत्र में के कवि-सम्मेलन में सर्वश्री अमरनाथ त्यागी, जे.के. डागर, मंजुला श्रीवास्तव, लतिका भावे, कान्हा कौशिक, हीरालाल, तुंगभद्रा राठौड़, रिक्की बिंदास, अंबर शुक्ल अंबरीश, कुमार जगदलवी, मोहम्मद हुसैन, अनिल श्रीवास्तव जाहिद, अशोक शर्मा, युक्ति राजश्री, हरजीत जुनेजा, प्रेमचंद अग्रवाल, संजीव ठाकुर, शीलकांत पाठक, अर्चना पाठक, सुनील पांडे, विजय संवेदी, शोभा मोहन श्रीवास्तव, मोहन श्रीवास्तव, चंद्रकांत बिरझी, पुष्पराज गुप्ता, सीमा श्रीवास्तव, मुकेश गुप्ता, तेजपाल सोनी, गोपाल सोलंकी ने काव्य-पाठ किया। ☐

साहित्य कार्यक्रम आयोजित

८ सितंबर को कोलकाता में भारतीय भाषा परिषद् और नीलांबर

के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री यतीश कुमार के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री शंभुनाथ, कुसुम खेमानी एवं विमलेश त्रिपाठी के विशिष्ट आतिथ्य में 'साहित्यम्' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संचालन श्री रौनक अफरोज ने किया तथा धन्यवाद श्री आनंद गुप्ता ने ज्ञापित किया। ☐

मासिक कवि-गोष्ठी संपन्न

११ सितंबर को हैदराबाद के सतनाम आधार कबीर डेरा के तत्त्वावधान में कबीर चिंतन की १९३वीं मासिक कवि-गोष्ठी और कबीर चिंतन का साहित्यिक कार्यक्रम श्रीमती कुमुद बाला की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस कवि-गोष्ठी में सर्वश्री अरुणा ठाकुर, सीताराम माने, गोविंद अक्षय, दुर्गाराज पटून, रत्नकला मिश्र, कुमुद बाला, दीपक चिंडालिया वाल्मीकि, नंदलाल यादव, बी. पापा लाल ने काव्य-पाठ किया। संचालन श्री गोविंद अक्षय ने किया तथा धन्यवाद श्री डी. लक्ष्मण ने ज्ञापित किया। ☐

डॉ. रामदरश मिश्र के जन्मदिन पर काव्य-पाठ

१५ अगस्त को यशस्वी रचनाकार डॉ. रामदरश मिश्र के ९४वें जन्मदिवस पर उनके आवास पर सर्वश्री ओम निश्चल, जसवीर त्यागी, वेद मित्र शुकल, अलका सिन्हा, मनु सिन्हा ने काव्यपाठ किया। धन्यवाद श्रीमती सरस्वती मिश्र ने ज्ञापित किया। ☐

हिंदी पखवाड़ा संपन्न

विगत दिनों नई दिल्ली के रिसर्च फाउंडेशन मीडिया रिसर्च सेंटर में केंद्रीय हिंदी निदेशालय वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन मुख्य अतिथि पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि द्वारा किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री गंगा प्रसाद विमल एवं अवनीश कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। ☐

टॉक शो आयोजित

१४ सितंबर को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के केंद्रीय पुस्तकालय के सभागार में 'हिंदी दिवस : हिंदी मेरी पहचान है' विषय पर आयोजित 'टॉक शो' में मुख्य वक्ता डॉ. महेश चंद गुप्त एवं श्री औदुंबर चह्वाण ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार डॉ. लोकेश शर्मा ने व्यक्त किया। ☐

राष्ट्रीय महोत्सव संपन्न

विगत दिनों इलाहाबाद के शंकरलाल श्रीवास्वत मेमोरियल भवन के सभागार में डॉ. पृथ्वीनाथ पांडेय की अध्यक्षता में 'तकनीकी क्षेत्रों में हिंदी को अधिकाधिक बढ़ावा मिले' विषय पर विशिष्ट अतिथि डॉ. घनश्याम भारती, सर्वश्री रामकिशोर शर्मा, प्रदीप चित्रांशी, रमाशंकर श्रीवास्तव, रणविजय निषाद, धारवेंद्र प्रताप त्रिपाठी, सुनील मिश्र, रवि मिश्र, धर्मेंद्र ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर सर्वश्री घनश्याम भारती को 'भाषागौरव सम्मान', बालकृष्ण गौतम को 'काव्यगौरव सम्मान', शिवशरण श्रीवास्तव को 'गीतगौरव सम्मान', धीरज श्रीवास्तव को 'सुरेशचंद्र स्मृति नवगीत गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। श्री महेश सक्सेना एवं श्री मुनींद्र श्रीवास्तव का सारस्वत अभिनंदन किया गया। संचालन डॉ. प्रदीप चित्रांशी ने किया। ☐

हिंदी दिवस समारोह संपन्न

१७ सितंबर को कोलकाता के स्थानीय राममंदिर सभागार में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय एवं सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में अध्यक्षता कर रहे डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, सर्वश्री वरुण कुमार, तारा दूगड़, महावीर बजाज ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्रीमती दुर्गा व्यास ने किया तथा धन्यवाद श्री भरत जालान ने ज्ञापित किया। ☐

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

जिन पुस्तकों का प्रथम संस्करण १ जनवरी, २०१५ से ३० नवंबर, २०१८ के मध्य प्रकाशित हुआ है, वे विद्वान् अपनी पुस्तक की तीन प्रतियाँ टिकट लगे लिफाफे सहित डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, अखिल भारतीय हिंदी कहानी-संग्रह, स्व. ब्रजकिशोर कुलश्रेष्ठ अखिल भारतीय हिंदी उपन्यास एवं श्री शुकदेव शास्त्री अखिल भारतीय हिंदी निबंध-संग्रह के प्रथम पुरस्कार रु. ३१००० एवं द्वितीय पुरस्कार रु. २१००० हेतु डॉ. मधुरेश नंदन कुलश्रेष्ठ ७५/७०, मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० के पते पर ३० नवंबर, २०१८ तक भेज सकते हैं। दूरभाष : ८७६४२९५०११ ☐

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

विगत दिनों गाजियाबाद में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की १५०वीं जयंती को समर्पित करते हुए इस वर्ष आयोजित होनेवाला '२६वाँ अ.भा. हिंदी साहित्य सम्मेलन' आगामी ३-४ नवंबर को भागीरथ पब्लिक स्कूल के प्रांगण में किया जाएगा। सम्मेलन में 'गांधी, हिंदी और पत्रकारिता' विषय पर दो सत्रों में संगोष्ठी, पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों की प्रदर्शनी, सांस्कृतिक संध्या, कवि-सम्मेलन, अनेक पुस्तकों के लोकार्पण तथा नामित सम्मान अलंकरण के अंतर्गत देश के चुने हुए विद्वानों को सम्मान के साथ ५१०० रु. की पुस्तकें भी भेंट की जाएँगी। राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास तथा भागीरथ सेवा संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हो रहे इस सम्मेलन के संयोजक श्री उमाशंकर मिश्र ने बताया कि महात्मा गांधी के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं प्रेरक कृतित्व पर केंद्रित आलेख आमंत्रित किए जा रहे हैं। इन्हें गांधी जी की १५०वीं जयंती वर्ष में ही एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। सम्मेलन में अपनी भागीदारी निभाने हेतु श्री उमाशंकर मिश्र (मुख्य संयोजक) से पत्र द्वारा ६९५ न्यू कोट गाँव, जी.टी. रोड, गाजियाबाद-२०१००९ पते पर संपर्क किया जा सकता है। दूरभाष : ०९८१८२४९९०२ ☐

साहित्यिक क्षति

श्री विष्णु खरे नहीं रहे

१९ सितंबर को सुप्रसिद्ध कवि, पत्रकार और हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष श्री विष्णु खरे का निधन हो गया। वे ७८ वर्ष के थे। उनका जन्म १९४० में मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा में हुआ। वह हिंदी के कई समाचार-पत्रों में संपादक रहे। वे 'नाइट ऑफ द व्हाइट रोज', 'हिंदी अकादमी सम्मान', 'रघुवीर सहाय सम्मान', 'मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' से सम्मानित हुए।

साहित्य अमृत परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि।